# बाग़े-जन्नत यानी ख़ुदाई बाग़

मुसन्निफ़

मौलाना इनायत अली शाह

ख़लीफ़ा

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह.

फ़रमाया अल्लाहतआला ने और जो शख़्स अल्लाह और रसूल का कहना मानेगा तो अल्लाहतआला उसको जन्नतियों में दाख़िल करेगा, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी।

# बाग़-ए-जन्नत यानी ख़ुदाई बाग़

अज़ ख़ाक पाए उलमाए हक़्क़ानी व सूफ़ियाए रब्बानी हाफ़िज़ सैय्यद इनायत अली शाह साहब लुधियानवी मौहल्ला बाजड़यान, ख़लीफ़ा हकीमुलउम्मत कुतबेआलम कुतबे दौरॉ शेख़उलमशाइख़ हज़रत अलहाज मौलाना शाह हाफ़िज़ मौहम्मद अशरफ़ अली थानवी।

# हरफ़े आग़ाज़

अमा बाअद, बाग़-ए-जन्नत यानी खुदाई बाग़। हकीमुल उम्मत मुजद्दि उल मिल्लत, कुतबे दौरां, कुतबुल अलूम, शेख़ उल मशाइख हज़रत हाफ़िज कारी अलहाज शाह मौहम्मद अशरफ़ अली साहब थानवी कुद्स सरा के ख़लीफ़ाए खास हज़रत हाफ़िज़ सैय्यद इनायत अली शाह साहब मद ज़िल्ला-उल आला हैं और यह किताब ज़ेरे नज़र उन्ही की लाज़वाल तसनीफ़ है जिसमे राक़िमउल हरुफ़ के मुर्शिदी ने अपने दौर के मुताबिक़ ज़िन्दगी के हर शोबे में इस्लामी तालीमात को तौज़ीह फ़रमायी है। मुसलमानो की अमली ज़िन्दगी का कोई गोशा ऐसा नही है जिसमे वो अपने दीन इस्लाम की असली तालीमात से दूर न हटते चले गये हों।

हज़रत मम्दूह ने इस किताब में अमल की इन कोताहियों की इन्तेहाई हमदर्दाना तौर पर निशानदही फ़रमायी है और फिर उन्हे दूर करने की मौअस्सिर तदाबीर भी बतायी हैं। यह किताब दरहक़ीक़त एक सिलसिलाए मज़ामीन है जो सबसे पहले खुदाई बाग़ के नाम से इज़मालन शाये हो चुके हैं। चुनांचे मेरे पीर भाई सूफ़ी शमीम अहमद एडमिनिस्ट्रेटर मार्केट कमैटीज़ नेज़ दूसरे पीर भाई सूफ़ी ज़मान अल्लाह बख्श साहब पेंशनर पोस्ट मास्टर मुकीम फ़ैसलाबाद, गली नं० 11, मौहल्ला गुरु नानक पुरा की भी यही आरज़ू थी कि यह मज़ामीन तफ़सीलन शाये हो। आख़िर पीर-ओ-मुर्शिद हाफ़िज़ साहब ने राये ज़ाहिर की, कि इसकी तबाअत व अशाअत का एहतमाम किया जाये, जिसकी किताबत सूफ़ी शमीम अहमद एडमिनिस्ट्रेटर के तआवुन से मेरे रूहानी भाई मुर्शिद-ज़ादा साहब-ज़ादा सैय्यद जमील उल हसन मज़लूम ने अपने अख़बार नवाये गूजरॉवाला के खुशनवीस मिस्टर रफ़ीअल्लाह से करायी जिसकी अग़लात की तसही दूसरे साहबज़ादे सैय्यद मौहम्मद अहसन- बैंक आफ़ीसर ने की।

यह किताब पीर-ओ-मुर्शिद हज़रत हाफ़िज साहब ने अपनी उम्र के आखिरी हिस्से में मुकम्मल की। हज़रत मम्दूह की उम्र इस वक़्त एक सदी के क़रीब है और अवाम ख़सूसन मुरीदीन इस अन्दाज़ बयान से बहुत ज़्यादा मानूस हो चुके हैं। इसलिए ज़रूरत महसूस हुई कि इसको जल्द शाये कराया जाये। बहरकैफ यह बेमिसाल और नायाब तोहफ़ा की सूरत किताबे हाज़ा आपके सामने है। इन्शाअल्लाह तआला किताब की तहरीर और ज़रूरी मसाईल नेज़ नग़मों को आम उर्दू खुवां हज़रात पूरी तरह समझ सकेंगे।

**खादिम हक़ीर फ़क़ीर "अमीरउद्दीन"**

16/1 आर्डिनैन्स रोड, रावलपिंडी कैन्ट

# विषय सूची

| नं० शुमार | विषय (मज़मून) | सफ़ा |
|---|---|---|
| 55 | शराबी से मेल-जोल रखने की सज़ा | 64 |
| 56 | सूद लेने की सज़ा | 64 |
| 57 | माँ-बाप को तकलीफ़ देने की सज़ा | 65 |
| 58 | इन बातों में वलिदैन की ताबेदारी नही | 67 |
| 59 | औलाद को ज़्यादा मारना-पीटना ज़ुल्म है | 68 |
| 60 | यतीमों का माल खाने की सज़ा | 68 |
| 61 | यतीमों पर रहम करने की बज़ुर्गी | 69 |
| 62 | ग़ीबत करने की सजा | 70 |
| 63 | तकब्बुर करने की सज़ा | 71 |
| 64 | ज़िना करने की सज़ा | 72 |
| 65 | ज़िना करने वालों के लिए दोज़ख़ का तनूर | 73 |
| 66 | दय्यूस किसको कहते हैं? | 73 |
| 67 | पर्दे का बयान | 74 |
| 68 | मसला ग़लत बतलाने की सज़ा | 75 |
| 69 | दूसरे के घर में झाँकने की सज़ा | 77 |
| 70 | बेअमल नसीहत करने की सज़ा | 77 |
| 71 | झूठ बोलने की सज़ा | 77 |
| 72 | झूठी गवाही देने की सज़ा | 78 |
| 73 | किसी की ज़मीन दबा लेने की सज़ा | 78 |
| 74 | चुग़ली खाने की सज़ा | 78 |
| 75 | वादा पूरा न करने की सज़ा | 79 |
| 76 | मुसलमान का ऐब खोलने की सज़ा | 79 |
| 77 | हमसाये को तकलीफ़ देने की सज़ा | 79 |
| 78 | ग़ैर मुस्लिम पड़ौसी के हक़ूक | 81 |
| 79 | कंजूस की सज़ा | 81 |
| 80 | हराम माल खाने की सज़ा | 82 |
| 81 | बोहतान लगाने की सज़ा | 82 |
| 82 | डाकू और चोर की सज़ा | 83 |

| नं० शुमार | विषय (मज़मून) | सफ़ा |
|---|---|---|

| नं० शुमार | विषय (मज़मून) | सफ़ा |
|---|---|---|

| नं० शुमार | विषय (मज़मून) | सफ़ा |
|---|---|---|

शब्द सृजन : सनबीम कम्प्यूटर्स, सदर मेरठ। फोन : 540726

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله على الشان جلى البرهان والصلوٰة والسلام على رسوله و حبيبه محمد المبشر به فى الانجيل والمنزل عليه القرآن وعلى آله و اصحابه الذين سبقونا بالايمان،

हम्द बेहद उस ख़ुदाये पाक को, नूरे ईमाँ जिसने बख़शा ख़ाक को
किससे पूरा उसका हक़ होवे अदा, कौन गिन सकता है इनआमे ख़ुदा
नाम उनका है दवाए हर बला, अहमदे मुर्सिल मौहम्मद मुस्तफ़ा
दम बदम उन पर दरूदो सद सलाम, पहुंचे इस आजिज़ का तोहफ़ा बिलदवाम
हम्दे ख़ालिक कब किसी से हो सके, पाक है वो ज़ात जो चाहे करे
और ज़बाँ को कब है ताक़त इस क़दर, जो करे नैमत नबी ख़ैरूल बशर
कहते थे सब अम्बियाए मौहतरम, काश होते उम्मते अहमद में हम
नुस्ख़ाए आला जो करता हूँ बयाँ, हो मुफ़ीदे ख़ल्क़ ऐ रब्बे जहाँ

# ईमान लाने और मुसलमान होने की ख़ूबियाँ

**इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—**

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِىْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا

यानी ऐ बन्दो ! हमने आज के दिन तुम्हारे लिए दीन को मुकम्मल कर दिया और हमने तुम पर अपना इनआम पूरा कर दिया और हमने इस्लाम को तुम्हारा दीन (मज़हब) बनने के लिए (हमेशा-हमेशा को) पसंद कर लिया। फ़०

अल्लाहतआला ने इस आयते शरीफ़ा में एक बहुत बड़ी नैमत का ज़िक्र फ़रमाया है और वह नैमते इस्लाम है। अल्लाहतआला ने हमको इसके कामिल होने की ख़बर दी है ताकि मालूम हो जाये कि यह बहुत बड़ी नैमत है और अल्लाह तआला ने इस्लाम को हमारे लिए पसंद भी फ़रमाया है और इसको कामिल भी कर दिया है। तो इसका यह असर होगा कि जिस शख़्स के पास यह इस्लाम की नैमत होगी, अल्लाह तआला उससे राज़ी होगा। देखो, नैमतें दो क़िस्म की

होती हैं— 1. दुनिया की नैमतें, जैसे— खाना-पीना, माल-औलाद, इज़्ज़त व आबरू, मकान-ज़मीन, जायदाद वग़ैरा। इन नैमतों का फ़ायदा दुनिया में होता है और इनके फ़ायदों की हद है। 2. दूसरी नैमतें आख़िरत की हैं और उनके फ़ायदे आख़िरत में हासिल होंगे और उनकी कोई हद नहीं और वो नैमतें हमेशा-हमेशा बाक़ी रहेंगी, जैसे जन्नत का मिलना, हूरों का मिलना, दूध वग़ैरा की नहरों का मिलना और क़िस्म-क़िस्म की राहतें और लज़्ज़तें हासिल होना। किसी क़िस्म का रंज और ग़म न होना वग़ैरा। दुनिया में चाहे कितनी ही बड़ी ख़ुशी हो उसके साथ कुछ न कुछ तकलीफ़ भी ज़रूर होगी, मगर आख़िरत में कोई भी तकलीफ़ न होगी। देखो, दुनिया की नैमतें दो-चार दिन के बाद ख़त्म हो जाती हैं, कोई न कोई इनमें नुक़सान ज़रूर आ जाता है। मशहूर है कि—

सोने चाँदी की चमक बस देखने की बात है,
चार दिन की चाँदनी और फिर अँधेरी रात है।

मगर आख़िरत की नैमतें हमेशा-हमेशा के लिए है, जो कभी ख़त्म न होंगी और दुनिया की नैमतें ख़त्म होने वाली भी हैं और इनमें कोई न कोई तकलीफ़ भी होती है। देखो, खाना एक नैमत है मगर इसमें कितनी तकलीफ़ और मेहनत हैं कि ज़मीन कमाओ, बीज डालो, फिर अनाज निकालो, फिर आटा पिसवाओ, फिर गूंधो, फिर पकाओ, फिर खाओ। यह तो खाने से पहले की तकलीफ़ें हैं और खाना खाने में और इसके बाद भी तकलीफ़ें हैं। मसलन कभी मिर्च और नमक ज़्यादा हो गया, कभी खाना कच्चा रह गया, कभी खाने के बाद पेट में बोझ हो गया, कभी क़ब्ज़ हो गया, कभी हैज़ा हो गया या दस्त आने लगे या क़ै हो गयी या कोई मर्ज़ हो गया। हकीम, डाक्टर के नुस्ख़े पिये जाते हैं। कहीं हाज़मे के लिए चूरन खाया जाता है। देख लो दुनिया की एक नैमत खाने में कितनी तकलीफ़ें उठानी पड़ी। इसी तरह दुनिया की हर नैमत के साथ तकलीफ़ भी लगी होती है और आख़िरत की नैमतें जब मिलेंगी तो कभी खत्म न होंगी और न उनमें कोई तकलीफ़ और मेहनत उठानी पड़ेगी। जन्नत में ख़ुशी ही ख़ुशी रहेगी। वहाँ जो चाहोगे वही होगा। देखो जन्नत में कोई फल खाने को तोड़ा तो उसमें एक ख़ूबसूरत हूर निकल आयेगी। वह कहेगी "अस्सलामु अलैकुम"। फल अलग खाया और मुफ़्त मे एक हूर भी हाथ आ गयी। ग़रज़ जन्नत में अजीब-अजीब हालत होगी और जन्नत में जितना दिल चाहे खाओ और हमेशा खाते रहो तब भी मज़ा आयेगा। न पेशाब-पाख़ाने की तकलीफ़, न हैज़े का डर, न बदहज़्मी का ख़तरा। बस एक ख़ुशबूदार डकार आयेगी और सब खाना हज़म हो जायेगा। जन्नत में बदबू का नाम ही नहीं और दुनिया की नैमते ऐसी है कि अगर इनको हमेशा खाया जाये तो फिर मज़ा नहीं आता या कोई मर्ज़ ही हो जाता है और कभी कोई नैमत मिल

गयी और कभी न मिली और आख़िरत एक दिन दुनिया भी और दुनिया की नेमतें भी सब ख़त्म हो जायेंगी, छूट जायेंगी। अब खुद समझ लो कि दुनिया की नैमतें अच्छी हैं या आख़िरत की। और जन्नत की नैमतें इस्लाम और ईमान लाने के सिवा किसी तरह भी हासिल नहीं हो सकतीं और इस्लाम क़बूल करना, ईमान लाना और मुसलमान होना जन्नत की नैमतों के मिलने की जड़ हैं और वो नैमतें भी ऐसी पायेदार हैं कि दुनिया की नैमतें उनके सामने ख़ाक़ भी नहीं। मालूम हो गया होगा कि मुसलमान होना कितनी बड़ी नैमत है। फिर अफ़सोस ही की बात है कि इतनी बड़ी नैमत को छोड़ कर हम दुनिया की फ़ानी नैमतों में डूब जायें। दीन इस्लाम का मानना और मुसलमान होना तो इतनी बड़ी नैमत है कि इसकी बदौलत दुनिया और आख़िरत दोनों सँवर जाती हैं। इस्लाम कामिल दीन है और अल्लाह तआला की पूरी नैमत है। उसका पसंद फ़रमाया हुआ है। बस इससे पूरा नफ़ा हासिल करो और अपनी हालत को इस्लाम के हुक्म के मुवाफ़िक़ दुरूस्त करो, अक़ीदों और अमलों को सँवारो। अगर तुम्हारे अन्दर इस्लाम के पूरे औसाफ़ हों तो इसके अनवार व बरकात तुम्हारे चेहरों से ज़ाहिर होंगे। यहाँ तक कि ग़ैर मुस्लिम भी तुम्हारी अच्छी आदतें और अच्छे अमल देखकर खुद-ब-खुद इस्लाम क़बूल करेंगे क्योंकि इस्लाम सच्चा दीन है, अल्लाहतआला को पसंद है। इसलिए इसमें मकनातीस की तरह असर है। इसकी जो भी अदा है, दिल को खींचती है इस्लाम नूर ही नूर है और हर क़िस्म की ख़ूबियों और भलाइयों से भरा हुआ है। मगर अफ़सोस यह है कि आजकल हमने इस्लाम के हुक्मों से ऐसा मुँह मोड़ा है कि सर से पाँव तक इस्लाम के हुक्मों के ख़िलाफ हैं, यहाँ तक कि ग़ैर मुस्लिम भी हम पर हँसते हैं और कहते हैं कि यह है दीन इस्लाम और यह हैं मुसलमान। अगर दीन इस्लाम ऐसा ही है जैसा कि मुसलमानों ने बना रखा है तो फिर ऐसी लूटमार से तो हम ही अच्छे हैं। यह अन्जाम हुआ हमारी बेअमली का। मुसलमान भाइयो, ज़रा होश करो! आख़िर अल्लाह व रसूल (स०) को मुँह दिखाना है। नैमेते इस्लाम से फ़ायदा उठाओ, अपने ईमान और अमलों को दरूस्त करो। अल्लाह व रसूल के हुक्मों को मालूम करो और उन पर मज़बूती से चलो और अल्लाह तआला की नैमतों को याद करो कि उस ख़ालिक़-ए-पाक ने हमको कैसी अच्छी सूरत में बनाया और क्या-क्या नैमतें बख़्शीं।

खून में डूबा हुआ तन और बदन,
निकला क्या-क्या खींच कर रंजो मुहन।

आजिज़ो खुवारो ज़ईफ़ो नातवाँ,
बेकसो मिस्कीं नहीफ़ोख़स्ता जाँ।

गर न ले उस वक़्त में मादर ख़बर,
एक दम में तू हो मुर्दे से बदतर।

तू भला उस वक़्त था किस काम का,
गर न होता लुत्फ़ो इनआमे ख़ुदा।

दी ख़ुदा ने तुझको बहरे इम्तहाँ,
किस तरह की नैमतें बेशअज़ बयाँ।

अक़लो फ़हमो हिफ़ज और ज़हनो ज़का,
कुवतो ज़ोरो तआमे जाँ फ़िज़ा।

सूरतो शक्लो ज़रो लाले गौहर,
ख़ाना ओ यारो अज़ीज़ो सीमोज़र।

दुख़्तरो मादर पदर फ़रज़न्दो ज़न,
मालो मुल्को दौलतो बाग़ो चमन।

हैं ख़ुदा की तू बता किस काम का,
सब ये तेरे वास्ते हैं ऐ अख़ी।

बावजूद इसके भी हो तुझको नफ़ूर,
अक़्ल से यह बात है यक लख़्त दूर।

दुशमने जाँ हैं हज़ारों जानवर,
है वही हर दम मुहाफ़िज ए पिसर।

तीरो बर्छी ख़ंजरो तेग़ो तबर,
मुस्तइद हैं आदमी के क़त्ल पर।

मर्ज़ जिस्मानी हैं ग़र्रा दस हज़ार,
अज़ दहाओ अक़रबो ज़म्बूरो मार।

गर न हो इस की हिफ़ाज़त एक दम,
दम के दम में देखे तु मुल्के अदम।

है ग़ज़ब यक लख़्त उन को भूल कर,
अपने इस ख़ालिक़ से हो तू बेख़बर।

नैमतें जो इस क़दर दे ऐ फ़ज़ूल,
हुक्म में उसके करे है तू अदूल।

मुसलमान भाइयो ! अपने ईमान और अमलों को दरूस्त करो और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी से बाज़ आ जाओ। देखो, आजकल हमारी हालत ऐसी बिगड़ गयी है कि किसी ग़ैर मुस्लिम को ऐसा न देखा होगा कि उसने सूरत व

शक्ल और लिबास वग़ैरा मे किसी बुज़ुर्ग आलिम जैसा रंग-ढंग बनाया हो और मुसलमानो की यह हालत है कि कूद-कूद कर खुल्लमखुल्ला ग़ैर मुस्लिमों के तरीक़े को अख़्तियार करते जाते हैं। अपने प्यारे रसूल पाक (स०) के तरीक़े को छोड़े जाते हैं। यह कैसी रद्दी और गंदी मुसलमानी है। तौबा करो, कुफ़्फ़ार के तरीक़े को छोड़ दो। देखो ! अल्लाहतआला फ़रमाता है— बेशक जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये बहुत जल्दी हम उनको ऐसी जन्नतो मे दाख़िल करेंगे कि जिनके मकानों के नीचे नहरें बहती होंगी और वो उनमे हमेशा रहेंगे और उनके लिए इन जन्नतों में बीवियाँ होंगी, साफ़ सुथरी और हम उनको निहायत गुनजान साये में दाख़िल करेंगे। |सूरत उन निसा| फ० सुबहान अल्लाह ईमान लाना और मुसलमान होना और अल्लाह व रसूल के हुक्मो पर चलना कितनी बड़ी नैमत है कि इन्सान ईमान और अच्छे कामों की बरकत से हमेशा-हमेशा जन्नत में ऐश व आराम पायेगा, मगर ऐ इन्सान—

बहर-ए-ग़फ़लत ये तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

रह गुज़र दुनिया है ये बस्ती नही,
जाए-ऐश-ओ-इशरतो मस्ती नही।

तू बराय बन्दगी है याद रख,
फर्ज़ तुझ पर बन्दगी है याद रख।

वर्ना फिर शर्मिंदगी है याद रख,
चन्द रोज़ा ज़िन्दगी है याद रख।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है!

## ईमान किस तरह मज़बूत होता है

मालूम होना चाहिए कि ईमान तब दरूस्त और मज़बूत होता है कि जब अल्लाहतआला को और उसके रसूल हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) को सब बातो मे सच्चा समझे और उनकी सब बातों को दिल से मान ले, यह ईमान है और अल्लाह व रसूल के हुक्मो पर चलना यह दीन है, इस्लाम है। अल्लाह व रसूल की किसी बात मे या हुक्म में शक करना या उसको झुठलाना या उसमे ऐब निकालना या उसके साथ हँसी-मज़ाक़ उड़ाना, ऐसी बातों से ईमान नही रहता और कुर्आन व हदीस के साफ़-साफ़ और खुले मतलब को न मानना और हेर-फेर

करके अपना मतलब बनाना बेदीन और बेईमान बनना है। इसलिए हर मुसलमान मर्द और औरत को चाहिए कि अपने ईमान की ख़ूब हिफ़ाज़त करे। इस्लामी हुक्मों पर चलकर उसको मज़बूत करे और कोई बात ऐसी न कहे और न करे जिससे ईमान में फ़र्क़ आवे।

# ईमान न लाने की सज़ा और अज़ाब

अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि बेशक जो लोग हमारी आयतों यानी हुक्मों के मुनकिर हुए यानी हमारे हुक्मों को न माना तो हम उनको बहुत जल्द एक सख़्त आग में यानी दोज़ख़ की आग में दाख़िल करेंगे और उसमें उनकी बराबर यह हालत रहेगी कि जब एक दफ़ा उनकी खाल जल चुकी होगी तो हम उस पहली खाल की जगह दूसरी ताज़ा खाल पैदा कर देंगे ताकि वह हमेशा अज़ाब ही भुगतते रहें। (सूरत उन निसा) और इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

तर्जुमा—

बेशक जो शख़्स बग़ावत का जुर्म करके यानी काफ़िर होकर अपने रब के सामने यानी कचहरी में हाज़िर होगा तो उसकी सज़ा के लिए दोज़ख़ है, उसमें न वह मरेगा और न जियेगा।

**फ़ायदा—** अल्लाह बचाये ! ईमान न लाना और मुसलमान न होना, अपने ईमान को ख़राब करना कितना बड़ा संगीन जुर्म है। ख़ुदाई क़ानून में बग़ावत है। इसलिए बाग़ी यानी काफ़िर हमेशा के लिए दोज़ख़ में डाला जायेगा कि अपनी बग़ावत की सज़ा पाता रहे और मुसलमान चाहे कितना ही बड़ा मुजरिम हो, ख़ुदाई क़ानून यानी ख़ुदा के सब हुक्मों को मानता है, बाग़ी नहीं है, अमल ख़ुदा के क़ानून के ख़िलाफ़ करके मुजरिम है। सज़ा काट कर फिर जन्नत में आ जायेगा और काफ़िर बाग़ी है इसलिए वह हमेशा दोज़ख़ में क़ैद रहेगा।

## दुआ

ऐ ख़ुदा ऐ ख़ालिक़ ए अरज़ो समां,<br>
ऐ ख़ुदा ऐ मालिक-ए-रोज़े जज़ा।

तू अज़ाबे नार से हम को बचा,<br>
हों न हम बे आबरू रोज़े जज़ा।

तूने दोज़ख़ में जिसे दाख़िल किया,
उसको बेशक तूने रुसवा कर दिया।

ऐसे ज़ालिम का कोई साथी नहीं,
कोई भी काम उसके आ सकता नहीं।

काफ़िर ओ गुमराह व नाफ़र्मां न हूँ,
मैं कभी बेदीनो बेईमाँ न हूँ।

ऐ खुदा जब तक हो मेरे दम में दम,
रख मुझे इस्लाम पर साबित क़दम।

**सवाल—**

फ़रिश्ते कौन होते हैं—अल्लाहतआला की ऐसी ज़ात-ए-पाक है कि उस की सिफ़्तों और निशानियों से उसको सब जानते हैं कि ज़मीनों आसमान, चाँद, सूरज, तारे, रात-दिन और कुल मख़लूक़ को उसने पैदा किया और सब मख़लूक़ को रिज़्क़ पहुँचाता है। वही मारता है, वही जिलाता है। वही अमीर और फ़क़ीर करता है, वही इज़्ज़त और ज़िल्लत देता है और वो ऐसा ज़बर्दस्त और बड़ी कुदरत वाला है कि इन्सान के इरादों को तोड़ देता है। ग़रज़ कि उसकी ताक़त और कुदरत और सिफ्तों से सब उसको जानते हैं। कोई हठ धरम और समझ का अन्धा उस की ज़ात-ए-पाक का इन्कार करेगा, मगर फ़रिश्तों को हर शख्स नही जानता। कुछ उनका हाल बताओ।

**जवाब—**

ऐ भाई अज़ीज़ ! तुमने उस खुदाए वाहदहू ला शरीक को पहचाना। बेशक वह सब मख़लूक का ख़ालिक़ और मालिक है। उसने इन्सान को मिट्टी से अपनी इबादत और इताअत के लिए पैदा किया और फ़रिश्तों को उसने नूर से पैदा कर के उन को हमारी नज़रों से छुपा दिया है। उनका मर्द या औरत होना कुछ नहीं बतलाता, उनको फ़रिश्ते कहते हैं। अल्लाहतआला ने उनको हर तरह की सूरत में बन जाने की कुदरत दी है। हवा बन जायें, आदमी या किसी जानवर, चरिन्द-परिन्द वग़ैरा की शक्ल में बन जायें। इनके पर भी होते हैं, किसी के दो पर, किसी के तीन पर, किसी के चार पर। इनकी खुराक अल्लाहतआला की याद और ताबेदारी करना है।

तमाम ज़मीन ओ आसमान का इन्तज़ाम इनके सपुर्द है। वो कोई काम अल्लाह तआला के हुक्म के खिलाफ़ नहीं करते। उनमें यह चार फ़रिश्ते बड़ा

रूतबा रखते हैं और बहुत मशहूर हैं।

1. हज़रत जिबराईल (अ०) 2. हज़रत मीकाईल (अ०)

3. हज़रत इसराफील (अ०) 4. हज़रत इज़राईल (अ०)।

हज़रत जिबराईल अल्लाह तआला के अहकाम और किताबें रसूलों और नबियों के पास लाते थे और बाज़ मौक़े पर अल्लाह तआला ने उनके ज़रिये से काफ़िरों और नाफ़रमानों पर अज़ाब भी भेजा है। हज़रत मीकाईल मख़लूक़ को रिज़्क पहुँचाने और बारिश वग़ैरा के कामों पर मुक़र्रर हैं और बहुत से फ़रिश्ते उनकी मातहती में काम करते हैं। कुछ बादलों और हवाओं, दरियाओं, तालाबों और नहरों के कारोबार में लगे हुए हैं। हज़रत इसराफ़ील सूर लिये खड़े हैं। जब क़यामत होगी वो सूर बजायेंगे। हज़रत इज़राईल मलकउलमौत मख़लूक़ की जान निकालने पर मुक़र्रर हैं और बहुत से फ़रिश्ते उनकी मातहती में काम करते हैं। नेक और बद लोगों की जान निकालने वाले फ़रिश्ते अलग-अलग हैं। दो फ़रिश्ते इन्सान के अच्छे और बुरे अमल लिखने वाले हैं, उनको किरामन कातेबीन कहते हैं। बाज़ फ़रिश्ते इन्सान को मुसीबत से बचाने पर मुक़र्रर हैं। अल्लाह तआला के हुक्म से हिफ़ाज़त करते हैं। बाज़ फ़रिश्ते जन्नत और दोज़ख़ के इन्तज़ामों पर मुक़र्रर हैं। बाज़ फ़रिश्ते हर वक़्त अल्लाह तआला की इबादत और याद में मशग़ूल रहते हैं। बाज़ फ़रिश्ते दुनिया में काम करने आते हैं, उनकी सुबह व शाम बदली भी होती है। सुबह की नमाज़ के बाद रात को काम करने वाले फ़रिश्ते आसमान पर चले जाते हैं और दिन में काम करने वाले आ जाते हैं और अस्र की नमाज़ के बाद ये फ़रिश्ते चले जाते हैं, रात में काम करने वाले आ जाते हैं। बाज़ फ़रिश्ते दुनिया में फिरते हैं और जहाँ अल्लाहतआला का ज़िक्र होता हो, जैसे कुर्आन मजीद पढ़ा जाता हो, वाअज़ होता हो, इल्मे दीन पढ़ाया जाता हो या दीन की किताबें पढ़ी-सुनी जाती हों, या बुज़ुर्गों और आलिमों की सोहबत में दीन की बातें सीखने के लिए जमा होते हों, वहाँ हाज़िर होते हैं और उनके शरीक होने की गवाही अल्लाहतआला के सामने देते हैं और यह सब बातें कुर्आन व हदीस में मौजूद हैं।

## रसूल और नबी किसको कहते हैं, मौजज़ा और मैराज क्या हैं ?

रसूल और नबी अल्लाहतआला के बड़े मक़बूल और प्यारे बन्दे थे। जो गुनाहों से पाक थे। गिनती इनकी पूरी तरह अल्लाह ही को मालूम है। रसूल और नबी में इतना फ़र्क़ है कि रसूल को नयी शरीयत और नया क़ानून और

बड़ी किताब दी जाती थी और नबी को सहीफ़े यानी छोटी किताबें दी जाती थी या गुज़रे हुए रसूल की शरीयत यानी क़ानून ही पर क़ायम रखा जाता था। बहुत से रसूल और नबी अल्लाह तआला ने भेजे ताकि वो लोगों को दीन-ए-इस्लाम का सही, सीधा रास्ता बतलाएँ, उनकी सच्चाई बतलाने को अल्लाहतआला ने उनके हाथों से ऐसी नयी-नयी और मुश्किल बातें ज़ाहिर करायीं जो और लोगों से नहीं हो सकती थीं, ऐसी बातों को मौजज़ा कहते हैं। सबसे पहले नबी हज़रत आदम (अ०) थे और सबके बाद हमारे नबी ख़ातिमुल अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) हुए। नबियों में बाज़ का मर्तबा बाज़ों से बड़ा है। सबसे बड़ा मर्तबा हमारे नबी (स०) का है। आपके बाद न कोई नबी पैदा हुआ और न क़यामत तक पैदा होगा। क़यामत तक जितने आदमी और जिन्न होंगे आप सबके नबी हैं। आपने जो काम किये और जो काम बतलाये उनको हदीस शरीफ़ कहते हैं। हदीस शरीफ़ की यह छः किताबें मौतबर और बहुत मशहूर हैं—

1. बुख़ारी शरीफ़ 2. मुस्लिम शरीफ़ 3. अबुदाउद शरीफ़
4. तिर्मेज़ी शरीफ़ 5. नसाई शरीफ़ 6. इब्ने माजह शरीफ़।

मगर इनका मतलब आलिम लोग ही समझते हैं। उनका तर्जुमा उर्दू में पढ़कर दीन की बातों में राय न दें। आलिमों से पूछकर अमल करें। हमारे नबी हज़ूर (स०) को अल्लाह तआला ने जागते में जिस्म के साथ मक्का शरीफ़ से बैतुल मुक़द्दस में और वहाँ से सातों आसमानों पर और वहाँ से जहाँ तक पहुँचाना चाहा पहुँचाया और फिर मक्का शरीफ़ में पहुँचा दिया। इसको मैराज कहते हैं।

सुलताने जहाँ महबूबे ख़ुदा तेरी शानो शौकत क्या कहना।
हर शै पे लिखा है नाम तेरा तेरे ज़िक्र की रफ़अत क्या कहना।।
इन्ना आतैना कल कौसर फ़र्माये तेरे हक़ में दावर।
सेहरा है जबीं पे शिफ़ाअत का उम्मत पे है रहमत क्या कहना।।
मैराज हुई ता अर्श गये हक़ तुमसे मिला तुम हक़ से मिले।
सब राज़ फ़ाअवमा दिल पे खुले ये इज़्ज़तो हशमत क्या कहना।।
हूरों ने कहा सुबहानअल्लाह ग़ुलमाँ ने पुकारा सल्ले अला।
और क़ुदसी बोले इल्लल्ला है अर्श पे दावत क्या कहना।।
क़ुर्आन कलामेबारी है और तेरी ज़बाँ से जारी है।
क्या तेरी फ़साहत प्यारी है और तेरी बलाग़त क्या कहना।।
बातों से टपकती लज़्ज़त है आँखों से बरसती रहमत है।
ख़ुतबे से चमकती हैबत है ऐ शांहे रिसालत क्या कहना।।

सिद्दीक़ ओ उमर उस्मानो अली और उनके असहाबे सहाबे नबी।
कुर्बान है आक़ा तुम पे सभी की खूब रिफ़ाक़त क्या कहना।
आँखों से दरिया जारी है और लब पे दुआएँ प्यारी है।
रो रो के गुज़ारी शब सारी ऐ हामी-ए-उम्मत क्या कहना॥
आलम की भरी हर दम झोली खुद खायी तो बस जौ की रोटी।
वो शान अताओ सख़ावत की यह ज़ोहदो क़नाअत क्या कहना॥

# अल्लाहतआला की किताबों का बयान

अल्लाहतआला ने बहुत-सी छोटी और बड़ी किताबें आसमान से हज़रत जिबराईल (अ०) की मार्फ़त बहुत से रसूलों और नबियों पर उतारी ताकि वह अपनी अपनी उम्मतों को दीने इसलाम का रास्ता बतलाएँ। उनमें यह चार किताबें बहुत मशहूर है—

1. तौरैत शरीफ़ हज़रत मूसा (अ०) पर 2. ज़बूर शरीफ़ हज़रत दाऊद (अ०) पर 3. इन्जील शरीफ़ हज़रत ईसा (अ०) पर 4. कुर्‌आन मजीद हमारे नबी हज़रत मौहम्मद (स०) पर नाज़िल हुआ।

कुर्‌आन मजीद अल्लाहतआला की आख़िरी किताब है। इसके बाद न कोई किताब आसमान से उतरी और न क़यामत तक उतरेगी। कुर्‌आन मजीद ही का हुक्म चलता रहेगा। इससे पहली किताबों को गुमराह लोगों ने दुनिया के लालच में आकर बहुत कुछ बदल डाला और कुर्‌आन मजीद की हिफ़ाज़त का वायदा अल्लाहतआला ने खुद फ़रमाया है। उसको कोई नहीं बदल सकता और उसी वायदे के मुवाफ़िक़ अब तक मौजूद है और क़यामत तक मौजूद रहेगा। आज तक एक नुक़ते तक का फ़र्क़ न आया और न आयेगा। अल्लाहतआला ने इसकी हिफ़ाज़त का इन्तज़ाम इस तरह किया है कि मुसलमानों को उसके ज़ुबानी याद करने का शौक़ अता फरमाया है और इसका पढ़ना और याद करना आसान कर दिया है। इतनी बड़ी किताब और दो-चार साल में ज़ुबानी याद हो जाती है। दुनिया भर में इस क़दर हाफिज़े कुर्‌आन मौजूद रहते है कि अगर खुदा न करे छपे हुए कुर्‌आन तमाम रूए ज़मीन पर न रहें तो इस तरह हाफ़िज़ों के ज़रिये से कुर्‌आन तैयार हो जायेगा। यह वह शाने अज़ीम है कि सिवाये कुर्‌आन के किसी और मज़हब की किताब को हासिल नहीं। यह कुर्‌आनी मौजज़ा है और यह बात भी याद रखने की है कि जिस तरह कुर्‌आन के नुक़ते तक में फ़र्क़ नहीं आया उसी तरह इसके मायनों में भी फर्क़ नहीं आया जो मायने और अहकाम

और जो मतलब पहले आलिमों ने समझे और लिखे हैं उसी तरह मौजूद हैं इनको फ़िक़ा और तफ़सीर और हदीस कहते हैं और हज़ार हा मुत्तक़ी आलिम इनकी हिफ़ाज़त में लगे रहे और लगे रहते हैं। अब कोई दुनिया के लालच में आकर क़ुर्आन व हदीस फ़िक़ा और तफ़सीर के नये माने अपना मतलब बनाने को बदले और घड़े, वह बेदीन और गुमराह है। वह खुद ही बदल जायेगा, मिट जायेगा।

"आज तक नक्श-ए-शरीयत न मिटा पर न मिटा'
मिट गये आप ही जितने थे मिटाने वाले"

# क़यामत, पुलसिरात, कौसर क्या चीज़ है ?

मरने के बाद सबको ज़िन्दा किया जायेगा और अल्लाहतआला की कचहरी में सबका हिसाब-किताब होगा। अच्छे कामों पर सवाब और ईनाम मिलेगा और बुरे कामों पर अज़ाब और सज़ा मिलेगी और उस ज़िन्दगी के बाद फिर कभी मौत नहीं आयेगी। उसको क़यामत और आलमेआख़िरत कहते हैं। जब दुनिया के ख़त्म होने का वक़्त आयेगा तो हज़रत इसराफ़ील (अ०) सूर बजायेंगे। यह सूर एक बहुत बड़ी चीज़ सींग जैसा है। उसकी लम्बाई और चौड़ाई ज़मीन व आसमान के बराबर है। उसकी आवाज़ शुरू-शुरू में हल्की और नर्म होगी। आख़िर बढ़ते-बढ़ते ऐसी ऊँची और ख़ौफ़नाक हो जायेगी कि ज़मीन और आसमान फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे और तमाम मख़लूक़ मर जायेगी और जो मर चुके होगे उनकी रूहें बेहोश हो जायेंगी। मगर जिसको अल्लाह तआला इस मुसीबत से बचाना चाहेगा, वह बचे रहेंगे और एक मुद्दत इसी तरह गुज़र जायेगी।

न कोई रहेगा न कोई रहा है,
यह मिटने की जा है मिटेगी हर एक शै।

ख़ुदा ही रहेगा ख़ुदा ही रहा है,
किसी का कहाँ नाम बाक़ी रहा है।

न दुनिया रहेगी न दुनिया की बातें
फ़ना है फ़ना है हर एक को फ़ना है।

रहेगा तू ही और तू ही रहा है
सिवा ज़ाते बारी के कुछ भी रहा है?

अलहासिल जब अल्लाहतआला को मन्ज़ूर होगा कि तमाम मख़लूक़ फिर ज़िन्दा हों तो फिर सूर बजाया जायेगा। उसकी आवाज़ से तमाम मख़लूक़ फिर ज़िन्दा हो जायेगी और आसमान व ज़मीन उसी तरह क़ायम हो जायेंगे और तमाम

लोगों को क़यामत के मैदान में लाया जायेगा। सूरज बहुत क़रीब कर दिया जायेगा, उसकी गर्मी से लोगों के दिमाग़ हंडिया की तरह पकने लगेंगे। इस तकलीफ़ और भूख-प्यास से घबराकर सब लोग अम्बिया (अ०) के पास जायेंगे और कहेंगे कि अल्लाह तआला के दरबार में हमारी शिफ़ाअत कीजिए और हमको हिसाबो-किताब से जल्दी छुड़ाइए। सब नबी कुछ न कुछ उज़्र करेंगे और सबके बाद हमारे नबी हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) अल्लाहतआला से सिफ़ारिश करेंगे और मीज़ाने तराज़ू खड़ी की जायेगी। उसमें अमल तोले जायेंगे और शाफ़ीए महशर हज़ूर अकरम (स०) अपनी नहर हौज़े कौसर का पानी पिलायेंगे जो दूध से ज्यादा सफ़ेद और शहद से ज़्यादा मीठा होगा।

**पुलसिरात,** दोज़ख़ के ऊपर पुल है, जो बाल से ज़्यादा बारीक और तलवार से ज़्यादा तेज़ है, उस पर चलना पड़ेगा। जिन लोगों ने अल्लाह व रसूल की ताबेदारी की होगी वह बिजली की तरह उस पर से पार होकर जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे और जो लोग अल्लाह व रसूल के नाफ़रमान होंगे, वह कटकर दोज़ख़ में गिर पड़ेंगे।

मोमिनो रहते हो क्यों बेफ़िक्र बेग़म बेख़बर।
एक सफ़र दरपेश है दूरो दराज़ो पुरख़तर॥

पुलसिरात अज़ बस की बारीको तवीलो तेज़ है।
उसके नीचे एक दरिया आग से लबरेज़ है॥

नेको बद आमाल तोले जायेंगे मीज़ान में।
हो हिसाब ज़र्रा-ज़र्रा हश्र के मैदान में॥

तोशा-ए-आमाल अपना साथ लेकर जाओ जी।
पीछे क़ब्र में कौन भेजेगा सोचो तो सही॥

# सहाबा कौन लोग होते हैं

रसूले ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) को जिन-जिन मुसलमानों ने देखा है, उनको असहाब या सहाबा कहते हैं। कुर्आन व हदीस में उनकी बड़ी-बड़ी बुज़ुर्गियाँ आयीं हैं। उन सबकी ताज़ीम वाजिब है। उनमें यह चार असहाब सबसे बड़ा मर्तबा रखते हैं और बहुत मशहूर हैं। उनकी बज़ुर्गी और बड़ाई का इन्कार करने वाला बेदीन और गुमराह है।

दोस्ताने मुस्तफ़ा हक़ के वली,
अबुबक्र व उमर उस्मानो अली।

आसमाने फ़ैज़ के तारे हैं यह,
और रसूल अल्लाह के प्यारे हैं यह।

हुई दीन को उन से क़ुवत तमाम,
हो उन सब पे रहमत ख़ुदा की मदाम।

उनकी हिम्मत से हमेशा ता क़याम,
दीने अहमद को रौनक़ है तमाम।

गर करे सदहा बरस चिल्लाकशी,
कफ़शेपा को उनके कब पहुँचे कोई।

तुख़्म उनकी उल्फ़तों का दिल में बो,
ताकि तेरा बाग़े ईमाँ सब्ज़ हो।

दामन उनका आ गया है जिनके हाथ,
कुफ़्र के तूफ़ान से पायी है निजात।

गर बुरे वह हैं तो बेहतर कौन है,
गर वह बेराह हैं तो रहबर कौन है?

इसी तरह रसूले ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की औलादे पाक और अज़वाजे मुत्तेहर्रात सब क़ाबिले ताज़ीम हैं। औलाद में सबसे बड़ा मर्तबा हज़रत फ़ातिमा (रज़ी०) का है और बीबियों में हज़रत ख़दीजा और हज़रत आयेशा (रज़ी०) का है।

फ़ात्मा, ज़ैनब, रूक़ैया ऐ जवाँ,
उम्मे कुलसूम आप की हैं बेटियाँ।

चार ये दो फ़ात्मा ज़हरा के लाल,
जिगरे नबी के इनको टुकड़े कर ख़याल।

जितनी हैं अज़वाज ख़त्मुलर्मुसलीं,
उम्महातुलमौमिनीं हैं बिल्यक़ीं।

उनसे जो कोई कि हो बद ऐतक़ाद,
दीनो दुनिया में रहे वह नामुराद।

## दीन पर चलने का सही रास्ता बतलाओ

बाज़ गुमराह लोगों ने दुनिया की इज़्ज़त और दौलत के लालच में आकर अपनी-अपनी जमाअतें बनायीं और बनाते जाते हैं। कोई नबी बनता है। कोई हदीस शरीफ़ का इन्कार करता है। कोई कहता है कि मौलवी क़ुरआन व हदीस

का मतलब ही नहीं समझते। मैं समझता हूँ ऐसी हालत में यह बात समझने की है कि ऐसे फ़िरक़े के लोगों से बचना चाहिए और यह बात याद रखें कि अल्लाह व रसूल ने दीन की सब बातें कुर्आन व हदीस में बतला दी हैं। अब कोई नयी बात या नया तरीक़ा दीन में दाख़िल करना बिदअत है और बिदअत कुफ्र व शिर्क के बाद सब से बड़ा गुनाह है। बहुत से मसले दीन के ऐसे थे कि जिनको हर शख़्स समझ नहीं सकता था। वह मसले बड़े-बड़े दर्जे के पहले बज़ुर्ग आलिमों ने अपने इल्म के ज़ोर से कुर्आन व हदीस से समझ कर औरों को बतला दिये। ऐसे अल्लाह के प्यारे बन्दों को मुजतहिद और इमाम कहते हैं। दीन के रहबर और इमाम तो बहुत हुए, मगर उनमें यह चार बड़ा दर्जा रखते हैं और बहुत मशहूर हैं—

1. हज़रत इमामे आज़म अबुहनीफ़ा (रह०) 2. हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) 3. हज़रत इमाम मालिक (रह०) 4. हज़रत इमाम अहमद (रह०)। इन चारों इमामों को उस बेहतरीन ज़माने के बड़े-बड़े आलिमों ने पसंद कर लिया था। उस वक़्त से सब मुसलमान उनके बतलाये हुए मसलों पर अमल करते चले आये हैं। बड़े-बड़े बुर्ज़ुग आलिमों ने उनकी तक़लीद की और कर रहे हैं। बस इन चारों इमामों में से जिस इमाम साहब से ज़्यादा ऐतक़ाद हो उसके मसलों पर अमल करें और उनके मसलों में जो इख़्तिलाफ़ है उसको ख़ुदा की रहमत समझें। किसी की शान में गुस्ताख़ी न करें। हिन्दुस्तान में हज़रत इमामे आज़म के मसलों पर अमल करने वाले लोग ज़्यादा हैं। इनको हनफ़ी कहते हैं। बस इन इमामों के मसलों पर अमल करना कुर्आन व हदीस ही पर अमल करना है। दीने मौहम्मदी का सही और सीधा रास्ता यही है और इन चारों इमामों को दीने मौहम्मदी की कौंसिल• समझो। जो लोग इन चारों इमामों के मसलों पर अमल करते हैं उनको एहले सुन्नतवलजमाअत कहते हैं।

एक की तक़लीद कर इन चार से
काम मत रख ख़ल्क़ की गुफ़तार से

मज़हबे सुन्नत जमाअत ख़ूब है
हक़ तआला को यही महबूब है

और जो मज़हब कि हैं इससे जुदा
है नहीं राजी कभी उनसे ख़ुदा

राह सुन्नत की यही सीधी है राह
और हैं शैतान की राहें तबाह

है इसी मज़हब का ग़ल्बा देखले
और मज़हब हो गये इसके तले
रहते हैं ग़ालिब यही हर आन में
गुफ़्तगू में जंग में मैदान में

# इमामों का बयान

इमाम उल अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) ने फ़रमाया है कि नेक कामों में तुम जल्दी किया करो, इससे पहले कि फ़ितने पैदा हों। क्योंकि एक ज़माना ऐसा आयेगा कि आदमी सुबह को मुसलमान होगा और शाम को काफ़िर और शाम को मुसलमान होगा और सुबह को काफ़िर, और अपना दीन व ईमान दुनिया के लालच में बेच डालेगा और इरशाद फ़रमाया है कि मेरे बाद जो आदमी ज़िन्दा रहेगा, वह बहुत से इख़तलाफ़ देखेगा। ऐसे वक़्त तुम को चाहिए कि मेरे और मेरे असहाब के तरीक़े को इस तरह पकड़ लेना कि जिस तरह किसी चीज़ को दाँतों से मज़बूत पकड़ लेते हैं और नये तरीक़ों से बचते रहना क्योंकि दीन में नयी बात निकालना बिदअत है और बिदअत ऐसी बुरी चीज़ है कि वह दीन से दूर कर देती है और दोज़ख़ में पहुँचा देती है। (बुख़ारी)

हज़ूर (स०) के फ़रमाने के मुवाफ़िक ऐसा ही हुआ और हो रहा है कि लोगों ने तरीक़े और फ़िरके निकाले। मुसलमान भाइयो, देखो हमारे नबी (स०) ने तो हमको पहले ही से बतला दिया है कि मेरी उम्मत में यानी मुसलमानों में तिहत्तर फ़िरक़े हो जायेंगे। और एक फ़िरक़ा जन्नत में जायेगा और बाक़ी सब फ़िरक़े दोज़ख़ में जायेंगे। आपके असहाब ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह जन्नत में कौन-सा फ़िरक़ा जायेगा ? आपने फ़रमाया कि जो फ़िरक़ा मेरे और मेरे असहाबों के तरीक़े पर होगा वह जन्नत में जायेगा।(तिरमिज़ी)

अब हर फ़िरके के लोग कहते हैं कि हम ही रसूल अल्लाह के तरीक़े पर चलते हैं और हम ही हक़ पर हैं तो ऐसे फ़ितने के ज़माने में यह बात समझने की और ग़ौर करने की है कि जिस वक़्त रसूल अल्लाह (स०) दुनिया में मौजूद थे, उस वक़्त आप के असहाबों को, दोस्तों को जिस मसले की ज़रूरत पड़ती थी आप से दरयाफ़्त कर लिया करते थे और जब आपकी वफ़ात हो गयी और आपका ज़माना ख़त्म हो गया तो दूसरा ज़माना आपके असहाबों का आया। उन्होंने जिस तरह आपको अमल करते देखा था उसी तरह अमल करते रहे और जब असहाबों का ज़माना ख़त्म होने लगा तो तीसरा ज़माना आया। उस वक़्त अल्लाहतआला ने दीन की हिफ़ाज़त के लिए इमामों को पैदा किया और उनको

कुर्आन व हदीस के इल्म के ख़ज़ाने अता फ़रमाये कि लोगों को अल्लाहतआला के अहकाम बतलायें। उन्होंने कुर्आन व हदीस को अच्छी तरह समझ कर और जांच कर तमाम अहकाम लिख दिये ताकि लोगों को दीन के अहकाम क़यामत तक मालूम होते रहें और उस बरकत वाले ज़माने के बड़े-बड़े बज़ुर्ग आलिमों ने उनमें दीन की समझ और मज़बूती देखकर उनको पसंद किया और पेशवाई की सनद अता फ़रमायी कि सब लोग क़यामत तक उनके बतलाये हुए मसलों पर अमल करें। बस जिन लोगों ने हज़रत इमाम आज़म के मसलों पर अमल किया वो हनफ़ी कहलाये और जिन लोगों ने हज़रत इमाम शाफ़ेई के बतलाये हुए मसलों पर अमल किया वो शाफ़ेई कहलाये। इसी तरह मालिकी और हम्बली कहलाये और मशहूर हुए। इन चारों इमामों के बतलाये हुए मसलों पर अमल करना बिला शुबा कुर्आन व हदीस पर अमल करना है। इनके ख़िलाफ़ मसले और तरीक़े निकालने बद-दीनी हैं और इन चारों इमामों के मसलों पर चलने वालों को मुक़ल्लिद और एहले सुन्नत कहते हैं। हिन्दुस्तान में बहुत ज़्यादा लोग इमाम आज़म के मुक़ल्लिद हैं, उनको हनफ़ी कहते हैं।

## हज़रत इमाम आज़म के हालात शरीफ़ा

आप का इस्मशरीफ़ नौमान और कुनियत अबुहनीफ़ा और लक़ब इमाम आज़म है। नौशेखाँ जो मुल्क फ़ारस का बादशाह था, आप उसकी औलाद में से हैं। आपके वालिद का नाम साबित है। आप सन् 80 (अस्सी) हिजरी में पैदा हुए। यह वह ज़माना था कि रसूल अल्लाह (स०) के बाज़ असहाब उस वक़्त मौजूद थे। छोटी-सी उम्र में आपको दीन के इल्म पढ़ने का शौक़ हुआ और कुर्आन मजीद सात क़िरातों में पढ़ा और चार हज़ार आलिमों से कुर्आन व हदीस का इल्म पढ़ा। आपके उस्ताद बड़े-बड़े बुज़ुर्ग और परहेज़गार थे। आप के शागिर्द भी बड़े-बड़े आलिम और बुज़ुर्ग हुए, जैसे हज़रत इमाम यूसुफ़ और हज़रत इमाम मौहम्मद और हज़रत फ़ज़ील बिन अयाज़ और हज़रत इब्राहीम बिन अधम और हज़रत बशर हानी रह० और हज़रत दाऊद तमाई रह०। हज़रत इमाम आज़म की सबसे बड़ी बुज़ुर्गी यह है कि आपने इमामउल अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) के कई असहाबों की ज़ियारत की है और जिस शख़्स ने मुसलमान होने की हालत में हज़ूर पुरनूर के असहाबों को देखा उसको ताबेईन कहते हैं और ताबेईन के बारे में हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जिसने मेरे देखने वाले मुसलमान यानी सहाबो को देखा, वह दोज़ख़ में नहीं जायेगा। तो आपको ताबेईन होने की बुज़ुर्गी भी हासिल है।

रोशनी हाथों में देदी है तेरे
राह सीधी आप तू अब देख ले

**पेशीनगोई—** बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ में लिखा है कि रसूल (स०) ने फ़रमाया कि मुल्क फ़ारस में अल्लाह का एक ऐसा बन्दा होगा कि अगर इल्म आसमान पर भी हो तो वह इल्म को आसमान पर से उतार लायेगा और इल्म को हासिल करेगा। यह पेशीनगोई इमाम आज़म के लिए थी। क्योंकि मुल्क फ़ारस में आपके बराबर कोई आलिम नहीं हुआ, यह ख़ास बज़ुर्गी भी आपको हासिल है। आपकी परहेज़गारी और इबादत, आपकी वफ़ात के बाद हज़रत हसन बिन अमाद जो उस वक़्त बहुत बड़े बज़ुर्ग थे, आपको ग़ुस्ल देते वक़्त उन्होंने फ़रमाया कि आप पर अल्लाह की रहमतें हों कि आप तीस बरस से हमेशा रोज़ा रखते रहे और चालीस बरस इशा की वज़ू से आपने सुबह की नमाज़ पढ़ी और सारी-सारी रात नफ़ल नमाज़ों में क़ुर्आन पढ़ा और अपनी वफ़ात की जगह आपने एक हज़ार क़ुर्आन ख़त्म किये। दोपहर को कुछ थोड़ा सा आराम करते थे बाक़ी हर वक़्त इल्म के पढ़ाने में लगे रहते थे। आपने पचपन हज किये। हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) फरमाते थे कि मैंने अबुहनीफ़ा से ज़्यादा किसी का इल्म न पाया और जिसने आपकी किताबें नहीं देखी, उसको इल्म में कमाल हारिल न हुआ। आपकी परहेज़गारी का यह हाल था कि जिस पर आपका क़र्ज़ होता, आप उसकी दीवार के साये में खड़े न होते थे कि सूद लेने का गुनाह न हो जाये।

**करामात—** आपकी बहुत सी करामतें हैं। यहाँ बरकत के लिए एक ही करामत लिखी जाती है। एक दफ़ा आप हज़ूर (स०) के रोज़ा-ए-अनवर पर हाज़िर हुए और आपने आवाज़ से फ़रमाया "अस्सलामो अलैका या सैय्यदुलमुरसलीन', उस वक़्त रोज़ा-ए-अनवर से जवाब आया "वअलैकुम अस्सलाम या इमामुल मुसलेमीन"। उस वक़्त हज़ारों आदमी वहाँ मौजूद थे। सबने ये जवाबे मुबारक सुना और उस वक़्त से आपकी इज़्ज़त और शोहरत बढ़ गयी और तमाम दुनिया में इमामे आज़म मशहूर हो गये और तमाम ज़मीन पर सब से ज़्यादा लोग आपके मुक़ल्लिद हो गये और आपके बतलाये हुए मसलों पर अमल करने लगे। अल्लाहतआला ने आपको आज़म बनाया, इमामे आज़म, मुसल्लये आज़म, मज़हबे आज़म, जमाअते आज़म।

## हज़रत इमामे आज़म की वफ़ात शरीफ़ा

सन् एक सौ पचास हिजरी में सत्तर साल की उम्र पाकर आपने वफ़ात पायी और अल्लाह व रसूल के हुकमों से बाग़े दीन को रोशन और सरसब्ज़ कर

दिया। आपकी वफ़ात शरीफ़ की ख़बर सुनकर लोग इस क़दर आ गये कि पाँच दफ़ा आपके जनाज़े पर नामज़ पढ़ी गयी, यहाँ तक कि पचास हज़ार नमाज़ियों ने आपके जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी, अल्लाहो अकबर ! आप अल्लाह तआला के कैसे मक़बूल और प्यारे बन्द थे। बग़दाद में एक बादशाह ने आपकी क़ब्र शरीफ़ पर गुम्बद बनवा दिया था और क़रीब ही एक मदरसा खुलवा दिया था। बग़दाद में यह पहला मदरसा था। अल्लाह तआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

# हज़रत इमाम शाफ़ेई के हालात शरीफ़ा

आप कुरैशी हैं और इस्मे शरीफ़ आपका मौहम्मद है और शाफ़ेई लक़ब है। सन् एक सौ पचास हिजरी मुक़ाम मना में मक्का शरीफ़ के क़रीब आपकी पैदाइश हुई और उसी साल में हज़रत इमाम आज़म (रह०) की वफ़ात शरीफ़ हुई। फिर हज़रत इमाम शाफ़ेई को मक्का शरीफ़ में लाया गया। आप सात बरस की उम्र में हाफिज़े क़ुर्आन हो गये थे और बहुत सी हदीसें भी याद कर ली थीं। फिर मक्का शरीफ़ से मदीना शरीफ़ में आकर हज़रत इमाम मालिक (रह०) से उनकी किताब मवत्ता पढ़ी और आप पद्रंह बरस की उम्र में पूरे आलिम हो गये। उस वक़्त के बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिमों ने आपकी इल्मी लियाक़त और दीन में मज़बूती देखकर आपको फ़तवे देने की इजाज़त दे दी और आपको दीन की ख़िदमत के लिए पसन्द फ़रमा लिया।

**करामत—** आपने जवान होने से पहले हज़ूर पुरनूर स० को ख़्वाब में देखा तो हुज़ूर ने फ़रमाया— ऐ लड़के ! आपने अर्ज़ किया लब्बैका या रसूल अल्लाह यानी हाज़िर हूँ मैं या रसूल अल्लाह। हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम किस क़ौम में से हो ? आपने अर्ज़ कि या रसूल अल्लाह, मैं कुरैशी हूँ। हुज़ूर ने फ़रमाया मेरे पास आओ और अपना मुँह खोलो।

हज़रत इमाम शाफ़ेई रह० फ़रमाते हैं कि मैंने पास जा कर अपना मुँह खोल दिया। हज़ूर ने अपना आबे दहन मेरे मुँह में डाला और फ़रमाया-अल्लाह तआला, तुम्हारे इल्म में तरक्क़ी और बरकत अता फ़रमाये।

आप फ़रमाते हैं कि उस ख़्वाब के बाद इल्म हदीस में मुझसे कोई ग़लती नहीं हुई। आप जब इल्म की पढ़ाई से फ़ारिग़ हुए तो हज़रत इमाम मालिक (रह०) से इजाज़त लेकर बग़दाद में गये। वहाँ के आलिमों को इम्तिहान दिया और सनद हासिल की। फिर मक्का शरीफ़ में तशरीफ़ ले आये। फिर बग़दाद में गये। फिर वहाँ से मिस्र में गये और वहाँ रहकर किताबें लिखीं और इल्म पढ़ाने में मशग़ूल हुए। चौदह किताबें असूल-ए-दीन में और सौ से ज़्यादा फ़रूआत

दीन में लिखी। हज़रत इमाम अहमद बिन हम्बल (रह०) तीन लाख हदीसों के हाफ़िज थे, फिर भी आपके शार्गिद हुए। एक दफ़ा लोगों ने हज़रत इमाम अहमद से कहा कि आप तो हदीसों के हाफ़िज हैं, फिर क्या वजह है कि एक जवान लड़के के शागिर्द हो गये और उसकी ताज़ीम करते हैं। फ़रमाया कि जितनी हदीसें मुझे याद हैं इमाम शाफ़ेई उनका मतलब समझते हैं। अगर वो न होते तो मैं इल्म के दरवाज़े पर ही पड़ा रहता। इल्मे फ़िक़ा का दरवाज़ा मुझपर उन ही की बरकत से खुला है। आपकी वफ़ात के बाद हज़रत इमाम अहमद चालीस बरस तक आपकी मग़फ़रत के लिए दुआ करते रहे।

एक दिन इमाम अहमद के साहबज़ादे ने पूछा कि शाफ़ई कौन थे, जिनके लिए आप दुआ माँगते रहते हैं। फ़रमाया इमाम शाफ़ेई दुनिया में आफ़ताब थे और खुदा के बन्दों के लिए अमन और आसानी का वसीला थे। सुबहानअल्लाह हज़रत इमाम शाफ़ेई भी कैसी मुबारक शान रखते थे। जुमे के दिन सन् दो सौ चार हिजरी में आपने वफ़ात पायी। रहमतें नाज़िल हों आप पर अल्लाह की।

# हज़रत इमाम मालिक के हालात शरीफ़ा

आप अपनी वालिदा साहिबा के पेट में दो बरस रहे और सन् पिच्चानवे हिजरी में पैदा हुए और चौरासी बरस की उम्र शरीफ़ पाकर इस दुनियाए फ़ानी को छोड़ा। आपको हदीसों के याद करने का बहुत शौक़ था और हज़ूर (स०) की सुन्नत के बड़े आशिक थे। सतरह बरस की उम्र में हदीसों का याद करना शुरू किया और बेशुमार हदीसों के आप हाफ़िज हो गये। हज़रत इमाम शाफेई (रह०) आप के शागिर्द हैं। आपने अपनी किताब मवत्ता में से एक-एक हज़ार हदीसें शागिर्दों को पढ़ायी और तमाम उम्र मदीना शरीफ़ में रहे। जब आप हदीस शरीफ़ पढ़ाने बैठते तो वज़ु करके खुशबू लगाते और फ़रमाते कि मेरा दिल इससे बहुत खुश होता है कि रसूल अल्लाह की हदीसों की ख़ूब ताज़ीम करूँ।

सुबहानअल्लाह! आप भी अल्लाहतआला के मक़बूल और प्यारे बन्दे थे। अल्लाहतआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

# हज़रत इमाम अहमद्र के हालात शरीफ़ा

सन् एक सौ चौंसठ हिजरी शहर बग़दाद में आप पैदा हुए और सन् दो सौ इकतालीस में सतत्तर बरस की उम्र में आपने वफ़ात पायी। आप इल्म हदीस और फ़िका में यानी हदीसों का मतलब समझने में हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) शार्गिद हैं और आपके शार्गिद भी बड़े-बड़े दर्जे के आलिम और इमाम हुए जैसे इमाम बुख़ारी (रह०), इमाम मुस्लिम। आपकी दुआ बहुत जल्दी क़बूल होती थी।

हज़रत इमाम शाफ़ेई ने आपके बारे में फ़रमाया है कि मैंने बग़दाद में अहमद बिन हम्बल के बराबर परहेज़गारी और इल्मी लियाक़त में किसी को नहीं देखा। आपकी किताब मुसनद शरीफ़ इल्मे हदीस में बड़ी मौतबर और मशहूर है। इसमें तीस हज़ार से ज़्यादा हदीसें हैं।

**करामत—** हज़रत सिर्री सन्फ़ती (रह०) फ़रमाते हैं कि कूफ़े के हाकिम ने लोगों के वरग़लाने से आपको अपनी कचहरी में बुलाया और कहा तुम कुर्आन को मख़लूक़ कह दो। आपने जवाब दिया कि कुर्आन मजीद अल्लाह तआला का कलाम है। मैं इसको मख़लूक नहीं कह सकता। यह जवाब सुनकर हाकिम ने आपके हाथ पाँव बँधवाकर ऊपर लटकवा दिया और हुक्म दिया कि इसको कोड़े मारो। जब कोड़े लगने लगे तो आपका कमरबन्द खुल गया। उसी वक्त ग़ैब से दो हाथ ज़ाहिर हुए और कमरबन्द बाँध कर ग़ायब हो गये। आपकी यह करामत देख कर हाकिम काँप गया और आपको छोड़ दिया। जब आप छूट कर आये तो लोगों ने कहा—जिन लोगों ने आपको तकलीफ़ दी है उनके लिए बददुआ कीजिए। आपने फ़रमाया, मैंने उनको माफ़ किया। इसलिए कि वह मुझको ग़लती पर समझते थे।

**करामत—** आपकी वफ़ात शरीफ़ा जुमे के दिन चाश्त के वक़्त बग़दाद में हुई और अस्र की नमाज़ के बाद आपको दफ़न किया गया। जब आपका जनाज़ा लेकर चले तो हज़ारहा परिन्दे आपकी जुदाई में बेक़रार होकर आपके जनाज़े पर उड़-उड़ कर गिरते थे। यह करामत देखकर चालीस हज़ार आदमी मुसलमान हो गये। लिखा है कि आपकी वफ़ात के बाद किसी बज़ुर्ग ने आपको ख़्वाब में देखा और दरयाफ़्त किया कि हज़रत बतलाइए अल्लाह तआला के यहाँ कैसी गुज़री। फ़रमाया मेरे रब ने मुझको बख़्श दिया और बुज़ुर्गी का ताज मेरे सर पर रखा और मुझसे फ़रमाया, ऐ अहमद ! ये बुज़ुर्गी का ताज उस मसले की बदौलत तुमको दिया गया है कि तुमने हमारे कलाम को मख़लूक़ नहीं कहा था और तकलीफ़ बर्दाशत की थी। अल्लाहो अकबर ! आप भी बड़ी शान के इमाम थे। अल्लाहतआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

## हज़रत इमाम यूसुफ़ (रह०) के हालात शरीफ़ा

आप हज़रत इमाम आज़म (रह०) के शागिर्द हैं। आप तीन बादशाहों के यहाँ :— भी रहे हैं। आप दिन-रात दीन की ख़िदमत में लगे रहते थे लेकिन फिर भी दिन-रात में अलावा फ़र्ज़ नमाज़ों के दो सौ रकअत नमाज़ नफ़िल पढ़ते थे। कुर्आन मजीद की तफ़सीर के आप हाफ़िज थे। सन् एक सौ अस्सी हिजरी

में आपने वफ़ात पायी। सुबहानअल्लाह ! आप भी बड़ी शाने अज़ीम रखते थे। अल्लाह तआला आप पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमाये।

## हज़रत इमाम मौहम्मद के हालात शरीफ़ा

आप भी हज़रत इमाम आज़म (रह०) के शागिर्द हैं। आप क़ुर्आन व हदीस के इल्म में इतना बड़ा दर्जा रखते थे कि हज़रत इमाम शाफ़ेई आप के शार्गिद हैं। आपके और भी शार्गिद बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिम हुए। नौ सौ निन्नानवे किताबें दीन की ख़िदमत में आपने लिखीं। सन् एक सौ अस्सी हिजरी में आपने वफ़ात पाई। सुबहान अल्लाह ! आप भी बड़ी शान के इमाम थे।

## हज़रत इमाम बुख़ारी (रह०) के हालात शरीफ़ा

आप जुमे के दिन तेरह शव्वाल एक सौ चौरानवे हिजरी में नाबीना ही पैदा हुए। आपकी वालिदा को बहुत ग़म रहता था, और दुआ करती रहती थीं। हज़रत इब्राहीम (अ०) उनको ख़्वाब में नज़र आये और फ़रमाया—बेटी, तुम्हारे बेटे की आँखें दरूस्त हो गयीं। अल्लाहतआला को तुम्हारा रोना और दुआ करना बहुत पसन्द आया। जब आप सुबह को उठे तो आँखों को दरूस्त पाया। आपकी वालिदा को निहायत मुसर्रत हुई। फिर दस बरस की उम्र में आपको इल्म पढ़ने का शौक़ पैदा हुआ। जिस जगह क़ुर्आन व हदीस का इल्म सुनते, वहाँ जाकर इल्म हासिल करते। यहाँ तक कि आप बहुत बड़े दर्जे के आलिम और फ़ाज़िल हो गये और उस्तादों से इम्तेहान देकर सनदें हासिल कीं, फिर अपने भाई और वालिदा के साथ हज को गये और वहीं रहने लगे और छः लाख हदीसों में से ख़ूब सोच समझ कर अपनी किताब बुख़ारी शरीफ़ लिखी। क़ुर्आन मजीद के बाद आलिमों के नज़दीक बुख़ारी शरीफ़ इल्म हदीस में सब किताबों से बड़ा दर्जा रखती है और बड़ी मौतबर और मशहूर है। समरक़न्द के क़रीब सन् दो सौ हिज़री के अन्दर एक गाँव में बासठ बरस की उम्र में आपने वफ़ात पायी। सुबहान अल्लाह ! आप भी बड़े दर्जे के इमाम थे। रहमतें हों अल्लाहतआला की आप पर।

## हज़रत इमाम मुस्लिम के हालात शरीफ़ा

आप नेशापुर के रहने वाले हैं। सन् दो सौ हिजरी में आप पैदा हुए। आपने बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिमो से इल्म हासिल किया और इम्तेहानों में पास होकर सनदें हासिल कीं। इल्म से फ़ारिग़ होकर आपने अपनी किताब मुस्लिम शरीफ़ लिखी। बुख़ारी शरीफ़ के बाद उल्मा के नज़दीक इल्म हदीस में इसका बड़ा दर्जा

है और बड़ी मौतबर और मशहूर है। सत्तावन बरस की उम्र पाकर आपने वफ़ात पायी। इन्नालिल्लाह!

सुबहान अल्लाह! कितनी बड़ी शान के आप इमाम थे। रहमतें हो आप पर अल्लाह तआला की।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो! इस आजिज़ ने एक नमूने के तौर पर ये हालात इमामों के लिखे हैं वरना उन हज़रात की शाने अज़ीम में किताबें भरी पड़ी हैं। ग़ौर से देखोगे, समझोगे तो ज़रूर मालूम हो जायेगा कि उस मुबारक ज़माने के बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिमों ने उन इमामों को पढ़ाया और दीन में उन की समझ और मज़बूती देख कर उनको सनदें दीं और दीन की ख़िदमत उनके सपुर्द की और उनको इमाम और पेशवा बनाया। आजकल की तरह दज्जालपन नहीं था कि कुछ सर्फ़ व नहव और दो-चार किताबें अरबी की पढ़कर खुद ही अल्लामा और मुजतहिद बन गये और दीन की बातों में राय देने लगे। इसकी ऐसी मिसाल है जैसे कोई आदमी सूरा-ए अख़लास ज़ुबानी याद करके दावा कर दे कि मैं भी हाफ़िज़े क़ुर्आन हूँ या कोई दो-चार नुस्ख़े याद करके कहे कि मैं भी हकीम हूँ, सरासर ग़लत है। किसी ने सच कहा है कि नीम मुल्ला ख़तराए ईमां और नीम हकीम ख़तराए जान। ख़ूब याद रखो जब तक किसी शख़्स को उल्माए हक़्क़ानी पसन्द न करें, वह इस क़ाबिल नहीं कि दीन की बातों में उसकी राय पर अमल किया जाये। ऐसे ही बेइल्म और जाहिल लोगों की वजह से मुसलमानों में फिरक़े चले जाते हैं और झगड़े-फ़साद होते रहते हैं।

## इमामों की तक़लीद का मसला

अज़ हकीमुलउम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली साहब थानवी (रह०) चिश्ती हनफ़ी— यह ख़याल बिल्कुल ग़लत है कि बाज़ उलज़ूम सीना बसीना हैं। हाँ यह ज़रूर है कि बाज़ उलूम फ़हमे आली से समझ में आते हैं। अक़ल मुतवस्सित या अदना उनके समझने के लिए काफ़ी नहीं। इसी वास्ते इत्तबाहे मुजतहेदीन के कलाम को समझने के लिए हर ज़माने में उल्माए मुत्तक़ीन का इत्तबाह ज़रूरी है क्योंकि मुजतहेदीन (यानी इमामों) के कलाम को भी हर शख़्स नहीं समझ सकता। साहिबो अगर दीन संभालना चाहते हो तो हर मुसलमान को इस की ज़रूरत है कि किसी मुत्तक़ी आलिम का इत्तबा करे। इसके बग़ैर काम नहीं चल सकता मगर इस इत्तबा से यह लाज़िम नहीं आता कि हम लोग इस्तक़लालन फ़क़हा (यानी इमामो) का इत्तबाह करते हैं, बल्कि इस्तक़लालन रसूल अल्लाह (स०) ही का इत्तबाह करते हैं। मगर हमको आपका मतलब फ़क़हा (यानी

इमामो) के बयान फ़रमाने से मालूम हुआ कि हज़ूर स० का यह मतलब है।

## उल्मा-ए-बाअमल की बज़ुर्गी

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह ने اَلْعُلَمَاءُ وَرَثَةُ الْاَنْبِيَاءِ यानी जो आलिम बाअमल हैं और दीन की अशाअत और ख़िदमत और अहलेदीन की रूहानी तर्बियत करते हैं कि यही काम था अम्बिया अल्लैहिस्सलाम का वर्ना बेअमल आलिमों की सख़्त पकड़ भी आयी है। जो आलिम इल्म पर अमल करता है, खुदाए तआला के ख़ौफ़ से परहेज़गारी अख़्तियार करता है, उसके बारे में रसूल अल्लाह स० ने फ़रमाया है कि आलिम के लिए तमाम मख़लूक़ ज़मीन व आसमान की और पानी में मछलियाँ उसकी बख़्शीश की दुआ करती हैं और आलिम की बुज़ुर्गी आबिद पर ऐसी है जैसे चौदहवीं रात के चाँद की बुज़ुर्गी तारों पर और आलिम लोग वारिस हैं अम्बिया के और अम्बिया ने माल व दौलत मीरास में नहीं छोड़ा, सिर्फ़ इल्म को मीरास में छोड़ा है। सौ जिसने इल्म हासिल किया और फिर उस पर अमल भी किया, उसने पूरा हिस्सा यानी कमाल हासिल किया। (तिर्मिज़ी)

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो! इस हदीस शरीफ़ में इल्मेदीन हासिल करने की बुज़ुर्गी मालूम हुई कि इल्मे दीन पढ़कर आलिम बन सकते हैं। अगर यह दौलत इल्म की नसीब न हो तो उल्मा बाअमल की सोहबत में बैठा करो। दीन के मसले उन से पूछा करो। इन्शाअल्लाह तआला उनकी सोहबत की बरकत से तुमको भी दीन का ज़रूरी इल्म हासिल हो जायेगा। देखो सहाबा रज़ी० अकसर ऐसे थे जो लिखना पढ़ना नहीं जानते थे, मगर सैयदुलउल्मा (स०) की सोहबत और बरकत से सब आलिम हो गये और ख़ूब याद रखो कि बग़ैर इल्म के इबादत भी सही नहीं हो सकती।

## मौलवी किसको कहते हैं?

जानना चाहिए कि सिर्फ़ अरबी पढ़ने से आदमी मौलवी नहीं होता। चाहे वह कितनी ही अरबी जानता हो। अरबी में तक़रीर भी कर लेता हो, तहरीर भी लिख लेता हो। देखो अरबी जानने वाला अबुजहल भी था। बल्कि वह आजकल के अरबी पढ़े हुए से ज़्यादा अरबी जानता था तो फिर वह तो बहुत ही बड़े दर्जे का मौलवी होना चाहिए। हालाँकि इतनी अरबी जानने के बावजूद उसका नाम अबुजहल हुआ। तो सिर्फ़ अरबी जानने का नाम आलिम या मौलवी नहीं है। बल्कि मौलवी उस अरबी जानने वाले आलिम को कहते हैं जो मुत्तक़ी, परहेज़गार हो और मोहसिन-ए-आज़म हज़ूर स० के तरीक़े पर अमल करता हो। आपकी

सुन्नत का आशिक़ हो। क्योंकि मौलवी में निसबत और तआल्लुक़ है। मौला की तरफ़ यानी मौला वाला। बस जब तक वह अल्लाह वाला है, उस वक़्त तक मौलवी है और क़ाबिले इत्तबा है और जब उसने रंग बदला, उसी वक़्त से वह मौलवी नहीं रहा और वह इस क़ाबिल न रहा कि उसका इत्तबा किया जाये, बल्कि ऐसे गुमराह शख़्स को छोड़ दिया जायेगा चाहे वह सारी दुनिया के लोगों से ज़्यादा अरबी जानता हो। ख़ूब समझ लो चाहे वह ख़ुदा बनता हो, नबूवत का दावा करता हो, दीन में नयी-नयी बातें निकालता हो, मरदूद है।

## बैअत करना सुन्नत है

हज़रत औफ़-बिन-मालिक अशजई रज़ी० से रिवायत है कि हम लोग रसूल अल्लाह (स०) की ख़िदमत में सात या आठ आदमी थे। आपने फ़रमाया कि तुम रसूल अल्लाह से बैअत नहीं करते ? हमने अपने हाथ फैलाये और अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह हम किस हुक्म पर आपकी बैअत करें। आपने फ़रमाया कि उन हुक्मों पर कि अल्लाह तआला की इबादत करो और उसके साथ किसी को शरीक न करो और पाँचों वक़्त की नमाज़ पाबन्दी से पढ़ो और अल्लाहतआला के अहकाम सुनो और मानो और एक बात आहिस्ता से फ़रमायी, वह यह कि लोगों से कोई चीज़ न माँगो। हज़रत औफ़ कहते हैं कि मैंने उन हज़रात में से बाज़ की यह हालत देखी है कि अगर इत्तेफ़ाक़ से किसी का कोड़ा गिर पड़ा है तो वह भी किसी से नहीं माँगा कि उठाकर उनको दे दे। (मुस्लिम शरीफ़)

**फायदा— बैअत व तरीक़त और इस्लाहे आमाल का मसला**—हज़रात सूफ़िया-ए-इकराम में जो बैअत का मामूल है, जिसका हासिल माहेदा इल्तज़ाम, अहकाम और अहतमाम, आमाले ज़ाहिरी व बातिनी का है, जिसको उनके उर्फ़ में बैअत और तरीक़त कहते हैं, बाज़ अहले ज़ाहिर इसको इस बिना पर बिदअत कहते हैं कि हज़ूर (स०) से मनकूल नहीं, सिर्फ़ काफ़िरों को बैअते इस्लाम, और मुसलमानों को बैअते जहाद करना मामूल था। मगर इस हदीस शरीफ़ में इसका बिलकुल सबूत है कि यह मुख़ातिबीन चूँकि सहाबा हैं इसलिए यह बैअते इस्लाम यक़ीनन नहीं और मज़मून बैअत ज़ाहिर है कि बैअत जहाद भी नहीं बल्कि बदलालत अलफ़ाज़ मालूम होता है कि इल्तज़ाम और अहतमाम आमाल के लिए हैं। बस मक़सूद साबित हो गया। (अज़ मौलाना अशरफ़ अली थानवी रह०)

## मशाइख़ यानी पीरों का तरीक़ा कैसा है ?

जैसे हज़रत इमाम आज़म और हज़रत इमाम शाफ़ेई और हज़रत इमाम

मालिक और हज़रत इमाम अहमद रह० कुर्आन व हदीस का हुक्म और मतलब बतलाने वाले थे, उसी तरह नफ़स के सँवारने वाले और अल्लाहतआला की याद के तरीक़े बतलाने वाले और कुर्आन व हदीस पर अमल कराने वाले मशाइख़ यानी पीरान-ए-अज़ाम थे। उन्होंने अपने दिल की रोशनी से समझकर अल्लाह और रसूल की मौहब्बत और अताअत में दुनिया से तशरीफ़ ले गये। मशाइख़ बहुत हुए मगर उनमें से चार बहुत मशहूर हैं—

1. हज़रत शाह अब्दुलक़ादिर जीलानी 2. हज़रत शाह मोइनउद्दीन अजमेरी 3. हज़रत शाह बहाउद्दीन नक़्शबन्दी 4. हज़रत शाह शाहबुद्दीन सहरवर्दी (रह०)।

इन चारों पीराने उज़्ज़ाम के सिलसिले और तरीक़े जारी हैं। इन पीरों के तरीक़े में मुरीद होकर अपने नफ़्स को सँवारने और अल्लाहतआला की याद और मौहब्बत दिल में बसावे। सुबहान अल्लाह! पीराने उज़्ज़ाम के तरीक़े नूर ही नूर हैं। देखो, बग़ैर पीर कामिल के आदमी सँवर नहीं सकता। जैसे बग़ैर उस्ताद के इल्म नहीं हासिल हो सकता, बल्कि कोई हुनर वग़ैरा भी बग़ैर उस्ताद कामिल के हासिल नहीं हो सकता। अगर अल्लाह को राज़ी करना चाहते हो तो उस्ताद कामिल यानी पीर का दामन पकड़ो। मौलाना रोम फ़रमाते हैं—

बे इनायात हक़ व ख़ासाने हक़
गर मलक बाशद सिया हस्तश वरक़

यानी बग़ैर खुदा की मेहरबानी और उसके प्यारे बन्दों की मेहरबानी के अगर कोई फ़रिश्ता भी हो जाये, तब भी उसका आमालनामा सियाह होगा। **बख़ोयम** ज़ी सपश राहे असीरज़, पीर जोयम पीर जोयम पीर पीर। यानी इस हक़ीक़त को पहचान लेने के बाद मैं आसमान का रास्ता न तलाश करूँगा, यानी बे रहबर के अल्लाह तआला के रास्ते में क़दम न रखूँगा। बस, अब तो पहले पीर तलाश करूँगा, पीर तलाश करूँगा, पीर तलाश करूँगा।

यक ज़माना सोहबते बाऔलिया
बेहतर अज़ सद साज़ ताअत बे रिया

यानी औलिया की एक वक़्त की सोहबत सैकड़ों बरस की इबादत से बेहतर है।

बे रफीक़े हर कि शुद दर राहे इश्क़
उम्र बगुज़िश्तो नशुद आगाहे इश्क़

यानी अल्लाह तआला की मौहब्बत के रास्ते में जिसने बग़ैर रहबर और रफ़ीक़ के क़दम रखा, उसकी उम्र तमाम हो गयी, मगर अल्लाह तआला की रज़ा हासिल न कर सका।

# वली किसको कहते हैं ?

मुसलमान जब ख़ूब इबादत करता है और बुरे कामों से बचता है और दुनिया की मौहब्बत छोड़ देता है और हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की ताबेदारी ख़ूब करता है तो वह अल्लाह का दोस्त और प्यारा हो जाता है। ऐसे शख़्स को वली कहते हैं। वली से कभी-कभी ऐसी बातें भी होने लगती हैं जो और लोगों से नहीं हो सकतीं। ऐसी बातों को करामत कहते हैं। अगर कोई शख़्स शरीअत के ख़िलाफ हो और उससे कोई ऐसी अजीब बात ज़ाहिर होती हो जो और लोगों से न हो सके तो वह जादू है या उसका कोई करतब या शोबदा है। ऐसे करतब और शोबदे तो काफ़िर जोगी वग़ैरा भी हासिल कर लेते हैं। ऐसा शख़्स वली नहीं हो सकता। वली लोगों को कभी-कभी बाज़ बातें भेद यानी ग़ैब की बातें जागते में या सोते में मालूम हो जाती हैं। ऐसी बातों को कशफ़ और इल्हाम कहते हैं। अगर वो बातें शरीअत के मुवाफ़िक़ हों तो अच्छी हैं, वरना शैतानी जाल है। ऐसी बातों को हरगिज़ न मानना चाहिए।

वली लोग दुनिया में अल्लाहतआला के बड़े मक़बूल और प्यारे बन्दे होते हैं। उनकी सोहबत में बैठना, उनसे मौहब्बत करना और उनकी इज़्ज़त और ख़िदमत करना और उनकी नसीहत पर अमल करना, अल्लाहतआला को राज़ी करना है और उनको तकलीफ़ देना और नाराज़ करना अल्लाहतआला के क़हर की निशानी है। वह ऐसी बरकत वाले बन्दे होते हैं कि उनकी बरकत से बारिश होती है। अल्लाहतआला का गुस्सा और अज़ाब टल जाता है। आफ़तें और मुश्किलें दूर हो जाती हैं। उनकी बरकत से दुआएँ क़बूल होती हैं। उनके देखने से ख़ुदा याद आ जाता है। ख़ूब याद रखो कि जो शख़्स शरीअत के ख़िलाफ हो, वह हरगिज़ वली नहीं हो सकता—

गरचे उड़ता हो हवा पर रात दिन
तर्क सुन्नत जो करे शैतान गिन

इस ज़माने में बहुत इन्सान हैं
आदमी की शक्ल में शैतान हैं

रात-दिन डूबे जहालत में रहें
अक़्ल से क़ुरआन के मानी कहें

नाम के मुरशिद बहुत गुमराह हैं
दीन के दुश्मन हैं वो बदराह हैं

छोड़कर मानी ए तफ़सीरो हदीस
जी में जो आता है कहते हैं ख़बीस

## कामिल पीर की पहचान

ख़ातिम उल अम्बिया हबीबे किबरिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) पर नबूवत खत्म हो चुकी। आपके बाद न नबी पैदा हुआ और न क़यामत तक पैदा होगा कि लोगों को खुदा की तरफ़ बुलाये और दीन का रास्ता बतलाये। लेकिन आपके तुफ़ैल और बरकत से आपकी उम्मत में आपकी ताबेदारी करने वाले उल्मा-ए-हक्क़ानी व सूफ़ियाए रब्बानी मौजूद रहे और कयामत तक मौजूद रहेंगे। जो अम्बिया (अ०) की तरह आपके हुक्मों के मुवाफ़िक़ लोगों को दीन का रास्ता बतलाते रहेंगे। अल्लाह तआला ने इस आलमे असबाब दुनिया में यही क़ायदा रखा है कि कोई दीन का या दुनिया का कमाल बग़ैर उस्ताद के हासिल नहीं हो सकता, फिर अल्लाहतआला को राज़ी करने का और नफ़्स को उसके हुक्मों पर चलाने का तरीक़ा बग़ैर उस्ताद यानी पीर के कैसे मालूम होगा।

हज़रत मौलाना रोम फ़रमाते हैं—

मौलवी हरगिज़ न शुद मौलाए रोम—ता ग़ुलामे शम्स तबरेज़ी न शुद। इसलिए कामिल पीर की पहचान लिखी जाती है कि अगर कोई खुदा का बन्दा या बन्दी यह चाहे कि कोई पीर कामिल मिले तो उससे खुदा को राज़ी करने का तरीक़ा सीखे, और उसके बतलाये हुए तरीक़े पर अमल करे कि खुदा राज़ी हो तो मुरीद होने से पहले पीर में यह निशानियाँ देख ले। कामिल पीर की ये सात निशानियाँ हैं—

1. उसको बक़दरे ज़रूरत दीन का इल्म हो 2. समझदार, आलिम लोग उसको पसन्द करते हों 3. जितना इल्म रखता हो, उस पर अमल करता हो 4. उसकी सोहबत में यह बरकत हो कि दिन-ब-दिन दुनिया में नफ़रत होने लगे और अल्लाह तआला से मौहब्बत बढ़ने लगे 5. समझदार दीनदार लोग उसको अच्छा समझते हों। अमीर और जाहिल लोगों के अच्छा समझने का कोई ऐतबार नहीं 6. वह किसी कामिल और सच्चे बुज़ुर्ग का इजाज़तयाफ़्ता हो। उसने मुरीद करने की इजाज़त दी हो 7. उसके मुरीदों में ज़्यादा की हालत अच्छी हो, यानी दीनदार ज़्यादा हों और वह अपने मुरीदों को ख़िलाफ़े शरह बातों पर रोक-टोक भी करता हो।

बस जिस बुज़ुर्ग में यह निशानियाँ मालूम हों, वह कामिल पीर है। उसके मुरीद हो जाओ और खूब दिल जमा कर उसके कहने पर अमल करो, चाहे दिल

को कितनी ही तकलीफ़ हो और उसको किसी तरह की तकलीफ़ मत दो। उसका दिल खुश रखो। बस जो उसकी मर्ज़ी हो वह करो। अपनी मर्ज़ी को छोड़ दो। कुछ दिनों मशक़्क़त और मेहनत होगी, फिर राहत ही राहत है।

राहे सुन्नत पर जो चलता हो मदाम
यादे हक़ से रात दिन रखता हो काम

उसकी सोहबत में ख़ुदा होता हो याद
जुज़ ख़ुदा उस की न हो क़ोई मुराद

फ़ैजे हक़ से जिसका दिल मामूर हो
मुरशिद अपना कर तू ऐसे पीर को

उस की बातों में सरासर नूर हो
याद रख इस नुस्ख़ए अकसीर को

उसकी ख़िदमत कर बजानो दिलक़बूल
फैजे हक़ कर उसके सीने से हसूल

ख़िदमती महरूम कभी जाता नहीं
बे किये खिदमत कोई कुछ पाता नहीं

जिसने की खिदमत हुआ मख़दूम वो
की ख़ुदी जिसने हुआ महरूम वो

## अल्लाहतआला को याद करने की बुज़ुर्गी

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने فَاذْكُرُونِي أَذْكُرْكُمْ यानी ऐ बन्दो ! तुम मुझको याद करो मैं (अपनी मेहरबानी से) तुमको याद करूँगा।

**फायदा—** सुब्बहान अल्लाह ! बड़े खुशनसीब हैं वे मर्द और औरतें जो अल्लाह तआला की याद करते हैं। फिर अल्लाहतआला अपनी मेहरबानी से उनको याद करता है। सैयदउलज़ाकरीन हज़ूर (स०) से सहाबा ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह ! क़यामत के रोज़ अल्लाहतआला के नज़दीक कौन-सा बन्दा अफ़ज़ल और अकमल होगा। आपने फ़रमाया जो शख़्स अल्लाह को बहुत याद करता होगा और वह दुनिया में भी और आख़िरत में भी अल्लाहतआला के नज़दीक सबसे अफ़ज़ल और अकमल होगा। फिर सहाबा ने अर्ज़ किया या रसूल अल्लाह ! जो शख़्स अल्लाह तआला की राह में काफ़िरों से जिहाद करे यानि लड़े, क्या अल्लाह तआला की याद करने वाला उससे भी अफ़ज़ल और अकमल है। आपने

फ़रमाया कि अगर कोई शख़्स काफ़िरों और मुशरिकों के साथ इस क़दर तलवार मारे की तलवार टूट जावे और वह शख़्स जख़्मों की वजह से ख़ून में भी रंगा जावे, तब भी अल्लाह-तआला को याद करने वाला उससे अफ़जल और अकमल है। (तिर्मिज़ी शरीफ़)

**फायदा—** इसकी वजह क्या है कि अल्लाहतआला की याद करने वाला जिहाद करने वाले से भी अफ़ज़ल और अकमल है। वजह ज़ाहिर है कि जिहाद भी अल्लाह तआला ही की याद के लिए मुक़र्रर हुआ है। जैसे वज़ू नमाज़ के लिए मुक़र्रर है। बड़े अफ़सोस की बात है कि अल्लाहतआला का ज़िक्र पाक कितनी बड़ी नैमत है और हम इस नैमत से ग़ाफिल और बेपरवाह हैं और महरूम हैं, कि जिसमें न गिनती की क़ैद, न तस्बीह की, न बुलन्द आवाज़ से पढ़ने की, न वज़ू की, न क़िबले की तरफ़ मुँह करने की, न किसी ख़ास जगह की, न कारोबार छोड़ने की क़ैद, हर तरह अख़तियार है कि चलते-फिरते, उठते-बैठते हर वक़्त अल्लाह तआला का ज़िक्र। उसका नाम पाक पढ़ते रहें तो कोई मुश्किल बात नहीं। किसी ने खूब कहा है कि—

अल्लाह ही अल्लाह बोल तेरा क्या लगेगा मोल
अयाँ अल्लाह ही अल्लाह है निहाँ अल्लाह ही अल्लाह है।
यहाँ अल्लाह ही अल्लाह है वहाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

वो शीरी नाम है अल्लाह का जब उसको लेते हैं।
चिपक जाती है तालू से ज़बाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

गुज़रती है शहादत पंचगाना उसकी मस्जिद से।
न आये गर यकीं सुन लो अज़ाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

करो अल्लाह ही अल्लाह दम-ब-दम अल्लाह खुश होगा।
वहाँ रहमत बरसती है जहाँ अल्लाह ही अल्लाह है॥

मुसलमान भाइयो और दीन की बहिनो ! अल्लाहतआला की याद बहुत बड़ी नैअमत है। इसी से दुनिया और आख़िरत की इज़्ज़त है। खुदा की क़सम एक मर्तबा अल्लाह कहना दोनों जहान की नैअमतों से अफ़ज़ल है। वहाँ जो कुछ मिलेगा मरकर मालूम होगा। यहाँ दुनिया में भी वह हिलावत और लज़्ज़त इस नामे पाक में है कि सारी ज़मीन की बादशाहत भी इसके मुकाबले में गर्द है और अगर खुदा की याद न हो तो ख़ुदा की क़सम अगर सारी दुनिया की बादशाहत भी मिल जाये तो हरगिज़-हरगिज़ कामयाबी न होगी। यानी यहाँ दुनिया में भी राहत व चैन न होगी और न मरने के बाद राहत व आराम मिलेगा। बेशक

अल्लाह तआला की याद बहुत बड़ी नैमत है। इसकी बरकत से इन्सान को बड़े-बड़े दर्जे मिलते हैं अल्लाहतआला का प्यारा और वली हो जाता है। देखो हज़रत शाह मोईनुद्दीन अजमेरी (रह०) की जब वफ़ात का वक़्त करीब आया तो रात को उस वक़्त के वलियों ने हुज़ूर (स०) को ख़्वाब में देखा। हुज़ूर ने सबसे फ़रमाया कि अल्लाह के दोस्त मोइनुद्दीन दुनिया से आने वाले हैं। आओ उनकी पेशवाई और ताज़ीम के लिए चलें और जब आपकी वफ़ात हो गयी तो खुद-ब-खुद अल्लाह तआला की कुदरत से आपकी पेशानी पर यह अलफ़ाज नूर से लिखे हुए लोगों ने देखे। मौत पायी अल्लाह के हबीब ने अल्लाह की मौहब्बत में और जब हज़रत शाह फ़रीदउद्दीन शकर गंज (रह०) ने वफ़ात पायी तो ग़ैब से आवाज़ आयी कि अल्लाह के दोस्त फ़रीद ने वफ़ात पायी और अपने महबूब के पास पहुँच गये। सुबहान अल्लाह ! क्या शाने अज़ीम है अल्लाहतआला को याद करने वालों की और अल्लाहतआला भी बड़ी क़द्र करते हैं अपने याद करने वालों की। सैय्यदुल ज़ाकरीन हज़ूर स० फ़रमाते हैं कि जब मुसलमान अल्लाहतआला की याद करने वाला मरता है तो जिस-जिस जगह उसने अल्लाह तआला का ज़िक्र किया था और नमाज़ पढ़ी थी उस ज़मीन और आसमान के टुकड़े उसकी मौहब्बत में रोते हैं।

अल्लाहतआला फ़रमाता है कि इसके मरने पर क्यों रोते हो? वह कहते हैं कि ऐ हमारे रब ! यह शख़्स हमको इसलिए प्यारा था कि जिस तरफ़ निकलता था आपका ज़िक्र करता था। सुबहान अल्लाह ! क्या शान व इज़्ज़त है अल्लाह तआला के ज़ाकरीन बन्दों की। उनका जीना, मरना, चलना, फ़िरना और सोना, जागना सब रहमतों से भरा हुआ है। मुसलमान भाइयो और बहिनो ! ख़ूब याद रखो, मरने के बाद क़ब्र में और आख़िरत के मुल्कों में जाना पड़ेगा। और वहाँ अल्लाह व रसूल की ताबेदारी का सिक्का चलेगा। उस वक़्त क़दर मालूम होगी कि अल्लाह तआला की याद और ताबेदारी कितनी बड़ी दौलत है। मरने के बाद हर आदमी यह तमन्ना करेगा कि कोई अज़ीज़ो अक़ारिब, यार दोस्त एक दफ़ा सुबहान अल्लाह या सूरा-ए-अख़लास पढ़कर सवाब पहुँचा दे। आज हम इस दुनिया की ज़िन्दगी में सुबहान अल्लाह या सुरा-ए-अख़लास हजारों दफ़ा पढ़ सकते हैं।

जो कि करना था किया तुमने न काम।
उम्र बातों में करी नाहक तमाम ॥

चिक़-चिक़, बक-बक में उम्रे अज़ीज़।
तुमन खोई रायगाँ ऐ पुर तमीज़ ॥

पर कभी तुमने न ज़िक्र उसका किया।
जिसने कि तुमको दिया ज़हनो ज़का॥

ज़िक्र में और फ़िक्र में ग़ैरों के आह।
जान और तन को किया नाहक़ तबाह॥

आख़िरत के काम से ग़ाफ़िल न हो।
दौलते दुनिया पे तू मायल न हो॥

कुछ न अपने रब की तुमने याद की।
उम्र अपनी मुफ़्त में बर्बाद की॥

देखे ले अच्छा सा रहबर ऐ अज़ीज़।
गर तुझे कुछ भी है अक़लो तमीज़॥

उस की ख़िदमत कर बजानो दिल क़बूल।
जिक्र हक़ कर उसके सीने से हसूल॥

पीरो मुरशिद ये मेरी गुफ़्तार हो।
गर अमल कर लो तो बेड़ा पार हो॥

मुसलमान भाइयो और बहिनो! अल्लाहतआला का नामे पाक बहुत ही बरकत वाला है और बहुत बड़े-बड़े असर रखता है। चौदह तबक़ के फ़रिश्ते भी उसकी तासीरें और बरकतें नहीं लिख सकते। बेशुमार लोग इसकी बरकत से अल्लाह तआला के प्यारे और दोस्त हो जाते हैं। यह आजिज़ एक हल्की-सी बरकत और तासीर अल्लाहतआला के नामे पाक की अर्ज़ करता है कि कोई मर्द या औरत नमाज़ रोज़े का पाबन्द होकर और हलाल रिज़्क़ खा कर बावज़ू किब्ले की तरफ मुँह करके जिस वक़्त भी रात या दिन में मौक़ा मिले, वक़्त मुक़र्ररा पर रोज़ाना पाँच हज़ार मर्तबा इस्म मुबारक यानी अल्लाह पढ़ा करेगा तो कुछ अरसे में रोशन ज़मीर और साहिबे कशफ़ हो जायेगा। अल्लाहतआला की मौहब्बत और इबादत में लज़्ज़त आया करेगी और महबूबे खुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की ज़ियारते मुबारक से मुशर्रफ़ हुआ करेगा और दुनिया में किसी का मौहताज न होगा और अल्लाह तआला की मदद उसके साथ होगी और ईमान के साथ दुनिया से उठाया जायेगा और अल्लाह के प्यारों में हो जायेगा।

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबु हरेरा (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह स० ने फ़रमाया कि बेशक अल्लाहतआला के फ़रिश्ते ज़मीन पर फिरते हैं और तलाश करते हैं अल्लाहतआला की याद करने

वालों को। बस जब उन लोगों को पाते हैं जो अल्लाहतआला को याद करते हैं तो एक दूसरे को आवाज़ देता है कि इधर आओ और वो फ़रिश्ते अल्लाहतआला को याद करने वालों को आसमान तक अपने परों के साये में ढक लेते हैं। जब वह ज़िक्र से फ़ारिग़ होते हैं तो फ़रिश्ते आसमान पर चढ़ जाते हैं। फिर अल्लाहतआला उनसे पूछता है। हालांकि वह जानता है कि ऐ फ़रिश्तो, तुम कहाँ से आये हो। वो कहते हैं कि हम तेरे उन बन्दों के पास से आये हैं जो ज़मीन पर हैं फिर अल्लाहतआला पूछता है हालाँकि वह जानता है कि मेरे बन्दे क्या कहते हैं। फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि तेरा ज़िक्र—

**"सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल-लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०"।**

कहते हैं। यानी तेरी पाकी बयान करते हैं। तारीफ़े और बड़ाई बयान करते हैं और तेरे सिवा किसी को इबादत के क़ाबिल नहीं समझते। तेरी तौहीद बयान करते हैं और तेरी मदद के सिवा किसी काम को अपने अख़्तियार में नहीं समझते। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि क्या उन्होंने मुझे देख लिया है? फ़रिश्ते कहते हैं कि ऐ रब! हमको तेरी क़सम है कि उन्होंने तुझे नहीं देखा। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि अगर वह मुझे देख लें तो उनका क्या हाल हो? फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर वह तुझे देख लें तो तेरी बहुत ज़्यादा इबादत और बड़ाई बयान करें। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है—मुझसे वह क्या चाहते हैं? फ़रिश्ते कहते हैं कि वह तुझसे जन्नत माँगते हैं। अल्लाहतआला फ़रमाता है, क्या उन्होंने जन्नत को देखा है? फ़रिश्ते कहते हैं—ऐ रब! तेरी क़सम उन्होंने जन्नत को नहीं देखा। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि अगर वह जन्नत को देख लें तो उनका क्या हाल हो ? फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर वह इसको देख लें तो इसके बहुत शौक़ीन बन जायें और इसको बहुत माँगें और इसके हासिल करने की बड़ी कोशिश करें। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि वह बचना किस चीज़ से चाहते हैं? फ़रिश्ते कहते हैं कि दोज़ख़ से बचना चाहते हैं। फ़रिश्ते कहते है ऐ रब! तेरी क़सम उन्होंने दोज़ख़ को नहीं देखा। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है कि अगर दोज़ख़ को देख लें तो उन का क्या हाल हो? फ़रिश्ते कहते हैं कि अगर वह दोज़ख़ को देख लें तो उससे बहुत डरें और दूर भागें। फिर फ़रिश्ते कहते हैं—ऐ परवरदिगार, वह तुझसे अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं। फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है—ऐ फ़रिश्तो, गवाह रहो कि हमने उनको माफ़ किया

और बख़्श दिया। फिर एक फ़रिश्ता कहता है—ऐ रब, उन बन्दों में एक बन्दा ऐसा भी था कि वह अपने किसी काम को जा रहा था और तेरे ज़िक्र से ग़ाफ़िल था, मगर रास्ते में तेरा ज़िक्र करने वालों के पास बैठ गया था। उसके लिए क्या हुक्म है। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि मेरे वह बन्दे जो मेरे ज़िक्र में लगे रहते हैं, ऐसे हैं कि उनके पास बैठने वाला भी हमारी रहमत से महरूम नहीं होता। उनकी सोहबत की बरकत से हमने उसको भी बख़्श दिया, अगरचे वह हमारे ज़िक्र से ग़ाफ़िल था। सुबहानअल्लाह !

इस हदीस शरीफ़ से कलमा तमजीद पढ़ने की और ज़िक्र करने वालों की और उनकी सोहबत में बैठने वालों की ख़ूबियाँ मालूम हुईं कि वह अल्लाह के नेक बन्दे दिन रात उसकी इबादत और याद में लगे रहते हैं और बहुत खुशनसीब हैं वह बन्दे जो जान और माल से अल्लाह वालों की ख़िदमत करते हैं और अच्छे से अच्छा सवाब पाते हैं। और याद रखो, ज़बान से अल्लाह का नाम लेना और उसकी हम्दो सना करना, क़ुर्आन मजीद पढ़ना, दरूद शरीफ़ पढ़ना या दिल से अल्लाह पाक का ध्यान रखना और उसकी नाफ़रमानी से बचना, नमाज़ पढ़ना वग़ैरा सब ज़िक्र में ही दाख़िल है और हर वक़्त उसको याद रखना तो जड़ है तमाम इबादत की, कि अपने मालिक और ख़ालिक के याद किये बग़ैर अताअत नहीं हो सकती। क्योंकि ज़िक्र से मौहब्बत होगी, फिर अताअत में आसानी हो जायेगी। देखो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि जब मुझको बन्दा याद करता है यानी मेरा ज़िक्र करता है तो मैं उसके साथ होता हूँ। बस वह अगर मुझे याद करता है अपने दिल में तो मैं भी उसको याद करता हूँ अपने दिल में खुफ़िया, कि फ़रिश्तों को भी ख़बर नहीं होती और अगर वह मुझे याद करता है जमाअत में तो भी उसको याद करता हूँ फ़रिश्तों की जमाअत में जो कि बेहतर है उनसे और अगर वह मेरे क़रीब आना चाहता है एक बालिश्त तो मैं उसके क़रीब आना चाहता हूँ एक हाथ और अगर वह मेरे क़रीब होने को एक हाथ बढ़ाता है तो मैं दोनों हाथों के फैलावो के बराबर बढ़ता हूँ और अगर वह मेरी तरफ़ आता है चल कर तो मैं उसकी तरफ़ आता हूँ दौड़ कर। यह मिसाल हमको समझाने के लिए है कि बन्दा अगर अल्लाह तआला की तरफ़ आने में ज़रा भी खयाल करता है तो अल्लाह तआला की रहमत और तवज्जह दो चन्द सहचन्द उस पर बरसती है कि वह रहीम है, करीम है। सिर्फ़ बन्दे की तलब देखना चाहता है और फिर अपने फ़ज़लो करम का मेहं बरसा देता है। मुसलमान भाइयो ! अल्लाह की याद में लग जाओ, ग़फ़लत को छोड़ दो—

तोशा-ए-आमाल अपना साथ लेकर जाओ जी।
कौन पीछे क़ब में भेजेगा सोचो तो सही॥

मोमिनो रहते हो क्यों बेफ़िक्र बेग़म बेख़बर।
एक सफ़र दरपेश है दूरो दराज़ो पुर ख़तर॥

पुलसरात अज़बस कि बारीको तवीलो तेज़ है।
उसके नीचे एक दरिया आग से लबरेज़ है॥

नेको बद आमाल तोले जायेंगे मीज़ान में।
होगा हिसाब ज़र्रा-ज़र्रा हश्र के मैदान में॥

# जिन और शैतान क्या बला हैं

अल्लाहतआला ने कुछ मख़लूक़ आग से पैदा करके हमारी नज़रों से उनको ढक दिया है। इनको जिन कहते हैं। वह हमको देखते हैं, हम उनको नहीं देख सकते। उनमें अच्छे और बुरे हर तरह के होते हैं। उनके औलाद भी होती हैं। उन सब में ज़्यादा मशहूर और शरीर शैतान है। उसका क़िस्सा यह है कि उसने आठ लाख बरस खुदा की इबादत की और आसमानो ज़मीन में एक बालिश्त भर कोई जगह ऐसी नहीं छोड़ी कि जहाँ उसने सजदा न किया हो। इस क़दर इबादत की वजह से उसका नाम फ़रिश्तों में अज़ाज़ील मशहूर हो गया था। जब अल्लाह तआला ने हज़रत आदम (अ०) को पैदा किया तो फ़रिश्तों को और शैतान को हुक्म दिया कि आदम को सजदा करें। सब फ़रिश्तों ने सजदा किया और शैतान ने बड़ाई और ग़रूर की वजह से सजदा न किया। अल्लाहतआला ने फ़रमाया कि ऐ इबलीस ! तूने हमारे हुक्म से आदम को सजदा न किया। शैतान ने कहा कि मैं आदम से अच्छा हूँ। मुझे तूने आग से पैदा किया है और आदम को एक सड़ी हुई मिट्टी से, फिर मैं इस हक़ीर व ज़लील को कैसे सजदा करता? अल्लाहतआला ने फ़रमाया—ऐ शैतान! तूने हमारी नाफ़रमानी की और तूने तकब्बुर किया। बस दूर हो जा हमसे और निकल जा हमारी जन्नत से कि तू काफ़िर हो गया। कयामत तक तुझ पर हमारी लानतें और फटकार हैं। शैतान बहुत खूबसूरत था, मगर उसी वक्त अल्लाह तआला की नाराज़गी और लानत का यह असर हुआ कि उसकी सूरत बदल गयी। आँखें उसकी छाती पर आ गयीं और लानत का तौक़ हमेशा के लिए गले में पड़ गया और नाम शैतान रक्खा गया। फिर शैतान ने कहा—ऐ रब ! मैं तो आदम की वजह से मारा ही गया। मुझको मोहलत दे कि मैं कयामत तक ज़िन्दा रहूँ। आदम और उसकी औलाद मुझे न देखे और मैं उनके ख़ून और गोश्त में घुस जाया करूँ। हुक्म हुआ—ये दरख़्वास्त तेरी

क़बूल की और तुझको मोहलत दी। शैतान ने कहा कि बस, अब मेरा काम बन गया, मुझे भी तेरी इज्ज़त की क़सम है कि आदम से और उसकी औलाद से बदला लूँगा और उनको तेरे हुक्मों से रोकूँगा मगर जो तेरे ताबेदार बन्दे होंगे वह मेरे मुक़रो फ़रेब में नहीं आयेंगे।

अल्लाहतआला ने फ़रमाया कि तू सच कहता है। ख़ूब सुन ले, हम भी सच कहते हैं। जो कोई तेरी ताबेदारी करेगा हम उसको और तुझको दोज़ख़ में डाल देंगे।

**फ़ायदा—** मुसलमानों ! इस क़िस्से से सबक़ हासिल करो। शैतान के मुक्र व फ़रेब से बचो। तकब्बुर और बड़ाई को छोड़ दो। अल्लाह व रसूल के हुक्मों पर चलो। बस इतना समझ लो कि जब अल्लाह व रसूल के ख़िलाफ कोई काम हो तो यह काम शैतान का है, बस उसको छोड़ दो और अगर वह ख़िलाफ़ काम कर लिया है तो अल्लाहतआला से माफी माँग लो। तौबा कर लो।

## हज़रत आदम का दुनिया में तशरीफ़ लाना

हज़रत आदम (अ०) जन्नत में आराम व ऐश से रहते थे। मगर आप अपने हमशक्ल साथी के न होने से उदास रहते थे। अल्लाहतआला ने हज़रत जिबराईल (अ०) को हुक्म दिया कि जब आदम सो जायें तो उनकी बायीं पसली इस तरह निकालो की उनको तकलीफ़ न हो। जब आप सो गये तो पसली निकाली गयी और अल्लाह तआला की कुदरत से उस पसली की हज़रत हव्वा (अ०) बन गयीं। अगर पसली निकालने में तकलीफ़ होती तो मर्द को अपनी बीवी से मौहब्बत न हुआ करती। हज़रत हव्वा में वह सब आदतें और ख़ूबियाँ मौजूद थीं कि जो औरतों में होती हैं। जैसे हुस्न व जमाल, शर्म व हया, मौहब्बत व उल्फ़त, सब्र व शुक्र वग़ैरा। हज़रत हव्वा को जन्नती लिबास पहनाकर और ख़ूब सजाकर हज़रत आदम के पास तख़्त पर बैठा दिया और उसी वक़्त हज़रत आदम भी जाग गये। आप हज़रत हव्वा को देखकर बहुत ख़ुश हुए और मौहब्बत के जोश में चाहा कि उनको लिपट जावें। अल्लाहतआला ने फ़रमाया—ऐ आदम! बिना निकाह किये इनको हाथ न लगाना। फिर आपने निकाह के लिए अर्ज़ की। अल्लाहतआला ने ख़ुतबा पढ़ा और फ़रिश्ते गवाह हुए और निकाह हो गया। हज़रत आदम ने अल्लाह तआला का इन अलफ़ाज में शुक्र अदा किया।

**"सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल-लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०"।**

फिर अल्लाहतआला का हुक्म हुआ—ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी हव्वा दोनों जन्नत में आराम से रहो और जो चाहो खाओ-पियो, मगर इस दरख़्त का फल मत खाइएगा। और सुन लो, शैतान तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है, तुम भी उसको दुश्मन समझो। उसके धोखे में न आना। आप ख़ूब आराम से जन्नत में रहने लगे और शैतान की तरफ़ से बेफ़िक्र हो गये कि वह तो दुनिया में है और हम जन्नत में हैं। वह यहाँ नहीं आ सकता। उधर शैतान ने इस बात पर कमर बाँध रक्खी थी कि आदम से नाफ़रमानी कराके उनको भी जन्नत से निकलवा दूँगा। उसने जन्नत में जाने की तदबीर की। शैतान अल्लाहतआला के तीन नाम जानता था। उनको पढ़कर आसमानों को तै करता हुआ जन्नत के क़रीब बैठ गया और फिर वह नाम पढ़ने शुरू किये। जन्नत की दीवार पर मोर बैठा था। उसने पूछा—तू कौन है? शैतान ने कहा—फ़रिश्ता हूँ और जन्नत में जाना चाहता हूँ, और जन्नत के दरवाज़े बन्द हैं। अगर तू मुझे किसी तरह जन्नत में ले जाये तो मैं तुझे ऐसा वज़ीफ़ा बता दूँगा जिसके पढ़ने से यह तीन बातें तुझे हासिल होंगी—1. तू कभी बूढ़ा न होगा। 2. हमेशा ज़िन्दा रहेगा। 3. हमेशा जन्नत ही में रहेगा।

मोर ने कहा कि आदम की वजह से कोई जन्नत में नहीं जा सकता और मोर ने यह सब बातें साँप को सुनायीं। साँप ने लालच में आकर जन्नत की मोरी से अपना सिर निकाला और शैतान से कहा कि वह वज़ीफ़ा मुझे बता दे, मैं तुझे जन्नत में ले जाऊँगा। शैतान ने कहा—पहले मुझे जन्नत में पहुँचा दे फिर बतलाऊँगा। साँप ने अपना मुँह खोला। शैतान झट से उसके मुँह में घुस गया और जन्नत में पहुँच गया। मोर और साँप से फिर बात भी न की और जन्नत में एक तरफ़ बैठकर रोने-पीटने लगा। हज़रत हव्वा ने पूछा—तू कौन है और क्यों रोता है? उसने कहा— फ़रिश्ता हूँ, तुम्हारे ग़म में रोता हूँ क्योंकि खुदा तुम दोनों को ज़रूर एक दिन जन्नत से निकालेगा और फिर तुम मुसीबत और तकलीफ़ में पड़ जाओगे। इसलिए खुदा ने तुमको इस दरख़्त का फल खाने से मना कर दिया है। खुदा की क़सम मैं तुम्हारा ख़ैरखुवाह हूँ। हमदर्दी से कहता हूँ कि अगर तुमने यह फल खा लिया तो हमेशा-हमेशा जन्नत में रहोगे, कभी निकाले न जाओगे। हज़रत हव्वा को उसके रोने और क़सम खाने से यक़ीन आ गया कि ऐसा कौन बेईमान होगा जो खुदा की झूठी क़सम खाये। मुक्र का रोना, झूठ बोलना, धोखा देना, झूठी कसम खाना, वादा ख़िलाफ़ी करना, कीना-कपट रखना, यानी जब मौक़ा मिलेगा बदला लूँगा और दूसरे को उजाड़ना, अल्लाहतआला से न डरना और हुक्म न मानना, हटधर्मी और ज़िद करना, यह सब गुनाह सब

से पहले शैतान ही ने किये। हज़रत हव्वा शैतान के मक्र व फ़रेब में आ गयीं और दरख़्त से तीन फल तोड़े। एक आपने खा लिया और दो हज़रत आदम के पास लायीं और कहा कि एक फल मैंने खा लिया और यह दो आप-खा लें। आपने फ़रमाया कि अल्लाहतआला ने इसके खाने से मना फ़रमाया है। कहा यह फ़रिश्ता खुदा की क़सम खाता है और हमारे ग़म में रोता है इससे ज़्यादा ग़मखुवार कौन होगा? अगर आप न खायेंगे तो इस फ़रिश्ते के कहने के मुवाफिक़ आप जन्नत में नहीं रहेंगे और मैं जन्नत में आपके बग़ैर कैसे रहूँगी। इन ही बातों में हज़रत आदम भी भूल गये और फल को मुँह में डाला ही था, हलक़ से नीचे भी नहीं उतरा था कि अल्लाहतआला का ग़ज़ब आ गया। जन्नत के कपड़े उतार कर दोनों को नंगा कर दिया। बदन छुपाने के लिए उस दरख़्त के पास पत्ते लेने जाते वह दरख़्त ऊँचा हो जाता और जन्नत की तमाम चीजों की तरफ़ से कहा जाता कि हमसे दूर हो जाओ, तुम अल्लाह तआला की नाफ़रमानी करके मुजरिम हो गये हो। आप ख़ौफ़, शर्म व हया की वजह से बेचैन हो गये।

जिबराईल (अ०) ने कहा—ऐ आदम! तुम अल्लाहतआला से माफ़ी माँगो। आपने यह दुआ माँगी—ऐ हमारे रब, हमने अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। हम माफ़ी चाहते हैं। अगर आप हमको माफ़ न करेंगे और रहम न फ़रमायेंगे तो टोटा पाने वालों में हो जायेंगे। हुक्म हुआ—ऐ आदम! हमने तुमको मना किया था कि इस दरख़्त का फल न खाना और यह भी बतला दिया था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है। उसके धोखे में न आना। अब इस नाफ़रमानी की सज़ा यह है कि तुम दोनों जन्नत से निकलो और दुनिया में जाओ और हज़रत जिबराईल को हुक्म हुआ कि आदम और हव्वा को साँप, मोर और शैतान नाफ़रमान को जन्नत से निकाल कर दुनिया में डाल दो।

हज़रत जिबराईल (अ०) ने उसी वक़्त सबको जन्नत से निकाला। हज़रत आदम को सरअन्दीप जो हिन्दुस्तान में एक जज़ीरा था, में डाला और हज़रत हव्वा को खुरासान में और मोर को सीसतान में और साँप को कोहे इसफ़हान में और शैतान को एक बड़े ख़ौफ़नाक पहाड़ में डाला। साँप बहुत खूबसूरत था, शैतान ज़ालिम की मदद करने और लालच करने से बदसूरत हो गया और पेट के बल चलता और ख़ाक छानता फिरता है। मोर की सूरत ही बदल गयी वह अपने पाँव देख कर रोता है। शैतान दुश्मने इन्सान को यह सज़ा मिली कि लानत का तौक़ गले में पड़ा, और जो लोग उसकी ताबेदारी करेंगे, आख़िरत में सबको दोज़ख़ की आग में झोंक दिया जायेगा। मुसलमानो, इस क़िस्से से सबक़ हासिल करो। अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानियों से बचो और शैतान के मक्र व फ़रेब में मत

आओ। किसी अल्लाह वाले की सोहबत अख़तियार करो। देखो, ग़ौर कर लो कि नाफ़रमानी कितनी बुरी चीज़ है।

## हज़रत आदम की तौबा का क़बूल होना

हज़रत आदम को जन्नत से निकालने का, दुनिया में आने का, अल्लाह तआला के नाराज़ होने का इस क़दर सदमा था कि शर्मिंदगी की वजह से सरे मुबारक झुकाये रखते थे और बहुत ही बेकरारी से रोते रहते थे। हर वक़्त यह कोशिश थी कि किस तरह मेरा क़सूर माफ़ हो जाये। लिखा है कि हज़रत आदम और हज़रत हव्वा तीन सौ बरस ऐसा रोये कि आँसुओं से नहरें बह गयीं। तमाम चरिंद-परिन्द पानी पीकर कहते थे कि सुबहान अल्लाह ! क्या उमदा और मीठा पानी है। आप उस वक़्त बहुत शर्मिन्दा होते और कहते कि हाय अफ़सोस ! मेरे क़सूर पर जानवर भी हँसते हैं। अल्लाह तआला की तरफ़ से जवाब मिलता—ऐ आदम ! यह जानवर सच कहते हैं, जो बन्दा हमारी नाफ़रमानी करके हमारे ख़ौफ़ से डरता है और शर्मिन्दा होकर रोता है तो हमारे नज़दीक उसके आँसू शहद से भी ज़्यादा मीठे होते हैं

मोहसिने आज़म हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि तीन क़िस्म की आँखें ऐसी हैं जिनको अल्लाहतआला दोज़ख़ में नहीं डालेगा— 1. वह आँखें जो अल्लाह-तआला के ख़ौफ़ और शर्मिन्दगी से रोयी होंगी— 2. वह आँखें जो गुनाहों की चीज़ों को न देखें। 3. वह आँखें जो फ़र्ज़ नमाज़ों के अलावा नींद छोड़कर तहज्जुद की नमाज़ में जागी होंगी।

लिखा है कि हज़रत हव्वा (अ०) भी इतना रोयीं कि उनके आँसुओं से मेंहदी और सुरमा पैदा हुआ और जो क़तरे समुद्र में गिरे उनसे मोती बने।

हज़रत आदम और हज़रत हव्वा की जुदाई को तीन सौ बरस गुज़र गये। वे एक-दूसरे की जुदाई में तड़फते थे कि अचानक हज़रत जिबराईल आपके पास आये और फ़रमाया कि आप हज अदा करें। आप अल्लाहतआला का यह हुक्म सुनते ही हज को चल दिये। जब अरफ़ात के मैदान में पहुँच गये तो आराम लेने को आप एक जगह बैठ गये। क्या देखते हैं कि जद्दे की तरफ से हज़रत हव्वा आ रही हैं। आप मौहब्बत के जोश में खड़े हो गये और दौड़ कर उनको लिपट गये। दोनों रोते-रोते बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़े। यह हाल देखकर फ़रिश्ते भी रो पड़े। उस वक़्त अल्लाहतआला की रहमत का दरिया जोश में आया और अल्लाहतआला की क़ुदरत से हज़रत आदम की नज़र आसमान की तरफ़ गयी तो क्या देखते हैं कि अरशे आज़म पर कलिमा तैयबा

"लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"

लिखा हुआ है। फिर आपने यह दुआ माँगी—ऐ मेरे रब, तेरे नाम के साथ जो यह नाम लिखा हुआ है, उसके तुफ़ैल से हमारा क़सूर माफ़ कर और हमको बख़्श दे। हज़रत जिबराईल उसी वक़्त अल्लाहतआला का सलाम लाये और कहा कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, ऐ आदम। अगर तुम जन्नत में ही मौहम्मद के तुफ़ैल से दुआ माँगते तो हम तुमको दुनिया में न भेजते और तुम्हारा क़सूर माफ़ कर देते। अब हम तुमसे खुश हैं। तुम्हारा क़सूर माफ़ किया, तुम्हारी तौबा क़बूल की और तुम्हारा मर्तबा पहले से ज़्यादा किया।

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰی ط

यानी फिर जब उन्होंने माफ़ी माँगी तो उनके रब ने ज़्यादा मक़बूल बना लिया और तौबा क़बूल की। उनको हमेशा अपनी ताबेदारी में रखा और फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि आदम हमारी बारगाह में एक अज़ीमुश्शान ज़रिया और तुफ़ैल लाये हैं, सब उनकी ताज़ीम करो। यह हुक्म सुनते ही हज़ार हा फ़रिश्तों ने आपकी ताज़ीम की और आपकी बदन मुबारक से गर्द व गुबार साफ़ करने लगे। (अज़्क़ससुलअम्बिया)

सुबहान अल्लाह ! अपने मालिक व ख़ालिक अपने खुदा के सामने शर्मिंदा होना, अपने क़सूरों की माफ़ी माँगना एक अजीब बूटी है और निहायत मुबारक ईलाज और अमल है और किस क़दर अज़ीमुश्शान वसीला और नामे मुबारक है हमारे आक़ाए नामदार महबूबे खुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) का।

महबूब है क्या सल्ले अला नामे मौहम्मद।
आँखों की ज़िया दिल की जिला नामे मौहम्मद॥

इस नाम की लज़्ज़त दिले उश्शाक़ से पूछो।
जान आ गयी तन में जो लिया नामे मौहम्मद॥

कुर्आन में जन्नत में और अरशे आज़म पर।
किस शान से अल्लाह ने लिखा नामे मौहम्मद॥

## हज़रत आदम (अ०) की वफ़ात शरीफ़

लिखा है कि जब हज़रत आदम (अ०) ने दरख़्त का फल खाया तो अल्लाहतआला ने फ़रमाया—ऐ आदम ! तुम्हारे क़सूर की यह सज़ा है कि दुनिया में जाओ और मेहनत करके रिज़्क़ हासिल करो। वहाँ तुमको और तुम्हारी औलाद को बिना मेहनत और तकलीफ़ उठाये रिज़क नहीं मिलेगा। आख़िर आप दुनिया

में पहुँच गये। आपने और हज़रत हव्वा (अ०) ने इस दुनिया के जेलख़ाने में हर क़िस्म की तकलीफ़ें उठायीं और अपनी ज़िन्दगी के दिन गुज़ारे। दुनिया के काम-काज के तरीक़े हज़रत जिबराईल ने अल्लाह तआला के हुक्म से सब सिखाये। खेती करना, अनाज बोना और निकालना, आटा बनाना, फिर गूँधना, आग जलाना, रोटी पकाना और खाना, फिर पेशाब-पाख़ाने की हाजित होना और उसके क़ायदे बतलाना, उसकी बदबू से आपको तकलीफ़ होना, कपड़ा तैयार करना, फिर उसको सी कर बदन ढाँकना, भूख और प्यास की तकलीफ़ उठाना वग़ैरा। आख़िर इस ग़म भरे और झूठे घर के छोड़ने का वक़्त आ गया।

इमामुल-अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) ने फ़रमाया कि जब हज़रत आदम (अ०) की उम्र आख़िर हुई तो उस वक़्त उनकी औलाद-दर-औलाद सब मिलाकर चालीस हज़ार आदमी हो गये थे। फिर आपने बोलना कम कर दिया। आपकी औलाद ने दरयाफ़्त किया कि आपने बातचीत करनी बिल्कुल छोड़ दी, क्या वजह है? फ़रमाया—बेटो! मैं एक क़सूर की वजह से जन्नत से निकाला गया कि जहाँ हर तरह का आराम था और इस दुनिया में डाला गया। इसमें राहत व आराम नहीं मिला और मेरी सारी उम्र इसी कोशिश में गुज़री कि किसी तरह फिर जन्नत में चला जाऊँ। अब मेरे रब ने मेरी मुराद को पूरा कर दिया और हुक्म फ़रमाया है कि बोलना कम कर दो, हमारी याद में लगे रहो और अपने घर जन्नत में जाओ। लिखा है कि जुमे के रोज़ हज़रत जिबराईल (अ०) कुछ फ़रिश्तों को लेकर आपके पास आये और अल्लाहतआला का सलाम पहुँचाया कि इतने में हज़रत इज़राईल (अ०) मलकुलमौत भी आ गये और आवाज़ दी। हज़रत हव्वा उनकी आवाज़ से डर गयीं और आपसे लिपटने लगीं। आपने फ़रमाया—ऐ हव्वा! जितनी तकलीफ़ मुझ पर आयी तुम्हारी वजह से आयी। अब मेरा आख़िरी दम है, इस वक़्त तो ज़रा अलग हो जाओ। मेरे और रब के दर्मियान रुकावट न डालो यह आवाज़ मलकुलमौत की है। अन्दर आने दो, डरो मत। फिर मलकुलमौत आ गये और आपकी रुहे मुबारक क़ब्ज़ की। हज़रत जिबरईल ने आपके बेटों को ग़ुस्ल करने का तरीक़ा बतलाया और आपको ग़ुस्ल दिया बेरी के पत्ते पानी में पकवा कर। फिर फ़रिश्ते जन्नती कपड़ों का कफ़न और ख़ुशबू लाये और नमाज़ के आज़ा पर ख़ुशबू लगायी गयी। फिर आपके जनाज़े को उठाकर काबे शरीफ़ में लाया गया। फ़रिश्ते मुक़तदी हुए। हज़रत जिबराईल इमाम बने और बुलन्द आवाज़ से चार तकबीरें कहकर नमाज़ से फ़ारिग़ हुए और क़ब्र में बग़ली बनवाकर उसमें आपको दफ़्न कर दिया। मस्जिदे ख़ैफ़ और मना के दर्मियान आपकी क़ब्र शरीफ़ है। रंग आपका गन्दुमी और क़द साठ

हाथ लम्बा और सात हाथ चौड़ा था। आपकी वफ़ात के बाद एक साल ज़िन्दा रह कर हज़रत हव्वा (अ०) ने भी इस दुनियाए फ़ानी को छोड़ा। उनकी क़ब्र शरीफ़ जद्दा में है। हज़रत आदम (अ०) की उम्र शरीफ़ एक हज़ार साल की हुई। **अललाहहो बाक़ी मिन कुल्ले फानी** (अज़ क़ससुल अम्बिया)

# जन्नत किस चीज़ का नाम है

जन्नत को अल्लाह तआला ने ईमानदार और ताबेदार बन्दों की आरामगाह बनाया है। कुर्आन व हदीस में उसकी नैमतों और ख़ूबियों का बहुत कुछ बयान है। कुछ बतौर नमूना लिखा जाता है—

पहले यह समझो कि जन्नत चीज़ क्या है। लुग़त में 'जन्नत' बाग़ को कहते हैं और बाग़ में फल भी होते हैं, साया भी होता है, दरख़्त और फूल भी होते हैं, फ़रहतबख़्श हवा भी होती है। पानी का इंतज़ाम भी अच्छा होता है। अब इसके साथ यह बात और मिला लो कि वह बाग़ ख़ुदाई बाग़ है। तो इससे मालूम हुआ कि वह मामूली बाग़ नहीं है। दुनिया में भी बादशाहों और अमीरों के बाग़ होते हैं। उनमें हर तरह का सामाने राहत भी बख़ूबी होता है और अजीब-अजीब चीज़ें भी होती हैं। किसी बादशाह के बाग़ में महलात वग़ैरा के अलावा अजायबख़ाना भी होता है। किसी के बाग़ में सैरगाहें भी होती हैं। तो अब समझो कि ख़ुदा का बाग़ कैसा आलीशान होगा, जिसके हासिल करने की ख़ुदा ने ताकीद भी फ़रमायी है। जन्नत कोई मामूली बाग़ नहीं है, बल्कि उसमें अजीबो ग़रीब सामान होंगे। जन्नत की नैमतें दुनिया की नैमतों से बहुत नफ़ीस हैं। जन्नत की नैमतों को हदीस शरीफ़ से मालूम करो। हदीस शरीफ़ में आया है कि हूरों के सर पर ऐसे नफ़ीस दुपट्टे हैं कि अगर उनका एक पल्ला दुनिया में लटक जाये तो चाँद और सूरज की रोशनी फीकी पड़ जाये। जन्नत की हूरें ऐसी ख़ूबसूरत और हसीन हैं कि सत्तर जोड़ों के नीचे से भी उनका बदन झलकता है। जन्नत की मिट्टी जवाहरात और मुश्क की है। हौज़े कौसर के पानी की यह तारीफ़ है कि जिसने उसमें एक दफ़ा पानी पी लिया उसको कभी प्यास न लगेगी और कमाल यह है कि बग़ैर प्यास के भी इसको पियेंगे तब भी उसमें मज़ा आयेगा। दुनिया के पानी में प्यास के वक़्त तो मज़ा आता है लेकिन बग़ैर प्यास के मज़ा नहीं आता। जन्नत के पानी की यह शान है कि एक दफ़ा पीकर उम्र भर के लिए प्यास की तकलीफ़ जाती रहेगी। जन्नत के पानी में बग़ैर प्यास के भी मज़ा आयेगा। बताओ दुनिया में ऐसा पानी कहाँ है जिससे प्यास न लगे और बग़ैर प्यास के भी उसमें मज़ा आये। इसी पर तमाम नैमतों को समझ लो कि जन्नत की नैमतों के सामने दुनिया की नैमतें क्या चीज़ हैं। साहिबो, जन्नत

की नैमतों से तो दुनिया की नैमतों को कुछ भी लगाव नहीं। देखो इस क़दर फ़र्क़ है कि यहाँ की तमाम ग़िज़ायें थोड़ी-सी देर मे बदबू, पाखाना बन जाती है, जिसकी बदबू से दिमाग़ परेशान हो जाता है। जन्नत में जितना चाहो खा लो। एक डकार ख़ुशबूदार आ जायेगी और सारा खाना हज़म हो जायेगा या ख़ुशबूदार पसीना आ जायेगा और सारा पानी हज़म हो जायेगा। वहाँ न पेशाब की तकलीफ़ और न पाख़ाने की, न हैज़े का अन्देशा न बदहज़मी का डर। वहाँ के आराम में तकलीफ़ का नाम भी नहीं। ग़रज़ कि जन्नत में हर वक़्त ख़ुशी ही रहेगी, ऐसी ख़ुशी कि दुनिया में उसका ख़्वाब भी न देखा होगा।

बस, ऐ मुसलमान भाइयो। अगर मरने के बाद क़ब्र में और आख़िरत में जन्नत के अन्दर ऐशो आराम से रहना चाहते हो, तो अल्लाहतआला और हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की ताबेदारी करो।

मौहम्मद-सा मख़लूक़ में कौन है,
उसी का तुफ़ैली है याँ जौन है।

मौहम्मद ख़ुलासा है कौनैन का,
मौहम्मद वसीला है दारैन का।

मौहम्मद की ताअत जहाँ पर है फ़र्ज़,
मौहम्मद की ताअत से जां दिल के मर्ज़।

मौहम्मद की ताअत कर आठो पहर,
कि ता जन्नत में हो जाये तेरा गुज़र।

मौहब्बत मौहम्मद की रख जान में
मौहम्मद-मौहम्मद कह हर आन में।

मौहम्मद की उल्फ़त और चाह से
मिलेगा तू इमदाद अल्लाह से।

## जन्नत कहाँ पर है

जन्नत आसमान पर है और उसके ऊपर-तले आठ दर्जे हैं और आठ ही दरवाज़े हैं यानी आठ जन्नतें हैं। इसकी खूबियाँ अक़्ल से बाहर हैं। जो अल्लाह का प्यारा इसमें दाख़िल हो गया फिर कभी निकाला न जायेगा। रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि अल्लाहतआला ने अपने ताबेदार बन्दों के लिए जन्नत में ऐसी नैमतें तैयार कर रखी हैं कि न किसी आँख ने देखी और न किसी कान ने सुनी, न किसी आदमी के दिल में उनका ख़याल गुज़रा। फ़रिश्ता ऐलान करेगा

कि ऐ जन्नतियों ! तुम्हारे लिए यह बात मुक़र्रर हो चुकी है कि तुम हमेशा तन्दुरुस्त और जवान हो रहोगे। कभी बूढ़े और कमज़ोर न होगे और न कभी मरोगे, हमेशा आराम से रहोगे, कभी कोई तकलीफ़ न देखोगे। (मुस्लिम शरीफ़)

## जन्नत में नहरें

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि हमने जिस जन्नत का वादा ताबेदार बन्दों से किया है उसकी यह हालत है कि उसमें बहुत-सी नहरें तो ऐसे पानी की हैं कि जिसमें ज़र्रा भर भी फ़र्क़ न होगा और बहुत-सी नहरें दूध की हैं जिनका ज़ायेका ज़र्रा भर भी बदला हुआ न होगा तथा बहुत-सी नहरें शराबे-पाक की हैं जो पीने वालों को मज़ेदार मालूम होंगी और बहुत-सी नहरें शहद की हैं जो बिल्कुल साफ़ सुथरा होगा और उनके लिए वहाँ क़िस्म-क़िस्म के मेवे होंगे। उनके रब की तरफ़ से उन पर बड़ी रहमत होगी।

तो ऐ इन्सान! क्या ऐसे लोग जो अल्लाहतआला के ताबेदार हैं उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा-हमेशा दोज़ख़ में रहेंगे। और नाफ़रमान बेईमानों को पकता हुआ पानी पीने के लिए दिया जायेगा। वह पानी अन्तड़ियों को काट कर टुकड़े-टुकड़े कर देगा। (सूराए मौहम्मद)

मुसलमान भाइयो और बहिनो ! ग़फ़लत छोड़ो, जन्नत हासिल करो और दोज़ख़ से बचने का सामान तैयार करो।

बहरे ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

रहगुज़र दुनिया है यह बस्ती नहीं,
जाये ऐशो इशरतो मस्ती नहीं।

यहाँ से जाना होगा तुझको एक दिन
कब्र में होगा ठिकाना एक दिन।

मुँह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन,
अब न ग़फ़लत में गँवाना एक दिन।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है।
कर ले जो करना है आख़िर मौत है॥

## जन्नत में हूरें और ख़ादिम

हुज़ूर पुरनूर (स०) फ़रमाते हैं कि जन्नत में सब से कम दर्जे के जन्नती

को अस्सी हज़ार ख़ादिम और बहत्तर हूरें मिलेंगी और सौ मर्दों के बराबर ताक़त मिलेगी। दुनिया की बीवियाँ हुस्न व जमाल में नमाज़ रोज़ा अदा करने की वजह से हूरों से अफ़ज़ल होंगी और जन्नत में औलाद पैदा न होगी और न कोई जन्नत में औलाद पैदा होने की ख़ुवाहिश करेगा। अगर कोई चाहे भी तो उसी वक़्त हमल रहकर बच्चा पैदा होगा और घड़ी भर में जवान हो जायेगा।

# जन्नत में औलाद से मिलना

रसूले खुदा स० फ़रमाते हैं कि जिन जन्नतियों की औलाद दुनिया में मर गयी होगी वह अपनी औलाद को याद करेंगे और कहेंगे कि ऐ हमारे रब, हमारे जिगर के टुकड़े कहाँ हैं? हमने उनको गोद में पाला था और वह बचपन ही में मर गये थे, आपको मालूम है कि हमने आपकी रज़ामन्दी के लिए सब्र किया था। अब हमको उनसे मिला दीजिए। उसी वक़्त बच्चे मिल जायेंगे। बच्चे अपने माँ-बाप से कहेंगे कि तुमने हमारे मरने पर सब्र किया था इसलिए हम तुमको मिल गये वरना हम तुमको न मिलते।

है दलील कुल्लेनफ़सिन सब फ़ना हो जायेंगे।
हम भी एक दिन राही ए मुल्के सक़ा हो जायेंगे॥

हाथ ख़ाली जायेंगे दुनिया से दौलत छोड़कर।
माल के मालिक अज़ीज़ो अक़रबा हो जायेंगे॥

पहलवाँ क्या कर रहे हैं जिस्म के आज़ा पे नाज़।
क़ब्र में कीड़े मकोड़ों की ग़िज़ा हो जायेंगे॥

हो गयी माँ-बाप से औलाद गर मर कर जुदा।
ख़ुल्द में ऐ दोस्तों सब एक जां हो जायेंगे॥

# जन्नत में फल और गोश्त

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने जन्नत वालों को, उनकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ मेवे मिला करेंगे और परिन्दों के गोश्त उनकी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ मिला करेगा और उनके लिए गोरी-गोरी बड़ी आँखों वाली औरतें यानी हूरें होंगी जिनको मोती की तरह बड़ी हिफ़ाज़त से रखा हुआ है। यह उनके उन अच्छे अमलों का बदला होगा जो वह दुनिया में करते थे। (सूर ए वाक़ेआ)

# जन्नत में अल्लाहतआला का दीदार

महबूबे खुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफा (स०) फ़रमाते हैं कि जन्नती लोग

जब जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे तो अल्लाहतआला फ़रमायेगा— ऐ जन्नती बन्दो तुम कुछ और ज़्यादा ईनाम चाहते हो। वह कहेंगे— ऐ परवरदिगार! आपने हमारे पहरों को रोशन कर दिया और हर तरह की नैमतें बख़्शीं और दोज़ख़ से निजात दी। अब तो यह ख़्वाहिश है कि हम आपको देखें। बस अल्लाहतआला पर्दा उठा देगा और सब जन्नती अल्लाहतआला के दीदार पुर अनवार से मुशर्रफ़ होंगे। अल्लाहतआला के दीदार में वह लज़्ज़त होगी कि जन्नती लोग जन्नत की तमाम नैमतों को उसके सामने हीच समझेंगे। जन्नत में सबसे बड़ी नैमत अल्लाहतआला का दीदारे मुबारक है। اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ شَوْقًا اِلٰی لِقَائِكَ

"ऐ अल्लाह! मैं माँगता हूँ तुझसे तेरे दीदार का शौक़"।

## दुआ

ऐ ख़ुदा ऐ मेरे सत्तारुल अयूब।
मेरे मौला मेरे ग़फ़फ़ारुल ज़नूब॥
ग़र्क़ बहरे मासियत हूँ सर बसर।
रहम कर मुझ पर इलाही रहम कर॥

सुन मेरे मौला मेरी फ़रियाद को।
आ मेरे मालिक मेरी इमदाद को॥
लाख टूटी नाव है मंझधार है।
ना ख़ुदा तू है तो बेड़ा पार है॥

क़ल्ब से धो दे मेरी हर गन्दगी।
हो अता पाकीज़ा अब तो ज़िन्दगी॥
दिल में तेरी याद लब पे तेरा नाम हो।
उम्र भर अब तो यही मेरा काम हो॥

याद में रख अपनी मुस्तग़रक़ मुझे।
हो न होशे मासिवा मुतलक़ मुझे॥
तुझपे रोशन हैं मेरे सारे अयूब।
जानता है तू मेरी हालत को ख़ूब॥

गो तेरे आगे ज़लीलो ख़्वार हूँ।
हश्र में रुसवा न ऐ सत्तार हूँ॥
दिल मेरा हो जाये एक मैदाने हू।
तू ही तू हो तू ही तू हो तू ही तू॥

तुझ से दम भर भी मुझे ग़फ़लत न हो।
तेरे ज़िक्र ओ फ़िक्र से फ़ुर्सत न हो॥
बहरे हक़ सैय्यदे ख़ैरुल बशर।
ख़ातमा कर दे मेरा ईमान पर॥

जिस घड़ी निकले बदन से मेरे जाँ।
कलमए तौहीद हो विरदे ज़बाँ॥
सैकड़ों को तू करेगा जन्नती।
एक यह नाअहल भी उन में सही॥

## दोज़ख़ क्या चीज़ है?

दोज़ख़ ख़ुदाई जेलख़ाना है। इसको ख़ुदा ने बेईमान और नाफ़रमान बन्दों की सज़ा के वास्ते बनाया है। उसमें हर क़िस्म के अज़ाब हैं। क़ुरआन व हदीस में उससे बहुत डराया गया है। उसमें साँप और बिच्छू और हथकड़ियाँ, ज़ंजीरें वग़ैरा सब आग की हैं और उसकी आग दुनिया की आग से ऐसी तेज़ है कि अगर वह सुई के सूराख़ के बराबर दुनिया में लायी जाये तो सारी दुनिया जल कर ख़ाक हो जाये। अगर उसको पहाड़ों पर रखा जाये तो सारे पहाड़ जल कर कोयला हो जायें और उसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं। उससे बचने की अल्लाह तआला ने बहुत ताकीद फ़रमायी है। इसलिए हर आदमी को चाहिए कि उससे बचने की कोशिश करे। अपनी औलाद और बीवी, अज़ीज़ व अक़रबा और मुसलमानों को बल्कि काफ़िरों को भी उससे बचाने की कोशिश करे। दीन का इल्म सीखे और अपनी औलाद को भी सिखा दे। आलिमों से दीन की बातें पूछ कर अमल करे, वरना दोज़ख़ के अज़ाब से बचना मुश्किल है।

## दोज़ख़ कहाँ पर है?

दोज़ख़ ज़मीन के नीचे है और इसके ऊपर-तले सात दर्जे हैं और सात ही दरवाज़े हैं। यह समझो कि सात दोज़ख़ हैं। हर क़िस्म के नाफ़रमानों की सज़ा के लिए दर्जा अलग-अलग है। उसके दरवाज़े इतने बड़े हैं कि एक दरवाज़े से दूसरे दरवाज़े तक सत्तर बरस की राह है और एक दोज़ख़ दूसरी दोज़ख़ से तेज़ी में सत्तर हिस्से ज़्यादा तेज़ है और गहराई इतनी है कि अगर एक बड़ा भारी पत्थर उसके ऊपर से छोड़ा जाये और सत्तर बरस तक चलता रहे तब कहीं उसके नीचे पहुँचे। बेईमान और नाफ़रमान लोगों को फ़रिश्ते दोज़ख़ में इस तरह घसीट कर ले जायेंगे कि उनके मुँह में ज़न्ज़ीरें डाल कर पाख़ाने की जगह से निकालेंगे

और हर एक नाफ़रमान और बेईमान को उनके पीर शैतान के साथ दोज़ख़ में डाल देंगे।

हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि दोज़ख़ को हज़ार बरस तक दहकाया गया तो उसका रंग सुर्ख़ हो गया, फिर हज़ार बरस दहकाया गया तो उसका रंग सफ़ेद हो गया, फिर हज़ार बरस दहकाया गया तो उसका रंग काला सियाह हो गया। अब वह बिल्कुल काली सियाह है और यह दुनिया की आग जिसको तुम जलाते हो दोज़ख़ की आग से तेज़ी में सत्तर हिस्से कम है।

इतनी ग़फ़लत तू न कर मुस्लिम ख़ुदा के वास्ते।
फ़िक्र कर कुछ तो भला रोज़े जज़ा के वास्ते॥

नफ़्स के ताबे हुए ऐसे भूले कि आह-आह।
मर मिटे दुनिया पे हम हिरसो हवा के वास्ते॥

काम कर ऐसे तू प्यारे जिनके बदले गोर में।
बाग़े जन्नत से खुले खिड़की हवा के वास्ते॥

हेफ़ तू सोता रहे हर सुबह और वक़्ते अज़ाँ।
मुर्ग़ें माही सब उठें यादे ख़ुदा के वास्ते॥

पंचगाना पढ़ शरीयत में बहुत ताकीद है।
फ़ज्र व ज़ौहर अस्र व मग़रिब और इशा के वास्ते॥

पढ़ के तू कुर्आन को कुछ जमा कर ले अब सवाब
क़ब्र पर कौन आयेगा फिर फातेहा के वास्ते॥

काम दोज़ख़ के करे जन्नत का हो उम्मीदवार।
कसरे जन्नत तो बना है पारसा के वास्ते॥

हक़ की नराफ़रमानियों से बाज़ आ तू बाज़ आ।
आग दोज़ख़ की भड़कती है सज़ा के वास्ते॥

ऐ ख़ुदा हो आक़बत हर एक मोमिन की बख़ैर।
सरवरे आलम मौहम्मद मुस्तफ़ा के वास्ते॥

## दोज़ख़ में आग के जूते

रसूले पाक हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि दोज़ख़ के अज़ाबों में सबसे हल्का अज़ाब यह होगा कि दोज़ख़ी के पाँव में सिर्फ़ आग के जूते होंगे। उनकी आँच की तेज़ी से उसका भेजा हंडिया की तरह पकता होगा और वह यह समझेगा कि

मुझसे बढ़कर किसी को इतना अज़ाब नहीं। साँप दोज़ख़ में ऊँट जैसे हैं। अगर एक साँप एक दफ़ा काट ले तो चालीस बरस तक उसको जलन रहेगी और बिच्छू ख़च्चर जैसे हैं। अगर वह बिच्छू एक दफ़ा डंक मारे तो दोज़ख़ी चालीस बरस तक तड़पता रहेगा। या अल्लाह तेरी पनाह!

# दोज़ख़ का एक बड़ा भारी साँप

रसूले ख़ुदा (स०) फ़रमाते हैं कि क़यामत के रोज़ एक साँप दोज़ख़ से निकलेगा। उसका नाम ज़रीस है। उसका सर सातवें आसमान पर होगा और उसकी दुम सातवीं ज़मीन के नीचे होगी। जिबराईल उससे पूछेंगे कि तू दोज़ख़ से बाहर क्यों आया है? वह कहेगा कि मुझे मौहम्मद (स०) की उम्मत में से पाँच किस्म के आदमी लेने हैं। अव्वल नमाज़ न पढ़ने वाला। दूसरे ज़कात न देने वाला। तीसरे सूद लेने वाला। चौथे शराब पीने वाला। पाँचवें मस्जिद में दुनिया की बातें करने वाला। बस वह साँप इन पाँच किस्म के लोगों को अपने मुँह में लेकर दोज़ख़ में जा घुसेगा, और दोज़ख़ साल भर में दो साँस लेती है— एक गर्म, एक सर्द। जब दुनिया में सर्दी और गर्मी होती है तो उसकी यही वजह है।

# दोज़ख़ की चीख़

रसूल अल्लाह (स०)ने इरशाद फ़रमाया कि—

जब दोज़ख़ को क़यामत के मैदान में लाया जायेगा तो उसके सत्तर बाज़ू होंगे और हर एक बाज़ू को सत्तर हज़ार फ़रिश्ते पकड़े हुए होंगे और उसकी चिंगारियाँ महल जैसी होंगी। वह एक ऐसी चीख़ मारेगी कि तमाम फ़रिश्ते और जिन व इन्सान बल्कि नबी और रसूल भी सब डर जायेंगे और सब नफ़सी-नफ़सी पुकार उठेंगे। यानी ऐ अल्लाह! मेरी जान को दोज़ख़ से बचा। उस वक्त कोई ऐसा न होगा जो किसी की कुछ मदद कर सके। लेकिन हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) या राब्बि उम्मती उम्मती फ़रमायेंगे। यानी ऐ अल्लाह! मेरी उम्मत को दोज़ख़ से बचा। सुबहान अल्लाह! क्या शान है रहमत की और क्या चाहत है उम्मत की।

शफ़ी है आसियाँ तुम हो वसीलए बेकसाँ तुम हो।
तुम्हें छोड़ कर अब कहाँ जाऊँ बताओ या रसूल अल्लाह॥
ख़ुदा आशिक़ तुम्हारा और तुम महबूब हो उसके।
है ऐसा मर्तबा किसका सुनाओ या रसूल अल्लाह॥

यक़ीं हो जायेगा कुफ़्फ़ार को भी अपनी बख़्शीश का।
जो मैदान में शफ़ाअत के तुम आओ या रसूल अल्लाह॥
मुझे भी याद रखयो हूँ तुम्हारा उम्मते आसी।
गुनाहगारों को जब तुम बख़्शवाओ या रसूल अल्लाह॥
जहाज़ उम्मत का हक़ ने कर दिया है आपके हाथों।
बस अब चाहे डुबाओ या तिराओ या रसूल अल्लाह॥
फँसा कर अपने दामे इश्क़ में इमदाद आजिज़ को।
बस अब क़ैदे दो आलम से छुड़ाओ या रसूल अल्लाह॥

# हज़रत जिबराईल का आना और दोज़ख़ की ख़बर लाना

हज़रत उन्स (र० अ०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) की ख़िदमत में जिब्राईल अमीन आये, उनका चेहरा उदास था। आपने फ़रमाया—ऐ जिबराईल आज यह उदासी कैसी है? उन्होंने अर्ज़ की—या रसूल अल्लाह! इस वक़्त अल्लाह तआला ने दोज़ख़ के तेज़ करने का हुक्म दिया है। बस जो मर्द या औरत दोज़ख़ का होना सच जानता है और अल्लाह तआला के अज़ाब को सच्चा मानता है तो उसको चाहिए कि दोज़ख़ के अज़ाबों से डरे और अल्लाह व रसूल की ताबेदारी करे। या रसूल अल्लाह! उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको सच्चा रसूल बना कर भेजा है, अगर दोज़ख़ के कपड़ों में से एक कपड़ा ज़मीन व आसमान के दर्मियान लटकाया जाये तो दुनिया के सब लोग उसकी बदबू से मर जायें।

या रसूल अल्लाह! उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको तमाम मख़लूक़ के वास्ते रहमत बनाकर भेजा है, अगर दोज़ख़ की ज़ंजीर से एक कड़ी पहाड़ों पर रखी जाले तो पहाड़ दब कर ज़मीन के सातों तबक़ के नीचे पहुँच जायें।

या रसूल अल्लाह! उस ख़ुदा की क़सम जिसने आपको सच्चा नबी बना कर भेजा है, अगर दोज़ख़ सुई के बराबर भी खोल दी जाये तो उसकी गर्मी से दुनिया के सब लोग जल कर राख हो जायें।

या रसूल अल्लाह! दोज़ख़ की लपट और आँच बहुत तेज़ है और उसकी गहराई बहुत बड़ी है और उसका ज़ेवर लोहा है और उसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं। पानी उसका खौलता हुआ ख़ून और पीप जैसा है जिसको हज़ारों बरस से पकाया जाता है। फिर रहमते आलम (स०) ने दरयाफ़्त फ़रमाया, ऐ

जिबराईल अमीन कौन-कौन लोग कौन-कौन-सी दोज़ख़ में जायेंगे ?

अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! पहली दोज़ख़ में मुनाफ़िक़ जायेंगे जो ज़ाहिर में मुसलमान बनते हैं और दिल में काफ़िर और बेईमान हैं और यह दोज़ख़ सब दोज़ख़ों के नीचे है और इसी में दूसरे काफ़िर लोग जैसे फिरऔन, हामान, क़ारून, नमरूद, शद्दाद वग़ैरा जायेंगे और उसका नाम हादया है। दूसरी दोज़ख़ में मुशरिक लोग जायेंगे, जो अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात में किसी मख़लूक़ को शरीक करते हैं। उसका नाम हजीम है। तीसरी दोज़ख़ में सायबीन तारों और आग वग़ैरा के पूजने वाले जायेंगे। उसका नाम सक़र है। चौथी दोज़ख़ में शैतान और उसके साथी और उसके ताबेदार जायेंगे। उसका नाम लज़ा है। पाँचवीं दोज़ख़ में यहूदी जायेंगे। उसका नाम हुतमा है। छठी दोज़ख़ में ईसाई जायेंगे। उसका नाम सईर है। इसके बाद जिबराईल चुप हो गये। आपने फ़रमाया—ऐ जिबराईल ! अमीन सातवीं दोज़ख़ का भी हाल बयान करो। उसमें कौन लोग जायेंगे ?

अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! उसका हाल कुछ न पूछिये। आपने फ़रमाया कुछ तो बयान करो। अर्ज़ की कि उसमें आपकी उम्मत के वह मुसलमान लोग जायेंगे, मर्द हो या औरतें जो बड़े-बड़े गुनाह करके बिला तौबा किये मर गये होंगे। उसका नाम जहन्नुम है। यह कहकर हज़रत जिबराईल (अ०) चले गये और हुज़ूर पुरनूर (स०) यह ख़बर वहशत असर सुनकर घबरा गये रोते हुए।

आये घर में अपने शाहे दो जहाँ,
दोनों आँखों से हुए आँसू खाँ।

हो के एक सू ख़ल्क़ से वह घर में जा,
एक गोशे में लगे करने बुक़ा।

तर्क करके ख़ल्क़ से यकसर कलाम,
घर में अपने रहते ग़म से सुबह शाम।

हाँ मगर आते थे वह बहरे नमाज़,
सुए मस्जिद बा ख़ुशी व बानियाज़।

गिरयाओ ज़ारी में रहते बेशतर,
दर्दे क़ल्बी से बहुत ख़स्ता जिगर।

हो गये सिद्दीक़े अकबर बेक़रार,
बे नबी के दिल हुआ उनका फ़िगार।

दर पे पैग़म्बर के आख़िर बारहा,
की बहुत सिद्दीक़े अकबर ने निदा।

कुछ न आया ले के अन्दर से जवाब,
और हुआ घर का न वह मफ़तूह बाब।

आये फिर दरवाज़े पर हज़रत उमर,
दर्दे क़ल्बी से निहायत चश्मे तर।

जुस्तजू की बहुत कुछ इस बात की,
ताकि हो मालूम कुछ हाले नबी।

कुछ जवाब उन को न अन्दर से मिला,
हो गये लाचार वह भी बासफ़ा।

फिर हुआ उस्मान का उस जा गुज़र,
वह भी इस ग़म से हुए ख़स्ता जिगर।

तीनों फिर रोते हुए बाचश्मे तर,
आये बीबी फ़ातमा ज़ेहरा के घर।

मुज़तरिब होकर पुकारा या बतूल,
है मदद का वक़्त या बिन्ते रसूल।

तीन दिन से वह नबीए मुजतबा,
है अजब कुछ दर्दों व ग़म में मुबतला।

कुछ किसी से वो नहीं करते कलाम,
गिरयाओ ज़ारी में रहते हैं मदाम।

करके अपने घर के दरवाज़े को बंद,
रोते हैं अन्दर बआवाज़े बुलन्द।

फ़ातमा सुनते ही ओढ़ अपनी रिदा,
आयी जल्दी से बसूए मुस्तफ़ा।

फ़ातमा ने जा के दर पर ये कहा,
खोल दीजिए घर का दर या मुस्तफ़ा।

फ़ातमा बेटी तुम्हारी या नबाद,
है ज़ियारत के लिए दर पर खड़ी।

सजदे में उस वक़्त रोते थे रसूल,
सुन उसी हालत में आवाज़े बतूल।

उठ के दरवाज़ा किया हज़रत ने वा,
फ़ात्मा बीबी को लिया घर में बुला।

यानी हज़रत फ़ात्मा (र० अ०) की आवाज़ सुनकर हुज़ूर (स०) ने हुजूरे शरीफ़ का दरवाज़ा खोल दिया और उनको अपने पास बैठाकर फ़रमाया— ऐ मेरी आँखों की ठंडक, मुझसे क्या चाहती हो? उन्होंने फ़रमाया, अब्बा जान! मुझे आज तीन रोज़ के बाद मालूम हुआ है कि आपको कोई सदमा पहुँचा है। अब्बा जान! यह बेटी आप पर कुर्बान, फ़रमाइए वह क्या सदमा है कि जिसकी वजह से आपका रंग भी ज़र्द पड़ गया। इरशाद फ़रमाया, ऐ मेरे जिगर के टुकड़े! उम्मत के बड़े-बड़े गुनाहों ने यह सदमा पहुँचाया है कि वह बड़े-बड़े गुनाह करके दोज़ख़ में जायेंगे। यह फ़रमाकर रहमते आलम (स०) फिर रोते हुए सजदे में गिर गये और हज़रत फ़ात्मा भी नंगा सर करके सजदे में गिर गयी और दुआ करने लगी—

ऐ मेरे माबूद बरहक़ ख़ुदा,
है नहीं कोई ख़ुदा तेरे सिवा।

ऐ ख़ुदा ऐ मालिके अर्शे बरी,
दर के तेरे गो कि मैं क़ाबिल नहीं।

लुत्फ़ तेरा लेके सब पर आम है,
क़ाज़ी उलहा जात तेरा नाम है।

दस्तगीरी कर तू मेरी ऐ करीम,
तू है खुद ग़फ़्फ़ारो सत्तारो हलीम।

बख़्श दे उम्मत को मेरे बाप की,
और बचा दोज़ख़ से ऐ रब्बे ग़नी।

फिर कहा हक़ ने कि ऐ मेरे रसूल,
मन दुआए फ़ात्मा कर दम क़बूल।

सर उठाओ सजदे से ऐ मुस्तफ़ा,
ग़म न कीजे ऐ नबी ए मुजतबा।

जिसे चाहोगे तुम ऐ मुस्तुफ़ा,
बख़्श दूँगा उसको मैं रोज़े जज़ा।

यानी हज़रत जिब्राईल (अ०) ने अल्लाह तआला की तरफ़ से यह खुश-ख़बरी सुनायी। तब आपने सजदे से पेशानी उठायी और जान में जान आयी। हज़ूर पुरनूर (स०) ने हज़रत फ़ातमा (र० अ०) को गले से लगाया।

मुसलमान भाइयो और दीन की बहिनो! कुछ तो ख़याल करो कि हम गुनाहगारों के साथ हमारे रसूले पाक (स०) को किस क़दर मौहब्बत है और हमारी तकलीफ़ से आपको किस क़दर सदमा होता है। कोई भी ऐसा ग़मखुवार नज़र नहीं आता, और आपकी साहबज़ादी को देखो कि हम नालायक़ों पर किस क़दर मेहरबानी फ़रमाती हैं। डूब मरने और शर्म करने की बात है कि हम अपने रसूल की नाफ़रानी पर तुले हुए हैं और कूद-कूद कर दोज़ख़ में गिरे जाते हैं। कितना बदबख़्त है वह मर्द और औरत कि अपने प्यारे रसूल की नाफ़रमानी करके आपको तकलीफ़ पहुँचाये और कितना खुशक़िस्मत है वह मर्द और औरत जो आपकी ताबेदारी करके आपको खुश करे। हर हफ़्ते में दो मर्तबा आपकी ख़िदमत में हमारे अमल पेश किये जाते हैं। जिसके अमल अच्छे होते हैं, आप उससे खुश होते हैं और जिसके अमल बुरे होते हैं आपको उसकी तरफ़ से रंज होता है, तकलीफ़ होती है।

पीरो मुर्शिद यह मेरी गुफ़तार हो,
गर अमल कर लो तो बेड़ा पार हो।

## बड़े बड़े गुनाहों का बयान

अल्लाहतआला की ज़ात व सिफ़ात में किसी मख़लूक़ को शरीक करना यानी जो बातें और कुदरतें अल्लाहतआला में हैं वह किसी मख़लूक़ में समझना, नाहक किसी को मार डालना, अल्लाहतआला का कोई हुक्म न मानना, मसलन नमाज़ न पढ़ना, माहे रमज़ान के रोज़े न रखना, ज़कात न देना, कुदरत होते हुए हज अदा न करना, अल्लाहतआला से न डरना, उसकी रहमत से बे उम्मीद हो जाना, अल्लाहतआला के सिवा किसी की क़सम खाना या किसी को सजदा करना, किसी से मुरादें माँगना, यतीमों का माल खाना, ज़िना करना, शराब पीना, सूद लेना या देना, रिश्वत लेना, माँ-बाप को तकलीफ़ देना, किसी की बहू-बेटी वग़ैरा पर बदनज़र करना, बीवी को अपने शौहर का हक़ अदा न करना, हमसाये को तकलीफ़ देना, बेवा औरत निकाह कर ले तो पहले शौहर के माल में से उसको हिस्सा न देना, तकब्बुर और अजब करना यानी अपने आपको औरों से बड़ा और अच्छा समझना, हसद करना यानी किसी को खाते-पीते देखकर जलना, ग़ीबत करना, लानत करना, किसी को ज़रा से शुबह में ज़िना की तोहमत लगाना, ज़ुल्म करना यानी

किसी को नाहक़ सताना, चुग़ली खाना, झूठ बोलना, झूटी क़सम खाना, बिना किसी सख़्त ज़रूरत के वादा ख़िलाफ़ी करना, आलिमों से मसले न सीखना और जाहिल, बेइल्म लोगों के कहने पर चलना, इल्मेदीन हासिल न करना, अमानत में ख़यानत करना, कुर्आन मजीद पढ़कर भुला देना या उसके हुक्मों पर अमल न करना, धोखा देना, झूठी गवाही देना, सच्ची गवाही को छुपाना, बिना सख़्त ज़रूरत के नमाज़ या रोज़े का क़ज़ा कर देना, चोरी करना या कराना, लूटमार करना, कम तोलना, कम नापना, जुआ खेलना, जादू करना या कराना, कंजरियों को नचाना या नचवाना या नाच का देखना, खुसरे या डोमनी वग़ैरा को नचाना, ढोलक और बाजा बजाना या बजवाना, ग़ैर मर्द या औरत का तनहा पास बैठना, काफ़िरों की रस्में करना, अपने ईमान पर पछताना कि अगर मुसलमान न होते तो दुनिया का यह फ़ायदा होता, कुदरत होते हुए नसीहत न करना, किसी से नाहक़ बदगुमानी करना, ज़ालिमों की मदद करना, मुर्दे पर बैठकर रोना, किसी के घर में बग़ैर इजाज़त चले जाना या ताँक-झाँक कर देखना, किसी का ऐब तलाश करना, किसी का कोई हक़ थोड़ा या बहुत दबा लेना, बेवा औरत के निकाह को ऐब समझना, खुदा के सिवा किसी को आलिमुलग़ैब समझना, अनाज की तिजारत इसलिए करना कि जब महँगा होगा तब बेचूँगा इसलिए इसको रोके रखना।

मुसलमान भाइयों और दीन की बहिनो! यह बड़े-बड़े गुनाहों का एक नमूना है। इनको बिल्कुल छोड़ दो। न छोड़ोगे तो पछताओगे। दोज़ख़ के अज़ाबों में फँसोगे।

है जो तेरा कुफ्रो इसयाँओ नफ़ाक़,
हश्र में दोज़ख़ हो यह बिलइत्तफ़ाक़।

होंगी यह ज़न्जीरो तोक़ो हथकड़ी,
फ़ासिक़ों की होंगी गरदन में पड़ी।

लग़्व तू मत जान इन अफ़आल को,
इम्तेहाँ कर इनका तु ग़ाफ़िल न हो।

रात-दिन रख अपने कामों पर नज़र,
नेक व बद का कर हिसाब ऐ बेख़बर।

शर को कम कर और नेकी को बढ़ा,
तू बिला पुर्सिश किसी जन्नत में जा।

जिसने की दुनिया मुक़द्दम दीन पर,
वह हुआ खुवारो तबाह ख़स्ता जिगर।

हो गया उस शख़्स पर क़हरे खुदा,
जो हुआ दुनियाए दूँ में मुबतला।

हो न हासिल दीन और दुनिया उसे,
आख़िर इस दोज़ख़ में वह जाकर गिरे।

उम्र यह एक दिन गुज़रनी है ज़रूर,
कब्र में मैय्यत उतरनी है ज़रूर।

आख़िरत की फ़िक्र करनी है ज़रूर,
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

# अच्छे काम करने से अच्छे नाम मशहूर हो जाते हैं

बाज़ लोग समझते हैं कि अच्छे और बुरे कामों का सवाब और अज़ाब आख़िरत ही में मिलेगा। इसीलिए कहते हैं कि दुनिया में अच्छी गुज़रती है आख़िरत की ख़बर खुदा जाने। याद रखो, अच्छे और बुरे कामों का सवाब और अज़ाब दुनिया में भी मिलता है। देखो आदमी अच्छे काम करने से दुनिया में भी राहत पाता है और इज़्ज़त व शराफ़त के नामों से मशहूर हो जाता है जैसे ईमानदार, मुत्तक़ी परहेज़गार, वली, जन्नती, ग़ाजी, नमाज़ी, हाफ़िज, मौलवी, हाजी, मुल्ला, नेकबख़्त, आलिम फ़ाज़िल, खुदा परस्त, फ़रिश्ता खुसलत, आबिद, ज़ाहिद, सख़ी, ग़ौस कुतब, अब्बदाल, साबिर, शाकिर, अल्लाह वाला, बुज़ुर्ग, पीर व मुर्शिद, पारसा, रहमदिल, मुन्सिफ़ शरीफ़ व अफ़ीफ़ वग़ैरा और बुरे काम करने से मर्द हो या औरत, बुरे नामों से मशहूर हो जाता है, जैसे ज़लील, रज़ील, कन्जूस, मक्खीचूस, फ़ाजिख़ फ़ासिक़, बेरहम, फ़िसादी, कुत्ता, ख़बीस, शरीर, हक़ीर, शैतान, मरदूद, शराबी, ज़ानी लुच्चा, बदमाश, गुण्डा, चोर, डाकू, ज़ालिम, चुग़लख़ोर, अल्लाह का चोर, झूठा, पापी, दग़ाबाज़, बेनमाज़, ग़द्दार, दुनियादार, धोखेबाज़, क़ातिल, बेईमान, बेशर्म, बेहया, बे-ग़ैरत, बेइज़्ज़त, ज़लील व खुवार, दोज़ख़ी, बेदीन काफ़िर, मुशरिक, ख़ूनी, लालची, हरामख़ोर, रिश्वतख़ोर, हरामज़ादा, दैय्यूस वग़ैरा।

अब समझ लो अच्छे काम करने अच्छे हैं या बुरे काम करने अच्छे हैं। यह तो दुनिया का अन्जाम हुआ और मरने के बाद खुदा ही जाने क्या अन्जाम होगा।

वला ग़ाफ़िल न हो एक दम यह दुनिया छोड़ जाना है,
बग़ीचे छोड़ कर ख़ाली ज़मी अन्दर समाना है।

तेरा नाज़ुक बदन भाई जो लेटे सेज फूलों पर,
ये होगा एक दिन मुर्दार जो कीड़ों ने खाना है।

न साथी हो सके भाई न बेटा बाप न माई,
तू क्यों फिरता है सौदाई अमल ने काम आना है।

जहाँ के शग़ल में शामिल ख़ुदा की याद से ग़ाफ़िल,
ये कैसी ग़फ़लत है तेरी आह क्या तेरा ठिकाना है।

अज़ीज़ा याद कर वो दिन जो मलाकुलमौत आवेगा,
न जावे साथ तेरे कोई अकेला तूने जाना है।

नज़र कर देख अज़ीज़ों में कौन है तेरा,
उन्होंने अपने हाथों से अकेले को दबाना है।

फ़रिश्ता रोज़ करता है मनादी चार कोनों पर,
ऊँचे मकान वाले तेरा गोर ही ठिकाना है।

ऐ ब्रादर होश कर ये ग़फ़लत नहीं अच्छी,
ख़ुदा की याद कर हर दम जो आख़िर काम आना है

महल्ला ऊँचियाँ वाले तेरा गोर ही ठिकाना है।

## बुरे कामों की सज़ा दुनिया में भी मिलती है

अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानियों की वजह से जो तकलीफ़ें और मुसीबतें आती हैं, बिल्कुल ज़ाहिर हैं। चाहे कोई समझे या न समझे, देखो क़ुरआन व हदीस में जो नाफ़रमानों के क़िस्से आये हैं और जो अज़ाब उन लोगों पर आये हैं, वह कौन नहीं जानता? क्यों साहिबो वह क्या चीज़ थी जिसने शैतान को जन्नत से निकलवाया, दोज़ख़ी बनाया और लानत का तौक़ गले में डलवाया। अल्लाहतआला की दूरी हिस्से में आयी। कुफ़्र व शिर्क, मुक्र व फ़रेब हिस्से में आया। वह क्या चीज़ थी जिसने हज़रत नूह (अ०) की उम्मत को पानी के तूफ़ान में ग़र्क़ करवाया। वह क्या चीज़ थी जिसकी वजह से एक बड़ी तेज़ हवा को भेजकर क़ौम आद को पटख़ा-पटख़ा कर मारा गया? वह क्या चीज़ थी जिसकी वजह से हज़रत शोऐब (अ०) की उम्मत पर बादलों की सूरत में अज़ाब आया और उनसे आग बरसी और उनको जलाकर राख बनाया गया? वह क्या चीज़ थी जिसने फ़िरऔन और उसके साथियों को दरियाए नील में डुबोया? वह क्या

चीज़ थी जिसने क़ारून को और उसकी दौलत, घर बार सब सामान को उसके साथ ज़मीन में धँसवाया। वह क्या चीज़ थी जिसकी वजह से नमरूद पर एक मच्छर मुक़र्रर किया गया और दिमाग़ की पिटाई होते हुए दुनिया से ख़त्म कर दिया गया? बतलाइए इन सज़ाओं और अज़ाबों की वजह सिवाये इसके और क्या है कि नाफ़रमानी थी। बस नाफ़रमानी की वजह से उनको दुनिया में भी सज़ा मिली और आलम ए बर्ज़ख़ यानी मरने के बाद और आलम-ए-आख़िरत की सज़ा सर पर रही। साहिबो! अल्लाहतआला ने क़ुर्आन मजीद में ये क़िस्से बयान फ़रमा-कर सज़ा की वजह भी बयान फ़रमायी है कि—

وَمَاكَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْآ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ؕ

यानी अल्लाहतआलः ऐसे नहीं हैं कि उन पर ज़ुल्म करते लेकिन वह तो खुद ही अपनी जानों पर नाफ़रमानी करके ज़ुल्म करते थे।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयों और दीन की बहिनो! सबक़ हासिल करो। अल्लाहतआला से डरो। उसकी नाफ़रमानियों से बचो और समझो कि अल्लाहतआला की ग़रज़ इन क़िस्सो के बयान करने से सिवाये डराने के और क्या है। बस अल्लाहतआला की पकड़ से डरो और मौत को याद रखो—

ग़र्क़ दरिया में गुनाहों के भला,
तू रहेगा कब तलक मुझको बता।

गोशेजाँ से पनपए गफ़लत निकाल,
जद्दे अमजद का तू सुन फिर मुझ से हाल।

हज़रते आदम जो दादा सब के थे,
और ख़लीफ़ा थे ख़ुदा के जान ले।

और फ़रिश्तों ने उन्हें संजदा किया,
दी ख़ुदा ने रहने की जन्नत में जा।

एक गुनाह के करते ही उनको कहा,
मुजरिम व मुज़निब निकल अब याँ से जा।

एक गुनाह के साथ आदम को निकाल,
हक़ ने जन्नत से दिया फिर दूर डाल।

जो करे सदहा गुनाह शामो सहर,
किस तरह जन्नत में हो उस का गुज़र।

याँ से है तुझको जाना एक दिन,
कब्र में होगा ठिकाना एक दिन।

मुँह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन,
अब न ग़फ़लत में गँवाना एक दिन।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना हैं आख़िर मौत है।

## ज़लज़ला क्यों आता है?

रसूल अल्लाह (स०)फ़रमाते हैं कि—

लोगो! गुनाहों से बचो क्योंकि गुनाह करने से यानी अल्लाहतआला की नाफ़रमानी करने से ग़ज़ब नाज़िल होता है। तरह तरह की बलाएँ और मुसीबतें आती हैं। रिज़्क़ कम हो जाता है। ख़ैर व बरकत उड़ जाती है। अकाल पड़ जाता है। चीज़ें महँगी हो जाती हैं। बीमारी ऐसी फैल जाती है कि उनके बड़ों के ज़माने में न आयी हों और जब लोग खुल्लम खुल्ला बुरे काम करने लगेंगे, तोलने और नापने में कमी करने लगेंगे तो क़हत की तंगी और हाकिमों के ज़ुल्म में फँसेंगे और जब ज़कात देना बन्द कर देंगे तो उन पर रहमत की बारिश बन्द हो जायेगी। अगर जानवर न होते तो बारिश बिल्कुल बन्द ही हो जाती। हज़रत आयशा (रज़ी०) से ज़लज़ला आने की वजह पूछी गयी तो आपने फ़रमाया—उन्होंने रसूल अल्लाह (स०) से सुना है कि जब लोग ऐलानिया ज़िना करने लगेंगे और शराब पीने लगेंगे और बाजे बजवाने लगेंगे और बुरे कामों को अच्छे कामों की तरह खुल्लमखुल्ला करेंगे, अल्लाह तआला से न डरेंगे तो उस वक़्त अल्लाहतआला को आसमान पर ग़ैरत आती है और ज़मीन को हुक्म देता है कि इन ज़ालिम नाफ़रमानों को हिला डाल ताकि यह नाफ़रमानियों से बाज़ आ जायें।

## ज़ालिम को ज़ुल्म करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि ज़ालिमों पर ख़ुदा की लानत है।

**फ़ायदा—** ज़ालिम को यह सज़ा भी काफ़ी है कि ज़ालिम पर ख़ुदा की लानत बरसती है। ज़ालिम वह आदमी है कि जो किसी को नाहक़ सताये। माल व जान, इज़्ज़त व आबरू का नुक़सान पहुँचाये। ज़ुबान और हाथ से किसी को तकलीफ़ दे। किसी का कोई हक़ दबाये। इस क़िस्म का ज़ुल्म और हक़ जब तक माफ़ नहीं होता कि या तो उसको अदा करे या हक़दार से माफ़ करवाये।

देखो! शहीद का रुतबा कितना बड़ा है कि शहादत की बरकत से उसके सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं। मगर लोगों के हक़ूक़ जो उसके ज़िम्मे हैं, वह माफ़ नहीं होते। हज़ूर पुरनूर (स०) फ़रमाते हैं कि मेरी उम्मत में क़यामत के रोज़ सबसे

बड़ा मेहताज वह होगा जो नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात वग़ैरा सब अच्छे अमल लेकर आवे मगर लोगों के हक़ूक़ भी उसके ज़िम्मे हों तो उसकी नेकियाँ कुछ-एक हक़दार को मिल गयीं और कुछ दूसरे को मिल गयी और सबके हक़ूक़ अदा होने से पहले उसकी वह सब नेकियाँ ख़त्म हो गयीं तो उन हक़दारों के गुनाह लेकर उस ज़ालिम पर डाल दिये जायेंगे और उसको दोज़ख़ में फेंक दिया जायेगा और मज़लूम यानी सताया हुआ क़यामत के रोज़ हिसाब के वक़्त ज़ालिम का हाथ पकड़कर कहेगा कि आज खुदा के सामने मेरा और तेरा इन्साफ़ है। बस खुदा के हुक्म से मज़लूम को ज़ालिम की कुल नेकियाँ दे दी जायेंगी और ज़ालिम ऐसे मुश्किल वक़्त में हाथ खाली रह जायेगा और उसको दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा और हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जिसके ज़िम्मे किसी के तीन पैसे होंगे, क़यामत के रोज़ उसको तीन पैसों के बदले सात सौ क़बूल नमाज़ें देनी पड़ेंगी। इसलिए हर मर्द और औरत को चाहिए कि किसी का हक़ अपने ज़िम्मे न रखे, न किसी पर कोई ज़ुल्म करे।

क्यों ज़ुल्म पर बांधी कमर ऐ बेहया कुछ तो ख़ौफ कर।
दुनिया से करना है सफ़र फिर गोर ही घर बार है।
अब ज़िन्दगी का राज है कर ले जो करना आज है।
जब मर गया मौहताज है फिर तू नहीं मुख़तार है॥

हक़ की इबादत कुछ न की गोर अपनी आतिश से भरी।
दोज़ख़ की सीधी राह ली दहका जहाँ अंगार है॥
मत और का तू हक़ झपट बेकस को नाहक़ मत डपट।
दिल में न रख कीना कपट इस से ख़ुदा बेज़ार है॥

सोहबत बुरी से भाग तू ग़ुस्से में मत हो आग तू।
बाजे से मत सुन राग तू शैतान का यह कार है॥
लोगों पे मत बोहतान कर ग़ैरों का मत नुक़सान कर।
कुछ दे के मत एहसान कर ऐसा दिया बेकार है॥

मत कर अमानत में ख़लल यह राह हरगिज़ तू न चल।
और नेक कर सारे अमल गर तुझको अक़्ल-ए-यार है॥
हर एक से मीठा बोलियो बेहूदा लब मत खोलियो।
तोले तो पूरा तोलियो फ़रमूदाए ग़फ़्फ़ार है॥

गर चाहे तू अपना भला मत कर किसी का तू बुरा।
तेरा बुरा हो बर्मला यह फ़ेल बद किरदार है॥
हर एक से कर शर्मोहया यह है तरीक़े मुस्तफ़ा (स०)।
बेशर्म का मरना है भला गोर उसकी पर्दादार है॥

पूजा न कीजियो ग़ैर की ग़ीबत न कीजियो और की।
आदत न कीजियो चोर की यह तो बुरा अतवार है॥
मत जान अच्छा आप को कर दूर दिल से पाप को।
आदाब कर माँ-बाप को फिर तो बरख़ुर्दार है॥

जो चाहे तू हक़ की रज़ा मत कर नमाज़ अपनी क़ज़ा।
बे नमाज़ों की है यह सज़ा लानत गले की हार है॥
ऐ बेनमाज़ी बेख़बर तेरी तो दोज़ख़ है मक़ूर।
फ़रमा गये ख़ैरुलबशर अल्लाह का यह इक़रार है॥

इतनी नसीहत मैंने की कुछ तूने भी दिल से सुनी।
इस में लगाया कुछ भी जी यानी यह क्या गुफ़तार है॥
दुनिया तो आख़िर फ़ना है दीन की यारो बक़ा।
इस जा नहीं रहना सदा वह समझे जो होशियार है॥

## मज़लूम की मदद करने की बुज़ुर्गी

रसूल अल्लाह (स०)ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स मज़लूम की मदद करता है, अल्लाहतआला उसको पुलसिरात पर साबित क़दम रक्खेगा। ऐसे हाल में कि लोगों के कदम उस पर फिसलेंगे। मज़लूम की मदद करने वाला पुलसिरात से आसानी के साथ पार हो कर जन्नत में दाख़िल हो जायेगा और जिसने क़ुदरत होते हुए भी मज़लूम की मदद न की तो क़ब्र में उसके आग के सौ कोड़े मारे जायेंगे। ज़ालिम की मदद करने वाला भी ज़ालिम है। लेकिन ज़ालिम की मदद करना इस तरह दरुस्त है कि ज़ालिम को ज़ुल्म न करने दे। उसमें ज़ालिम और मज़लूम दोनों की मदद होगी।

## मुसलमान भाइयों के हक़ूक़ अदा करने की बुज़ुर्गी

रसूल अल्लाह (स०)फ़रमाते हैं कि—

(1) एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है। न उस भाई पर ज़ुल्म करे और न किसी मुसीबत में उस का साथ छोड़े। (2) जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की हाजित पूरी करता है अल्लाह तआला उसकी हाजित पूरी करता है। (3) और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई की मुसीबत दूर करेगा, अल्लाहतआला उसको क़यामत की मुसीबतों से बचायेगा। (4) और जो मुसलमान अपने भाई मुसलमान का ऐब छुपायेगा अल्लाहतआला दुनिया और आख़िरत में उसका ऐब छुपायेगा। (बुख़ारी शरीफ़) (5) और तुम में पूरा मुसलमान वह है कि जिसकी

ज़बान और हाथ से किसी मुसलमान को तकलीफ़ न पहुँचे।

**फायदा—** क़ुरआन व हदीस से मुसलमान भाई के यह हक़ूक़ साबित होते हैं—

(1) जो बात अपने लिए पसन्द न हो वह किसी मुसलमान के लिए पसन्द न करे। (2) किसी मुसलमान को हक़ीर न जाने। (3) उसकी चुग़ली न खावे। (4) उस की ग़ीबत न करे। (5) उस पर बोहतान न लगाये। (6) उस का ऐब तलाश न करे। (7) हाकिम को तलाश करना जायज़ है। (8) उस के ऐब को छुपाये (9) तीन रोज़ से ज़्यादा उससे बोलना न छोड़े, अगर किसी शरह की बात पर नाराज़गी हो तो जब वह तौबा कर ले फिर बोलने लगे। (10) उसको नफ़ा पहुँचाये नुक़सान न पहुँचाये। (11) बूढ़े मुसलमान की ताज़ीम करे और छोटे के साथ प्यार से पेश आये। (12) मुसलमान से ख़ुश होकर मिले। (13) बिला सख़्त उज्र उससे वादा ख़िलाफी न करे। (14) उसके रुतबे के मुताबिक़ उससे बर्ताव करे। (15) अगर दो मुसलमान भाइयों में रंजिश हो जाये तो उनमें सुलह करा दे। सुलह करा देने वाले को दस हज़ार नफ़िल नमाज़ों का सवाब मिलता है। (16) अगर ख़ुदा ने दुनिया की कोई इज़्ज़त दी है तो अपने मुसलमान भाई मज़लूम ग़रीब की हाकिमों से सिफ़ारिश कर दे और उसको नाहक़ की तकलीफ़ से बचावे तो सत्तर हज नफ़ली का सवाब मिलेगा। (17) अगर किसी मुसलमान को कोई उसके आगे या पीछे तकलीफ़ पहुँचाना चाहे तो उस तकलीफ़ से उसको बचाये और तकलीफ़ देने वाले को रोक दे। (18) अगर कोई मुसलमान बुरी सोहबत में फँस जाये तो प्यार या मुहब्बत से या जिस तरह की क़ुदरत हो उसको बुरी सोहबत से बचाये। (19) ग़रीब मुसलमान से मिलने जुलने में ज़िल्लत न समझे। (20) मुसलमान भाई जब मिले तो उसको इस तरह सलाम करे "अस्सलामु अलैकुम" वह जवाब दे "वाअलैकुम अस्सलाम।" जब मुसलमान आपस में सलाम करते हैं तो अल्लाह तआला सौ रहमतें नाज़िल करता है। सलाम करने वाले पर नब्बे और जवाब देने वाले पर दस और मुसाफ़ा करने पर सत्तर रहमतें ज़्यादा नाज़िल होती हैं और दोनों के सग़ीरा गुनाह माफ़ होते हैं। (21) जब मुसलमान छींक कर अलहम्दो लिल्लाह कहे तो सुनने वाला या रहमकुल्ला कहे। (22) जब मुसलमान बीमार हो या किसी और बला में मुबतला हो, उसकी मदद करें। (23) अगर वह तंगदस्त हो या क़र्ज़दार हो अपने अन्दर क़ुदरत हो तो माल से उसकी मदद करे। रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जब मुसलमान बीमार होता है तो उसके गुनाह दरख़्तों के पत्तों की तरह झड़ कर उससे दूर हो जाते हैं और जब कोई मुसलमान अपने मुसलमान भाई की बीमारी या किसी और तकलीफ़ में उसकी ख़बर लेने जाता है तो वह जन्नत ख़रीद लेता है और जब ख़बर लेकर लौटता है तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसकी मग़फ़िरत की दुआ करते हैं। (24) जब

मुसलमान मर जाये तो उसके जनाज़े पर नमाज़ पढ़े और उसको क़ब्रिस्तान में पहुँचाये और दफ़न करके उसकी मग़फ़िरत की दुआ करके वापस हो तो गुनाहों से पाक साफ़ हो जाता है। (25) मुसलमान भाइयों की क़ब्रों पर जाया करे और उनकी मग़फ़िरत की दुआ किया करे। ख़ैरात या फ़ातेहा का सवाब पहुँचाया करे और सोचा करे कि जिस तरह यह ख़ाक में मिल कर ख़ाक हो गये इसी तरह एक दिन मैं भी ख़ाक में मिल जाऊँगा।

अलहासिल, मुसलमान भाइयों के नफ़ा पहुँचाने में कोई कमी न करे, इस कारे ख़ैर में बड़े-बड़े सवाब मिलते हैं और मुसलमान भाइयों को नुक़सान पहुँचाने में बड़े-बड़े अज़ाब होते हैं।

## शिर्क करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने— إِنَّهُ مَنْ يُشْرِكْ بِاللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللَّهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوَاهُ النَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ أَنْصَارٍ

यानी ऐ लोगो! इसमें शक नहीं कि जो अल्लाहतआला के साथ किसी को शरीक करेगा तो अल्लाहतआला की तरफ़ से जन्नत उस पर हराम हो चुकी है और उसका ठिकाना दोज़ख़ है और ऐसे ज़ालिमों का कोई भी मददगार नहीं। इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللَّهِ إِلَّا وَهُمْ مُشْرِكُونَ यानी बहुत से लोगों का यह हाल है कि अल्लाह को मानते हैं और उसकी सिफ़तों और क़ुदरतों को जानते हैं कि वह हर चीज़ का ख़ालिक है, मालिक है। रज़्ज़ाक है मगर फिर शिर्क किये जाते हैं और इरशाद फ़रमाया अल्लाह तआला ने

إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ

यानी बेशक शिर्क करना बड़ा भारी ज़ुल्म है।

**फ़ायदा—** इसलिए हर मुसलमान मर्द और औरत को चाहिए कि शिर्क की बातों से बचे। बाज़ मुसलमान भाई ख़याल कर लेते हैं कि फ़लाँ चीज़ में या फ़लाँ आदमी में यह क़ुदरत है जैसा कि कोनैन बुख़ार के दूर करने के लिए खायी जाती है। अब अगर कोई यह समझे कि कोनैन में यह क़ुदरत है कि बुख़ार को दूर कर दे तो शिर्क है बल्कि यह समझे कि अल्लाह ने इसमें बुख़ार के दूर करने का असर रक्खा है। अगर ख़ुदा न चाहे तो असर नहीं हो सकता, मगर इस फ़र्क़ को अक़्लमन्द आदमी ही समझ सकता है। इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि हर काम में और हर हाल में अल्लाहतआला ही पर भरोसा रखे। किसी भी मख़लूक़ को उसका हम सिफ़त और शरीक न बनाये। आलिमों की

सोहबत अख़्तियार करे, उनसे मसले दरियाफ़्त करता रहे। जाहिल और बेसमझ उन लोगों को कहते हैं जो अल्लाह व रसूल की बातों का इल्म नहीं रखते।

वास्ते दुनिया के क्यों ऐ बेखबर,
ठोकरें खाता फिरे है दर-बदर।

क्या है हासिल रंज ले जाना तुझे,
आख़िर एक दिन यार है मरना तुझे।

आख़िरत के कार से ग़ाफ़िल न हो,
दौलते दुनिया पे तू मायल न हो।

जहल से बदतर नहीं है कोई शै,
जहल कुफ़्र व शिर्क की बुनियाद है।

जहल तन में एक बलाये जान है,
क्या बेसमझ भी आदमी इन्सान है।

हो सके जितना तू रह जाहिल से दूर,
जाहिलों पर हो ग़ज़ब हक़ का ज़रूर।

ज़िन्दगी में बेसमझ बस खुवार है,
हश्र में उसका ठिकाना नार है।

ऐ बादर तू भी गर है होशियार,
सोहबते जाहिल न करना अख़्तियार।

## नाहक़ ख़ून करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

और जो कोई मुसलमान को जानबूझ कर मार डाले तो उसकी सज़ा दोज़ख़ है जिसमें वह हमेशा रहेगा और उस पर अल्लाह का ग़ज़ब होगा और उस पर अल्लाह की लानत पड़ेगी और अल्लाह ने उसके लिए बड़ा सख़्त अज़ाब तैयार कर रक्खा है। (सूरतुलनिसा)

**फ़ायदा—** क़ातिल की दुनिया में भी सख़्त सज़ा है कि उसको फाँसी दी जाती है या ज़िन्दगी भर जेल ख़ाने में रक्खा जाता है।

## शराब पीने की सज़ा

शराब नापाक है। इसका बरतना हराम है। दवा के तौर भी उसका पीना और लगाना दरुस्त नहीं। बल्कि जिस दवा में शराब पड़ी हो उसका पीना और

लगाना भी दरुस्त नहीं। और जो शख़्स शराब को हराम न समझे वह काफ़िर है और हराम न मानने वाला फ़ासिक़ है और सख़्त सज़ा का मुस्तहक़ है।

मसला शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त करने वाले पर और बतलाने वाले पर कि वहाँ बिकती है और उठाकर लाने वाले पर, पीने वाले पर हमारे नबी (स०) ने लानत फ़रमायी है। और शराब की ख़रीद व फ़रोख़्त सब हराम है। और हमारे नबी (स०) ने फ़रमाया है कि शराब पीने वाला फ़िरऔन के साथ दोज़ख़ में जायेगा। और अल्लाहतआला अपनी इज़्ज़त की क़सम के साथ फ़रमाता है कि दुनिया में जो शख़्स शराब पियेगा, मैं क़यामत के रोज़ उसको ऐसा प्यासा रखूँगा कि उसका दिल प्यास की तेज़ी से आग की तरह जलेगा और उसकी ज़ुबान उसकी छाती पर आ पड़ेगी और जो आदमी दुनिया में मेरे डर से शराब छोड़ देगा तो मैं उसको जन्नत की नहर से शराबे पाक पिलाऊँगा और जो आदमी दुनिया में शराब पियेगा उसको अल्लाहतआला क़यामत के रोज़ साँप और बिच्छू के ज़हर पिलायेगा। जब वह बर्तन को मुँह लगायेगा तो उसके मुँह का चमड़ा उसी बर्तन में आ पड़ेगा। अल्लाह की पनाह ! दुनिया में भी शराब का एक क़तरा पीने वाले को शरीयत के हुक्म से सौ दुर्रे मारने की सज़ा है।

## शराबी से मेल जोल रखने की सज़ा

हज़ूर अकरम (स०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स शराबी को सलाम करे और उससे मुसाफ़ा करे तो अल्लाहतआला उसके चालीस बरस के नेक अमल बर्बाद कर देता है और जिसने शराबी को एक लुक़मा खिलाया या एक घूँट पानी पिलाया या उसको कपड़ा पहनाया तो अल्लाहतआला उसकी क़ब्र में उसके बदन पर साँप और बिच्छू काटने के लिए मुक़र्रर कर देगा। (अनीसुलवाएज़ीन)

## सूद लेने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ط यानी, और हलाल कर दिया अल्लाह ने तिजारत को और हराम कर दिया सूद को।

महबूबे ख़ुदा (स०)फ़रमाते हैं कि—

कम दर्जे का गुनाह सूद लेने का यह है कि सूद लेने वाला गोया ज़िना करता है अपनी माँ से और सूद लेने वाले का माल क़यामत के रोज़ गंजा साँप बन कर जो बड़ा ज़हरीला होता है दोज़ख़ से निकलेगा और उसकी गर्दन में आकर लिपट जायेगा और उसको पकड़ कर दोज़ख़ में ले जायेगा। जितनी दफ़ा

वह ऊपर को आयेगा उतनी ही दफ़ा वह साँप उसको दोज़ख़ में नीचे ले जायेगा। हज़ूर (स०)फ़रमाते है कि—

चार क़िस्म के लोगों को अल्लाहतआला जन्नत की नैमतों से महरूम रक्खेगा। एक पीने वाला शराब का, दूसरे लेने वाला सूद का, तीसरे माल खाने वाला यतीम का, चौथे तकलीफ़ देने वाला माँ बाप का।

# माँ-बाप को तकलीफ़ देने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

तुम अपने माँ-बाप के साथ अच्छा बर्ताव किया करो। अगर तुम्हारे सामने उनमें एक या दोनों बूढ़े हो जायें तो उनके सामने 'हूँ' भी न करना और न उनको झिड़कना और उनसे अदब के साथ बात करना और उनके सामने आजिज़ी से झुके रहना और उनके लिए यूँ दुआ करते रहना कि ऐ मेरे रब उन दोनों पर रहमत फ़रमाइए जैसा कि उन्होंने मुझको बचपन में पाला है।

और हज़ूर पुरनूर (स०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स अपने माँ-बाप को तकलीफ़ देगा, जन्नत उस पर हराम है। माँ-बाप को ख़ुश रखना, अल्लाहतआला को ख़ुश रखना है और उनको नाराज़ करना अल्लाहतआला को नाराज़ करना है।

एक दिन नबी (स०) ने हल्क़ाये असहाब में यह लफ़्ज़,
दोहराये तीन बार कि नाक उसकी कट गयी।

असहाब ने अर्ज़ की कि वह कम्बख़्त है कौन,
तौक़ीर जिसकी हज़रते बारी में घट गयी।

इरशाद यूँ हुआ कि वह फ़रज़न्द नाख़लफ़,
घर जिसके जन्नत आयी, आकर पलट गयी।

माँ-बाप के बुढ़ापे का न हो जिसे ख़याल,
उस ना सईद बेटे की क़िस्मत उलट गयी।

हुज़ूर अकरम (स०) की ख़िदमत में एक शख़्स ने अर्ज़ की—या रसूल अल्लाह! मुझे कोई ऐसी नसीहत कीजिए जो दुनिया व आख़िरत में काम आये। आपने फ़रमाया—तुम्हारे माँ-बाप ज़िन्दा हैं? कहा हाँ। हज़ूर ने फ़रमाया—तुम उनकी ख़िदमत किया करो। उनको एक लुक़मा खिलाने के बदले तुमको जन्नत में एक महल मिलेगा।

एक और शख़्स ने अर्ज़ की— या रसूल अल्लाह! मैं अपनी माँ की ख़िदमत भी करता हूँ। रोटी-कपड़ा भी देता हूँ। मगर वह मुझसे लड़ती रहती

है। अब जो आपका हुक्म हो वह करूँ। हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया— तुम अपनी माँ की ख़िदमत करो। क़सम है अल्लाहतआला की अगर तुम अपने बदन का गोश्त का टुकड़ा भी अपनी माँ को खिला दोगे तो चौथाई हक़ भी उसका अदा न होगा। क्या तुमको मालूम नहीं कि जन्नत माँ और बाप के क़दमों के नीचे है। माँ-बाप का यह मर्तबा सुनकर उस शख़्स ने रोकर कहा, या रसूल अल्लाह (स०) ! आप सच फ़रमाते हैं क़सम है मुझको उस ख़ुदा की जिसने आपको सच्चा रसूल बनाया है ! अब मैं अपनी माँ की ख़ूब ताबेदारी करूँगा। बस वह अपनी माँ के पास आया और उसके पाँव चूम कर कहा, अम्मा जान ! मुझको अल्लाह के रसूल ने यही हुक्म दिया है कि अपनी माँ की ख़िदमत करो और उसको राज़ी रखो। माँ ने खुश होकर बेटे को गले से लगा लिया और अल्लाह व रसूल (स०) की तारीफ़ की।

पिसर माँ-बाप का लख़्ते जिगर है,
सरूरे जिस्म व जाँ नूरे नज़र है।

अगर दम भर न वह उनको नज़र आये,
जहाँ उनके लिए तारीक हो जाये।

जुदा गर उनसे बेटा एक दम हो,
जुदाई में बहुत-सा उनको ग़म हो।

अगर बेटे पे कोई सदमा आ जाये,
पदर-ए-मादर के तन से जां निकल जाये।

पिलाया दूध अपना तुमको माँ ने,
खिलाये बाप ने माक़ूल खाने।

लड़कपन से बड़ा तुमको किया है,
जवाने खुश अदा तुम को किया है।

तुम उनके वास्ते नूरे बसर हो,
सरापा रहमते जान व जिगर हो।

तुम्हे इल्मो हुनर सिखला दिया है,
पहुँचाना था जहाँ पहुँचा दिया है।

वह खिदमत तुम्हारी करते रहे हैं,
तुम्हारे वास्ते मरते रहे हैं।

जब ऐसा हक़ है माँ और बाप का,
करो तुम ऐ पिसर हक़ उनका अदा।

ज़बां पर लाओ मत ऐसी हिकायत,
करे मादर पदर जिससे शिकायत।

करोगे जो ख़िदमत माँ-बाप की,
दोनों जहाँ में इज़्ज़त तुमको मिलेगी।

# इन बातों में वालिदैन की ताबेदारी नहीं

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ط

यानी ऐ लोगो! और तुम्हारे रब ने तुमको क़तई हुक्म दिया है कि तुम उसके सिवा किसी की इबादत न करो (और उसके हुक्म पर चलो)।

**फायदा—** इस फ़रमाने इलाही से मालूम हुआ कि सब हक़ूक़ से पहले अल्लाह का और उसके रसूल का हक़ है। इसलिए जो हुक्म अल्लाह व रसूल के फ़र्ज़ और ज़रूरी हैं और माँ-बाप उनसे रोकते हों तो उनमें उनकी ताबेदारी दरुस्त नहीं। जैसे किसी की आमदनी कम है। अगर माँ-बाप की ख़िदमत करे तो बीवी-बच्चों को तकलीफ़ होने लगे तो उस शख़्स को दरुस्त नहीं कि बीवी बच्चों को तकलीफ़ दे और माँ-बाप पर ख़र्च करे। और जैसा कि बीवी का हक़ है कि शौहर से कहे कि मुझको अपने माँ-बाप से जुदा रक्खो और शौहर जुदा रखना चाहे और माँ-बाप जुदा न होने दें तो उस शख़्स को दरुस्त नहीं कि उस हालत में बीवी को उनके साथ रक्खे बल्कि जुदा रखना वाजिब है। या मसलन हज को या दीन का इल्म जितना कि फ़र्ज़ है, हासिल करने को न जाने दें तो उनकी ताबेदारी दरुस्त नहीं। और जो काम अल्लाह व रसूल के नज़दीक दरुस्त न हों और माँ-बाप उनके करने को कहें तो इसमें भी उनका कहा न मानें। मसलन वह किसी नाजायज़ नौकरी करने को कहें या बुरी रस्में करवायें या बिला सख़्त ज़रूरत उसकी बीवी को तलाक़ दिलवायें। इसमें भी उनका कहा न मानें। या वह कहें कि अपनी तमाम आमदनी हमको दिया करो। इसमें भी उनकी ताबेदारी न करने में कोई गुनाह नहीं। अगर माँ या बाप इस पर ज़ोर डालेंगे तो ख़ुद गुनाहगार होंगे। (अज़बहिश्ती गौहर)

**फायदा—** माँ-बाप को भी चाहिए कि जब बहू और बेटा अलग रहना चाहें तो बिला रंज के ख़ुशी से उनको अलग कर दें कि सब झगड़ा फ़िसाद ही ख़त्म हो जाये व्रर्ना बहुत-सी हक़तलफ़ियाँ होने का डर है जिन पर अल्लाहतआला की तरफ़ से पकड़ होगी।

# औलाद को ज़्यादा मारना-पीटना ज़ुल्म है

बच्चों पर जो ज़ुल्म माँ-बाप से या उस्तादों से होता है, बड़ी बेरहमी है। बाज़ माँ-बाप ऐसे क़साई होते हैं कि बच्चों को इस तरह मारते हैं जैसे कोई जानवरों को मारता है। बल्कि जैसे कोई छत कूटता हो और जो कोई मना करे तो कहते हैं कि हमें अख़्तियार है। हम इसके बाप हैं। याद रक्खो, बाप होने से तुम इसके मालिक नहीं होते। बाप का रुतबा अल्लाहतआला ने बढ़ाया है न इस वास्ते कि बच्चे उसकी मिलकियत हैं। और उससे बच्चों को तकलीफ़ पहुँचे, बल्कि इस वास्ते की बच्चों की परवरिश करें और उनको आराम दें। हाँ कभी इसे आराम देने की ही ज़रूरत से सज़ा देना और अदब सिखाना, इसकी इजाज़त है। मगर ज़रूरत के क़ायदे से अदब सिखाने के लिए सज़ा देने की इतनी ही इजाज़त है जो परवरिश में मददगार हो न इतनी कि हद से बाहर तकलीफ़ पहुँचाये। माँ-बाप से ऐसी ज़्यादती अलावा गुनाह होने के इन्सानियत और फ़ितरत के भी ख़िलाफ़ है। माँ-बाप को तो अल्लाह तआला ने महज़ रहमत बनाया है। उनसे ऐसी ज़्यादती होना इस बात की निशानी है कि वह शख़्स इन्सानियत से ख़ारिज है और उस्तादों की तो ऐसी बुरी हालत है कि उन्होंने यह मिसाल याद कर ली है कि हड्डी माँ-बाप की और चमड़ी उस्ताद की। न मालूम यह कोई कुर्आन की आयत है या हदीस है या फ़िक़ा में कहीं लिखा है। उस्तादों को याद रखना चाहिए कि क़यामत के दिन इसका बदला देना पड़ेगा। यहाँ बच्चों की चमड़ी आपकी है, वहाँ आपकी चमड़ी-बच्चों की होगी। क्या तमाशा होगा कि वह बच्चे जो उनके बस में थे, ख़लक़त के सामने उनको पीट रहे होंगे। अलावा इसके यह भी तजुर्बे की बात है कि ज़्यादा मारना तालीम के लिए भी मुफ़ीद नहीं होता बल्कि नुक़सान पहुँचाता है। एक यह कि बच्चे की कूव्वत कमज़ोर हो जाती है। दूसरे यह कि डर के मारे सारा पढ़-लिखा भी भूल जाता है। तीसरे जब बच्चे को पीटते-पीटते उसकी आदत हो जाती है तो बेहया बन जाता है। फिर पीटने से उस पर कुछ असर नही होता। उस वक़्त यह मर्ज़ लाइलाज हो जाता है और सारी उम्र के लिए बेहयाई उसके मिजाज़ में दाख़िल हो जाती है। इसलिए ज़रूरी बात यह है कि तालीम और अदब सिखाने के लिए बच्चों पर मार-पीट ज़्यादा न की जावे कि ज़ुल्म है। (अज़ हज़रत मौलाना शाह अशरफ़ अली थानवी (र०)

# यतीमों का माल खाने की सज़ा

रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि— -

क़यामत में बाज़ लोग क़ब्रों से इस हाल में उठेंगे कि उनके मुँह से आग के शोले निकलते होंगे। सहाबा ने अर्ज़ किया—या रसूल अल्लाह, वह कौन

लोग होंगे? फ़रमाया तुमको नहीं मालूम कि अल्लाहतआला ने क़ुर्आन मजीद में फ़रमाया है कि जो लोग यतीमों का माल नाहक़ खाते हैं वह अपने पेटों में अंगारे भर रहे हैं और वह बहुत जल्दी दोज़ख़ की आग में दाख़िल होंगे।

**फ़ायदा—** नाहक़ का मतलब यह है कि बाज़ मर्द और औरतें ऐसा करते हैं कि जब कोई मर जाता है और औलाद छोड़ता है तो उसकी छोड़ी हुई चीज़ों पर क़ब्ज़ा कर लेते हैं। उसी में मेहमानों का ख़र्च और मस्जिदों का तेल और मिस्कीनों का खाना वग़ैरा सब कुछ करते हैं। और उस माल और चीज़ों में उन यतीमों का हक़ होता है। अल्लाह व रसूल का हुक्म यह है कि यतीमों का हिस्सा अलग कर दो और उनके हिस्से की चीज़ों को उन्हीं के ख़र्च में लाओ और मेहमानदारी और ख़ैर-ख़ैरात वग़ैरा करना हो तो अपने हिस्से में से करो। इसी तरह मेहमानों और मिस्कीनों और बिरादरी के लोगों को चाहिए कि इस क़िस्म के खानों से बचें और अल्लाहतआला की पकड़ से डरें।

## यतीमों पर रहम करने की बुज़ुर्गी

**रहमते आलम महबूबे ख़ुदा (स०)का फ़रमान है कि—**

जो मर्द या औरत किसी यतीम बच्चे के साथ जो उसके पास रहता हो, सलूक व एहसान करे तो मैं और वह जन्नत में इस तरह होंगे जैसे शहादत की और दर्मियान की उंगली पास-पास मिली हुई होती हैं। और जो मर्द या औरत मुहब्बत और प्यार से यतीम के सर पर हाथ फेरे तो जितने बालों पर उसका हाथ फिरेगा उतनी ही नेकियाँ उसको सवाब में मिलेगी।

एक लड़का जिसकी माँ का हो गया था इन्तक़ाल,
मेरे पास आया कहीं से रोता रोता एक दिन।
और कहा रोकर कि माँ को ढूँढता फिरता हूँ मैं,
खाना तक खाया नहीं है साफ़ गुज़रा एक दिन।

छोड़कर बेकस ख़ुदा जाने कहाँ रुख़सत हुई,
है बहुत मुश्किल है मुझे बे माँ के जीना एक दिन।
प्यार करती, मुँह धुलाती कपड़े पहनाती थी वह,
यूँ फटे कुर्ते से मैं रहता नहीं था एक दिन।

कौन चुमकारे मुझे और कौन ले आग़ोश में,
ख़्वाब में भी तूने हाल आकर न पूछा एक दिन।
अब नहीं करने का ज़िद और अब न कुछ माँगूँगा मैं,
ख़स्ता हाली पर मेरी आ रहम फ़रमा एक दिन।

कैसी बस्ती है वह कैसे घर हैं कैसे लोग हैं,
तूने जाकर के यहाँ ख़त भी न भेजा एक दिन।

अब नहीं रोने का रोने से ख़फा है तू अगर,
अच्छी अम्माँ गोद में ले ले मुझे आ एक दिन।

तुमको मिल जाये तो कहना मुझको भी ले जाये अपने साथ,
या चली आये वहाँ से रह के दो या एक दिन।

या इलाही इस यतीमे बे नवा पर फ़ज़्ल कर,
यह दुआ की और अकबर ख़ूब रोया एक दिन।

## ग़ीबत करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

ऐ मुसलमानो ! तुम लोगो की तरफ़ से बहुत शक न किया करो, क्योंकि बाज़ शक गुनाह होते हैं, और एक-दूसरे का ऐब तलाश न किया करो और न तुम में से कोई किसी के पीछे किसी की ग़ीबत किया करे। भला तुम में से कोई यह बात पसन्द करेगा कि अपने मरे हुए भाई का गोश्त खाये। हरगिज़ पसन्द न करेगा। तो फिर ग़ीबत क्यों करते हो कि यह भी एक क़िस्म का मुरदार खाना है। (सूरतउलहिजरात)

और हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०)फ़रमाते हैं कि—

तुम जानते हो ग़ीबत क्या चीज़ है? आपके सहाबों ने अर्ज़ की कि अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानते हैं। आप (स०) ने फ़रमाया ग़ीबत यह है कि अपने भाई मुसलमान की कोई बात इस तरह बयान करे कि अगर उसको ख़बर हो जाये तो उसको बुरा लगे। असहाबों ने अर्ज़ की—या रसूल अल्लाह ! अगर हमारे उस मुसलमान भाई में वह बात हो जो हम कहते हैं। आपने (स०) फ़रमाया, अगर उसमें वह बात है जो तुम कहते हो तो तुमने उसकी ग़ीबत की और अगर उसमें वह बात न हो जो तुम कहते हो तो तुमने उस पर बोहतान लगाया। ख़ूब समझ लो, जो शख़्स मर्द हो या औरत, ग़ीबत करेगा तो वह मेरी शिफ़ाअत से महरूम रहेगा। या अल्लाह तेरी पनाह !

ग़ीबत ऐसी बुरी चीज़ है कि अल्लाह व रसूल की नाराज़गी किस क़दर ज़ाहिर होती है। यह तो .आख़िरत का नुक़सान हुआ और दुनिया का नुक़सान सब जानते हैं कि ग़ीबत लड़ाई फ़िसाद की जड़ है।

हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जब अल्लाहतआला ने मुझे मैराज नसीब फ़रमायी तो मेरा गुज़र ऐसे लोगों पर हुआ जिनके नाख़ून तांबे के थे और वह उनसे अपना मुँह खुरचते थे। मैंने पूछा—ऐ जिबराईल ! यह कौन लोग हैं ? कहा यह वह लोग हैं जो ग़ीबतें करके लोगों के गोश्त खाते थे और उनकी इज़्ज़त बरबाद करने के पीछे पड़े रहते थे।

**फ़ायदा—** ऐसा कौन आदमी है जो ज़ाहिरी और बातिनी ऐबों से ख़ाली हो। यह तो अल्लाहतआला का फ़ज़्लो करम है कि एक के दिल में दूसरे की इज़्ज़त डाल दी और इज़्ज़त को ऐबों का पर्दापोश बना दिया कि आपस में नफ़रत न हो। जैसे हर पेट में पाख़ाने-पेशाब की अला-बला भरी पड़ी है, मगर गोश्त ने पर्दा बना कर उनको छुपा दिया है, वर्ना हर शख़्स दूसरे के पास न बैठ सकता था। बस जो शख़्स पीठ पीछे किसी की ग़ीबत करता है और अपनी इज़्ज़त बढ़ाने के लिए उसके ऐब खोलता है वह गोया मुर्दे का गोश्त खाता है और उस भाई मुसलमान को ख़बर भी नहीं कि उसका भाई उसके साथ क्या सलूक कर रहा है। देखो ! शेर एक हैवान और फाड़ खाने वाला जानवर है, मगर मुरदार गोश्त के खाने से नफ़रत करता है। फिर मुसलमान जो कि इन्सान है, अल्लाह व रसूल के हुक्मों को मानता है तो बहुत ज़्यादा उस का हक़दार है कि नफ़रत करे। क्योंकि ग़ीबत करना ज़िना वग़ैरा से भी ज़्यादा और गन्दा गुनाह है।

## तकब्बुर करने की सज़ा

इल्मी लियाक़त या इबादत या दयानतदारी में या दौलत व इज़्ज़त में या क़ूव्वत व क़ौमियत या हकूमत वग़ैरा में अकड़ना और इतराना और अपने आप को बड़ा समझना यह तकब्बुर है। इसी तकब्बुर की वजह से बहुत से लोग गुमराह हो गये हैं। सब से बड़ा गुमराह शैतान भी इस वजह काफ़िर और दोज़ख़ी हुआ। सुल्ताने दो जहाँ हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) फ़रमाते हैं कि जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी तकब्बुर होगा वह जन्नत में नहीं जायेगा और जो शख़्स तकब्बुर करता है अल्लाहतआला उस की गर्दन तोड़ देता है यानी उसको ज़लील और बेइज़्ज़त कर देता है। ऐसे लोगों को यह सोचना चाहिए कि यह जितनी ख़ूबियाँ हमारे अन्दर हैं अल्लाहतआला की दी हुई हैं। अगर वह चाहे तो ज़रा-सी देर में सब छीन ले। फिर अपने आप को औरों से बड़ा समझना फ़ज़ूल और फ़िरऔनियत और शैतानी काम है, जिसका नतीजा ज़िल्लत और बेइज़्ज़त होना है और दोज़ख़ में जाना है।

# ज़िना करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنَا إِنَّهُ كَانَ فَاحِشَةً وَسَاءَ سَبِيلًا

यानी ऐ लोगो ! और तुम ज़िना के पास भी न फटकना, बेशक वह बड़ी बेहयाई की बात है।

**फ़ायदा—** पास भी न फटकना, इस का मतलब यह है कि जिन बातों से ज़िना का तक़ाज़ा पैदा होता है उनसे भी बचो। जैसा कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया है कि—

ग़ैर औरत को बद-नज़र से देखना (या औरत का ग़ैर मर्द को देखना) आँखों का ज़िना है। बातें करना और सुनना ज़ुबान और कानों का ज़िना है। हाथ लगाना या उसकी तरफ़ चलना यह हाथ और पाँव का ज़िना है। दिल में उसका ख़याल करना, यह दिल का ज़िना है। तो इन बातों से बचना भी ज़रूरी है और जो शख़्स मर्द हो या औरत, ग़ैर महरम को बदनज़री से देखेगा तो क़यामत के दिन उसकी आँखों में सिक्का पिघला कर डाला जायेगा।

**मसला—** अगर अचानक ग़ैर औरत पर नज़र पड़ जावे या औरत की ग़ैर मर्द पर नज़र पड़ जावे तो फिर दूसरी नज़र डालना गुनाह है और जो पहली नज़र के बाद फिर न देखे, उसको शहीद के बराबर सवाब मिलेगा। ज़िना करने वाले मर्द और औरत पर अल्लाह व रसूल ने लानत फ़रमायी है। दुनिया में भी शरीयत की तरफ़ से ज़िना करने की सज़ा यह है कि जिसका निकाह न हुआ हो मर्द हो या औरत, अगर वह इस बदकाम को करे तो उन दोनों के सौ-सौ दुरे मारे जायेंगे और निकाह किया हुआ जो मर्द या औरत ज़िना करे तो उनको संगसार किया जायेगा यानी पत्थरों से मार दिये जायेंगे।

हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया है कि—

ज़मीन दो जगह रोती है, एक नाहक़ ख़ून होने पर, जब ख़ून का पहला क़तरा ज़मीन पर गिरता है तो रो कर कहती है, ऐ रब ! मुझे इजाज़त दे कि मैं इस क़ातिल को निगल जाऊँ। हुक्म होता है कि ज़रा सब्र कर, यह तेरे ही अन्दर आने वाला है, फिर समझ लेना। और जब कोई ज़िना करता है तो ज़मीन रोकर कहती है—ऐ रब ! मुझे अख़्तियार दे कि मैं इस ज़ानी और ज़ानिया को निगल जाऊँ। हुक्म होता है कि ज़रा सब्र कर, यह दोनों तेरे ही अन्दर आने वाले हैं और उस वक़्त समझ लेना।

फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने—

कि ज़िना करने वालों के लिए मरने के बाद उनकी क़ब्रों में दोज़ख़ के सातों दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और उन दरवाज़ों से उनको साँप और बिच्छू आकर डसते रहेंगे।

या अल्लाह तेरी पनाह! इस बेहयाई के काम से कि दुनिया में भी ऐसे आदमी बेइज़्ज़त और ज़लील हो जाते हैं और बड़ी-बड़ी तकलीफ़ों में फँस जाते हैं, जैसे किसी दुश्मन का सताना, रिज़्क़ की तंगी, जान व माल की बर्बादी, सेहत की कमी, बीमारियों की ज़्यादती, जल्दी बूढ़ा होना, मुँह पर फटकार का बरसना, चेहरे का बे-नूर और बेरौनक़ होना, बदसूरती पैदा होना, अल्लाह व रसूल की लानत में दाख़िल होना, नमाज़, रोज़ा और सब अच्छे कामों से नफ़रत हो जाना और मरने के बाद अज़ाबे क़ब्र में फँसना और आख़िरत में दोज़ख़ के अन्दर जलना।

## ज़िना करने वालों के लिए दोज़ख़ का तनूर

रसूल अल्लाह (स०)ने फ़रमाया कि—

जब मुझको मैराज हुई तो मैंने दोज़ख़ में एक तनूर देखा। मुँह उसका तंग और पेट उसका बहुत चौड़ा। उसमें बहुत से नंगे मर्द और औरतें क़ैद थे और उनको साँप और बिच्छू लिपट रहे थे और उनकी पेशाबगाहों से ख़ून और पीप बह रहा था। सब दोज़ख़ी उस ख़ून और पीप की बदबू से रोते थे। मैंने जिबराईल से पूछा, यह कौन लोग हैं ? कहा, या रसूल अल्लाह ! यह ज़िना करने वाले मर्द और ज़िना करने वाली औरतें हैं। (ज़मानलफिरदौस)

**फ़ायदा—** दुनिया में देखा गया है कि बाज़ ज़ानी और ज़ानिया, सूज़ाक, आतशक वग़ैरा की बीमारी में फँस जाते हैं।

या अल्लाह! बचाइयो हमको इस लानती काम से।

## दय्यूस किसको कहते हैं?

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०)ने कि—

**फ़ायदा—** दय्यूस जन्नत में नहीं जायेगा। दय्यूस भड़वे और बेग़ैरत आदमी को कहते हैं कि अपनी बहू, बेटी, बीवी की बदकारी जान कर उससे खुश रहे। ज़ानी और ज़ानिया पर चौदह तबक़ लानत करते हैं और जन्नत के दरवाज़े पर लिखा हुआ है कि "मैं जन्नत हूँ और दय्यूस पर हराम हूँ" और जो लोग अपनी बहू

बेटी, बीवी, वग़ैरा से बदकारी करवाते हैं और ज़ेब और ज़ीनत के साथ घर से इसलिए निकालते हैं कि लोग इनको देखें, यह सब दय्यूस हैं।

## पर्दे का बयान

आजकल बाज़ मुसलमान मर्द और औरतें अंग्रेज़ों की तक़लीद में पर्दे को उड़ा रहे हैं और क़ुरआन व हदीस के हुक्म को मिटाने की कोशिश में लगे हुए हैं। ऐसे लोगों को क्या कहा जावे, वह जानें उनका काम जाने। यहाँ उन ग़ैरतमन्द और शरीफ़ मर्दों और औरतों के लिए पर्दे की बाबत बतौर नमूना कुछ लिखा जाता है कि जो पर्दे के हामी हैं। और अल्लाह के रसूल (स०) ने हज़रत फ़ात्मा (रज़ि०) से दरयाफ़्त फ़रमाया कि बेटी, औरत के लिए सबसे अच्छी बात क्या है? उन्होंने फ़रमाया कि अब्बा जी! औरत के लिए सबसे अच्छी बात यह है कि वह किसी ग़ैर मर्द को न देखे और न उसको कोई ग़ैर मर्द देखे। यह जवाब सुनकर हुज़ूर बहुत खुश हुए और हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को गले से लगा लिया।

साहिबो! हुज़ूर का खुश होना दोनों जहाँ की नैमतों से बढ़कर है। अगर कोई अक़लमन्द हो तो समझे ! हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को अपनी वफ़ात से पहले बड़ा फ़िक्र यह था कि लोग मेरे जनाज़े को न देखें। फिर उनको एक गहवारे की शक्ल का पर्दा बना कर दिखाया गया। उसको देखकर आप बहुत खुश हुईं और वसीयत फ़रमायी कि मेरे जनाज़े पर ऐसा ही गहवारा बना कर पर्दा किया जाये कि लोग मेरे जनाज़े को न देखें। सुबहान अल्लाह! हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को कैसी शर्म व हया थी। है कोई अकलमन्द बीवी जो आपके तरीक़े पर अमल करे।

एक नाबीना सहाबी ने हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में आने की इजाज़त चाही। हुज़ूर ने अपनी बीवियों से फ़रमाया कि पर्दे में हो जाओ। उन्होंने अर्ज़ की कि वह तो नाबीना हैं, हमको कैसे देखेंगे। आप ने फ़रमाया कि तुम तो नाबीना नहीं हो और पर्दा करवाकर फिर उन सहाबी को घर में बुलाया गया।

**मसला—** अपने मर्दों के सामने मुँह, सीना, बाज़ू और पिंडली खुल जावें तो कुछ हर्ज नहीं। रान और पेट और पीठ उनके सामने भी न खुलना चाहिए। अपने मर्द वह लोग हैं जिनसे हमेशा के लिए निकाह हराम है। जैसे बाप, दादा, नाना, मामू, ताया, चचा, भाई, भतीजा, भान्जा, ससुर, इन मर्दों के अलावा अपने रिश्तेदार जिनसे निकाह हो सकता हो ग़ैर मर्द हैं। जैसे देवर, जेठ, बहनोई, चचाज़ाद भाई, तायाज़ाद भाई, फूफीज़ादा, मामूज़ाद भाई, ख़ाला ज़ाद भाई वग़ैरा। इन सबसे अच्छी तरह पर्दा करना चाहिए। बाज़ इस क़िस्म के रिश्तेदार बेइल्म कहा करते हैं कि फ़लाँ ने हमसे पर्दा कराया, क्या हम ग़ैर थे? यह उनकी सख़्त ग़लती है, जो ऐसा कहते हैं। याद रक्खो, ऐसे रिश्तेदारों से पर्दा न कराने में बड़ी-बड़ी

ख़राबियाँ पैदा होती हैं, बदनाम हो जाते हैं। जब इन रिश्तेदारों से पर्दा करने का हुक्म है तो दूसरे लोगों से किस तरह पर्दा न होगा।

**मसला—** जैसा पर्दा औरतों को मर्दों से है वैसा ही मर्दों को औरतों से है। जैसा औरतों को झाँक-ताँक कर मर्दों को देखना दरुस्त नहीं, वैसा ही मर्दों को झाँक-ताँक कर औरतों को देखना दरुस्त नहीं।

**मसला—** अपने शौहर से किसी जगह का पर्दा नहीं, तमाम बदन उसके सामने खोलना दरुस्त है।

ग़ैरत व शर्म का हामी व मुईं है पर्दा,
दीने इस्लाम की एक शाने मुबीं है पर्दा।

लोग नज़्ज़ारों से, आँखों से मज़े लेते हैं,
आज जिन क़ौमों की औरत में नहीं है पर्दा।

फिर यह जब है कि करें क़दर मुसलमाँ इसकी,
और वह क्या समझें कि जिन में नहीं है पर्दा।

कहना जायज़ नहीं उन औरतों को मस्तूरात,
यानी जिनमें कि यह राइज ही नहीं है पर्दा।

हुक्म में इसके हदीसें हैं नबी की मनक़ूल,
पर्दा है ऐने हया दीं के क़रीं है पर्दा।

सर से पाँव तलक औरत का बदन है कुल सतर,
बल्कि आवाज़ का भी इसके तईं है पर्दा।

है यह ज़ाहिर व बातिन का हक़ीक़ी ज़ेवर,
रौनक़े चेहरा हर पर्दा नशीं है पर्दा।

या खुदा तुझ से दुआ है यही इस आजिज़ की,
औरतें पर्दा करें जिन में नहीं है पर्दा।

## मसला ग़लत बतलाने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

فَسْئَلُوْا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ

इस आयत शरीफ़ा में हक़ तआला शानहू ने एक ऐसा क़ानून बयान फ़रमाया है कि उससे हक़ तआला की निहायत ही रहमत मालूम होती है, वह यह है कि अगर तुमको कोई बात दीन की मालूम न हो तो अहले ज़िक्र से यानी

दीन का इल्म जानने वालों से पूछ लिया करो। क्योंकि अगर किसी को कोई बात दीन की मालूम न हो और वह किसी से पूछे और वह बतलाने वाला ग़लत मसला बतलाये तो न जानने वाले की कोई पकड़ न होगी। हदीस शरीफ़ में है कि जिस ने फ़तवा दिया यानी मसला बतलाया बग़ैर इल्म के तो बतलाने वाला गुनहगार होगा। अब ग़ौर करो कि दुनिया में किसी हकूमत का यह क़ानून नहीं कि अगर किसी को क़ानून मालूम न हो और वह किसी वकील से कानून दरियाफ़्त करे और वकील ग़लत बतलाये तो उस जाहिल को माज़ूर समझा जावे और वकील से मवाख़िज़ा किया जाये, बल्कि तमाम बादशाह रिआया को उसका मुकल्लिफ़ करते हैं कि सही क़ानून दरियाफ़्त करके उस पर अमल करें। अगर दरियाफ़्त किया और उसको ग़लत कानून बतलाया गया, कोई उसको माज़ूर नहीं समझता। मगर हक़ तआला की यह बड़ी रहमत है कि जाहिलों को सही क़ानून मालूम करने का मुकल्लिफ़ नहीं बनाया गया, बल्कि उनके ज़िम्मे सिर्फ़ ऐसे शख़्स से दरियाफ़्त करना ज़रूरी है जिसको उसका अहल समझा यानी जानने वाला समझा कि यह शख़्स दीन के मसले जानता है। फिर दरियाफ़्त करने के बाद अगर उसको ग़लत मसला बतलाया जावे तो इसका मवाख़िज़ा ग़लत बतलाने वाले से होगा यानी ग़लत मसला बतलाने वाले को अल्लाहतआला सज़ा देगा। बतलाइए अगर क़यामत में यह सवाल किया जावे कि तुमने फ़लाँ काम ख़िलाफ़े शरह क्यों किया और वहाँ यह जवाब दिया जावे कि हमने फ़लाँ आलिम से दरियाफ़्त किया था, उसने यह बतलाया था, इस पर कहा जाये कि उसने ग़लत बतलाया तो तुमको पूरी तहक़ीक़ करनी ज़रूरी थी तो क्या हाल होता। देखो ! किस क़दर अल्लाहतआला की रहमत है कि तहक़ीक़ कामिल का मुकल्लिफ़ नहीं बनाया गया, बल्कि सिर्फ़ दरियाफ़्त करने का मुकल्लिफ़ बनाया गया। इससे मालूम हुआ कि शरीयत पर अमल करना निहायत आसान है। अगर किसी को मसला मालूम न हो तो किसी आलिम मौलवी से दरियाफ़्त करके अमल करे तो अल्लाहतआला के यहाँ यह बरी हो जायेगा। बतलाइए यह कितनी बड़ी रहमत है और ग़लत मसला बतलाने वाला पकड़ा जायेगा।

हुज़ूर (स०) फ़रमाते है कि—

जिससे कोई दीन की बात पूछी जाये और वह उसको छुपा ले या ग़लत बतलाये तो क़यामत के दिन उसको आग की लगाम पहनायी जायेगी।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो ! मसला बतलाने में बड़ी अहतियात की ज़रूरत है। कोई खेल तमाशा नहीं। अल्लाह व रसूल का क़ानून है, अगर तुमको मसला ख़ूब याद हो तो बतला दो और वैसे ही अटकल पच्चू अपनी राय से बतलाओगे तो

सारा बोझ तुम्हारी गर्दन पर रहेगा।

## दूसरे के घर में झाँकने की सज़ा

एक शख़्स हुज़ूर (स०) के घर में झाँकने लगा। आपने उसको फ़रमाया कि अगर मैं तुझको झाँकते देखता तो तेरी आँखें फोड़ डालता। जब तूने झाँक कर देखा तो घर में आने की इजाज़त माँगने से क्या फ़ायदा हुआ।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि दूसरे के घर में झाँकना, ताकना हराम है। अल्लाहतआला के रसूल की नाराज़गी, अल्लाहतआला की नाराज़गी है। इसलिए झाँकने, ताकने से बचना चाहिए। यह मर्ज़ अक़सर औरतों में ज़्यादा होता है।

## बेअमल नसीहत करने वालों को सज़ा

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उसामा बिन ज़ैद से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि एक आदमी क़यामत के दिन लाया जायेगा और उसको दोज़ख़ में डाल दिया जायेगा। उसके पेट से उसकी अंतड़ियाँ निकल पड़ेंगी और वह उनको हासिल करने के लिए इस तरह घूमता फिरेगा जैसे गधा पनचक्की के चारों तरफ़ घूमता है। दोज़ख़ी लोग उससे पूछेंगे कि ऐ शख़्स, तुझको क्या हो गया? हालाँकि तू दुनिया में लोगों को अच्छी-अच्छी बातें बतलाता था और बुरे कामों से रोकता था। वह कहेगा बेशक मैं लोगों को नसीहत करता था, मगर खुद अमल नहीं करता था और उनको बुरे कामों से मना करता था, मगर खुद न रुकता था।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से उन लोगों को सबक़ हासिल करना चाहिए जो दूसरों को वाज़ व नसीहत करते हैं और खुद अमल नहीं करते।

## झूठ बोलने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

तुम सच बोलने के पाबन्द रहो। क्योंकि सच बोलना अच्छी राह दिखाता है तो सच बोलना और अच्छी राह पर चलना दोनों जन्नत में ले जाते हैं और झूठ बोलने से बचा करो। क्योंकि झूठ बोलना बुरी राह दिखाता है। झूठ बोलना और गलत राह चलना दोनों दोज़ख़ में ले जाते हैं और दोज़ख़ में झूठ बोलने वाले के कल्ले चीरे जायेंगे। अल्लाह व रसूल ने झूठ बोलने वाले पर लानत

फ़रमायी है और तजुर्बे की बात है कि झूठा आदमी दुनिया में भी बे-ऐतबार और ज़लील व ख़ुवार हो जाता है। मगर तीन जगह झूठ बोलना दरुस्त है। एक बीवी-बच्चों को ख़ुश करने के लिए, दूसरे जंग में काफ़िरों से बचाव करने के लिए, तीसरे मुसलमानों में सुलह कराने के लिए।

## झूठी गवाही देने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०)ने फ़रमाया कि—

जब कोई झूठी गवाही देता है तो अर्श काँपता है और अर्श के उठाने वाले फ़रिश्ते उस पर लानत करते हैं और वह दोज़ख़ में जल्दी जाना चाहता है। दिल उसका सियाह हो जाता है और उसका चेहरा बेरौनक़ हो जाता है। उसकी क़ब्र उस पर तंग हो जायेगी और क़ब्र में उसकी सूरत ख़नज़ीर की-सी हो जायेगी। या अल्लाह ! तेरी पनाह। और हुज़ूर (स०) ने झूठी गवाही देने वाले पर लानत फ़रमायी है।

## किसी की ज़मीन दबा लेने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स नाहक़ और ज़बरदस्ती से किसी की एक बालिश्त भर ज़मीन दबायेगा तो क़यामत के दिन सातों ज़मीनों के वज़न के बराबर उसके गले में तौक़ डाला जायेगा या सातों ज़मीनों में धँसाया जायेगा।

**फ़ायदा—** इसलिए हर मुसलमान को चाहिए कि किसी का हक़ थोड़ा हो या बहुत हरगिज़ अपने ज़िम्मे न ले। चाहे एक पैसा या एक सुई हो। हक़ूक़ उलइबाद से जहाँ तक हो सके, बचे।

## चुग़ली खाने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने—

कि चुग़लख़ोर जन्नत में नहीं जायेगा और ख़ुदा के सब बन्दों में सब से बुरे बन्दे वह हैं जो चुग़लियाँ करते हैं और एक दूसरे में फ़िसाद कराते हैं।

**मसला—** अगर कोई शख़्स किसी को नाहक़ तकलीफ़ देना चाहता हो तो उसका बतला देना अच्छा है, बल्कि सवाब मिलता है।

## वादा पूरा न करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

जो शख़्स अमानत में ख़यानत करे, उसमें ईमान नहीं और जिसको वादा पूरा करने का फ़िक्र न हो उसमें दीन नहीं।

**मसला—** वादा करने के बाद अगर कोई दीन या दुनिया का नुक़सान होता हो तो फिर माज़ूरी है।

## मुसलमान का ऐब खोलने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

जो शख़्स अपने भाई मुसलमान का ऐब छुपायेगा, अल्लाहतआला दुनिया में और आख़िरत में उसका ऐब छुपायेगा और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई का ऐब खोलेगा और उसको रुसवा करेगा, अल्लाहतआला दुनिया और आख़िरत में उसका ऐब खोलेगा और उसको रुसवा करेगा और अपने भाई मुसलमान का ऐब छुपाने वाला जन्नत में जायेगा और ऐब खोलने वाला दोज़ख़ में जायेगा।

**फ़ायदा—** इसलिए अच्छी बात यह है कि किसी का ऐब तलाश ही न करें। अगर मालूम हो जावे तो किसी पर ज़ाहिर न करें।

## हमसाये को तकलीफ़ देने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

वह शख़्स जन्नत में नहीं जायेगा जिसका हमसाया उसके सताने से बेफ़िक्र न रहता हो यानी हमसाये को यह फ़िक्र लगा रहता हो कि यह शख़्स मौक़ा मिलने पर जान व माल और इज़्ज़त को नुक़सान पहुँचायेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

एक बीबी ने हुज़ूर (स०) से दरियाफ़्त किया कि या रसूल अल्लाह, एक औरत है कि वह नमाज़ रोज़े की पाबन्द है और बहुत इबादत करती है मगर हमसायों से लड़ाई-फ़िसाद करती रहती है और हमसाये उससे नाराज़ हैं उसके बारे में क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया— वह दोज़ख़ में जायेगी। फिर उस बीबी ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! एक ऐसी औरत है कि वह पाँचों वक़्त की नमाज़ वक़्त पर पढ़ती है मगर ज़्यादा इबादत नहीं करती, मगर किसी हमसाये से लड़ती-झगड़ती नहीं। हमसाये उससे ख़ुश हैं। उसके बारे में क्या हुक्म है? आप ने फ़रमाया— वह जन्नत में जायेगी। फिर आपने फ़रमाया कि जो मर्द या

औरत अल्लाह और उसके रसूल को सच्चा मानता है, उसको चाहिए कि पड़ौसी का हक़ अदा करे। अर्ज़ किया गया कि या रसूल अल्लाह! पड़ौसी का क्या हक़ है? आपने फ़रमाया कि ज़रूरत के वक़्त उसको क़र्ज़ दे देना, उसके बुलाने पर उस के घर जाना, बीमारी में उसकी ख़बर लेना, तकलीफ़ में उसकी मदद करना, उसके आगे भी और पीछे भी, उसके घर की और बाल-बच्चों की हिफ़ाज़त करना, उस को ज़ुल्म न करने देना, अच्छे कामों की उसको नसीहत करना, उसको नाहक़ कोई तकलीफ़ न देना।

अफ़सोस यही है कि आजकल पड़ौसियों को तकलीफ़ें दी जाती हैं। अल्लाह बचाये।

दुनिया अजब बाज़ार है कुछ जिन्स यां की साथ ले,
नेकी का बदला नेक है बदी से बदी की बात ले।

कल जुग नहीं कर जुग है यह यां दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले।

मेवा खिला मेवा मिले फल फूल दे फल पात ले,
आराम दे आराम ले दुखदर्द दे आफ़ात ले।

कांटा किसी के मत लगा गो मिस्ले गुल फूला है तू,
वह तेरे हक़ में तीर है किस बात पे फूला है तू।

मत आग में डाल और को फिर घास का पूला है तू,
सुन रख यह नुकता बेख़बर किस बात पर भूला है तू।

गेहूँ से गेहूँ, जौं से जौं चावल से चावल पावेगा,
जो आज देवेगा यहाँ वैसा ही कल तू पावेगा।

कल पावेगा, कल पावेगा, कल पावेगा, कल पावेगा,
जो चाहे ले चल इस घड़ी सब जिन्स यां तैयार है।

आराम में आराम है आज़ार में आज़ार है,
दुनिया जानो इसको तुम दरिया की यह मंझधार है।

औरों का बेड़ा पार कर तेरा भी बेड़ा पार है,
तू और की तारीफ़ कर तुझ को भी सना ख़ुवानी मिले।

कर मुश्किल आसां और की तुझ को भी आसानी मिले,
तू और को मेहमान कर तुझ को भी मेहमानी मिले।

रोटी खिला रोटी मिले पानी पिला पानी मिले,
नुक़सान में नुक़सान है अहसान में अहसान है।

तोहमत में यां तोहमत लगे तूफ़ान में तूफ़ान है,
रहमान को रहमान है शैतान को शैतान है।

यां ज़हर दे तो ज़हर ले शक्कर में शक्कर देख ले,
नेकों को नेकी का मज़ा मूज़ी को टककर देख ले।

मोती जो दे मोती मिले पत्थर में पत्थर देख ले,
गर तुझ को नहीं आता यक़ीं तो तू भी कर-कर देख ले।

ग़फ़लत की यह जाये नहीं यां साहिब इदराक रह,
दिलशाद रख दिलशाद रह, ग़मनाक रख, गमनाक रह।

हर हाल में तू भी नज़ीर अब हर क़दम की ख़ाक रह,
यह वह मका है भाइयो यां पाक रह बेबाक रह।

कल जुग नहीं कर जुग है यह यां दिन को दे और रात ले,
क्या ख़ूब सौदा नक़द है इस हाथ दे उस हाथ ले।

# ग़ैर मुस्लिम पड़ौसी के हक़ूक़

जो पड़ौसी ग़ैर मुस्लिम हो, मुसलमान के ज़िम्मे उसके चार हक़ूक़ हैं—

(1) उसके साथ भलाई करता रहे, (2) उसकी जान व माल से कोई लालच न रक्खे, (3) अपना कोई काम उस पर ऐसा न डाले कि उसको तकलीफ़ हो, (4) नाहक़ उसको तकलीफ़ न दे।

# कन्जूस की सज़ा

रसूले करीम (स०) ने फ़रमाया कि—

बख़ील यानी कन्जूस आदमी अल्लाहतआला का दुश्मन है, चाहे वह कितना ही इबादत करने वाला हो। अल्लाहतआला क़सम के साथ फ़रमाता है कि मैं बख़ील को जन्नत में दाख़िल नही करूँगा। और अल्लाहतआला तीन क़िस्म के लोगों को दुश्मन समझता है। एक बख़ील माल रखने वाला, दूसरा बूढ़ा ज़िना करने वाला, तीसरा अहसान करके जतलाने वाला।

**फ़ायदा—** बख़ील यानी कन्जूस आदमी दुनिया में भी लोगों की नज़रों में ज़लील होता है। ऐसे आदमी को चाहिए कि माल की मुहब्बत दिल से निकाले और

हिम्मत करके अच्छे कामों में अपना माल ख़र्च किया करे। ग़रीब रिश्तेदारों की और दूसरे ग़रीबों और मोहताजों की आलिमों और तालिब इल्मों की ख़िदमत किया करे कि दुनिया और आख़िरत में इज़्ज़त मिले और जन्नत में जावे।

देखो ! हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

सख़ी यानी अच्छे कामों में माल ख़र्च करने वाला अल्लाहतआला का दोस्त है और वह दोज़ख़ की आग से दूर है और जन्नत के क़रीब है और जन्नत में बड़ी-बड़ी नैमतें पायेगा।

# हराम माल खाने की सज़ा

मोहसिने आज़म (स०) फ़रमाते हैं कि—

जिस आदमी का गोश्त और ख़ून हराम माल के खाने से बढ़ा होगा, वह जन्नत में नहीं जायेगा। वह दोज़ख़ ही के क़ाबिल है।

माल व मुल्क व दौलत व बाग़े बहार,
मसनद व तकिया व ख़ाना ज़र निगार।

नान व हल्वा क़न्द व शकर व क़ौरमा,
हो मयस्सर बे शुबा क्योंकर भला।

माल व मुल्क व दौलतो बाग़े व चमन,
सब ये गर्दन में पड़ेंगे तौक़ बन।

करके मेहनत और मुशक़्क़त बाकमाल,
जाके पैदा कर तू कुछ रोज़ी हलाल।

मोटा-झोटा कपड़ा तन ढ़कने को हो,
इससे ज़्यादा की तुझे ख़ुवाहिश न हो।

डर ख़ुदा का है तेरे दिल में अगर,
जल्द इसका कर इलाज ऐ बेख़बर।

# बोहतान लगाने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने—

जो शख़्स किसी मुसलमान को ऐसी बात की तोहमत लगाये कि वह बात उसमें न हो तो अल्लाह तआला तोहमत लगाने वाले को दोज़ख़ में ऐसी जगह डालेगा कि जहाँ दोज़ख़ी लोगों का ख़ून और पीप जमा होगा। और मर्द

या औरत को ज़िना की तोहमत लगाने वाले को दुनिया में भी शरेई सज़ा यह है कि लोगों के सामने उस के सौ दुर्रे मारे जायें।

## डाकू और चोर की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

जो मर्द चोरी करे और जो औरत चोरी करे तो उन दोनों के दाहिने हाथ पोंहचे पर से काट डालो। यह उनकी करतूत के बदले बतौर सज़ा अल्लाह की तरफ़ से है। डाकू और लुटेरा जो रास्तों में या आबादियों में लूटमार करे और किसी का माल भी ले जायें और उसको मार भी जावें तो उसकी दुनिया में यह सज़ा है कि हाकिमे वक़्त उसके हाथ-पाँव कटवाकर उसको क़त्ल करा दे या अगर चाहे तो उसको फाँसी दिलवाये और नेज़े से उसका पेट फाड़ दिया जाये कि तड़प कर उसकी जान निकल जाये और तीन रोज़ तक सब के सामने फाँसी पर लटकाये रक्खें कन्ज़ुलदकायक़। अल्लाह की पनाह ! चोरी करना और लूट-मार करना कितना संगीन जुर्म है, चोर और डाकू की दुनिया और आख़िरत दोनों ख़राब हैं।

## लड़कियों को मीरास का हिस्सा न देने की सज़ा

मीरास उस माल और असबाब को कहते हैं जिसको कोई मरने वाला छोड़ कर मर जाये। उस माल और असबाब में वारिसों का हक़ होता है। बाज़ मुसलमान उसमें से लड़कियों का हक़ अदा नहीं करते और हिन्दुओं की तरह ब्याह-शादी वग़ैरा के मौक़े पर कुछ देकर पीछा छुड़ा लेते हैं। यह बड़ी हक़तल्फ़ी है। अल्लाह व रसूल की मुख़ालिफ़त है। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि जो शख़्स अल्लाह का और उसके रसूल का कहा न मानेगा और अल्लाह के क़ानून और ज़ाबतों से निकल जायेगा तो अल्लाहतआला उसको दोज़ख़ में दाख़िल करेगा और वह उसमें हमेशा-हमेशा रहेगा और उसको ज़िल्लत की मार दी जावेगी। (सूरतउलनिसा)। और हादीए आज़म हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि बाज़ लोग तमाम उम्र अल्लाह की इबादत करते हैं। लेकिन मरने के वक़्त मीरास में वारिसों को नुक़सान पहुँचाते हैं। ऐसे लोगों को अल्लाहतआला सीधा दोज़ख़ में पहुँचा देता है। याद रक्खो, जो शख़्स अपने वारिस यानी हक़दार को मीरास के माल से महरूम करेगा, अल्लाहतआला उसको जन्नत से महरूम करेगा। (तिरमिज़ी व मिश्कात)।

बस जो नेक बन्दे अल्लाह व रसूल का हुक्म समझकर मीरास का माल

तक़सीम करते हैं और हिस्सेदारों को पूरा-पूरा हिस्सा देते हैं, उनके बारे में अल्लाह तआला का यह हुक्म है कि जो लोग अल्लाह और उसके रसूल के हुक्म पर चलेंगे तो अल्लाहतआला आख़िरत में उनको जन्नत के ऐसे बाग़ों में ले जा दाख़िल करेगा, जिनके मकानों के नीचे नहरें बहती होंगी और वह उनमें हमेशा-हमेशा रहेंगे और यह बहुत बड़ी कामयाबी है। (सूरतउलनिसा)

**फ़ायदा—** अब हर मुसलमान समझ ले कि चाहे अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी करके दोज़ख़ ख़रीद ले और चाहे ताबेदारी करके जन्नत ख़रीद ले। मुसलमान भाईयो ! यह दुनिया की ज़िन्दगी बहुत थोड़ी है। अल्लाह व रसूल को राज़ी करो और जब कोई मर जाया करे तो उस का छोड़ा हुआ माल और अस्बाब इन्साफ़ के साथ आलिमों से दरियाफ़्त करके हक़दारों को दे दिया करो। और सबसे अच्छा और बेहतर तरीक़ा यह है कि अपनी ज़िन्दगी में ही सबके हिस्से तक़सीम कर दिये जायें और हक़दारों को राज़ी कर लिया जाये।

# काफ़िरों के तरीक़े अख़्तियार करने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَلَا تَرْكَنُوا إِلَى الَّذِينَ ظَلَمُوا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ

यानी और जिन लोगों ने हमारी नाफरमानी की, उनकी तरफ़ न झुकना, वरना उनकी तरह तुम को भी दोज़ख़ की आग लगेगी (सूरा अलहूद)

**फ़ायदा—** मतलब यह है कि ऐ मुसलमानो ! हमारे रसूल मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) का तरीक़ा छोड़कर तुम काफिरों और फ़ासिक़ों का तरीक़ा अख़्तियार मत करो वरना तुम भी उनकी तरह दोज़ख़ का मज़ा चखोगे। और हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स किसी क़ौम का-सा तरीक़ा अख़्तियार करे तो वह उसी क़ौम में से है। (अहमद अबुदाऊद)

**फ़ायदा—** क़ुर्आन व हदीस से यह बात साबित हो गयी कि जो शख़्स अल्लाह व रसूल के बतलाये हुए तरीक़े को छोड़कर काफ़िरों और फ़ासिक़ों का-सा तरीक़ा अख़्तियार करे तो वह गुनाह करने में उन्हीं के बराबर है। अल्लाह की पनाह ! इसलिए हर मुसलमान मर्द और औरत को चाहिए कि हर बात में, चाल-चलन में, सूरत व शक्ल में, जीने और मरने में, ब्याह और शादी में इबादत व मामलात व आदत वग़ैरा में महबूबे खुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) के बतलाये हुए तरीक़े पर अमल करे और सब तरीक़ों और रस्मों को छोड़ दे।

रस्म कुफ्र व शिर्क तुम सब छोड़ दो,
रिश्तए उल्फ़त को उस के तोड़ दो।

रस्म होवे ख़ूब या होवे बुरी,
फेर दो सब के गले पर तुम छुरी।

कुफ्र की जो रस्म को करते हो तुम,
कब्र अपनी आग से भरते हो तुम।

मत करो बहरे खुदा वह रस्मे बद,
जिसकी तुम पाओ न हज़रत से सनद।

जान व दिल से राहे सुन्नत पर चलो,
और जो राहें हैं उन पर मत चलो।

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत जाबिर (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

क़यामत में हर एक आदमी उसी हालत में उठाया जायेगा कि जिस हाल में वह मरा होगा।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अगर ईमान के साथ मरा है तो ईमानदार ही उठाया जायेगा और बेईमान मरा है तो बेईमान ही उठाया जायेगा और फ़ासिक़ व फ़ाजिर यानी हज़ूर (स०) के तरीक़े के खिलाफ़ हालत में मरा है तो उसी हालत में उठाया जायेगा। बस इसी में खैर और भलाई और निजात है कि रसूले पाक (स०) के तरीक़ा-ए-पाक पर चले और मरे।

## बेवा के निकाह को ऐब समझने की सज़ा

हिन्दुओं की सोहबत की वजह से जहाँ और बहुत-सी रस्में मुसलमानों के गले का हार बन गयी हैं, उस तरह एक यह रस्म भी हिन्दुस्तान के बाज़ मुसलमानों में आ गयी कि बेवा औरत के निकाह को ऐब समझते हैं। ईमान और अक़्ल की बात यह है कि जिस तरह पहले निकाह को खुशी से करते हैं, उसी तरह बेवा का निकाह खुशी से कर दिया करें। अल्लाह व रसूल के हुक्म को ऐब समझना बेईमानी की निशानी है, जिस की सज़ा दोज़ख है। हमारे नबी (स०) की जितनी बीवियाँ थीं, सिवाये हज़रत आयशा (रज़ी) के, वह कुँवारी थीं, बाक़ी और सब बेवा थीं। सब के एक-एक दो-दो निकाह पहले हो चुके थे। अल्लाह की पनाह ! क्या तुम्हारी इज़्ज़त उनसे भी बढ़ गयी। सब जानते हैं कि बेवा के बिठाने में बाज़ जगह ऐसी खराबी होती है कि इज़्ज़त खाक में मिल

जाती है। हिकायत है कि—

एक बड़ी नेकबख़्त बुढ़िया ने अपने मरने के वक़्त औरतों को जमा किया और नसीहत की कि बहिनों, बेटियों, ख़बरदार हो जाओ कि जब कोई बीवी बेवा हो जावे तो उसका निकाह ज़रूर कर दिया करें और बेवा को भी चाहिए कि वह ज़ाहिर की शरमा-शरमी को छोड़कर अल्लाह व रसूल का हुक्म समझकर निकाह कर लिया करे, इसी में बेहतरी है, इज़्ज़त है। मैंने इस दुनिया के समुद्र में बेवा होकर अस्सी बरस ऐसी मुश्किल हालत में गुज़ारे हैं कि मेरा ही दिल जानता है। अल्लाह ही ने मुझे बचाया, वरना ख़बर नहीं कि कहाँ-कहाँ मुँह काला करती। मैं उम्मीद करती हूँ कि सआदतमन्द बीवियाँ और सआदतमन्दमर्द मेरी इस सच्ची ख़ैर ख़ुवाही की नसीहत पर पूरा-पूरा अमल करेंगे। लो अब मैं दुनिया से रूख़सत होती हूँ और कलमा शरीफ़ **"लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"** बुलन्द आवाज़ से पढ़ कर रुख़सत हो गयी। मुसलमान भाइयो और बहिनो ! काफ़िरों की रस्मों को छोड़ दो। देखो, हमारे प्यारे नबी (स०) ने फ़रमाया है कि जो शख़्स मेरी छुटी हुई सुन्नत को जारी करेगा उसको सौ शहीदों के बराबर सवाब मिलेगा। इसी तरह जो बेवा बीवी अल्लाह व रसूल का हुक्म समझकर निकाह करेगी, उसको भी यह सवाब मिलेगा। अलबत्ता अगर किसी ज़रूरी वजह से निकाह करने को दिल न चाहे और गुनाह करने का भी डर न हो, या बच्चों के पालने में ख़लल हो, ऐसी हालत में निकाह न करे तो कुछ हर्ज नहीं बल्कि बेशुमार सवाब मिलता है। हज़ूर (स०) ने हज़रत अली (रज़ी) को यह नसीहत फरमायी।

तीन चीज़ों को न करना तुम देर से,
जल्द होवे जिस क़दर भी हो सके।

जब जनाज़ा देख ले ऐ दिलनवाज़,
उस की पढ़ जाकर के तू फ़ौरन नमाज़।

जिस घड़ी वक़्ते नमाज़ आये तेरा,
कर तू अव्वल वक़्त में उसको अदा।

जब किसी जा देख ले बेवा को तू,
कर निकाल जल्दी से उस का नेक ख़ू।

# कुत्ता और तस्वीर रखने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जिस घर में कुत्ता और तस्वीर हो, उसमें फ़रिश्ते नहीं जाते। (बुखारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** जिस घर में कुत्ता या तस्वीर हो या गुस्ल की हाजित वाला मर्द या औरत हो जो सुस्ती से पड़ा रहे और नमाज़ का वक़्त टाल दे, तो उस घर में वह फ़रिश्ते नहीं जाते जो रहमत और बरकत लेकर उतरते हैं। फ़रिश्तों को ऐसी चीज़ों से बहुत नफ़रत है। लेकिन जो फ़रिश्ते हमारे अमल लिखते हैं या जान निकालते हैं वह खुदा के हुक्म को पूरा करने के लिए ऐसी जगह भी जाते हैं, अगरचे उनको तकलीफ़ होती है।

हज़ूर अकरम (स०) फरमाते हैं कि—

तस्वीर बनाने वाले को क़यामत में बड़ी सख्त सज़ा होगी और तस्वीर बनाने वालों को हुक्म होगा कि इन तस्वीरों में जान भी डालो और वह जान नहीं डाल सकेंगे। लेकिन अल्लाहतआला उनमें जान डाल देगा और उनको बनाने वालों का सर पीटने के लिए उनको मुकर्रर कर देगा।

**मसला—** कुत्ते को शिकार के लिए या मकान और बाग़ या खेती की हिफ़ाज़त के लिए रखना दरुस्त है, मगर उसको खुला न छोड़ें कि लोगों को न सताये। ऐसी ज़रूरत में कुत्ते रखने का गुनाह न होगा। मगर रहमत के लाने वाले फ़रिश्ते फिर भी न आयेंगे।

# टख़नों से नीचे तहबन्द या पायजामा रखने की सज़ा

रहमते आलम (स०) ने फ़रमाया कि—

टख़नों से नीचा तहबन्द या पाजामा पहनने वाला दोज़ख़ में जावेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** तहबन्द या पाजामा टख़नों से ऊँचा रखना चाहिए, वरना अल्लाह के रसूल का हुक्म न मानने की वजह से दोज़ख़ में जाना पड़ेगा। यह एक ऐसा डराने वाला हुक्म है कि उसको सुन लेने के बाद मुसलमान को चाहिए कि टख़नों से नीचा तहबन्द और पाजामा पहनना छोड़ दे। अलबत्ता औरतों को दरुस्त है कि इतना नीचा पहनें कि पाँव भी चाहे ढक जायें।

# रिश्तेदारों को छोड़ने की सज़ा

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

रिश्तेदारों से क़ता ताअल्लुक़ करने वाला जन्नत में नहीं जायेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** ज़रा-ज़रा सी बात में झगड़े फिसाद खड़े कर लेते हैं। कहीं शादी के मामले में रूठ गये कि हमारे क्यों नहीं की, कहीं रस्म व रिवाज की बातों पर बिगड़ गये, कहीं जायदाद वग़ैरा के मुक़द्दमों में फँस गये, कहीं लेन-देन और बात-चीत और खाने-पीने वग़ैरा पर अकड़ गये और मिलना-जुलना छोड़ बैठे। ऐसी बातों का बहुत जल्द शरह के मुवाफ़िक़ फ़ैसला करके इत्तफ़ाक़ से रहना चाहिए और एक-दूसरे की मदद करें, माल से-जान से।

देखो, एक रोटी अल्लाह के वास्ते किसी फ़क़ीर को दोगे तो दस रोटियों का सवाब मिलेगा, और अगर एक रोटी अपने किसी रिशतेदार, ग़रीब भाई-बहिन, फूफी, ख़ाला, चचा, ताया वग़ैरा को दोगे तो बीस रोटियों का सवाब मिलेगा। इसी तरह रुपये-पैसे और कपड़े वग़ैरा के देने में समझ लो। अब खुद समझ सकते हो कि नफ़ा किस बात में है।

**मसला—** अगर किसी रिश्तेदार से ख़िलाफ़े शरहा काम करने पर नाराज़गी हो, जैसे नमाज़ न पढ़ता हो, रोज़े न रखता हो या शराब पीता हो, जुआ खेलता हो, बदकारी वग़ैरा बुरा काम करता हो, ऐसी हालत में उससे मिलना-जुलना छोड़ देना दरुस्त है, मगर जब वह तौबा कर ले और बुरे काम छोड़ दे तो फिर मेल-जोल कर लेना चाहिए।

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत अबुहरेरा (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) की ख़िदमते अक़दस में एक शख़्स ने अर्ज़ की। या रसूल अल्लाह! मेरे रिश्तेदार हैं। मैं उनके साथ अच्छा सलूक करता हूँ और वह मुझसे बदसलूकी करते हैं। मैं उनके साथ नेकी करता हूँ, वह मेरे साथ बुराई करते हैं। मैं उनसे नर्मी करता हूँ और वह मुझ पर सख़्ती करते हैं और गालियाँ तक देते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया—अगर यह सच है जो तुम कहते हो तो रिश्तेदार तुम्हारे साथ बदसलूकी करने की सज़ा पायेंगे और दोज़ख़ में जायेंगे। तुम तसल्ली रखो और तुम उनके साथ एहसान करने से उनके सामने बेइज़्ज़त और ज़लील न होंगे। अल्लाह तआला की तरफ़ से तुम्हारी मदद के वास्ते एक फ़रिश्ता मुक़र्रर रहेगा। जब तक तुम अपने इस तरीक़े पर अमल करते रहोगे।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से रिश्तेदारों के साथ भलाई और सलूक करने का और उनके सताने का और उस पर सब्र करने का सवाब मालूम हुआ और बदसलूकी करने वालों की सज़ा मालूम हुई। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा।

# अपनी जान के हक़ूक़

मालूम होना चाहिए कि हमारी जान का मालिक अल्लाह है। जो उसने हमको अमानत के तौर पर दे रक्खी है और उसकी हिफ़ाज़त का हमको हुक्म दिया है, अपने अख़्तियार से उसकी सेहत और कुव्वत में फ़र्क़ न आने दें और कोई काम ऐसा न करें कि जिससे जान परेशान हो। क्योंकि जब जान परेशान होगी तो उसकी कुव्वत व सेहत में फ़र्क़ आयेगा। फिर दीन और दुनिया के कामों में भी फ़र्क़ पड़ जायेगा। इसलिए अपने अख़्तियार की बातों के करने में एहतियात रखें। जैसे बहुत खा लेना या नुक़सान देने वाली चीज़ों का बरतना, या मियां-बीवी की सोहबत में ज़्यादती करना, या जिन कामों की सहार न हो उन में पड़ना, या आरामतलब बन जाना। काम काज अपने हाथों से करना छोड़ देना या नक़ली इबादत में ज़्यादती करना, या माल को फ़ज़ूल उड़ाना।

देखो, फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

मुसलमान को चाहिए कि अपनी जान को ज़लील और परेशान करे। यानी बुरा काम करके ज़लील होना या जिस काम की सहार न हो उसमें पड़ कर परेशान होना अगर कोई तकलीफ़ की बात ग़ैर अख़्तियारी ख़ुदा की तरफ़ से आ पड़े। जैसे कोई बीमारी या तंगदस्ती या बेरोज़गारी या किसी अज़ीज़ का मर जाना वग़ैरा तो उस पर सब्र करें। बेसब्री से जान परेशान होगी और क़ूव्वत व सेहत में फ़र्क़ आयेगा फिर न दीन का काम होगा और न दुनिया का।

काम करने का सलीक़ा चाहिए,<br>
और बेकारी से बचना चाहिए।

देखते क्या हो बुराई ग़ैर की,<br>
ऐब अपना भी तो देखना चाहिए।

पहले कोशिश चाहिए हर काम की,<br>
फिर ख़ुदा पर छोड़ देना चाहिए।

दूसरों को जिस में पहुँचे फ़ायदा,<br>
कोई तो काम ऐसा करना चाहिए।

हो बुरे लोगों का जिस जा पे गुज़र,
ऐसी मजलिस में न जाना चाहिए।

दी ख़ुदा ने अक़्ल जां होशो हवास,
सही राह पर उनको लगाना चाहिए।

रहमते आलम हुज़ूर (स०) का इरशाद है कि—

जो मुसलमान हलाल माल इसलिए कमाये कि भीख माँगने से बचा रहे और उस कमाई से अपने बाल-बच्चों के हक़ अदा करे और भूखे पड़ोसी का भी ख़याल रखे तो क़यामत के दिन वह अल्लाहतआला से ऐसी हालत में मिलेगा कि उस का चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह रोशन होगा।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से कारोबार, मेहनत, मज़दूरी करने की और बीवी-बच्चों की ख़िदमत और परवरिश करने की बज़ुर्गी मालूम हुई और बेकारी और आरामतलबी की जड़ ही कट गयी।

मशहूर है कि—कर मज़दूरी और खा चूरी।

# मज़लूम को तकलीफ़ देने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

मज़लूम यानी कमज़ोर की बददुआ से बचो। अगरचे मज़लूम काफ़िर ही हो। (बुखारी)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से साबित हुआ कि किसी मुसलमान को बल्कि काफिर को भी नाहक़ तकलीफ़ देना और सताना दरुस्त नहीं, क्योंकि मज़लूम कमज़ोर और बेकस होता है। उस की बददुआ तीर की तरह लगती है। इसलिए ज़ुल्म व सितम से बचना ज़रूरी है।

# गुस्सा करने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) से एक आदमी ने अर्ज़ की—

या रसूल अल्लाह! मुझे कोई ऐसा अमल बतला दीजिए कि जो मुझे जन्नत में ले जाये। आपने फ़रमाया गुस्सा मत करना। बस तेरे लिए जन्नत है। फिर हुज़ूर ने अपने दोस्तों से फ़रमाया कि तुम अपने अन्दर पहलवान किसको समझते हो? अर्ज़ किया गया, जिसको आदमी गिरा न सके। हुज़ूर ने फ़रमाया वह पहलवान नहीं, बल्कि पहलवान वह है जिसको गुस्से के वक़्त अपने ऊपर

क़ाबू रहे और हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि दोज़ख़ में एक ऐसा दरवाज़ा है जिसमें से कोई शख़्स दाख़िल न होगा मगर जो अल्लाह को नाराज़ करके अपना ग़ुस्सा पूरा करे।

**फ़ायदा—** अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी देखकर ग़ुस्सा करना तारीफ़ के क़ाबिल है कि वह अल्लाहतआला की रज़ा के लिए है और ग़ुस्सा करना दरुस्त है। और फ़रमाया हज़ूर (स०) ने कि बाज़ आदमी ऐसे होते हैं कि उनको देर में ग़ुस्सा आता है और जल्दी उतर जाता है और बाज़ लोगों को जल्दी ग़ुस्सा आता है और जल्दी उतर जाता है और बाज़ ऐसे हैं कि उनको ग़ुस्सा जल्दी आता है और देर में उतरता है। इनमें अच्छा वह है जिसको ग़ुस्सा देर में आये और जल्दी उतर जाये।

ख़ूब समझ लो, ग़ुस्सा आदमी के दिल में एक आग की चिंगारी है कि तुमने उस की आँखों का सुर्ख़ होना और गर्दन की रगों का फूल जाना देखा होगा। यह आग की गर्मी का असर है। बस जब ग़ुस्से का असर मालूम हो तो आजिज़ी के साथ ज़मीन को लिपट जायें और ख़याल करें कि मर कर ख़ाक में मिल जाऊँगा।

हिर्स, ग़ुस्सा, बुग़ज़ो कीना, ग़ीबतो मुक्रो फ़रेब,
रात दिन करता है उम्रे बेबक़ा के वास्ते।

है तकब्बुर ज़र पे लाहासिल के बाद अज़ मर्गबस,
एक ही रास्ता है सब शाहो गदा के वास्ते।

हक़ की नाफ़रमानियों से बाज़ आ तू बाज़ आ,
आग दोज़ख़ की भड़कती है सज़ा के वास्ते।

काम दोज़ख़ के करे और जन्नत का हो उम्मीदवार,
कस्रे जन्नत तो बना है पारसा के वास्ते।

## पूरा मुसलमान किसको कहते हैं?

हज़रत उन्स (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि तुममें से कोई शख़्स पूरा मुसलमान और ईमानदार नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके नज़दीक उसकी जान और उसके माँ-बाप और औलाद सब आदमियों और चीज़ों से ज़्यादा प्यारा न हो जाऊँ। (बुख़ारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा**— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जिस आदमी ने अपने दिल की ख़ुवाहिश को मिटाया और हुज़ूर (स०) के हुक्मों पर चला और सब चीज़ों से ज़्यादा आप की मुहब्बत को दिल में बसाया और आप ही की मुहब्बत में मर गया, वही पूरा मुसलमान और पक्का ईमानदार है।

या इलाही ऐसी दे मुहब्बत नबी की,
रहे दिल में बाक़ी न उल्फ़त किसी की।

रोग जितने हैं दिल में सब खो दे,
मुझे इश्क़े मौहम्मद में डुबो दे।

# निकाह करने का बयान

जिस मर्द या औरत को कोई मजबूरी निकाह से रोकने की न हो तो उसके लिए असली हुक्म यही है कि वह निकाह कर ले। जैसा कि हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

मोहताज है वह मर्द जिस के बीवी न हो। आप के असहाब ने अर्ज़ किया कि या रसूल अल्लाह! अगर वह मालदार हो तो क्या फिर भी मोहताज है? आप ने फ़रमाया, हाँ। चाहे वह कितना ही मालदार हो।

फिर हुज़ूर ने फ़रमाया, "मोहताज है वह औरत कि जिस का शौहर न हो।"

अर्ज़ की गयी— या रसूल अल्लाह! अगर वह औरत मालदार हो तो क्या फिर भी वह मोहताज है ? फ़रमाया हाँ। चाहे वह कितनी ही मालदार हो।

**फ़ायदा**— यह बात देखने में भी आती है कि आदमी कितना ही मालदार हो मगर बग़ैर बीवी के आराम नहीं होता और जिस औरत के शौहर न हो उसे भी राहत नहीं मिलती।

हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

ऐ जवानों की जमाअत! जो शख़्स तुममें से अपने घर का ख़र्चा उठा सकता हो, यानी बीवी के लिए मकान, रोटी, कपड़ा इन सब चीज़ों का इन्तज़ाम कर सकता हो उसको निकाह कर लेना चाहिए। क्योंकि निकाह नज़र को नीची रखने वाला और शर्मगाह को बुरे काम से बचाने वाला है।

**फ़ायदा**— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जो आदमी बीवी के हक़ूक़ अदा न कर सके उसको निकाह न करना चाहिए, वर्ना दोनों की ज़िन्दगी ख़राब

हो जायेगी और अल्लाहतआला की पकड़ सर पर रहेगी।

## निकाह करने की बुज़ुर्गी

रहमते आलम हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

जब मर्द अपनी बीवी को मुहब्बत की नज़र से देखता है और बीवी अपने शौहर को मुहब्बत की नज़र से देखती है तो अल्लाहतआला उन दोनों को रहमत की नज़र से देखता है। और बीवी-बच्चे वाले शख़्स की दो रकअत नमाज़ बढ़कर है। उस शख़्स की बयासी रकअतों से जो बीवी न रखती हो, और औलाद जन्नत के फूल हैं। जैसे जन्नत के फूलों से फ़रहत होगी वैसी ही फ़रहत दुनिया में औलाद को देख कर होती है और औलाद बे निकाह के हासिल नहीं हो सकती। ग़रज़ कि निकाह करने में बहुत से फ़ायदे हैं। सब से बड़ा फ़ायदा यह है कि आदमी बुरे काम से बच जाता है। नीयत ख़राब नहीं होती और मियाँ-बीवी का पास बैठ कर बातें करना, हँसी-दिल्लगी करना नफ़िल नमाज़ो से भी बढ़कर है। बस जो मर्द या औरत खुदा से डरकर इसलिए निकाह करें कि मैं बुरे काम से बचूँगा, तो वह खुदा के प्यारों में हो जाता है। इसी तरह वह आदमी भी खुदा के प्यारों में हो जाता है जो निकाह कराने में जानी व माली मदद करता है।

## हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का ज़िक्रे शरीफ़

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) हमारे आक़ा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की सब बेटियों से छोटी बेटी है और मर्तबे में सब से बड़ी और बहुत ही प्यारी बेटी है और अल्लाह तआला के नज़दीक भी बड़ी मक़बूल हैं और कर्बला के जाने वाले मज़लूम शहीदे आज़म की वालिदा हैं।

हज़ूर (स०) ने आप को अपनी जान का टुकड़ा फ़रमाया है और यह भी फ़रमाया है कि मेरी फ़ात्मा जन्नत में सब औरतों की सरदार है और जिस बात से मेरी फ़ात्मा को तकलीफ़ होती है उस बात से मुझ को भी तकलीफ़ होती है। इसी लिए हज़रत अली (रज़ी०) को हज़रत फ़ात्मा की ज़िन्दगी में दूसरा निकाह करना जायज़ नहीं था कि इससे आप को रंज होता और आप के रंज से हज़ूर को रंज होता। हुज़ूर को अपनी ताबेदार बेटी से ऐसी मुहब्बत थी कि जब आप हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर होतीं तो हुज़ूर आपको देखकर मुहब्बत के जोश में खड़े हो जाते और आप की पेशानी पर बोसा देते और अपनी जगह पर बिठा लेते थे।

**फ़ायदा**— मुसलमान भाईयो और बहिनों ! देखो, हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का यह आलीशन मर्तबा और अल्लाह व रसूल की यह मुहब्बत, चाहत ताबेदारी की वजह से थे। अगर अल्लाह व रसूल का प्यारा बनना चाहते हो तो दीन की बातों पर मज़बूती से चलो।

# हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के निकाह का बयान

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के निकाह की बाबत यह बयान इसलिए लिखा जाता है कि मुसलमान भाई और बहिनें इस बयान से सबक़ हासिल करें। क्योंकि आजकल लोगों ने हुज़ूर (स०) की सुन्नत और तरीक़े को छोड़ दिया है और रस्मो रिवाज में ऐसे डूब गये हैं कि लड़के और लड़की का निकाह करना मुश्किल हो गया है। इसके सिवा और क्या कह सकते हैं कि अपने पाँव में आप कुल्हाड़ी मारना और मुसीबत ख़रीदना है।

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के निकाह की बाबत सबसे पहले इस अज़ीमुश्शान नेंमत की दरख़्वास्त हज़रत अबुबक्र (रज़ी०) और हज़रत उमर (रज़ी०) ने की। हज़ूरे पुरनूर (स०) ने कम उम्र होने का उज्र फ़रमा दिया। फिर हज़रत अली (रज़ी०) ने शरमाते हुए अर्ज़ की। आप बहुत ख़ुश हुए। उसी वक़्त आप पर अल्लाहतआला का हुक्म भी आ गया। आपने उनका पैग़ाम मन्ज़ूर फ़रमा लिया। सबक़ सीखो ! इससे मालूम हुआ कि रिश्ता करने के वक़्त जितनी रस्में लोगों ने निकाल रक्खी हैं, सुन्नत के ख़िलाफ हैं। बस ज़बानी बातचीत काफ़ी है। उस वक़्त हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) की उम्र साढ़े पन्द्रह बरस की और हज़रत अली (रज़ी०) की इक्कीस बरस की थी।

इससे मालूम हुआ कि इस उम्र के बाद निकाह में देर करना अच्छा नहीं और यह भी मालूम हुआ कि दूल्हा उम्र में दुल्हन से किस क़दर बड़ा हो।

हुज़ूर (स०) ने अपने ख़ास ख़ादिम हज़रत अनस (रज़ी०) से फ़रमाया कि अबुबक़र (रज़ी०) व उमर (रज़ी०) और तलहा और ज़ुबैर (रज़ी०) और कुछ अन्सारी लोगों को बुला लाओ।

**फ़ायदा**—

सबक़ सीखो। इससे मालूम हुआ कि निकाह के वक़्त अपने अज़ीज़ व अक़ारिब और दोस्तों को बुला लेने में कुछ हर्ज नहीं। इसमें हिकमत यह है कि निकाह की शोहरत हो जायेगी। मगर लोगों के जमा करने में बहुत कोशिश न की जाये। वक़्त पर बिला तकल्लुफ़ दो चार आदमी बुला लिये जायें। वह सब

हज़रात हाज़िर हो गये। उस वक़्त हज़रत अली (रज़ी०) मौजूद नहीं थे। हुज़ूर ने एक खुतबा पढ़कर अस्र के वक़्त निकाह कर दिया। यानी सब के सामने फ़रमाया कि मैंने अपनी बेटी फ़ात्मा (रज़ी०) का निकाह अली (रज़ी०) के साथ कर दिया। फिर किसी वक़्त हज़रत अली (रज़ी०) मिले तो उनसे भी फ़रमा दिया कि मैंने अपनी बेटी फ़ात्मा (रज़ी०) का निकाह तुम्हारे साथ कर दिया। उन्होंने मंज़ूर कर लिया। सबक़ सीखो।

इस से मालूम हुआ कि बाप का छुपे-छुपे फिरना सुन्नत के ख़िलाफ़ है और चार सौ मिशक़ाल चाँदी मेहर मुक़र्रर हुआ जो हमारे हिसाब से क़रीब डेढ़ सौ रुपये के होता है। सबक़ सीखो।

इससे मालूम हुआ कि मेहर ताक़त से ज्यादा बाँधना भी सुन्नत के ख़िलाफ़ है। फिर छुवारे तक़सीम किये गये और हुज़ूर पुरनूर (स०) ने हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) को अपनी ख़ादिमा उम्मे ऐमन के साथ हज़रत अली के घर भेज दिया। मुसलमान भाईयो और बहिनो ! देखो यह दो जहां की शाहज़ादी की शादी और रुख़सती है। अगर शहनशाहे दो जहाँ (स०) चाहता तो अल्लाहतआला आपको ज़मीन व आसमान के ख़ज़ाने ख़र्च करने के लिए दे देता। मगर आपने इसमें भी आख़िरत के नफ़े को मुक़द्दम रखा, और उम्मत की ख़ैरख़ुवाही मद्देनज़र रखी, कि उम्मत ख़र्च वग़ैरा बढ़ाकर मुसीबत में न पड़े। क़ुर्बान हों हम उस नबी-ए-करीम रहमते आलम (स०) पर कि निकाह व शादी करने का भी हमको आसान रास्ता बतला गये कि इसमें न भात की लात न बारात का साथ, न गाना न बजाना, न रात ही को बारात का आना, न कोई बिरादरी की धूमधाम, न बाजा, न पटाख़ा, न कोई गोला, न डोम न हज्जाम, न हेर न फेर न रुपये पैसों की बखेर, न ध्यानियों का नेग न बिरादरी की देग, न कोई रेशमी जोड़ा, न सुहाग जूड़ा, न दूल्हा के रिशतेदारों के कपड़ों का जोड़ा, न खिलाना न पिलाना और न नमाज़ों का गँवाना।

फिर हुज़ूर (स०) इशा की नमाज़ पढ़कर हज़रत फ़ात्मा (रज़ी) के घर तशरीफ़ ले गये और उनसे पानी मँगवाया। वह एक लकड़ी के प्याले में पानी ले आयीं। सबक़ सीखो।

इससे मालूम हुआ कि नयी दुल्हन को ऐसी शर्म करना कि जिसमें चलना-फिरना, खाना-पीना और अपने हाथ से कामकाज करना सब छोड़ दिया जावे, यह भी सुन्नत के ख़िलाफ है।

एक हिकायत है कि एक लड़की का निकाह हुआ और वह अपने शौहर के घर आयी। घर बिरादरी की औरतों से भरा हुआ था। सारी रात शर्म की वजह से लड़की ने पेशाब रोकने की तकलीफ़ उठायी। आख़िर मजबूर होकर

पेशाब की ज़रूरत बतलायी। लड़की वज़न में भारी थी। बैतुलख़ला तक एक औरत उसको उठा कर ले गयी, जब क़दमचे पर उतारने लगी तो दोनों पाख़ाने पर गिर पड़ीं और पाख़ाने में दोनों के कपड़े भर गये। चोट अलग आयी।

बीबियो ! देखा तुमने, सुन्नत के ख़िलाफ़ काम करने से दुनिया में भी तकलीफ़ और ज़िल्लत हुई कि ख़ूब हँसी उड़ी और आख़िरत की तकलीफ़ सर पर मौजूद रही और इस शर्म में नमाज़ों का छोड़ देना तो बड़े ग़ज़ब ही की बात है।

फिर हुज़ूर (स०) ने अपना लुआबे-दहन उस पानी में डाला और उस पानी को हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के चेहरे पर, सीने पर और कन्धों के दरमियान कमर पर छिड़का और यह दुआ फ़रमायी—

"ऐ अल्लाह ! फ़ात्मा (रज़ी०) को और इसकी औलाद को तेरी हिफ़ाज़त में देता हूँ। इनको शैतान के मक्र व फ़रेब से बचाना।" फिर इसी तरह पानी छिड़कना और दुआ करना हज़रत अली (रज़ी०) के साथ भी किया। फिर इरशाद फ़रमाया कि जाओ, अल्लाह के नाम की बरकत के साथ आराम करो। और हुज़ूर (स०) तशरीफ़ ले आये।

अगर लड़की का घर नज़दीक हो तो यह अमल करना बाइसे बरकत है।

(अज़ तवारीख़ हबीब इलाह)

## हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का जहेज़

सूत की दो पुरानी चादरें। एक लिहाफ़, एक गद्दा अलसी के छाल से भरा हुआ। एक तकिया चमड़े का, खजूरों की शाख़ों से भरा हुआ। एक लकड़ी का प्याला। एक मिट्टी का घड़ा और मश्क पानी के लिए। एक चक्की और एक चारपाई। दो बाज़ूबन्द चाँदी के एक मिस्वाक, यह चन्द चीज़ें थीं।

इससे मालूम हुआ कि अगर ताक़त और गुंजाइश हो तो ज़रूरत की ऐसी चीज़ें देना जायज़ है और यह भी समझने की बात है कि जो कुछ देना-दिलाना होता है अपनी औलाद के साथ सलूक करना है। फिर लोगों को दिखाने की क्या ज़रूरत है। मुसलमानो ! इस दिखावे से और बिरादरी के जमा करने से बाज़ आ जाओ। इसी ने लड़के-लड़की की शादी मुसीबत बना दी है। इस तरह घर फूँक तमाशे से बचो।

# हज़रत अली का वलीमा

हज़रत अली (रज़ी०) का वलीमा यह था कि क़रीब साढ़े तीन सैर जौ के आटे की रोटियों का खज़ूरों से मीठा किया हुआ मालीदा। बस वही दोस्तों को एक-एक लुक्मा खिला दिया, न आपने वलीमा करने के लिए क़र्ज़ लिया और न ताक़त से ज़्यादा ख़र्च किया। न नाम करना चाहा, न ख़र्च बढ़ाया। बस सुन्नत के मुवाफ़िक़ वलीमा यह है कि बग़ैर बनावट और दिखलावे के अपनी ताक़त और गुंजाइश के मुवाफिक़ खाना-दाना करना दरुस्त है और बाइसे बरकत है।

# मिस्वाक करने के फ़ायदे

रसूल अल्लाह (स०) फ़रमाते हैं कि अगर मुझको उम्मत की तकलीफ़ का ख़याल न होता तो मिस्वाक करना फ़र्ज़ कर देता। मिस्वाक करने के लिए बहुत से फ़ायदे हैं। सब से छोटा फ़ायदा यह है कि मुँह साफ़ रहता है। और सब से बड़ा फ़ायदा यह है कि मरने के वक़्त कलमा शरीफ़ मुँह से निकलेगा जो मरने वाले की बख़्शीश का ज़रिया है। मिस्वाक करने से अल्लाह व रसूल खुश होते हैं और जिस वज़ू में मिस्वाक न की हो उससे सत्तर हिस्से ज़्यादा सवाब उस वज़ू में मिलता है जिसमें मिस्वाक की हो।

# हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के मोटे कपड़े

रहमते आलम हुज़ूर पुरनूर (स०) हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के यहाँ तशरीफ़ ले गये। हुज़ूर ने देखा कि हज़रत फ़ात्मा सूत के मोटे-मोटे कपड़े पहने हुए हैं। हुज़ूर की आँखों में आँसू भर आये और फ़रमाया, "प्यारी बेटी, दुनिया तकलीफ़ की जगह है। सब्र का मुक़ाम है ख़ूब मज़बूती से रहो, अल्लाह के बन्दे ग़रीबी से घबराया नहीं करते। अल्लाहतआला तुमको इस दुनिया की तकलीफ़ें उठाने के बदले जन्नत में बड़ी-बड़ी नैमतें बख़शेगा।"

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) एक दफ़ा हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में आयीं। हुज़ूर ने आपको इस हाल में देखा कि भूख की वजह से चेहरा उतरा हुआ है। हुज़ूर ने आपके पेट पर हाथ मुबारक रख कर यूं दुआ की "ऐ अल्लाह! पेट भरने वाले भूखों के और ऊँचा करने वाले नीचों को मेरी फ़ात्मा का रुतबा बुलन्द कर और भूख की तकलीफ़ से इसको बचा।"

उसी वक़्त आपका चेहरा खुशी से सुर्ख़ हो गया और भूख की तकलीफ़ जाती रही। आप फ़रमाती है कि इस मुबारक दुआ के बाद मुझको कभी भूख

की तकलीफ़ नहीं हुई।

एक दफ़ा आप रोटी का एक टुकड़ा लेकर हज़ूर की ख़िदमत में आयीं और अर्ज़ की—अब्बा जान, मैंने एक रोटी पकायी थी। उसमें से यह टुकड़ा आप के लिए लायी हूँ। हुज़ूर ने लेकर खा लिया और फ़रमाया, बेटी आज तीन रोज़ के बाद यह रोटी का लुक़्मा तेरे बाप के पेट में गया है। अल्लाहो अकबर! क्या निराली शान है बाप की और बेटी की।

بَلَغَ الْعُلٰی بِکَمَالِهٖ كَشَفَ الدُّجٰی بِجَمَالِهٖ
حَسُنَتْ جَمِيْعُ خِصَالِهٖ صَلُّوْا عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ

## हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का चक्की पीसना

हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) अपने हाथों से चक्की पीसती थीं। आपके नाज़ुक हाथों में निशान पड़ गये थे और चूल्हे की आँच से बड़ी तकलीफ़ होती थी। हज़रत अली (रज़ी०) को इसका बहुत फ़िक्र था। एक दफ़ा शहनशाहे दो आलम हुज़ूर (स०) के पास कुछ लौंडी-ग़ुलाम ग़नीमत में आये। हज़ूर ने अपने असहाबों को तक़सीम कर दिये। हज़रत अली ने आपसे फ़रमाया कि फ़ात्मा, तुम भी कोई लौंडी ग़ुलाम ले आओ। कामकाज की तकलीफ़ से बच जाओ। आप हुज़ूर के यहाँ तशरीफ़ ले गयीं। उस वक़्त हुज़ूर घर में न मिले। आप हज़रत आयशा (रज़ी०) से कह कर चली आयीं। जब हुज़ूर तशरीफ़ लाये तो हज़रत आयशा ने फ़रमाया कि फ़ात्मा (रज़ी०) आयी थीं, उनको ख़ादिमा की ज़रूरत है। हज़ूर (स०) इशा की नमाज़ पढ़कर हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के यहाँ तशरीफ़ ले गये और बैठकर फ़रमाया कि बेटी, तुम मेरे पास ख़िदमतगार लेने गयी थीं। प्यारी बेटी, ख़िदमतगार तो दुनिया में आराम देता है। मैं तुमको एक ऐसा वज़ीफ़ा बतलाता हूँ जो आख़िरत में आराम और नफ़ा पहुँचाये, जब सोने लगो, तैंतीस बार सुबहान अल्लाह और तैंतीस बार अलहम्दो लिल्लाह और चौंतीस बार अल्लाहो अकबर पढ़ लिया करो। ताबेदार बेटी और ताबेदार दामाद ने अपने सच्चे ग़मगुवार का फ़रमान आलीशान दिल व जान से क़बूल किया और कभी ज़िन्दगी भर इस वज़ीफ़े को न छोड़ा और ख़िदमतगार मिलने न मिलने का दिल में ख़याल भी न लाये। सुबहान अल्लाह! क्या ख़ूब तालीम है शहनशाहे दो आलम की कि हर जगह आख़िरत को दुनिया पर मुक़द्दम रखना सिखलाते थे। हालाँकि ख़िदमतगार देकर उनको तकलीफ़ से बचाने की क़ुदरत भी थी। मगर इस दुनिया के दुःख-दर्द को सहार करना ही उनके लिए आख़िरत की ऐश और भलाई का अमल अख़्तियार फ़रमाया।

मेरा दिल और मेरी जान मदीने वाले,
तेरे ऊपर हूँ कुर्बान मदीने वाले।

कुल के मतलूब का महबूब है मक़बूल है तू,
अल्लाह-अल्लाह तेरी शान मदीने वाले।

काम आती है तेरी ज़ात हर दुखिया के,
मेरी मुश्किल भी हो आसान मदीने वाले।

तेरा दर छोड़ के जाऊँ तो कहाँ जाऊँ,
मेरे आक़ा मेरे सुल्तान मदीने वाले।

क्या ख़बर मेरे गुनाहों का क्या हो अन्जाम,
उड़ रहे हैं मेरे औसान मदीने वाले।

तेरी ही मुहब्बत में मैं दुनिया से उठ जाऊँ,
यही आशिक़ की है पहचान मदीने वाले।

मुसलमान भाइयो और बहिनो! हुज़ूर (स०) की ताबेदारी करो। गुरबत और कुल्फ़त में सब्र करो। हज़रत फात्मा (रज़ी०) के हालात शरीफ़ा से सबक़ सीखो। खुदा को राज़ी करो और जन्नत हासिल करो। जो वज़ीफ़ा बयान हुआ है, तस्बीहे फ़ात्मा (रज़ी०) के नाम से मशहूर है। बहुत ही आलीशान वज़ीफ़ा है। पाँचों नमाज़ों के बाद भी खुशक़िस्मत बन्दे पढ़ते हैं और सोते वक़्त भी पढ़ा जाता है। दिन भर की थकन भी उतर जाती है और सवाब भी बेशुमार मिल जाता है।

## बीवी के हक़ूक़ जो मर्द के ज़िम्मे हैं

जानना चाहिए कि निकाह की वजह से जो दुनिया व आख़िरत के फ़ायदे हासिल होते हैं, वह मियाँ-बीवी में मुहब्बत और इत्तफ़ाक़ हो तब हासिल होते हैं, मुहब्बत और इत्तफ़ाक़ का ज़रिया यह है कि एक-दूसरे के हक़ूक़ मालूम हों और उनको अदा भी करते हों। इसलिए बतौर नमूना कुछ हक़ूक़ लिखे जाते हैं ताकि मालूम करके अमल किया जाये।

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने, ऐ ईमान वालो! तुम अपने को और अपने घरवालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी और पत्थर हैं और रसूले करीम (स०) फ़रमाते हैं कि—

हर एक तुममें अपने मातहत पर अख़्तियार रखता है। इसलिए हर एक से पूछा जायेगा कि तुम्हारे सुपुर्द जो चीज़ें थीं उनमें तुमने क्या किया। जैसा कि

औरत के ज़िम्मे मर्द का घर होता है और उसके बच्चों पर भी अख़्तियार होता है. और उससे भी घरवालों के बारे में पूछगछ होगी कि तमने अपने घर वालों के हक़ अदा किये हैं या नहीं?

क़ुरआन व हदीस बतला रहे हैं कि मर्दों और औरतों के ज़िम्मे कुछ हक़ूक़ हैं जिनके बारे में उनसे पूछ होगी तो हर मर्द और औरत के लिए यह बात ज़रूरी हुई कि अपने को और अपनी औलाद को दोज़ख़ की आग से बचाये और उनको शरह के ख़िलाफ़ कामों से रोकने की कोशिश करें। अब हम अपनी हालत में ग़ौर करें कि इन हुक्मों के साथ क्या बर्ताव कर रहे हैं और इनको अल्लाह व रसूल के हुक्मों के मुवाफ़िक़ अदा करते हैं या नहीं? तो ग़ौर करने से मालूम होता है कि न तो मर्द ही उन हक़ूक़ को अदा करते हैं जो उन के ज़िम्मे हैं और न औरतें अदा करती हैं। औरतें बस इतना समझती हैं कि मर्दों को खिला दिया, पिला दिया और अगर कोई बच्चा हुआ तो उसको हगा दिया, मुता दिया और उनको यह ख़बर नहीं होती कि हमारी आमदनी कितनी है और कहाँ ख़र्च करने की ज़रूरत है और कितना ख़र्च करना चाहिए। न ख़र्च करने का ख़याल न औलाद को दीन सिखाने का ख़याल। इसी तरह मर्दों को इस का ख़याल नहीं होता कि दुनिया के हक़ूक़ के साथ औरतों के दीनी हक़ूक़ भी हमारे ज़िम्मे हैं। घर में आ कर यह तो पूछते हैं कि खाना तैयार हुआ है या नहीं। मगर यह कभी नहीं पूछते कि तुमने नमाज़ भी पढ़ी है या नहीं। मगर जब मर्द ही बेनमाज़ है तो औरतों को नमाज़ी कैसे बनायें और बाज़ मर्द ऐसे हैं कि औरतों के दुनियावी हक़ूक़ भी अदा नहीं करते। बीवी से बिल्कुल बेफ़िक्र रहते हैं। यहाँ तक कि घर में भी नहीं सोते और बीवी के इस हक़ूक़ से ग़ाफिल हैं। हालांकि रात को उसके पास घर में सोना भी उस का शरेई हक़ है। बाज़ मर्द औरतों से बोलते भी नहीं। बाज़ इनमें से ऐसे भी हैं कि जो बुज़ुर्ग और दीनदार भी कहलाते हैं और किसी बुज़ुर्ग से मुरीद भी हैं। नमाज़ रोज़े के और ज़िक्र के पाबन्द हैं। अपने नज़दीक जन्नत ख़रीद रहे हैं, मगर बीवी के हक़ूक़ से ग़ाफ़िल हैं। याद रखो, बीवी का यह भी हक़ है कि एक वक़्त में उससे बातचीत भी की जाये और उसकी तकलीफ़ की और आराम की बातें सुनी जावें और दिल्लगी की बातों से उसको ख़ुश किया जावे। मगर इस हक़ से दुनियादार और दीनदार सब ही ग़ाफ़िल हैं। बाज़ मर्द बात-बात में औरतों की ख़ताएँ निकालते हैं और इसी वजह से बोलना छोड़ देते हैं, बल्कि घर में सोना भी छोड़ दिया जाता है। क्या आप यह चाहते हैं कि बीवी पर भी ऐसा रोब जमायें जैसा कि नौकरों पर जमाया करते हैं। यह निहायत संगदिली है।

भला ग़ौर तो कीजिए, क्या आप अपने दोस्तों पर ऐसा रौब जमा सकते हैं जैसा कि नौकरों पर जमाया जाता है? हरगिज़ नहीं और अगर आप ऐसा करेंगे तो सारे दोस्त आपको छोड़ कर अलग हो जायेंगे। दोस्तों के साथ नौकरों का-सा बर्ताव कोई अक़लमन्द आदमी नहीं कर सकता।

देखो, तजुर्बे की बात है कि जिस वक़्त आदमी पर कोई मुसीबत आती है तो सब यार-दोस्त अलग हो जाते हैं और माँ-बाप तक भी आदमी को छोड़ देते हैं। मगर बीवी हर हालत में मर्द का साथ देती है और बीमारी में जैसी राहत बीवी से पहुँचती है, किसी भाईबन्द से भी नहीं पहुँचती। इससे साफ़ ज़ाहिर है कि बीवी के बराबर दुनिया में मर्द का कोई दोस्त नहीं। फिर क्या यह सितम ही नहीं है कि मर्द उनको नौकरों के बराबर करना चाहते हैं और क्या यह ज़ुल्म नहीं है कि इनको पाँव का जूता समझा जाये।

साहिबो ! उनको तो अपने घर का चिराग़ और आबादी का ज़रिया समझना चाहिए। क्या यह ग़ज़ब ही नहीं है कि अगर बीवी किसी वक़्त बातचीत में बतौर नाज़ कोई बात कह दे तो उसको यह सज़ा दी जाती है कि बातचीत और मिलना-मिलाना सब छोड़ दिया जाता है और गाली-गलौच से पेश आते हैं और उसको घर से धक्के दिये जाते हैं और बेकस व मज़लूम को घर से बाहर निकाल कर कह देते हैं कि चली जा जहाँ तेरा दिल चाहे और वह बेकस सिवाय रोने के कुछ नहीं कर सकती। हालांकि उसका एक हक़ यह भी है कि उसके साथ हंसी और दिल्लगी और उसके नाज़ नख़रे को गवारा किया जाये और उसकी बदतमीज़ी को बर्दाश्त किया जाये। इन हक़ूक़ को मर्दों ने बिल्कुल ही छोड़ दिया है। यूँ चाहते हैं कि औरतें बाँदियों की तरह ताबेदार होकर रहें और हमारी किसी बात का उलट जवाब न दें। बाज़ मर्द यह चाहते हैं कि औरतें हमारी तरह तमीज़दार और सलीक़ेमन्द होकर रहें और जब किसी औरत से कोई बात बदतमीज़ी की हो जाती है तो उस पर सख़्त सज़ा दी जाती है। याद रखो, एक हक़ औरतों का यह भी है कि उन की बदतमीज़ी को बर्दाश्त किया जाये। हदीस शरीफ़ में है कि औरत टेढ़ी पसली से पैदा हुई है। इसलिए उस की आदतों में टेढ़ापन लाज़मी है। अगर उसको सीधा करना चाहोगे तो टूट जायेगी। बस, इससे नफ़ा उठाना है तो टेढ़ेपन ही के साथ नफ़ा उठाते रहो और मुनासिब भी यही है कि औरतों में थोड़ी-सी बदतमीज़ी भी हो। क्योंकि ज़्यादातर बदतमीज़ वही होती हैं जो सीधी-सादी होती हैं और ऐसी औरतें पारसा होती हैं और जो बड़ी तमीज़दार और सलीक़ामन्द होती हैं, वह बहुत चालाक होती हैं। शर्म व हया भी उनमें कम होती है और जो सीधी-सादी हैं वह अपने मर्द की ताबेदार और जाँनिसार होती

हैं। यहाँ तक देखा गया है कि वह खुद बीमार हैं। उठने बैठने की ताक़त नहीं, मगर उसी हालत में अगर कहीं मर्द बीमार हो गया तो अपनी बीमारी को भूल जाती हैं। अब उनको किसी तरह चैन नहीं पड़ती। हर वक़्त मर्द की ख़िदमत में लगी रहती हैं। और यह तो रोज़मर्रा की बात है कि औरतें खुद खाना आख़ीर में खाती हैं और सबसे पहले मर्दों को खिलाती हैं। और बाज़ दफ़ा आख़ीर में कोई मेहमान आ गया तो खुद भूखी रहेंगी और वह खाना मेहमान के वास्ते भेज देंगी। अगर उसके खाने के बाद कुछ बच गया तो खा लिया वर्ना फ़ाक़ा कर लिया। अगर मर्द कभी आधी रात को सफ़र से आ गया तो उसी वक़्त अपना आराम छोड़कर उसके लिए खाना पकायेंगी और उसकी ख़िदमत में लग जायेंगी। तो इस तरह की औरतें जो मर्द पर मर मिटें ज़्यादातर वही होती हैं जो थोड़ी बदतमीज़ भी हों। तमीज़दारों में यह बातें नहीं होती। अगर आप यह कहें कि औरतों की बदतमीज़ी से दिल तो दुखता है, तकलीफ़ होती है तो इसका ईलाज यह भी तो हो सकता है कि उनको दीन की किताबें पढ़ाओ या सुनाओ। इल्मेदीन से उनकी आदतें दरुस्त हो जायेंगी। खुदा का ख़ौफ़ दिल में पैदा होगा। मर्द के हक़ूक़ मालूम होंगे। बाक़ी यह उम्मीद मत रखो कि वह बिल्कुल तुम जैसी हो जायेंगी। क्योंकि उनमें जो पैदाइशी कजी है वह नहीं जा सकती। इसलिए मर्द को इतना सख़्त मिज़ाज न होना चाहिए कि बीवी की ज़रा-ज़रा सी बदतमीज़ी पर गुस्सा किया करे। बाज़ मर्द ऐसे ज़ालिम होते हैं कि आप तो ख़ूब बने-ठने रहते हैं और बीवी को भंगियों की तरह रखते हैं। न उनके कपड़ों का ख़याल और न खाने के लिए रोटी और दाल बल्कि एक-एक पैसे से उनको तंग रखते हैं। यह बड़ी हक़ तल्फ़ी और ज़ुल्म है। बाज़ मर्द ऐसी गन्दी तबियत के होते हैं कि बदकार औरतों में अपना मुँह काला करते हैं और उनके घरों में हूरों की मिस्ल बीवियाँ मौजूद होती हैं, उनकी तरफ़ रुख़ भी नहीं करते। मगर हिन्दुस्तान की औरतें साबिर व शाकिर हैं कि वह रोने-धोने के सिवा और कुछ नहीं करतीं। किसी के सामने अपने मर्द का ऐब नहीं खोलती। ग़रज कि इन ख़ूबियों का बदला यह है कि बीवियों पर रहम करो और उनके हक़ूक़ ज़ाए करके दोज़ख़ न ख़रीदो। सबक़ सीखने के लिए तीन हिकायतें लिखी जाती हैं।

## हिकायतें

**हिकायत 1—** एक बज़ुर्ग थे। उनकी बीवी बहुत बदमिज़ाज थी। एक दिन उन्होंने बीवी से कहा कि तू बड़ी बदक़िस्मत है। तुझको मेरे पास रहते हुए इतना ज़माना गुज़र गया मगर तेरी बदमिज़ाजी न गयी। बीवी ने कहा—मैं बदक़िस्मत क्यों होती, मुझ से ज़्यादा कौन खुशक़िस्मत होगी कि मुझको तुम जैसा मर्द मिला।

बदक़िस्मत तो तुम हो कि तुम को बदमिज़ाज बीवी मिली। यह जवाब सुनकर उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि तुम जीती और मैं हारा। अल्लाह के नेक बन्दों ने औरतों के सताने पर हमेशा सब्र किया है। क्योंकि बीवी की बदतमीज़ी को बर्दाश्त करने से बड़ा सवाब मिलता है। दर्जे बुलन्द होते हैं। अल्लाह व रसूल की रज़ा हासिल होती है।

**हिकायत 2—** एक तहसीलदार बड़े दीनदार आदमी थे। उनकी बीवी कम अक़ल और बड़ी ख़र्चीली थी। मगर तहसीलदार की यह हालत थी कि अकसर उसकी बातें करते हुए कहा करते कि मेरी पागल की यह बात है। आज मेरी पागल ने यह ग़लती-की। आज मेरी पागल ने यह नुक़सान किया। ग़रज़ 'मेरी पागल' कह कर नाम लेते थे। किसी ने कहा कि तहसीलदार साहब फिर भी आप उनको चाहते हैं। कहने लगे कि भाई वह शरीफ़ बहुत है और शरीफ़ औरतों में जहाँ बहुत-सी बदतमीज़ी और तकलीफ़ देने की बातें होती हैं, वहाँ एक कमाल उनमें ऐसा है कि हज़ारों तमीज़दारियाँ उन पर कुर्बान हैं। ऐसी शरीफ़ हैं कि अगर उनको एक कोने में बिठला कर कोई सफ़र को जावे और दस बरस में आवे तो उसी कोने में इज़्ज़त-आबरू के साथ उनको बैठा पावेगा। बस इसी कमाल की वजह से मैं अपनी पागल को चाहता हूँ। वाक़ई शरीफ़ औरतों को अपने घर के कोने के सिवा दुनिया की कुछ ख़बर नहीं होनी चाहिए। उन पर कुछ भी गुज़र जाये मगर वह अपने कोने से अलग नहीं होती। सुबहान अल्लाह! कैसी शान का कमाल है।

अल्लाहतआला इस कमाल की तारीफ़ यूँ फ़रमाते हैं

यानी पाकदामन हैं और भोली-भाली, सीधी-सादी हैं। ईमान वाली हैं। चालाक नहीं हैं।

वाक़ई नक़शा खींच दिया और यह ख़ूबी औरतों में पर्दे की वजह से होती है कि उनको अपनी चारदीवारी के सिवा दुनिया की कुछ ख़बर नहीं होती। जब अल्लाहतआला औरतों के भोले और सीधेपन की और बेख़बरी की तारीफ़ फ़रमाते हैं तो समझ लो इसी में ख़ैर है। और हज़ारों ख़बरदारियाँ ऐसी बेखबरी पर क़ुर्बान हैं कि शौहर के घर से अलग होना उनको ग़वारा नहीं होता तो जहाँ उनमें बदतमीज़ी वग़ैरा है, वहाँ यह ख़ूबियाँ भी तो हैं कि तुम्हारी ख़िदमत करती हैं। जिसने सौ दफ़ा आराम पहुँचाया हो, उससे अगर कभी तकलीफ़ भी पहुँच

जाये तो उसको ज़ुबान पर न लाना चाहिए। बल्कि उनकी ख़िदमत पर नज़र करके उनकी बदतमीज़ियों को बर्दाश्त किया जाये।

**हिकायत 3—** एक शख़्स हज़रत उमर (रज़ी०) के मकान पर अपनी बीवी की शिकायत लेकर आये। उस वक़्त आपकी बीवी साहिबा आपको बुरा-भला कह रही थीं। वो शख़्स लड़ने की आवाज़ सुनकर लौटने लगे कि हज़रत उमर बाहर तशरीफ़ ले आये। आपने उन से दरियाफ़्त किया कि तुम क्यों आये थे? उन्होंने अपनी बीवी की बदज़ुबानी ज़ाहिर की और कहा— हज़रत, आप के साथ भी यही मामला है। मगर आपने उलट कोई जवाब नही दिया। आपने फ़रमाया कि मेरी बीवी के मुझपर बहुत से हक़ हैं इसलिए मुझे उनकी सब बातें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं। एक हक़ यह है कि मुझको दोज़ख़ से बचाती है और मैं बुरे काम से बचता हूँ। दूसरा हक़ यह है कि वह मेरे घर की चौकीदार हैं। इस घर की हिफ़ाज़त करती हैं। तीसरा हक़ यह है कि मेरे बच्चों को पालती हैं और पेशाब-पाख़ाना साफ़ करती हैं। चौथा हक़ यह है कि मुझको खाना पका कर खिलाती हैं। पाँचवाँ हक़ यह है कि मेरे कपड़े धो देती हैं। और भी बहुत-सी ख़िदमतें करती रहती हैं। फिर अगर वह कभी मुझ पर ख़फ़ा भी हो जायें तो इन्साफ़ की बात यही है कि मैं उन की ख़फ़गी को बर्दाश्त करूँ और उलट कर जवाब न दूँ।

आपकी यह नसीहत भरी बातें सुनकर वह शख़्स कहने लगे कि हज़रत मैं अब समझा हूँ। वाक़ई बीवी के बहुत से हक़ हैं। मै इन्शाअल्लाहतआला आप की तरह अमल करूँगा और वह अपने घर आये और बीवी के साथ बड़ी नरमी और ख़न्दा पेशानी से बर्ताव करने लगे और बीवी ने लड़ना-झगड़ना सब छोड़ दिया। दोनों मुहब्बत और प्यार से रहने लगे।

बाज़ लोग दूसरा निकाह कर लेते हैं। हालांकि दूसरा निकाह इस ज़माने में अच्छा नहीं। क्योंकि अल्लाहतआला का हुक्म है कि अगर तुम कई बीवियों में इन्साफ़ न कर सको तो एक ही बीवी काफ़ी है। और आजकल यह बात ज़ाहिर है कि इन्साफ़ हो नहीं सकता और जब अल्लाहतआला के हुक्म के मुवाफ़िक़ इन्साफ़ न किया तो दुनिया और आख़िरत की तबाही लाज़मी है।

रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जिस मर्द के दो बीवियाँ हों और वह उनके लेने-देने में और खाने-पीने में और सोने वग़ैरा मे बराबरी न करेगा तो वह मुझसे गया और मैं उससे गया और वह मेरी शिफ़ाअत से महरूम रहेगा।

या अल्लाह तेरी पनाह! जिस काम से तेरा रसूल नाराज़ हो सिवाय दोज़ख़ के उस का ठिकाना कहाँ है? और फ़रमाते हैं नबी-ए-करीम (स०) कि तुम सबमें वह आदमी अच्छा है जो अपनी बीवी के साथ अच्छा बर्ताव करे।

ऐ लोगो देखो! मैं अपनी बीवियों के साथ तुम सबसे ज़्यादा अच्छा बर्ताव करता हूँ।

बाज़ मर्द बीवी का मेहर जिसका अदा करना फ़र्ज़ है, अदा नहीं करते, बल्कि यह चाहते हैं कि किसी तरीक़े से देना न पड़े और बीवी छोड़ दें। यह भी हक़तल्फ़ी है। अलबत्ता अगर बीवी अपनी ख़ुशी से माफ़ कर दे तो उसका एहसान है। बाज़ मर्द ख़ुदा से न डरने वाले यह ज़ुल्म करते हैं कि बीवी को दीन की बातों पर बुरा-भला कहते हैं कि तू बड़ी पर्दे वाली मुल्लानी और नमाज़न हो गयी है। ऐसे अलफ़ाज़ ज़ुबान से निकालने सख़्त गुनाह हैं। तौबा करना चाहिए। बाज़ मर्द ऐसे ज़ालिम होते हैं कि ख़ुदा ने सब कुछ दे रखा है, मगर बीवी को ख़र्च से तंग रखते हैं। एक-एक पैसे से तरसाते हैं। बेचारी ऐसी हालत में बहुत परेशान होती है। यह भी ज़ुल्म है। बाज़ मर्द शरीयत के हुक्म के मुवाफ़िक़ बीवी को रहने का मकान नहीं देते। यह भी ज़ुल्म है। याद रखो, रोटी, कपड़ा, रहने का मकान बीवी को देना वाजिब है। बाज़ मर्द माँ-बाप वग़ैरा के कहने से अपनी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ शादी कर लेते हैं। फिर बीवी को तकलीफ़ देते हैं और कहते हैं कि हमको पसन्द नहीं। यह भी बड़ा ज़ुल्म है। अच्छी बात यह है कि जहाँ अपनी मर्ज़ी न हो वहाँ हरगिज़ शादी न करें। वर्ना दोनों के लिए मुसीबत ही मुसीबत हैं। ऐसे ही माँ-बाप वग़ैरा को चाहिए कि जहाँ लड़के और लड़की की मर्ज़ी न हो वहाँ निकाह न करें जबकि यह मालूम हो जाये कि लड़के की मर्ज़ी नही है। बाज़ मर्द बीवी को दीन की बातें नहीं बतलाते। हालाँकि यह उसका दीनी हक़ है।

### हुज़ूरे अकरम (स०) इरशाद फ़रमाते हैं—

जो शख़्स अपनी बीवी को एक मसला भी बतलाता है तो उसको अस्सी बरस की इबादत का सवाब मिलता है। इसलिए हर मर्द को ज़रूरी है कि अपनी बीवी को पाकी-नापाकी, वज़ू और गुस्ल के और नमाज़, रोज़े वग़ैरा के सब मसले बतलाये और सवाब हासिल करे, और अल्लाहतआला के अज़ाब से बचे। इसी तरह जो बीवी दीन की बातें और मसले सीखेगी उसको भी ऐसा ही सवाब मिलेगा और जो न सीखेगी दोज़ख़ में जलेगी।

नबी-ए-करीम (स०) फ़रमाते हैं कि—

सबसे बड़ी सख़ावत और ख़ैरात यह है कि मुसलमान दीन के मसले सीखे और फिर अपने भाई मुसलमान को सिखा दे। बस हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है कि दीन के मसले, जो बहुत ज़रूरी हैं, जिनकी हर वक़्त ज़रूरत पड़ती है खुद भी सीखें और अपनी बीवी-बच्चों वग़ैरा को भी सिखला दें।

इल्मेदीन सिखलाये ज़न को बिल्ज़रूर,
शिर्क औरे बिदअत से रखे उस को दूर।

महर व उल्फ़त में रखो तुम ऐतदाल,
रोटी कपड़ा उसको दो तुम हाल-हाल।

एक थे साहब वली और पारसा,
उनसे एक दिन एक ने जाकर कहा।

मर्दो ज़न में क़ायदा क्या चाहिए,
किस तरह से मिल के रहना चाहिए।

तब कहा उस नेक ने ऐ खुश ख़िसाल,
मर्दो ज़न में चाहिए उल्फ़त कमाल।

ज़न से खेले और हँसे यूँ बावफ़ा,
खेलते हँसते थे जैसे मुस्तफ़ा।

इस तरह से मिल के रह तू ज़न के साथ,
जिस तरह से रहती है जाँ तन के साथ।

## बीवी को ख़ुश करना और तकलीफ़ न देना

रहमते आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जब कोई मर्द अपनी बीवी का बोसा लेता है तो उसको हर बोसे के बदले हज़ार बरस की इबादत का सवाब मिलता है और जब गले लगाता है तो दो हज़ार बरस की इबादत का सवाब मिलता है और जब सोहबत करता है तो चार हज़ार बरस की इबादत का सवाब मिलता है। (अनीसुलवाएज़ीन)

इरशाद फ़रमाया रहमते आलम (स०) ने कि—

ऐ लोगो! तुम औरतों के बारे में अल्लाह से डरो और उनको नाहक़ मत सताओ और उन के साथ अच्छी आदतों से ज़िन्दगी बसर करो। अगर तुमने उनको नाहक़ तकलीफ़ दी और उन पर ज़ुल्म किया तो अल्लाहतआला तुम से

बदला लेगा। इसलिए मर्द को चाहिए कि अपनी बीवी को नाहक़ तकलीफ़ न दे। उस पर रहम करे। उस के साथ हँसी-मज़ाक़ और दिल्लगी करने में नफ़िल नमाज़ों के पढ़ने का सवाब मिलता है। मगर हँसी-मज़ाक़ ऐसा करे कि उसका दिमाग़ ख़राब न हो और आदतें न बिगड़ें और क़ुदरत होते हुए उसको ख़र्च से तंग न करे।

यह लिखा क़ुरआन में है सरबसर,
बे सबब औरत को आज़ुर्दा न कर।

जो करे नाहक़ किसी ज़न पर सितम,
उस को हासिल हश्र में हो रंज व ग़म।

मुस्तफ़ा ने इस तरह से है कहा,
बे ख़ता हरगिज़ न हो ज़न पर ख़फ़ा।

ग़र ख़ता उसकी न हो तो मत सता,
जान कर दोज़ख़ में तू हरग़िज न जा।

## शरीर औरतों को सज़ा देने का हुक्म

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

और जो औरतें ऐसी हों कि तुमको उनकी बद-दिमाग़ी का अन्देशा हो यानी बदकारी का, तो पहले ज़ुबानी समझा दो। अगर इस पर भी न मानें तो उनको लेटने की जगहों में अकेला छोड़ दो। अगर फिर भी न मानें तो उनको मारो। अगर वह ताबेदारी करने लगें तो उन पर बहाना मत ढूँढो। (पाँचवा पारा, सूरतुलनिसा)

**फ़ायदा—** हदीस शरीफ़ में मारने की यह हद है कि हड्डी न टूटे। अगर फिर भी दुरुस्त न हो और जब निबाह होने की कोई सूरत न हो तो तलाक़ दे देना चाहिए। यह न करें कि न तलाक़ दें और न रखें, कि यह भी ज़ुल्म है।

**नबी-ए-करीम (स०) फ़रमाते हैं कि—**

ऐसे फ़ित्ने के वक़्त जब कि हर तरफ़ बेदीनी हो, मैं अपनी उम्मत के लिए मुजर्रिद अकेला रहना यानी बिना बीवी के रहने को और ताल्लुक़ात छोड़कर पहाड़ों की चोटियों पर रहने को पसन्द करता हूँ।

हज़रत अबदुल्ला इब्ने मसूद (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

लोगों पर एक ऐसा ज़माना आयेगा कि आदमी की हलाकत उसकी बीवी और माँ-बाप और औलाद के हाथों होगी, कि यह लोग उस शख्स को ग़रीबी और तंगदस्ती की वजह से तंग और शर्मिन्दा क़रेंगे और ऐसी बातों को पसन्द करेंगे और कहेंगे जिनको यह न कर सकेगा और अगर उनके कहने में आकर उन बुरे कामों में पड़ गया तो उसका दीन बर्बाद हो जायेगा। जब दीन गया तो हलाकत यानी खुदा की पकड़ मौजूद है।

**फ़ायदा—** इन हदीसों से मालूम हुआ कि जो शख्स बीवी-बच्चों के हक़ूक़ हलाल आमदनी से पूरे अदा न कर सके, उसके लिए बेहतर और अच्छाई उसी में है कि निकाह हरगिज़ न करे। एक तरफ़ होकर अल्लाह की याद करे।

एक ने पूछा कि या हज़रत नबी,
मर्द व औरत में किस तरह हो दुश्मनी।

दीजिए बतला मुझे यह साफ़-साफ़,
किसलिए हो मर्द से ज़न बरख़िलाफ़।

सुन के बोले यह नबी ऐ ज़ी शऊर,
इस तरह से यह अम्र पाता है ज़हूर।

बदशकल हो बेवफ़ा हो बदनज़र,
खुद पसन्द और खुर्दबीं हो जो बशर।

पाँच बातों से हो जिस में कोई बात,
ज़न रहे उस मर्द से बे इल्तफ़ात।

और जिस औरत में हों यह फ़ेल चार,
मर्द राज़ी हो न उससे ज़ीनहार।

दीद बाज़ी की जो रखे दिल में चाह
ख़र्च बेहूदा करे जो खुवामख़ाह।

उज्र बे मौक़ा करे जो माह रू,
हुज्जत व तकरार की हो जिस में ख़ू।

बस इन्हीं बातों से पड़ता है फ़तूर,
रन्जिश व तकरार पाता है ज़हूर।

मर्दो ज़न में महरोउल्फ़त हो अगर,
बादे मुर्दन पायें वह जन्नत में घर।

ज़न से देखे मर्द जो रन्ज व अज़ाब,
है नबी अय्यूब का उस को सवाब।

और जिस ज़न को न होवे रंज व ग़म,
उस पे है अल्लाहो अकबर का करम।

## शौहर के हक़ूक़ जो बीवी के ज़िम्मे हैं

अल्लाहतआला ने फ़रमाया है कि मर्द दो वजहों से औरतों पर हाकिम हैं।

एक इस वजह से कि अल्लाहतआला ने एक को यानी मर्दों को दूसरे पर यानी औरतों पर बड़ाई बख़्शी है और दूसरे इस वजह से कि मर्दों ने उन पर माल ख़र्च किया है यानी मेहर और नान व नुफ़क़े का ज़िम्मा लिया है। बस जो नेक-बीवियाँ हैं वे मर्दों की इस बड़ाई का लिहाज़ करके उनके सामने उनकी ताबेदारी करती हैं और उनके पीछे भी अपनी आबरू की हिफ़ाज़त करती हैं। इस वजह से कि अल्लाहतआला ने उनको हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है। (सूरतुलनिसां पाँचवाँ पारा)

**फ़ायदा—** देखो बीवियो ! अल्लाहतआला ने मर्दों को बड़ी बड़ाई दी है। अपने मर्द का खुश रखना बड़ी इबादत है और उसको नाराज़ करना बड़ा गुनाह है। हमारे आक़ा महबूबे खुदा (स०) ने फ़रमाया कि— सबसे अच्छा ख़ज़ाना दुनिया में नेक औरत है कि उसका शौहर उसके देखने से खुश हो जाये और जब उसका शौहर उसको कोई काम बतलाये तो उसका कहना माने और उसके पीछे भी अपनी इज़्ज़त आबरू को बचाये।

ऐ बहिन यह याद रख हर आन में,
हक़ तआला ने कहा कुरआन में।

औरतों पर मर्द को हाकिम किया,
मर्द का औरत को है ख़ादिम किया।

जो औरत अताअत में शौहर की हो,
सुर्ख़रू जन्नत में हो वो नेक ख़ू।

कह गये हैं इस तरह से मुस्तफ़ा,
ज़न के ऊपर मर्द है फरमाँ खां।

जो रखे फ़रमान पर शौहर के सर,
ऐसी औरत को मिले जन्नत में घर।

# औरतों को जन्नत की ख़ुशख़बरी

रसूले खुदा (स०) ने फ़रमाया कि—

जो औरत पाँच वक़्त की नमाज़ पढ़ती रहे और रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखती रहे और अपने बदन को ग़ैर मर्दों से छुपाती रहे और अपने शौहर की ताबेदारी करती रहे और उसको खुश करके मरे तो वह जन्नत में जायेगी। बस जो बीवी दुनिया में यह चार काम करके मरेगी, उसके लिए आख़िरत में जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जायेंगे और फ़रिश्ते उससे कहेंगे— ऐ खुशनसीब बीवी! जिस दरवाज़े से तेरा दिल चाहे जन्नत में चली जा।

मुस्तफ़ा एक दिन कहीं को थे गये,
बकरियों ने उनको वाँ सजदे किये।

वह सहाबी जो कि हाज़िर थे वहाँ,
अर्ज़ की ऐ बादशाहे इन्सो जाँ।

जबकि हैवाँ आपको सजदा करें,
किस तरह ख़ामोश हम बैठे रहें।

दीजिए हमको इजाज़त ऐ रसूल,
ता करें इस फ़ैज़ को हम भी हसूल।

मुस्तफ़ा ने सुनकर फ़रमाया यह तब,
किस को सजदा है मुनासिब ग़ैरे रब।

ग़र खुदा यह हुक्म दे देता मुझे,
है रवा हर कस तुझे सजदा करे।

मैं यह देता औरतों को हुक्मे आम,
शौहरों को तुम करो सजदा तमाम।

बीवियों! देखो तुम ही इन्साफ़ कर,
है बज़ुर्गी शौहरों की किस क़दर।

जो करे शौहर की ख़िदमत ऐ हबीब,
बादे मुर्दन उस को हो जन्नत नसीब।

## हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) का एक क़िस्सा

एक दफ़ा हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) घबरायी हुई हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में आयीं। हुज़ूर ने फ़रमाया, बेटी क्यों घबरायी हो? अर्ज़ की— अब्बा जी, रात बातों ही बातों में मेरी ज़ुबान से कुछ ऐसी बातें निकल गयीं कि मेरे शौहर अली (अ०) नाराज़ हो गये। उनकी नाराज़गी से मुझे अल्लाह का ख़ौफ़ मालूम हुआ कि शौहर की नाराज़गी अल्लाह की नाराज़गी है। फिर मैंने उनसे माफ़ी माँगी। वह मेरी ख़ुशामद देख कर हँस पड़े और मुझसे राज़ी हो गये। हुज़ूर ने फ़रमाया— ऐ बेटी! उस ख़ुदा की क़सम जिसने मुझको सच्चा रसूल बना कर भेजा है। अगर तुम्हारी मौत इस हाल में आयी कि तुम्हारे शौहर अली (अ०) तुमसे नाराज़ होते तो मैं तुम्हारे जनाज़ें पर नमाज़ न पढ़ता।

ऐ मेरी नूरे-चश्म! अगर कोई औरत मरियम (अ०) की-सी इबादत करे और उसका शौहर उससे नाराज़ हो तो अल्लाहतआला ऐसी औरत की इबादत क़बूल नहीं करता और अल्लाहतआला उस औरत से ख़ुश होता है जो अपने मर्द को ख़ुश रखे और ग़ैर मर्दों से अपने को छुपाये।

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह! रहमते आलम आप की शाने अज़ीम कि हम ग़ुलामों को रहने-सहने और बर्ताव करने के भी तरीक़े बतला गये। मियाँ-बीवी के इख़तलाफ और झगड़े मिटाने के क़ायदे भी सिखा गये। उजड़े हुए घर बसा गये।

बीबियों! हज़रत फ़ात्मा (रज़ी०) के हाल से सबक़ हासिल करो।
बीबी फ़ात्मा की जब शादी हुई,
तब नबी ने यूँ नसीहत उनको की।

मत अली का दिल दुखाना फ़ात्मा,
रब करेगा नेक तेरा ख़ातिमा।

काम वह करना जो हो उन की रज़ा,
और दिलासा दिलबरी करना सदा।

गर करोगी उन की तुम फरमाँबरी,
आख़िरत में तुम को होगी बेहतरी।

बीबियो ! तुम को भी लाज़िम है यही,
हुक्मे शौहर से न हो बाहर कभी।

## दीनदार औरत अपने मर्द को बादशाह बना देती है

मोहसिने आज़म हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

जो औरत सात रोज़ तक अपने मर्द की दी हुई तकलीफ़ बर्दाश्त करेगी तो उसको सात सौ बरस की इबादत करने का सवाब मिलता है और दीनदार औरत अपने मर्द को बादशाह बना देती है कि बेजा ख़र्च नहीं करती। हर हालत में साबिर व शाकिर रहती है। जिसकी वजह से मर्द परेशान नहीं होता। दीनदार बीवी का मिल जाना अल्लाहतआला का एक तोहफ़ा है और दुनिया की चीज़ों में से अच्छी चीज़ दीनदार और फरमाबर्दार बीवी का मिलना है।

जब अली (अ०) ने शादी की कुल्सूम की,
वक़्ते रुख़सत बात यह उससे कही।

जा के शौहर के यहाँ करना वे काम,
जिससे हो दुनिया में तेरा नेक नाम।

वह कहे जिस राह तू उसी राह चल,
उस के फरमाँ में न लाना कुछ ख़लल।

हुक़्मे शौहर जो बजा लायेगी तू,
मुस्तहक़ फिरदौस की होवेगी तू।

## मियाँ-बीवी की लड़ाई से शैतान ख़ुश होता है

रसूल अल्लाह (स०) से दरयाफ़्त किया गया कि या रसूल अल्लाह! सबसे अच्छी औरत दुनिया में कौन है ?

इरशाद फ़रमाया—

वह औरत है कि जब उसका शौहर उसकी तरफ़ देखे तो उसको खुश कर दे और उसका कहा माने और जान व माल में कोई बात उस की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ न करे और बग़ैर उसकी इजाज़त के घर से बाहर न जावे।

और इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

शैतान हमेशा रात को समन्दर के ऊपर अपना तख़्त बिछा कर उस पर बैठता है और अपने सिपाहियों से पूछता है कि आज तुमने आदमियों से खुदा

की कौन-कौन-सी नाफ़रमानी करवायी। जवाब में कोई कहता है कि मैंने लोगों की नमाज़ें क़ज़ा करवा दीं। कोई कहता है कि मैंने ख़ून करवा दिया। कोई कहता है मैंने शराब पिलवायी, ग़रज़ अपनी-अपनी कार्यवाही और शरारतें बयान करते हैं, तो शैतान ख़फ़ा हो कर कहता है कि दूर हो जाओ! तुमने आदमियों को कुछ भी नुक़सान नहीं पहुँचाया। फिर एक और शैतान कहता है कि मैंने मर्द और बीवी में लड़ाई करा दी, यह बात सुनकर शैतान बहुत ख़ुश होता है और ख़ुशी में ख़ूब नाचता-कूदता है और उस शैतान को गले लगाकर कहता है कि शाबाश! जीते रहो, तुमने ख़ूब काम किया और यह काम सब बुरे कामों से बेहतरीन काम है।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो और बहिनो! इस क़िस्से से सबक़ सीखो और आपस में लड़ाई-झगड़ा करके शैतान को ख़ुश न करो।

एक दिन दुख़्तर के घर हज़रत उमर,
इत्तफ़ाकन जो गये वह ख़ुश सयर।

घर में था दुख़्तर के फ़ाके का ज़हूर,
और थी दो दिन के फ़ाके से वह चूर।

जोशे उल्फ़त से अपने बाद पास,
जा के बेटी दुख़्तरे ख़स्ता हवास।

नागहां शौहर भी आया उसका घर,
वो रही बेटी उसी ख़ुश सयर।

अपने शौहर से न की जब उसने बात,
देखकर नाख़ुश हुए वह बासिफ़ात।

अपनी दुख़्तर के तमाचा मारकर,
उस से यूँ कहने लगे हज़रत उमर।

जब तलक शौहर न बख़्शेगा तुझे,
ख़ुल्द में मुश्किल है मिलनी जा तुझे।

शौहर अगर हो अपना मोहताजो फ़क़ीर,
ताज सर का उसको जानो और अमीर।

कह के यह घर आये वह आली सिफ़ात,
फिर कई दिन तक न की दुख़्तर से बात।

बीवियों शौहर का रुतबा देखियो,
जानो दिल से उसका कहना मानियो।

# औरतों की नाशुक्री

बाज़ औरतें-मर्दों से खर्च बहुत माँगती हैं, न हलाल का खयाल न हराम की परवाह और यही कहती हैं कि हमारी हालत तो दोज़ख की-सी है। जैसे उस का पेट नहीं भरता और यही कहती रहती है कि मुझे और ज़्यादा दो। इसी तरह रुपया, कपड़े, ज़ेवर वग़ैरा से हमारा पेट ही नहीं भरता। कितना भी दो, सब खर्च हो जाता है। एक लतीफ़ा है कि—

औरतों के पास चाहे कितने ही कपड़े हों मगर यही कहती हैं, क्या है दो चीथड़े और जूतों के ! दो-तीन जोड़े होंगे तो कहेंगी— क्या हैं दो लीतरे, और बर्तन कितने ही हों, क्या हैं दो ठीकरे !

एक हदीस शरीफ़ में है कि तुम औरतों के साथ उम्र भर सलूक और भलाई करते रहो, फिर कोई बात उनकी मर्ज़ी के खिलाफ हो जावे तो साफ़ यह कहेंगी, मैंने तुमसे भलाई नहीं देखी। रोते ही आयी, रोते ही रही और रोते ही रोते मर जाऊँगी। माँ-बाप ने मेरी क़िस्मत फोड़ दी, मुझे ऐसी आग में झोंक दिया। आह अफ़सोस ! मेरी शादी ऐसे घर में की। ग़रज़ कि सारी उम्र के सलूक और एहसान को एक मिनट में ख़त्म कर देती हैं और अपने शौहर की शिकायत और अल्लाहतआला की नाशुक्री करती हैं।

करती थीं उसमान की दुख़्तर निहा,
अपने शौहर की शिकायत खुद बयां।

उड़ते-उड़ते यह खबर पहुँची वहाँ,
सुन के उसमान आये दुख़्तर के यहाँ।

हो खफ़ा उस के तमाचा मारकर,
यह कहा फ़रमाते हैं खैरूल बशर।

अपने शौहर का गिला जो ज़न करे,
हक़ तआला उस को जा दोज़ख में दे।

जब बाप से अपने दुख़्तर ने खबर,
यह सुनी तौबा की इस से सरबसर।

बीबियो तुमको मिले जन्नत में घर,
गर चलो उन बीबियों की चाल पर।

सब्र और शुक्र से बनता है काम,
शौहरों की तुम करो ताअत सदाम।

# अपनी आबरू बचाने वाली औरत पर दोज़ख़ हराम है

हादीए बरहक़ मोहसिने आज़म (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो औरत अपने मर्द के लिए बनाओ सिंगार करे उसको दो बरस की इबादत करने का सवाब मिलेगा और जो औरत बेइजाज़त अपने शौहर के घर से बाहर जाये तो ज़मीन व आसमान और फ़रिश्ते उस पर लानत करते हैं, जब तक वह वापस न आये। और जो औरत ग़ैर मर्द को अपना बदन दिखाती है तो उसकी हर बद-नज़र के बदले उस औरत पर तीन सौ साठ लानतें बरसती हैं और जो औरत ग़ैर मर्द से पर्दा करेगी और अपने बदन को छुपायेगी उसको दोज़ख न जलायेगी और जो औरत अपने मर्द के पीछे भी अपनी आबरू बचायेगी उस पर दोज़ख हराम है। और जब कोई औरत अपने मर्द को दुनिया में तकलीफ़ देती है तो जन्नत में जो हूरें मर्द को मिलेंगी वह कहती हैं कि खुदा तुझे ग़ारत करे। यह तो तेरे पास कुछ दिनों का मेहमान है, बहुत जल्दी हमारे पास आ जायेगा।

जब उमर ने ब्याह दुख़तर का किया,
वक़्ते रुखसत के उससे यह कहा।

दिल दुखाना अपने शौहर का न तू,
याद रखना इसको दिल से माहेरू।

हुज्जतो तकरार की करना न खू,
रूबरू आँखें कभी करना न तू।

हुक्म शौहर का बदिल करना क़बूल,
और कभी होना न तू उससे मलूल।

सब्र करना रंज व मेहनत हो अगर,
ताकि बदले में मिले जन्नत में घर।

गर ख़ता की इसमें तूने महजबीं,
उम्र भर मैं तुझको देखूँगा नहीं।

# तलाक़ माँगने का अज़ाब, महर माफ करने का सवाब

रहमते आलम हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो औरत अपनी खुशी से अपना मेहर माफ़ कर देती है, अल्लाहतआला उससे खुश होता है और मैं उसकी शिफ़ाअत करूँगा और वह जन्नत में जायेगी। और जिस औरत का मर्द ग़रीब हो और वह औरत अपने माल से एक दिरहम भी उस पर ख़र्च करेगी तो उसको सात हज़ार दिरहम अल्लाह की राह में ख़र्च करने का सवाब मिलेगा। इस तरह समझो कि अगर कोई औरत अपने ग़रीब शौहर पर अपने माल से एक रुपया ख़र्च करे तो उसको सात हज़ार रुपये ख़र्च करने का सवाब मिलेगा और जब कोई बीवी अपने घर में झाड़ू देती है तो उसको काबे शरीफ़ में झाड़ू देने के बराबर सवाब मिलता है, और—

इरशाद फ़रमाया —

हुज़ूर (स०) ने कि जो औरत बिला सख़्त मजबूरी के तलाक़ माँगे, उस पर जन्नत की खुशबू हराम है। और औरतों को बिला सख़्त मजबूरी के तलाक़ न दी जाये। क्योंकि अल्लाहतआला ऐसे मर्दों और औरतों को पसन्द नहीं करता जो बहुत से मज़े चखने वाले हों।

**फ़ायदा**— सख़्त मजबूरी यह है कि औरत बदकार हो जाये या कोई और ऐसी बात हो जाये कि जिसकी वजह से इतफ़ाक़ और निबाह न हो सके तो तलाक़ देना बहुत अच्छा है। बिला सख़्त मजबूरी के तलाक़ देने से अर्श भी काँप जाता है।

बीवियों इस हाल को सुनो ग़ौर से,
ख़िदमते शौहर करो हर तौर से।

रंज व राहत साथ उसके सब सहो,
जो रज़ा शौहर की हो उस पर चलो।

ज़न रहे दोज़ख़ में वह जलती सदा,
जिससे शौहर का न हक़ होवे अदा।

ताअते शौहर में रहना चाहिए,
दु:ख भी हो हासिल तो सहना चाहिए।

हक़ ने दी है मुस्तफ़ा को यह ख़बर,
ज़न मेरे शौहर के जो फ़रमान पर।

बादे मुर्दन के मैं जन्नत उसको दूँ,
साथ तेरे मग़फ़िरत उस की करूँ।

शौहरों को जान से जानो अज़ीज़,
जानो दिल कुरबाँ करो ऐ बातमीज़।

नेक ज़न हर शख़्स को अल्लाह दे,
दूर सब को सोहबते बद से रखे।

# औरतों की इज़्ज़त और शहादत

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

ऐ औरतो! क्या तुम इस बात पर खुश नहीं हो कि जब तुममें से कोई अपने शौहर से हामला होती है और उसका शौहर उस से राज़ी हो तो उस को ऐसा सवाब मिलता है कि जैसा अल्लाह के वास्ते रोज़ा रखने वाले को और सारी रात इबादत करने वाले को मिलता है। और जब उसको दर्दे-ज़ेह शुरू होता है तो उस की आँखों की ठण्डक के लिए अल्लाहतआला ने ऐसा सामान छुपा कर रक्खा है कि ज़मीन व आसमान के रहने वालों को उसकी ख़बर नहीं। और जब वह बच्चा जनती है और बच्चे को दूध पिलाती है तो बच्चे के एक घूँट दूध पीने पर और हर बार चूसने पर उसको एक नेकी मिलती है और बच्चे की वजह से उसको रात में जागना भी पड़े तो उसको सत्तर गुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है। और औरत को शुरू हमल से लेकर बच्चे के जनने और दूध छुड़ाने तक ऐसा दरजा मिलता है जैसा इस्लाम की हिफ़ाज़त करने वाले मुजाहिद को सरहद पर रहने से मिलता है और अगर औरत इस दर्मियान में मर जाये तो उसको शहादत का दरजा मिलता है। (इब्ने माजा)

# बाज़ सूरतों में निकाह करना दरुस्त नहीं

हज़रत अबुसईद (रज़ी०) से रिवायत है कि—

एक शख़्स अपनी बेटी को रसूल अल्लाह (स०) की खिदमत में लाया और अर्ज़ की— या रसूल अल्लाह! यह मेरी बेटी निकाह नहीं करती। हुज़ूर ने उस लड़की से फ़रमाया कि निकाह के बारे में अपने बाप का कहना मानो। उस लड़की ने कहा— या रसूल अल्लाह! क़सम है उस ख़ुदा की जिसने आपको

सच्चा दीन देकर भेजा है। मैं निकाह न करूँगी जब तक आप मुझे यह न बतला दें कि मर्द का हक़ बीवी के ज़िम्मे क्या है ?

आपने फ़रमाया कि हर जायज़ काम में उसकी ताबेदारी करना। लड़की ने कहा, क़सम है खुदा की जिसने आपको सच्चा दीन देकर भेजा है। मैं कभी निकाह न करूँगी।

इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि औरतों का निकाह जब किया करो जबकि वह अख़्तियार रखती हों, बग़ैर उनकी इजाज़त के मत करो।

**फ़ायदा—** उस लड़की का उज्र यह था कि मैं शौहर का हक़ अदा न कर सकूँगी। हुज़ूर ने उसको मजबूर नहीं किया।

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि अगर कोई औरत शौहर का हक़ अदा न कर सके और बुरे काम का ख़तरा भी न हो तो वह निकाह न करे। यह हदीस शरीफ़ पहले निकाह के बारे में हैं, और दूसरे निकाह के बारे में यह हदीस है कि—

हज़रत औफ़ बिन मालिक अशजई (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि मैं और वह औरत जिसके रुख़सार मेहनत मज़दूरी से बदरंग हो गये होंगे, क़यामत के दिन इस तरह होंगे जैसे बीच की उंगली और कलमे की उंगली मिली-जुली होती हैं। बस जो औरत बेवा हो गयी हो और उसने अपने यतीम बच्चों की ख़िदमत के लिए अपने आप को क़ैद कर दिया हो। यहाँ तक कि बच्चे पल गये और फिर जुदा हो गये या मर गये। मगर यह उस वक़्त है जबकि औरत को यह ख़तरा हो कि निकाह करने से बच्चे बर्बाद हो जायेंगे तो यह उज्र बेवा को निकाह न करने के लिए दरुस्त है और इसमें उसको बड़ा रुतबा मिलेगा।

## शौहर के साथ बर्ताव करने का तरीक़ा

बीवियों, अपने शौहर के साथ मुहब्बत रखना और हर जायज़ काम में उसका कहा मानना। इससे अल्लाह व रसूल खुश होते हैं। दुनिया में इज़्ज़त और नेकनामी होती है और अपने शौहर से मुहब्बत न करना और उसका कहा न मानना और उसके साथ लड़ाई-झगड़ा रखना, इससे शैतान खुश होता है, जो सबसे बड़ा ज़हरीला साँप इन्सान का दुश्मन है और दुनिया में भी ज़िल्लत और बदनामी होती है। ज़िन्दगी वबाले जान हो जाती है। राहत नसीब नहीं होती। इसलिए शौहर के साथ बक़द्रे ज़रूरत बर्ताव करने का तरीक़ा लिखा जाता है। समझदार बीवियाँ सबक़ हासिल कर सकती हैं—

1. देखो, शौहर और बीवी का एक ऐसा रिश्ता है कि सारी उम्र इसी में काटनी पड़ती है। अगर दोनों में मुहब्बत और इत्तफ़ाक रहा तो यह बड़ी इज़्ज़त और राहत की चीज़ है और अगर इसमें फ़र्क़ आया तो यह बड़ी कुल्फ़त और मुसीबत है। याद रखो, अपने मर्द के साथ ख़ाली मुहब्बत काफ़ी नहीं बल्कि उसके मर्तबे का ख़याल रखो। उठने बैठने में, बातचीत करने में भी उसका अदब करना ज़रूरी है। चाहे वह कितना भी हँसी-मज़ाक़ करता हो।
2. उसकी आमदनी के मुवाफ़िक़ ख़र्च करो।
3. अगर कोई तुम्हारे ख़िलाफ़ हो, उसकी सहार करो और हमेशा खुशी ज़ाहिर करो।
4. हमेशा बेजा ख़र्च से बचो।
5. जो कुछ मिले, जुड़े, अपना घर समझ कर चटनी रोटी भी हो तो खा कर गुज़ारा करो।
6. किसी बात में ज़िद न करो।
7. कभी गुस्से में आकर उसकी शिकायत न करो।
8. अगर उसको तुम्हारी किसी बात पर गुस्सा आ गया तो ऐसी बात न कहो कि उसका गुस्सा और बढ़े।
9. अगर वह तुमसे ख़फ़ा हो जाये तो तुम नाक-मुँह चढ़ा कर न बैठ जाओ। बल्कि आजिज़ी से अपना क़सूर माफ़ कराओ चाहे तुम्हारा क़सूर हो या न हो और क़सूर माफ़ कराने में अपनी इज़्ज़त समझो।
10. घर की चीज़ों को सलीक़े से रखो। यह न हो कि हर जगह पड़ी रहें।
11. किसी काम में हीला-बहाना मत करो।
12. झूट हरगिज़ न बोलो कि झूठ बोलने से गुनाह भी होता है और ऐतबार भी उड़ जाता है।
13. अगर वह गुस्से में आकर कुछ बुरा-भला कहे तो उस की सहार करो। जवाब मत दो। तुम देखोगी कि गुस्सा उतरने के बाद वह खुद शर्मिंदा होगा। अगर तुम भी गुस्सा करोगी और उसे बदनाम करोगी तो बात बढ़ जायेगी और जितना तुमसे बोलता था इतना भी नहीं बोलेगा। फिर सिवाय लड़ाई-झगड़े के और रोने धोने के कुछ न होगा।
14. अपने आदमी को बस में करने की आसान तदबीर यह है कि उसका कहना माना जाये। जिस तरफ़ को वह चलाये, चले। फिर उसकी जान व माल

सब तुम्हारे वास्ते है।

15. उसके साथ ज़ुबानदराज़ी करना या उसकी बराबरी करना बड़ी ग़लती है। भला ख़याल करो कि तुम्हारा बाप रुतबे के लिहाज़ से क्या तुम्हारे बराबर हो सकता है? हरगिज़ नहीं। तो शौहर का रुतबा तो बाप से भी ज़्यादा है। अल्लाह व रसूल ने उसका रुतबा तुम्हारे मुक़ाबले में बड़ा बनाया है। रहमते आलम हज़ूर (स०) का फ़रमान है कि "उस औरत की नमाज़ क़बूल नहीं होती कि जिसका शौहर उससे नाराज़ हो।" (तिरमिज़ी)

# शौहर के वालिदैन के साथ बर्ताव करने का तरीक़ा

अगर शौहर के माँ-बाप ज़िन्दा हों, उनकी ख़िदमत करने में अपनी इज़्ज़त और नेकनामी समझो। वह भी रिश्ते के लिहाज़ से अपने माँ-बाप ही के बराबर हैं। इसी तरह शौहर के माँ-बाप को भी चाहिए कि वह अपने बेटे की बीवी को अपनी ही बेटी समझें। सास-ननदों से अलग होने की फ़िक्र न करो कि उनसे फ़िसाद होने की यही जड़ है। आजकल इसी में बेहतराई है कि जब लड़का और उसकी बीवी जुदा रहना चाहते हों तो माँ-बाप को चाहिए कि उनको ख़ुशी के साथ जुदा कर दें। मगर तुम जुदा होने की फ़िक्र न करो और दिल को यह समझाओ कि जब वक़्त आयेगा, जुदा होना ही पड़ेगा। अगर दुनिया में जुदा न हुआ करते तो यह शहर और गाँव कहाँ से बस जाते। और बेमौक़ा अलग होने में तकलीफ़ भी होती है और नुक़सान भी हो जाता है। बाज़ जगह ऐसा हुआ है कि लड़की सीधी-सादी अकेली देखकर चोरों ने या बदमाश औरतों ने मार डाला और घर का सब रुपया, ज़ेवर और सामान लूट लिया या कोई धोखा फ़रेब देकर लड़की ही को ले उड़े।

बस बेहतर यही है कि कुनबे के साथ मिल-जुलकर प्यार व मुहब्बत से रहकर गुज़र करे। जो काम सास या ननदें करती हों तो उनके बे कहे उनसे लेकर कर दिया करो। इस बर्ताव से उनके दिलों में तुम्हारी मुहब्बत हो जायेगी और तुम्हारी तारीफ़ें किया करेंगी। शौहर के घर दिल लगाकर रहना चाहिए। अगर नयी जगह होने की वजह से वहाँ दिल न लगे और दिल को समझाओ, ऐसा न हो कि जब देखो बैठी रो रही हैं। जाते देर नहीं हुई और आने का तक़ाज़ा शुरू कर दिया। अगर वहाँ कोई बात तुम्हारी मर्ज़ी के खिलाफ़ हो तो-माँ बाप से या किसी और से उसका ज़िक्र न करो। जिन औरतों से मेल-जोल करने को शौहर या उसके माँ-बाप मना करें, उनसे मेल मिलाप मत रक्खो। जहाँ तुम्हारे जाने को वह पसन्द न करें वहाँ हरगिज़ न जाओ। उनकी इजाज़त के बग़ैर न

कहीं जाओ और न आओ।

पूरी उम्मीद है कि अगर तुमने इस बर्ताव पर अमल किया तो इन्शा-अल्लाह-तआला सबकी प्यारी बन जाओगी और इज़्ज़त व राहत से ज़िन्दगी गुज़रेगी। खुदा करे-कि सास और ननदें भी समझदार मिलें ताकि प्यार व मुहब्बत से रखें।

# एक लड़की का मरना और अज़ाबों में फँसना

इमामउल अम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की ख़िदमत में एक बुढ़िया आयी और कहने लगी— या रसूल अल्लाह! मेरी एक लड़की जवानी ही में मर गयी थी। बहुत दिन हो गये मैंने उस को कभी ख़्वाब में नहीं देखा। मुझे कोई ऐसा अमल बतला दीजिए कि जिसकी बरकत से मैं लड़की को ख़्वाब में देख लूँ।

आपने फ़रमाया कि तुम जुमे की रात को चार रकत नफ़िल नमाज़ इस तरह पढ़ो कि पहली रकत में अलहम्द के बाद सूराए वलशम्स एक बार और दूसरी रकत में अलहम्द के बाद सूराए वल्लैल एक बार और तीसरी रकत में अलहम्द के बाद सूराए वज़्ज़ुहा एक बार और चौथी रकत में अलहम्द के बाद सूराए अलमनशरा एक बार पढ़ो और नमाज़ पढ़कर सजदे में जा कर अल्लाह ताआला से दुआ माँगो कि या इलाही! मेरी लड़की को ख़्वाब में दिखा दे और फिर सो जाना। इन्शाअल्लाह तुम अपनी लड़की को ख़्वाब में देख लोगी।

बुढ़िया ने यह अमल किया और लड़की को ख़्वाब में देखा। फिर वह सुबह को हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में आयी और रो-रो कर कहने लगी, या रसूल अल्लाह! आपकी बरकत से मैंने अपनी लड़की को ख़्वाब में देखा। या रसूल अल्लाह! वह तो दोज़ख़ के बड़े-बड़े अज़ाबों में फँस रही है। मैं उसके हाल से निहायत बेचैन हूँ। वह मेरी बेटी रो-रो कर कहती थी कि ऐ मेरी मेहरबान अम्मी जान, यह मेरा हाल रहमते आलम (स०) की ख़िदमत में पहुँचा दो कि दुआ और बरकत से मैं इन अज़ाबों से निजात पाऊँ और मेरे इस हाल की ख़बर औरतों को सुना दी जावे कि वह मेरी तरह अज़ाबों में न फँसे। हुज़ूर ने फ़रमाया कि जो अज़ाब तुमने अपनी बेटी पर देखे हैं, बयान करो। बड़ी बी रो-रो कर कहने लगी—

बोली वह या शाफ़ा-ए-योमुल हिसाब,
दस तरह के उस पर देखे हैं अज़ाब।

पहले देखा मैंने उसको या नबी,
आतिशे दोज़ख़ में जलती है पड़ी।

पूछा मैंने इसका बाइस उससे जा,
यानी तुझको किस लिए दोज़ख़ मिला।

यूँ कहा उसने मुझे ऐ पाक बाज़,
तर्क जो करती थी सुस्ती से नमाज़।

फ़र्ज़े हक़ जो मैं न करती थी अदा,
इसलिए मुझको मिली दोज़ख़ में जा।

दूसरे या हज़रते अहमद सुनो,
डालते थे उसके सर पर आग को।

पूछा मैंने उससे यह क्या है अज़ाब,
बोली मुझ से तब वह यूँ बाइज़तराब।

सर को खोले जो फिरा करती थी मैं,
दिल जहाँ चाहता था जाया करती थी मैं।

देखते थे सर को नामहरम मेरे,
है अज़ाबे सख़्त सर पर इसलिए।

तीसरे देखा कि सीख़ें आग की,
लेके हाथों में फ़रिश्ते या नबी।

एक तरफ़ से कान में उसके डाल,
दूसरी तरफ़ से लेते थे निकाल।

पूछा मैंने हाल इस का भी बता,
बा दिले पुरदर्द उस ने यूँ कहा।

चुग़लियाँ जो किया करती थी मैं,
यह गुनाह सर पर लिया करती थी मैं।

एक की मैं बात कहती एक को,
ताकि पैदा बाहमी तकरार हो।

इसलिए है आज मुझ पर यह अज़ाब,
क्या कहूँ जैसी कि है हालत ख़राब।

देखा यह चौथा अज़ाब ऐ मुस्तफ़ा,
उसको मैं आँखों के अन्दर बर्मला।

आतिशे दोज़ख़ हैं भरते सर-बसर,
पूछा उससे यह भी हाल-ए-पुरज़रर।

यूँ कहा उसने कि मैं दुनिया में वाँ,
देखती थी सूरते ना मेहरमाँ।

ग़ैर मर्दों से जो न छुपती थी मैं,
सामने सबके फिरा करती थी मैं।

इसलिए है आज उस हक़ का अताब,
इस सबब से हूँ गिरफ़्तारे अज़ाब।

पाँचवें इस तरह से देखा उसे,
आबला एक सियाह उसके मुँह पे है।

जिससे उसका मुँह सारा छिप रहा,
थी अजब सूरत कहूँ क्या या शहा।

मैंने उससे जो किया दरयाफ़्त हाल,
यह जवाब उसने दिया है पुरमलाल।

थे जो नामहरम न मैं उनसे छुपी,
मुँह छुपाया उनसे न मैंने कभी।

इसलिए है मुँह के ऊपर आबला,
हूँ बहुत सख़्ती के अन्दर मुबतला।

और छठे देखा उसे इस हाल से,
होंठ उसके हैं छुरी से काटते।

और ज़ुबां को उस की गुद्दी की तरफ़,
खींचते हैं या रसूले वाशरफ़।

पूछा मैंने उससे यह क्या है अज़ाब,
यूँ दिया उस मेरी दुख़्तर ने जवाब।

## शरीफ़ खान नईम खान
## मुज़फ़्फ़रनगर

कहती थी जो अपने शौहर को बुरा,
और तकलीफ़ उसको देती थी सदा।

उसके कहने पर न मैं करती थी काम,
बर ख़िलाफ़े शौहर करती थी मदाम।

इसलिए यह आज मेरा हाल है,
आह अपना ही तो यह आमाल है।

सातवें बस आग की ज़न्जीर से,
हाथ-पाँव उस के सब देखे बँधे।

और सर पर पड़ती थी कोड़ों की मार,
पूछा मैंने उससे होकर ग़मगुसार।

क्या यह हालत है तेरी बेटी बता,
बा दिले मुज़तर यह फिर उसने कहा।

बे इजाज़त अपने शौहर की सदा,
माल बेजा ख़र्च मैंने कर दिया।

इस सबब से यह ग़ज़ब मुझ पर हुआ,
हूँ बहुत सख़्ती के अन्दर मुबतला।

आठवें दोज़ख़ में देखे साँप दो,
लिपटे हुए थे उस की छाती पे जो।

जो किया दरियाफ़्त मैंने उसका हाल,
यह जवाब उसने दिया हो पुरमलाल।

ग़ैर के बच्चों को जो मैं गाह-गाह,
बे हुकम शौहर के देती दूध आह।

इसलिए यह साँप काले सुबह शाम,
काटते हैं छातियों को ला कलाम।

और नवें या हज़रते ख़ैरुलवरा,
हाल उसका इस तरह देखा गया।

पेट उसका हर तरफ़ से सूज कर,
हो रहा है ढोल जैसा सरबसर।

पूछा उसका भी सबब मैंने वहाँ,
यूँ किया उसने रो-रो खुद बयां।

खाया करती थी जो मैं माले हराम,
जैसा मिल जाता था दुनिया में तआम।

इसलिए इस पेट में ऐ ग़म गुसार,
साँप और बिच्छू भरे हैं बेशुमार।

दसवें उसको इस तरह देखा गया,
आग के तीरों को लेकर या मुस्तफ़ा।

मारते हैं उसके पैरों पर तमाम,
है अज़ाबे सख़्त या ख़ैरुल अनाम।

पूछा मैंने उससे यह क्या हाल है,
यूँ दिया इसका जवाब उस ने मुझे।

बेइजाज़त अपने शौहर के कभी,
घर से बाहर जो मैं जाती थी चली।

सुनती थी कहना न शौहर का ज़रा,
बर ख़िलाफ़ उसके रहती थी सदा।

करती थी जो उसकी मर्ज़ी पर न काम,
इसलिए पाया है दोज़ख़ में मक़ाम।

या रसूल अल्लाह फिर बेटी मेरी,
रो-रो करके यूँ कहने लगी।

अर्ज़ यह कीजियो रसूल अल्लाह से,
नायबे हक़ दो जहाँ के शाह से।

औरतों को हाल मेरा दे सुना,
जिस तरह देखा है यां पर माजरा।

ताकि ऐसी आदतों से वह बचें,
मिस्ल मेरे वह न आफ़त में पड़ें।

और मेरी अर्ज़ यह भी कीजियो,
ख़िदमते हज़रत में ऐ मादर निको।

मेरे शौहर को बुला कर मुस्तफ़ा,
करा दीजिए माफ़ मेरी सब ख़ता।

मुझ से जो कुछ हो गये उसके क़सूर,
माफ़ वह लिल्लाह करा दीजिए ज़रूर।

फिर नबी ने उसके शौहर को बुला,
सामने अपने बिठा कर यूँ कहा।

बख़्श दे तू अपनी बीवी की सब ख़ता,
है अज़ाबे सख़्त में वह मुबतला।

हस्ब फ़रमाने रसूले किबरिया,
माफ़ की बीवी की उसने सब ख़ता।

बड़ी बी ने दूसरे दिन फिर उसे,
ख़्वाब में देखा बड़ी एक शान से।

यानी जन्नत में है बैठी तख़्त पर,
और ताज मोती का रखा है उसके सर।

वास्ते उस के है वाँ मौजूद सब,
हर तरह की नैमतें ऐशो तरब।

देखकर माँ को कहा ऐ नेकनाम,
मेरा पहुँचाना तू हज़रत को सलाम।

उनकी बरकत से मिली मुझको निजात,
और यह दर्जा मिला ऐ नेकज़ात।

मुझसे राज़ी जब मेरा शौहर हुआ,
फ़ज़ले हक़ से तब मिली जन्नत में राह।

वर्ना ऐ मादर मैं ता रोज़े हिसाब,
रहती शिद्दत से गिरफ़्तारे अज़ाब।

औरतों को चाहिए ऐ नेक नाम,
इस क़िस्से को सुनें दिल से तमाम।

ख़ौफ़ से अल्लाह के दिल में डरें,
रात-दिन बस ताअते शौहर करें।

बीवियों इस हाल पर अब ग़ौर कर,
दिल में नेकी की जगह दो सरबसर।

काम की अपने तुम अब मुख़तार हो,
अमल कर लो फिर तो बेड़ा पार हो।

## एक निहायत मुफीद मशवरा

महबूबे खुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) ने फ़रमाया है कि—

दीन का इल्म सीखना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फ़र्ज़ है। इस मुबारक हुक्म की वजह ज़ाहिर है कि जब दीन की बातों का इल्म न होगा, इबादत और अताअत दोनों सही तरीक़े से अदा नहीं हो सकतीं। इसलिए मुसलमान भाइयों और बहिनों की ख़िदमत में अर्ज़ है कि आजकल दीन की बातों के सीखने का आसान तरीक़ा यह है कि एक किताब बहिश्ती ज़ेवर के नाम से मशहूर है और बड़ी मौतबर है। इसके ग्यारह हिस्से हैं। इसको हिन्दुस्तान के एक आलीशान बुज़ुर्ग आलिम ने उर्दू ज़ुबान में लिखा है और हिन्दुस्तान के बड़े-बड़े बुज़ुर्ग आलिमों ने इसको पसन्द फ़रमाया है। और यही इसके मौतबर होने की दलील है। इसमें ज़रूरत के मुवाफ़िक़ पाकी, नापाकी, वज़ू, गुस्ल, नमाज़, रोज़ा, हज, ज़कात लेन-देन, ख़रीद व फ़रोख़्त, मरना-जीना, कफ़न, दफ़न, मिलना-जुलना, रहना-सहना, माँ-बाप और औलाद वग़ैरा के हक़ूक़ और निकाह व तलाक़ वग़ैरा के तमाम मसायल मौजूद हैं, जिनका सीखना हर मुसलमान मर्द-औरत पर फर्ज़ है। इसको ख़रीदो, पढ़ो और सुनो।

इन्शाअल्लाह चन्द रोज़ में उर्दू के मौलवी और मौलवन बन जाओगे।
कर चुका हूँ मैं तो बस तबलीग़े दीं,
आगे इससे मुझको कुछ कुदरत नहीं।

ख़ालिक़े तासीर है परवरदिगार,
इसमें मुझको कुछ नहीं है अख़तियार।

हाँ मगर तासीर दे इस में खुदा,
दिल में तेरे हो असर इस वाज़ का।

## सब्र और शुक्र का बयान

आदमी पर दो हालतें आती हैं। एक मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ होती है। ऐसी हालत को खुदा की नैमत समझना और दिल में खुश होना और ज़ुबान से खुदा

की तारीफ़ करना और उस नैमत से खुदा की इबादत और अताअत करना और उसकी नाफ़रमानी से बचना, इसको शुक्र कहते हैं। और खुदा की नैमतें बहुत-सी हैं, जैसे खुदा ने आराम और सुख दिया हो, माल या औलाद, इज़्ज़त या हकूमत दी हो तो ऐसे वक़्त का शुक्र यह है कि दिमाग़ ख़राब न हो। खुदा की याद और उसके हुक्मों से ग़ाफ़िल न हों, खुदा की नैमतों को याद करें, ग़रीबों को हक़ीर न जानें, किसी पर ज़ुल्म न करें, माल को बुरी जगह ख़र्च न करें, बुरे काम न करें, ग़रीबों की मदद करें, फ़ज़ूल ख़र्ची से बचें। दूसरी हालत मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होती है, जिससे दिल को ग़म और फ़िक्र होता है, तकलीफ़ होती है। ऐसी हालत को यह समझें कि इसमें मेरे लिए कोई बेहतराई है। खुदा की शिकायत न करे। अगर वह खुदा का कोई हुक्म हो तो उस पर मज़बूती से क़ायम रहे। जैसे रिज़्क़ की तंगी या कोई तकलीफ़ या ग़म हो तो हिम्मत और मज़बूती से उस की सहार करे और परेशान न होवे, इस को सब्र कहते हैं। और सब्र करने के मौक़े आदमी पर बहुत-से आते हैं, जैसे दीन के कामों से जी घबराता है और बुरे कामों का तक़ाज़ा करता है या हराम आमदनी को छोड़ना नहीं चाहता या किसी का हक़ दबाना चाहता है या किसी को नाहक तकलीफ़ देना चाहता है, तो ऐसे वक़्तों का सब्र यह है कि हिम्मत करके दीन के हुक्मों को अदा करें और गुनाहों के कामों से बचें। चाहे जी को कितनी ही तकलीफ़ हो। क्योंकि बहुत जल्दी इस तकलीफ़ के बदले आराम नसीब होगा। और एक मौक़ा सब्र का यह है कि कोई बला आ पड़े। जैसे– बीमारी या रिज़्क़ की तंगी या कोई दुश्मन सताये या कोई अज़ीज़ मर जाये या माल का नुक़सान हो जाये तो ऐसे वक़्तों का सब्र यह है कि मज़बूती से उस हालत पर साबित क़दम रहें और यह समझें कि मेरे लिए इसमें बेहतराई है। और बेसब्री करने से तक़दीर तो बदल ही नहीं सकती। फिर बेसब्री करके सवाब भी क्यों खोया जाये और सबसे बड़ी बेहतराई सवाब ही को समझें। न खुदा की शिकायत करें और न हर वक़्त उसको सोचा करें, बल्कि सब्र के सवाबों को याद किया करें।

## सब्र करने के सवाबों का बयान

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने, और जिन लोगों ने अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए दुनिया की तकलीफ़ों पर सब्र किया और नमाज़ें पढ़ीं और अल्लाह की दी हुई रोज़ी में से छुपे और ज़ाहिर उसकी राह में ख़र्च किया और बुराई के मुक़ाबले में नेकी करते रहे तो यह ऐसे लोग हैं जिनकी दुनिया का अन्जाम अच्छा है, यानी आख़िरत में उनके रहने के लिए जन्नत के बाग़ हैं जिनमें आप भी जायेंगे और उनके बाप-दादा और उन की बीवियाँ और उनकी औलाद

जो तावेदार होंगे वह सब उन के साथ जायेंगे और जन्नत के हर दरवाज़े से फ़रिश्ते उनके पास आ-आकर उनसे सलाम अलैक करेंगे और यह भी कहेंगे कि दुनिया में जो तुम सब्र करते रहे थे आज तुमको यह उसी सब्र का बदला मिला है। सुबहान अल्लाह! तुम्हारी दुनिया का भी कैसा अच्छा अन्जाम हुआ। (सूरतउलरअद) और इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने, ऐ हमारे रसूल (स०)! आप मुसलमानों को दुनिया के तमाम नुक़सानों और तकलीफ़ों पर सब्र करने वालों को हमारी रज़ामन्दी की खुशख़बरी सुना दीजिए क्योंकि यह लोग ऐसे हैं कि जब उन पर कोई बला आ पड़ती है तो यूँ कहते हैं— इन्नालिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिउन यानी हम और हमारी औलाद और माल वग़ैरा सब अल्लाह ही के लिए हैं और हम भी उसकी तरफ़ लौट कर जाने वाले हैं। यही वह लोग हैं जिन पर उनके रब की मेहरबानी है और यही लोग सीधे रास्ते पर हैं। (सूरतुलबक़र) سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ कैसी इज़्ज़त व शान है दुनिया की तकलीफ़ों पर सब्र करने वालों की। बेशक अल्लाहतआला सब्र करने वालों का साथी और मददगार है।

और इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

اِنَّمَا یُوَفَّی الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَھُمْ بِغَیْرِ حِسَابٍ

यानी जो लोग दुनिया की तकलीफ़ों पर सब्र करते हैं उनको बेशुमार ही बदला दिया जायेगा।

और दस्तगीरे बेकसां, शफ़ीए आसियां हज़रत मौहम्मद मुस्तुफ़ा (स०) फ़रमाते हैं कि जिस आदमी पर कोई सदमा आ पड़े और वह सब्रे जमील करे तो उसके लिए जन्नत ज़रूरी है। दरियाफ़्त किया गया— या रसूल अल्लाह! सब्रे जमील क्या है? आपने फ़रमाया—

आँखों से रोना और ज़ुबान को अल्लाहतआला की शिकायत से रोकना यह सब्रे जमील है।

देखो अल्लाहतआला फ़रमाते हैं कि—

जब मैं अपने मुसलमान बन्दे के किसी प्यारे की जान ले लेता हूँ फिर वह बन्दा या बन्दी मेरा हुक्म समझकर सब्र करे तो मेरे पास उस बन्दे और बन्दी के लिए जन्नत के सिवा और कोई बदला नहीं है। और जब किसी का बच्चा मर जाता है तो अल्लाहतआला फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि तुमने मेरे बन्दे के बच्चे की जान ले ली। वह कहते हैं कि हाँ। फिर फ़रमाता है कि तुमने उसके दिल का फल ले लिया, वह कहते हैं हाँ। फिर फ़रमाता है— इससे उनके दिलों

को सदमा पहुँचा। वह कहते हैं, हाँ। फिर फ़रमाता है कि वह मेरा बन्दा और बन्दी क्या कहते हैं? फ़रिश्ते जवाब देते हैं कि वह आपकी तारीफ़ करते हैं और आप के हुक्म में राज़ी हैं और यूँ कहते हैं—

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ط

फिर अल्लाहतआला फ़रमाता है—

ऐ फ़रिश्तो! उन ताबेदार बन्दों के लिए जन्नत में एक महल बना दो और उसका नाम बैतुलहम्द रखो। यानी हमारे दिये हुए ग़म पर हमारी तारीफ़ और सब्र करने वालों का घर। (तिरमिज़ी)

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो और दीन की बहिनो! दुनिया के इस जेलख़ाने में चाहे कोई जान का सदमा पहुँचे या माल का, सबमें गुनाह माफ़ होते हैं, दर्जे बुलन्द होते हैं और सब्र करने से अल्लाहतआला खुश होता है और बेशुमार सवाब मिलता है। हर हालत में अल्लाहतआला के हुक्म में राज़ी रहना चाहिए।

दोस्तों को अपने वह रुसवा करे,<br>
दुश्मनों का जो कहे कहना करे।

दुश्मनों को दी हज़ारों नैमतें,<br>
रिज़्क़ व सेहत ऐश सदहा राहतें।

दोस्तों को अपने रंजोताब दे,<br>
मुबतला हों इम्तहां के वास्ते।

रोते-रोते बे-बसर याक़ूब हो,<br>
तामहे किरमाँ तने अय्यूब हो।

कर्बला में क़ुर्रातुल ऐने नबी,<br>
लाल ज़हरा का हुसैन इब्ने अली (अ०)।

ज़ालिमों के हाथ से यूँ होवे शहीद,<br>
और अपना कामे दिल पावे यज़ीद।

हो हसन का ज़हर से टुकड़े जिगर,<br>
दुश्मनाने हक़ को हो यूँ कर्रो फ़र।

अक़्ल से बर तर खुदाई है तेरी,<br>
समझ से बाहर खुदाई है तेरी।

जो कि तू करता है बरहक़ है बजा,
अक़्ल इस की समझ को पहुँचेगी क्या।

मानता हूँ मैं ख़ुदा बन्दी तेरी,
जानता हूँ तुझको ऐबों से बरी।

## सब्र करने वाले बग़ैर हिसाब के जन्नत में जायेंगे

हुज़ूरपुरनूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

क़यामत के दिन यह ऐलान किया जायेगा कि अल्लाहतआला जिसका क़र्ज़दार हो वह हाज़िर हो जाये। लोग कहेंगे ऐसा कौन है कि जिसका अल्लाह क़र्ज़दार हो। फ़रिश्ते जवाब देंगे कि जिन लोगों को अल्लाहतआला ने दुनिया में तकलीफ़ दी और उस तकलीफ़ से उनको सदमा पहुँचा था और उनके आँसू निकले थे, मगर उन्होंने अल्लाहतआला का हुक्म समझकर सब्र किया था, अल्लाहतआला उनका क़र्ज़दार है और दुनिया में जो वादे सब्र करने वालों के लिए किये थे, आज पूरे करेगा। यह ऐलान सुनकर बहुत-से लोग मर्द और औरतें जमा हो जायेंगे। फ़रिश्ते उनके आमालनामे देखेंगे। जिनकी बेसब्री निकलेगी उनको दूर कर देंगे और जिनका सब्र देखेंगे उनको अल्लाहतआला के अर्श के नीचे साये में खड़ा करके अर्ज़ करेंगे कि—

ऐ रब! तेरी तकलीफ़ों पर सब्र करने वाले हाज़िर हैं। हुक्म होगा कि इन सबको तूबा के दरख़्त के साये में खड़ा करो कि हम पहले अपने नूर की रोशनी से इन ग़म के मारों के दिलों को ठण्डा करें। बस उनके दिलों को ठण्डक पहुँचाई जायेगी। फिर हुक्म होगा, ऐ साबिर बन्दो! हमने तुमको दुनिया में ज़लील करने के लिए तकलीफ़ें नहीं दी थीं बल्कि इसलिए दी थीं कि आज के दिन तुम्हारे दर्जे बढ़ायें। बस आज हम उन ग़मों और तकलीफ़ों के बदले तुम्हारे गुनाह माफ़ फ़रमाते हैं और तुमको दोज़ख़ के अज़ाब से बरी करते हैं। तुमने दुनिया में सब्र करके हमको ख़ुश किया था। आज हम तुमको ख़ुश करेंगे और बेशुमार नैमतें देंगे। फिर ग़रीबों से फ़रमायेगा—

ऐ मेरे ग़रीब बन्दो! मैंने तुमको दुनिया में ज़लील करने के लिए ग़रीबी नहीं दी थी, बल्कि तुम्हारा हिसाब थोड़ा करने के लिए और आज के दिन तुम्हारा रुतबा बढ़ाने के लिए ग़रीबी को पसन्द किया था और आज तुम्हारी यह इज़्ज़त और शान है कि हमने तुमको बख़्श दिया और जिन लोगों ने दुनिया में तुम्हारी मदद और ख़िदमत की थी तुम उनको भी बख़्शवा सकते हो। फिर उन बन्दों से

फ़रमायेगा जिन्होंने अपने बच्चों के मरने पर सब्र किया था कि ऐ साबिर बन्दो ! अगर हम तुम्हारे बच्चों की मौत लोहे महफ़ूज़ में न लिखते और तुम्हारे दिलों को ज़ख़्मी न करते तो आज तुमको यह दर्जे न मिलते। सब्र करने की वजह से हम तुमसे खुश हैं और अब तुम अपने बच्चों को साथ लेकर बग़ैर हिसाब के जन्नत में दाख़िल हो जाओ। अब तुम न कभी मरोगे और न कोई ग़म और तकलीफ़ देखोगे। फिर इसी तरह अल्लाहतआला अंधे, लंगड़े, कोढ़ी, बीमार वग़ैरा मुसीबत के मारे हुओं से फ़रमायेगा और सब गमज़दा लोग मर्द और औरतें अपने-अपने रुतबे को देखकर खुश होंगे। कोई बादशाह होगा, कोई नवाब जैसा होगा, कोई अमीर और रईस जैसा होगा। फ़रिश्ते उनको बुराक़ यानी जन्नती घोड़ों पर सवार करेंगे और बड़ी इज़्ज़त और शान से जन्नत के दरवाज़े पर ले जायेंगे। जो लोग उस क़यामत के मैदान में हिसाब देने के वास्ते रुके खड़े होंगे, वह उनकी यह इज़्ज़त और शान देखकर कहेंगे कि यह लोग नबी हैं या शहीद हैं। फ़रिश्ते जवाब देंगे, यह वह लोग हैं जिनको दुनिया में तकलीफ़ें दी गयीं मगर इन लोगों ने अल्लाहतआला का हुक्म समझकर सब्र किया था और हर हालत में अल्लाह- तआला के ताबेदार रहे थे। यह जवाब सुनकर वह लोग बड़े अफ़सोस से कहेंगे—क्या अच्छा होता कि हम भी ताबेदारी करते और दुनिया में तकलीफ़ें उठाते बल्कि हमारी खाल क़ैंचियों से काटी जाती कि आज हमको भी यह इज़्ज़त मिलती और हिसाब देने की मुसीबत से छूट जाते। फिर फ़रिश्ते जन्नत का दरवाज़ा खटखटायेंगे। जन्नत का बड़ा फ़रिश्ता रिज़वान पूछेगा, कौन हो ? फ़रिश्ते कहेंगे, साबिर लोग आये हैं, दरवाज़ा खोल दो। वह कहेगा कि अभी तराज़ू खड़ी नहीं की गयी है और न हिसाब किताब का दफ़्तर खुला है, फ़िर यह लोग हिसाब देने से पहले कैसे आ गये। फ़रिश्ते कहेंगे कि साबिर लोगों से हिसाब-किताब नहीं लिया जायेगा। बस रिज़वान जन्नत का दरवाज़ा खोल देगा और साबिर लोग बड़ी इज़्ज़त व शान के साथ जन्नत में दाख़िल हो जायेंगे। (मुनतख़िबाज़वाजर हिन्दी)

**फ़ायदा—** मुसलमान भाईयो और बहिनो, मिस्कीनो, बेकसो, ग़रीबो, ग़मज़दो, मोहताजो ! देखो अल्लाहतआला के नज़दीक तुम्हारी कैसी इज़्ज़त और शान है। मगर आजकल हमारी यह हालत है कि जहाँ कोई तकलीफ़ पहुँची तो ऐसे परेशान होते हैं कि अल्लाहतआला पर ऐतराज़ कर देते हैं। शिकायत करते हैं कि हमको किस मुसीबत में फँसा दिया। यहाँ तक कि नमाज़ तक छोड़ देते हैं। जैसे एक शख़्स बड़ा नमाज़ी, परहेज़गार मशहूर था। उसकी भैंस मर गयी। उसके लड़के ने ख़बर दी कि बापू जिसकी नमाज़ पढ़ा करता है उसने हमारी भैंस मार दी।

कहने लगा कि अच्छा, उसने भैंस तो मार ही दी है, मैं भी असली माँ-बाप का हूँगा तो अब सारी उम्र नमाज़ न पढ़ूँगा। और वज़ू का पानी गिराकर वह जाहिल कहता है कि ले, पढ़वा ले नमाज़ भैंस के मारने वाले। भला देखो तो कुछ ठिकाना है इस जहालत का कि ज़रा-सी देर में सारी दीनदारी और परहेज़गारी ख़त्म कर दी और ख़ुदा का अज़ाब सर ले लिया। बस दुःख-सुख में साबिर व शाकिर रहो, अल्लाह और रसूल के हुक्म पर मज़बूती से चलते रहो।

## दुआ

या इलाही मुझको सब्रो शुक्र दे,
कर बहुत ही साबिरो शाकिर मुझे।

दे मुझे अपनी क़ज़ा पर तू रज़ा,
हुक्म से अपने मुझे राज़ी बना।

दिल से मैं तक़दीर का ताबे रहूँ,
हुक्म से तेरे कभी ग़ाफ़िल न हूँ।

दे मुझे सब्रे जमील ऐ ज़ुल्जलाल,
करने दे मुज़तर मुझे रंजो मलाल।

सब से या रब हमें कर तर बतर,
कर हमारा ख़ातमा इस्लाम पर।

सख़्तियाँ दुनिया की झेलें लाख हम,
राहे दीन से पर न डिग जायें क़दमं

अपनी ताअत का वह हिस्सा दे हमें,
बाग़े जन्नत में जो पहुँचाये हमें।

## बयान करके रोने की सज़ा

**रसूल अल्लाह (स०) फ़रमाते हैं—**

वह आदमी हममें से नहीं है जो किसी के ग़म में सर के बाल मुंडाये और कपड़े फाड़े और मुँह पीटे और शोर मचाये। (बुख़ारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा—** बैन करके रोना और शोर मचाना, सर, मुँह और छाती पीटना काफ़िरों की और दुनिया से मुहब्बत रखने वालों का तरीक़ा है। मुसलमानों को ऐसा न करना चाहिए क्योंकि हुज़ूर (स०) ने बैन करके रोने वाली औरतों पर लानत

फ़रमायी है और यह भी फ़रमाया है कि बैन करने वाले मर्द हों या औरतें उन पर खुदा का ग़ज़ब नाज़िल होता है और क़ब्र में उनकी सूरतें कुत्ते की-सी हो जाती हैं। और बैन करके रोने से मरने वाले को यह अज़ाब होता है कि उसकी क़ब्र में दोज़ख़ की तरफ़ से खिड़की खोल दी जाती है और काले साँप उसको आकर लिपट जाते हैं और वह मरने वाला रो-रो कर कहता है कि यह अज़ाब मुझ पर क्यों आया? फ़रिश्ते कहते हैं कि यह अज़ाब तेरे घरवाले तुझको पहुँचा रहे हैं कि तेरे मरने पर वह अल्लाहतआला से नाराज़ हैं। और बैन करके रोते हैं और शोर मचाते हैं और गोया अल्लाहतआला से लड़ाई करते हैं। फिर मरने वाला कहता है कि बैन करके रोना और शोर मचाना यह उनका गुनाह हैं, इसमें मेरा क्या क़सूर है। फ़रिश्ते कहते हैं कि तूने अपने घरवालों को क्यों न बतलाया था कि मेरे मरने पर अल्लाह- तआला से लड़ाई न करना और बैन करके न रोना कि बैन करना हराम है। (ज़वाजर हिन्दी)

मुसलमानो! बैन करके रोना छोड़ दो। क्यों अपने प्यारे मरने वाले को दुख पहुँचाते हो। हाँ दिल से, आँखों से जितना दिल चाहे रो लो। इसकी इजाज़त है बल्कि सवाब मिलता है।

## बला और मुसीबत में फ़र्क़

बलाएँ सब पर आती हैं—नबी हो या वली, अमीर हो या फ़क़ीर। और बलाओं पर सब्र करने वालों को बेशुमार सवाब मिलता है, जैसे गुनाहों का माफ़ होना, दर्जे बुलन्द होना, अल्लाहतआला का खुश होना और यह सब से बड़ी नैमत है। बलाओं की पहचान यह है कि जिस पर वह आती है वह उनको मज़बूती से बर्दाश्त करता है। साबित क़दम रहता है। अल्लाहतआला के हुक्म पर राज़ी रहता है। अपने गुनाहों की माफ़ी माँगता है और तौबा करता है। अल्लाहतआला की इबादत और ताबेदारी पहले से ज़्यादा करने लगता है। तो यह बला है, इम्तहान है, आज़माइश है और यह अल्लाहतआला के नेक बन्दों पर आया करती हैं और मुसीबत जिस पर आती है वह बेचैन और सख़्त परेशान हो जाता है। अल्लाह- तआला की शिकायत करता है। निडर हो जाता है। अल्लाहतआला की इबादत और ताबेदारी से भागता है। अच्छे लोगों से वहशत और नफ़रत करता है। जैसे कि मुसीबत से पहले नाफ़रमान था वैसा ही रहता है। तौबा नहीं करता। गुनाहों की माफ़ी नहीं माँगता। यह मुसीबत है, सज़ा है, अज़ाब है और इस क़िस्म की मुसीबत उसी पर आती है जो अल्लाहतआला का नाफ़रमान होता है। ख़ूब समझ लो, अगर अल्लाह व रसूल की ताबेदारी करते हुए भी कोई ग़म या तकलीफ़ आ पड़े तो यह बला है, इम्तहान है और अगर नाफ़रमानी करते हुए हर

तरह का आराम हो और माल व दौलत हो तो यह मोहलत है, सज़ा है, अज़ाब है, और यह अज़ाब इसलिए आया करते हैं ताकि लोग तवज्जह करें, अल्लाहतआला से डरें और ताबेदारी करने लगें। अब खरे-खोटे को खुद समझ लो।

## मसला तक़दीर और ग़म कम करने की तदबीर

तक़दीर पर ईमान लाना फ़र्ज़ है और इसके बारे में बहस करना हराम है। क्योंकि आदमी की कमज़ोर अक़्ल तक़दीर का भेद और इसकी हिकमत नहीं समझ सकती। बस जितना अल्लाह व रसूल ने बतला दिया है उसी पर अमल करना चाहिए। हादी-ए-बरहक़ हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि तुममें से कोई आदमी ऐसा नहीं कि जिसका मकान जन्नत या दोज़ख़ में न लिखा गया हो। सहाबा ने अर्ज़ की— या रसूल अल्लाह ! फिर हम अपने लिखे हुए पर यक़ीन क्यों न करें यानी तक़दीर के सामने कोई अमल करना बेफ़ायदा है। बस जो कुछ तक़दीर में लिखा है हो जायेगा। आपने फ़रमाया, अमल किये जाओ। इसलिए कि हर एक आदमी को वही बात आसान होती है जिसके लिए वह पैदा किया गया है। बस जो खुशक़िस्मत होगा, वह जल्दी से अच्छे कामों को अख़्तियार करेगा और जो बदक़िस्मत होगा वह जल्दी से बुरे कामों को अख़्तियार करता है। (बुख़ारी)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से सहाबा यह समझे कि तक़दीर के आगे अमल करना बेकार है। हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि तुम ग़लत समझे हो, तदबीर करना, अमल करना तक़दीर के ख़िलाफ़ नहीं है। क्योंकि अल्लाहतआला ने दुनिया में जोकि आलमे असबाब है जो चीज़ें पैदा की हैं, उनमें एक-दूसरे से ताल्लुक़ भी रखा है और अपनी हिकमत के मुवाफ़िक़ एक-दूसरे का सबब बनाया है। जैसे आँख देखने का सबब है और कान सुनने का सबब है। ज़हर मौत का सबब है। इसी तरह अच्छे काम करना जन्नत के मिलने का सबब है और बुरे काम करना दोज़ख़ में जाने का सबब है। कारोबार, मेहनत, मज़दूरी, तिजारत व ज़राअत वग़ैरा करना रिज़्क़ मिलने का सबब है और कोई इनको तक़दीर के ख़िलाफ़ नहीं समझता। हालांकि रिज़्क़ तक़दीर में लिखा हुआ है, फिर भी इसके हासिल करने में तदबीरें और कोशिशें कौन नहीं करता। इससे मालूम हुआ कि अच्छे काम करना और बुरे कामों से बचना तक़दीर के ख़िलाफ़ नहीं। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि कोई आफ़त न दुनिया में आती है और न ख़ास तुम्हारी जानों में मगर वह जो किताब लोहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ है पहले इससे कि हम दुनिया में जानों को पैदा करें। यह अल्लाह के नज़दीक आसान काम है। (सूरा-ए-हदीद)

यहाँ तक तो तक़दीर के मसले का बयान है। आगे इसकी हिकमत

बतलाते हैं कि यह मसला तक़दीर का तुमको इसलिए बतलाया गया है कि तुमको किसी के फ़ौत और ज़ाए होने वाली चीज़ पर ग़म न हो और किसी हासिल होने वाली चीज़ पर ऐसी फ़रहत न हो कि इतरा जाओ। क्योंकि हर फ़रहत अच्छी नहीं होती बल्कि अच्छी फ़रहत वह है जिससे अल्लाहतआला का शुक्र अदा हो, जैसा कि क़ारून के क़िस्से में अल्लाहतआला फ़रमाता है—

إِذْ قَالَ لَهُ قَوْمُهُ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِينَ

यानी जब क़ारून को उसकी बिरादरी ने कहा कि ऐ क़ारून! तू माल व दौलत की खुशी में इतरा मत। क्योंकि सच्ची बात यह है कि अल्लाहतआला इतराने वालों को पसन्द नहीं करता। देख लो क़ारून को माल व दौलत की ख़ुशी में इतराने की क्या सज़ा मिली। तो तक़दीर का मसला तुमको इसलिए बताया गया है कि आफ़तों में जब किसी चीज़ के फ़ौत और ज़ाए होने से तुमको कोई ग़म और तकलीफ़ पहुँचे तो वह ग़म और तकलीफ़ ज़्यादा न बढ़े। और नैमत व फ़रहत में इतराते नहीं क्योंकि तक़दीर का मानने वाला यह समझेगा कि जो माल व दौलत हासिल हुआ है उसमें मेरा क्या अख़्तियार है। मेरे हुनर या कमाने से नहीं हुआ, बल्कि तक़दीर में इसी तरह लिखा हुआ था। फिर ग़रूर करने और इतराने की क्या बात है, ऐसा आदमी कभी न इतरायेगा और न दुनिया से मुहब्बत करेगा। बस यही राहत व आराम की चीज़ है। देखने में भी आता है कि जिन लोगों को माल व दौलत के ज़्यादा आने से फ़रहत और ख़ुशी होती है तो उसके जाने के वक़्त उनको वैसा ही रंज व ग़म होता है।

साहिबो! यक़ीन कर लो कि जैसी कुव्वत तक़दीर के मानने से होती है और किसी चीज़ से नहीं हो सकती। चाहे कोई कितनी ही ताक़त की चीज़ें खाये, मगर इस बूटी के सामने सब बेकार हैं। यक़ीन जानो, तक़दीर का मानना दिल को निहायत मज़बूत कर देता है। ऐसा आदमी साबित क़दम रहता है। क्योंकि जब कोई ग़म की बात आयेगी तो वह कहेगा कि यह तो तक़दीर में थी। टलने वाली नहीं थी। फिर ख़ुदा के लिखे हुए हुक्म से नाराज़ होकर अपनी आख़िरत भी क्यों ख़राब करूँ। और ऐसे आदमी के दिल में यह बात आती है कि इसमें अल्लाह तआला की ज़रूर कोई हिकमत है और मेरे लिए बेहतराई है। क़ुरआन व हदीस में जो रंज व ग़म के बदले सवाब आये हैं, अगर कोई उनको सोचे तो इन्शाअल्लाहतआला कितना ही बड़ा ग़म हो, कम हो जायेगा।

देखो! छोटे बच्चे की मौत में एक बड़ी हिकमत यह है। अगर कोई समझे कि छोटे बच्चे के मरने पर ग़म के साथ एक बात ग़म के कम करने और

मिटाने की भी है, लोगों को औलाद के बड़े होने की ख़ुशी महज़ इसलिए है कि उनका जी यही चाहता है, वर्ना उनको क्या ख़बर है कि यह बड़ा होकर कैसा निकलेगा। माँ बाप की राहत का सामान होगा या बबाले जान होगा। फिर बड़ा होकर मरे तो यह ख़बर नहीं कि वह माँ-बाप को आख़िरत में कुछ नफ़ा देगा या ख़ुद ही सहारे का मोहताज होगा। और बचपन में मरने वाले बच्चे मासूम होते हैं और वह बहुत काम आने वाले हैं। उनमें यह शक भी नहीं कि देखिये, आख़िरत में यह ख़ुद किस हाल में हो। क्योंकि मासूम तो बख़्शे हुए होते हैं। वह आख़िरत में माँ-बाप के बहुत काम आयेंगे।

हदीस शरीफ़ से मालूम होता है कि यह बच्चे जन्नत में जाने से पहले आख़िरत में भी बच्चे ही रहेंगे और उनकी आदतें भी बच्चों ही की-सी रहेंगी। वही ज़िद करना और अपनी बात पर अड़ जाना, सर हो जाना। मगर यह हालत जन्नत में दाख़िल होने से पहले होगी। फिर जन्नत में पहुँचकर बाप-बेटे सब बराबर एक उम्र और एक क़द के हो जायेंगे।

हदीस शरीफ़ में आया है कि यह बच्चे अड़ जायेंगे और कहेंगे कि जब तक हमारे माँ-बाप को हमारे साथ न किया जायेगा हम तो इनको साथ लिए बग़ैर जन्नत में न जायेंगे। तो अल्लाह तआला फ़रमायेगा कि ऐ ज़िद्दी बच्चों, ख़ुदा से हठ करने वालो, जाओ अपने माँ बाप को भी जन्नत में ले जाओ। उस वक़्त ख़ुश-ख़ुश जन्नत में अपने अपने माँ-बाप के साथ जायेंगे तो यह बेगुनाह बच्चे अल्लाहतआला से भी आपकी बख़्शीश के लिए ज़िद करेंगे। और अगर बच्चा बड़ा होकर मर जाये तो हज़रत ख़िज़्र का क़िस्सा याद करके दिल को समझा लो कि न मालूम इसमें क्या हिकमत होगी। मुमकिन है कि यह और ज़िन्दा रहता तो दीन को ख़राब कर लेता या दुनिया में बबाले जान हो जाता। अगर किसी के बिल्कुल ही औलाद न हो वह यह समझे कि मेरे लिए इसी में हिकमत है न मालूम औलाद होती तो किस-किस आफ़तों में फँस जाते। हासिल यह है कि जिसको अल्लाहतआला औलाद दे उसके लिए यही अच्छा है और जिसको न दे उसके लिए यही अच्छा है और जिसको दे और देकर छीन ले उसके लिए यही बेहतर है। बस तक़दीर के मसले पर यक़ीन करने से ग़म कम हो जाता है और सब्र आ जाता है। जिसकी वजह से हज़रत उम्मे सलीम (रज़ी०) सहाबिया ने कामिल सब्र फ़रमाया और अपने शौहर हज़रत तलह (रज़ी०) को भी साबिर बनाया। उनका क़िस्सा हदीस शरीफ़ में इस तरह है कि उनका एक बच्चा बीमार रहता। हज़रत तलह (रज़ी०) बाहर से आकर उसका हाल पूछा करते थे। एक दिन उसका इन्तक़ाल हो गया और शाम को हज़रत तलह आये तो हज़रत उम्मे

सलीम ने उन पर ज़ाहिर नहीं किया कि बच्चे का इन्तक़ाल हो गया है। कि सुनकर परेशान होंगे और परेशानी में खाना न खा सकेंगे। बल्कि जब उन्होंने दरियाफ़्त किया कि बच्चा कैसा है तो यह जवाब दिया कि अब तो आराम है, सकून है। यह झूठ नहीं था क्योंकि मौत से बढ़कर क्या आराम होगा, जिसके बाद हरकत भी नहीं हो सकती। यह सुनकर उन्होंने खाना खाया। रात को बीवी की तरफ़ मीलान भी हुआ। बीवी ने बेहद सब्र किया कि, इससे भी इन्कार न किया।

जब सुबह हुई तो कहा, मैं तुमसे एक मसला पूछती हूँ। भला अगर किसी ने हमको कोई चीज़ अमानत के तौर पर दी हो फिर बाद में वह अपनी अमानत को वापस लेना चाहे, तो क्या करना चाहिए? हज़रत तलह (रज़ी०) ने जवाब दिया कि यही चाहिए कि जब मालिक उसको लेना चाहे तो बड़ी खुशी से वापस कर दिया जाये। हज़रत उम्मे सलीम (रज़ी०) ने कहा तो फिर अपने बच्चे को सब्र करो और खुशी के साथ उसके दफ़न का सामान करो। क्योंकि खुदा ने अपनी अमानत ले ली है। हज़रत तलह ख़फ़ा हुए कि तुमने रात ही क्यों ख़बर न की। कहा क्या होता रात को दफ़न करने में तकलीफ़ होती और तुम रात भर परेशान होते। खाना भी न खाते। इसलिए रात को ख़बर नहीं की। हज़रत तलह (रज़ी०) रसूल अल्लाह (स०) के पास गये और सारा क़िस्सा बयान किया। आपने फ़रमाया कि अल्लाहतआला को उम्मे सलीम (रज़ी०) का यह काम बहुत पसन्द आया और मैं उम्मीद करता हूँ कि आज की रात के हमल से तुम दोनों को अल्लाहतआला बड़ी बरकत वाली औलाद अता फ़रमायेगा। आपके फ़रमाने के मुवाफ़िक़ हज़रत अब्दुल्लाह बिन वजह पैदा हुए कि जो बड़े आलिम, बड़े सख़ी और बड़े मालदार और साहिबे औलाद थे। तो हज़रत उम्मे सलीम (रज़ी०) ने सच फ़रमाया कि यह औलाद अल्लाह की अमानत है। जब वह लेना चाहे खुश होकर खुदा के हवाले कर देना चहिए। इस पर शायद कोई सवाल करे कि यह अमानत है तो फिर अल्लाहतआला ने इसकी मुहब्बत क्यों दी? इसका जवाब यह है कि बच्चा पल सके। क्योंकि बग़ैर मुहब्बत के इस गू के ढेर को पालना मुश्किल है। इसीलिए ग़ैर की औलाद का पालना बहुत दुश्वार है और जब बच्चा पल जाता है तो मुहब्बत में भी कमी होने लगती है। यही वजह है कि बड़े बेटे के साथ वैसी मुहब्बत नहीं होती जैसी छोटे के साथ होती है। ग़रज़ औलाद को भी खुदा की चीज़ समझो कि उसकी अमानत है। चन्द रोज़ हमारे पास है, फिर उसके मरने पर ज़्यादा ग़म न होगा। ज़्यादा परेशानी की जड़ यही है कि तुम उनको अपनी चीज़ समझते हो। और अल्लाहतआला फ़रमाता

हैं कि आसमान व ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही के लिए है। ज़िन्दा करना और मारना उसी के अख़्तियार में है। वह जब चाहे और जिस हालत में चाहे सब कुछ कर सकता है। तुम उसमें कुछ दख़ल नहीं दे सकते। तक़दीर के मसले में यही बतलाया गया है कि उस पर अमल करने से ग़म की जड़ कट जायेगी। हाँ, तबेई ग़म होगा, मगर वह देर तक नहीं रहेगा और तबेई ग़म यानी मुहब्बत और जुदाई की वजह से जो होता है, उसमें हमारे लिए हिकमतें हैं। हिकमत यह है कि ग़म से तमन्नाएँ टूट जाती हैं, दुनिया में एक अंधेरा नज़र आता है और दिमाग़ में से तकब्बुर निकल जाता है। अपना मरना भी याद आता है। सब्र करने पर सवाब मिल जाता है। गुनाह माफ़ हो जाते हैं। दर्जे बुलन्द होते हैं। खुदा की रज़ा हासिल होती है, वर्ना तबेई ग़म तो ऐसा है कि इसका इन्कार नहीं हो सकता। रसूल अल्लाह (स०) से बढ़कर कुर्आन पर अमल करने वाला और सब्र करने वाला कौन होगा? मगर तबेई ग़म आपको भी हुआ। आपने अपने साहबज़ादे के इन्तक़ाल पर फ़रमाया कि—

ऐ इब्राहीम ! हमको तुम्हारी जुदाई का ग़म है। और यह रसूल अल्लाह (स०) की सच्चाई और हक़ परस्ती की बड़ी दलील है कि आपने अपने ग़म को ज़ाहिर फ़रमा दिया। बना हुआ सूफ़ी और मौलवी ऐसे मौक़े पर कभी यह न कहेगा कि मुझे ग़म हुआ, बल्कि बनावट करके ग़म को छुपायेगा। मगर सच्चों की यह शान नहीं। वह तो हुज़ूर (स०) के तरीक़े पर चलते हैं।

अल्लाहतआला फ़रमाता है—

यानी अल्लाहतआला के सिवा तुम्हारा कोई यार व मददगार नहीं। इस फ़रमान में यह बतलाया गया है कि बस सब से बढ़ कर अल्लाहतआला से मुहब्बत रखो और उसी की ताबेदारी करो और उसी की याद दिल में बसाओ। क्योंकि जब अल्लाहतआला से पूरी मुहब्बत होगी तो और चीज़ों के जुदा हो जाने पर ज़्यादा ग़म न होगा। और ऐसा आदमी यह समझेगा कि मेरे मालिक और मेरे प्यारे का यही हुक्म है। मुझको इस पर राज़ी रहना चाहिए। और यह कहेगा, ऐ मेरे खुदा !

समाया है मेरी नज़रों में जब से तू,
जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है।

निकल जाये दम तेरे हुक्मों के नीचे,
यही दिल की हसरत यही आरज़ू है।

गुलिस्ताँ में जा के हर गुल को देखा,
तेरी ही-सी रंगत तेरी ही-सी बू है।

खुलासा यह है कि अल्लाहतआला से मुहब्बत बढ़ाओ, जिसका ज़रिया है ताबेदारी करना और अल्लाहतआला के सिवा जितनी चीज़ें हैं, सब से मुहब्बत कम कर दो। फिर दुनिया और आख़िरत की राहत तुम्हारे ही लिए है। अगर तंगदस्ती और फ़ाक़ा भी होगा तब भी तुमको राहत मिलेगी। यह तो दुनिया में आराम होगा और दुनिया से सफ़र करते हुए यह हालत होगी कि फ़रिश्ते जन्नत की खुशख़बरी सुनायेंगे जिससे हर नेक-बन्दे को अपने असली घर में जाने का शौक़ पैदा हो जाता है। इसीलिए जनाज़े को जल्दी ले जाने का हुक्म है। अब समझ लो यह मौत कैसी खुशी की होगी और क़ब्र में यह होगा कि जन्नत की तरफ़ से खिड़कियाँ खुल जायेंगी। वहाँ भी फ़रिश्ते खुशख़बरियाँ सुनायेंगे और क़यामत के मैदान में यह हाल होगा कि उनको बड़ी घबराहट के वक़्त कयामत में ज़िन्दा होने के ग़म में न डालेगी और क़ब्र से निकलते ही फ़रिश्ते उनकी ताज़ीम करेंगे और हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि क़यामत का दिन काफ़िर के लिए पचास हज़ार बरस का होगा और ताबेदार मुसलमानों को ऐसा मालूम होगा जैसे फ़र्ज़ नमाज़ का वक़्त आया और गया। पुलसिरात पर गुज़रते हुए दोज़ख़ यह कहेगा कि ऐ पक्के ईमान वाले, जल्दी पार हो जा कि तेरे नूर की ठंड ने मेरी आग की तेज़ी को बुझा दिया। बतलाइए यह पाकीज़ा ज़िन्दगी अच्छी है या यह दुनियाफँसी अच्छी है कि फ़ना होने वाली और जुदा होने वाली चीज़ों में हम फँसे पड़े हैं। बस अगर दुनिया को अच्छी चाहते हो और मरने के बाद राहत और आराम चाहते हो तो अल्लाहतआला से ताल्लुक और मुहब्बत पैदा करो और इसके हासिल करने का आसान तरीक़ा यह है कि किसी कामिल पीर का दामन पकड़ो और अपने को उसके सपुर्द कर दो और उसके कहने पर अमल करते रहो। इन्शाअल्लाहतआला फिर तुम्हारे लिए दुनिया में भी आराम और आख़िरत में भी इज़्ज़त व राहत है, जन्नत है।

وصلى الله على سيدنا محمد و آله واصحابه وسلم

## हज़रत अय्यूब (अ० स०) का सब्र वह शुक्र

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने—

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ ۔ यानी ऐ हमारे बन्दो ! तुम हमारे नबी अय्यूब के हालात पढ़ो और सब्र व शुक्र करने का तरीक़ा सीखो। हज़रत अय्यूब (अ० स०) हज़रत इब्राहीम (अ० स०) की औलाद में थे और आपकी वालिदा हज़रत लूत (अ० स०) की औलाद में थी और आपकी बीवी हज़रत बीवी

रहमत हज़रत यूसुफ़ (अ० स०) की पोती हैं। आपके बारह बेटे थे और बारह
ही बेटियाँ थीं और आपके यहाँ पाँच सौ हलों की खेती होती थी। अल्लाहतआला
ने आपको हर तरह की नैमत माल व दौलत और औलाद अता की थी। ऊँट,
बकरी, गाय, बैल वग़ैरा सब कुछ दे रखा था। आप बड़े शुक्रगुज़ार और सख़ी
ख़ैर-ख़ैरात करने वाले थे। इबादत इतनी करते थे कि फ़रिश्तों में भी आपकी
शोहरत हो गयी कि अय्यूब अल्लाहतआला के बड़े शुक्रगुज़ार हैं। आपकी इबादत
और शुक्रगुज़ारी से शैतान हसद में भर गया और कहा कि ऐ रब ! अय्यूब की
शुक्रगुज़ारी का मैं क़ायल नहीं, क्योंकि वह मालदार है। ग़रीबी में इबादत करे
तब मैं समझूँगा कि वह शुक्रगुज़ार है। मुझे उसके माल पर अख़्तियार दे। हुक्म
हुआ कि तुमको अख़्तियार दिया। शैतान ने अपने सिपाहियों को जमा किया और
कहा कि तुम अपनी अपनी ताक़त बयान करो। सबने अपनी अपनी ताक़त बयान
की। किसी की ताक़त को पसन्द न किया। फिर एक सिपाही ने कहा कि मैं
ज़मीन से आग की चिंगारियाँ और शोले निकाल सकता हूँ। शैतान ने कहा बस,
जो काम मैं चाहता हूँ तेरे ही बस का है। इसी वक़्त जा और अय्यूब के तमाम
जानवरों को जला दे। उसने जाकर एक ऐसी फूँक मारी कि ज़मीन से आग के
शोले निकल पड़े और तमाम जानवर ऊँट, बकरी, बैल वग़ैरा जलकर राख हो
गये। फिर शैतान नौकर की सूरत में होकर आया और हज़रत अय्यूब से कहा
कि हज़रत, तुम जिस खुदा की इबादत करते हो, उसने आसमान से आग भेज
कर तुम्हारे सब जानवर जला दिये। आपने फ़रमाया—

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ، اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ ط

सब तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं। वही सब चीज़ों का मालिक है।
जब चाहे दे दे और जब चाहे ले ले। शैतान यह सब्र व इस्तक़लाल का जवाब
सुनकर परेशान हो गया। फिर आकर अपने शतूंगड़े सिपाही को भेजा और हरे-भरे
खेत और बाग़ात को उसने जला दिया। फिर आया और हज़रत अय्यूब से कहा
कि हज़रत, जिस खुदा की इबादत करते हो आज उसने तमाम अनाज के खेत और
बाग़ात आग भेज कर जला दिये। अब तुमको चाहिए कि उसकी इबादत छोड़
दो। आपने फ़रमाया 'अलहम्दु लिल्लाह' मैं अपने मालिक वाहदहू लाशरीक के
हुक्म पर राज़ी हूँ। सब चीज़ें उसी की हैं, जब चाहे ले ले—

आह ! अय्यूब ऐ साबित क़दम,
नाम को भी आया नहीं चेहरे पे ग़म।
सजदा-ए-शुक्र खुदा में गिर गये,
करके नफ़रत उस लईं से फिर गये।

कुछ शिकायत और न शिकवा लब पे था,
बल्कि ज़ुबाँ पर था वही ज़िक्रे खुदा।

हो के फ़ारिग़ सजदा-ए-माबूद से,
फिर यूँ इबलीस से कहने लगे।

क्यों नहीं तुझको जलाया आग ने,
क्यों नहीं तुझको सताया आग ने।

कोई शायद तू ही शैतान है,
तू ही बेशक दुश्मने इन्सान है।

जब शैतान ने देखा कि यह मेरा मुक्र व फ़रेब न चला और इस क़दर नुक़सान पर भी वही इबादत और शुक्रगुज़ारी है। फिर अल्लाहतआला से कहा कि यह तो बाहर के नुक़सान थे। मैं उनकी शुक्रगुज़ारी जब जानूँगा कि उनका दिल औलाद की तरफ़ से ज़ख्मी हो। मुझे उनकी औलाद पर अख़्तियार दे। हुक्म हुआ कि जा तुझको अख़्तियार दिया। शैतान ने उसी वक़्त आकर आपके मकान को उलट दिया और सब लड़के-लड़कियाँ दब कर मर गये और सब माल व असबाब ग़र्क़ हो गया। शैतान यह दुःख भरा काम करके फिर मस्जिद में आपके पास आया और कहा कि तुम जिस खुदा की इबादत में लगे हुए हो उसने तुम्हारा मकान गिरा दिया और सब माल व औलाद को ग़र्क़ कर दिया। यह ख़बर दिल को हिला देने वाली सुनकर आपकी आँखों में आँसू आ गये और ज़ुबान से फ़रमाया-अल्हमदुलिल्ला इन्नालिल्लाहि ------------सब तारीफ़े और ख़ूबियाँ खुदा के लिए ही हैं। मेरी जान और औलाद वग़ैरा का मालिक वही है। जब चाहता है देता और जब चाहे ले लेता है। मैं उसके हुक्म पर राज़ी हूँ। और खुदा की तरफ़ से शैतान को कहा गया—

ऐ लईं देखा मेरे बन्दे का हाल,
कुछ हुआ उसको किसी शै का मलाल।

क्या नहीं साबित क़दम देखा उसे,
ज़ाकिरो शाग़िल नहीं पाया उसे।

उफ़ नहीं कि उसने क्या साबिर रहा,
क्या इबादत में मेरी हाज़िर रहा।

ऐ लईं अब भी तुझे आया यक़ीं,
ज़ाकिरो शाकिर कोई उस सा नहीं।

यह जवाब सुनकर शैतान ने कहा कि मैं ऐसे सब्र व शुक्र को नहीं

मानता। उनको अपनी जान की तकलीफ़ हो तो मैं जानूँ कि यह शाकिर व ज़ाकिर हैं। अब मुझे उनकी जान पर अख़्तियार दे। अल्लाहतआला का हुक्म हुआ कि जा तुझको अख़्तियार दिया। मगर उनकी ज़ुबान और दिल पर तेरा अख़्तियार न होगा। शैतान आपके पास आया, देखा कि आप सजदे में पड़े हैं तो मरदूद ज़मीन में घुसा और आपकी नाक मुबारक में ऐसी फूँक मारी कि तमाम बदन में फुनसियाँ निकल आयीं और ख़ारिश पैदा हो गयी और ख़ूनख़राब हो गया। खुजाने की वजह से नाख़ून न रहे। फिर लकड़ी और लोहे की किसी चीज़ से खुजाते। यहाँ तक कि तमाम बदन का गोश्त फट गया। ख़ून और पीप बहने लगा और बदबू फैल गयी और बदन में एक-एक बालिश्त के कीड़े पड़ गये। जब कीड़े काटते तो आप दर्द की तकलीफ़ से फ़रमाते, या रब्बी, या रब्बी, ऐ मेरे पालने वाले, ऐ मेरे पालने वाले। अल्लाहतआला की तरफ़ से जवाब आता— यानी ऐ मेरे साबिर बन्दे, मैं तेरे पास हूँ। आप इस जवाब से बहुत खुश होते और दर्द की तकलीफ़ भूल जाते। कहते हैं कि आपके जिस्म शरीफ़ में बारह हज़ार कीड़े पड़ गये थे। जब कीड़ा ज़ख्म से नीचे गिरता आप उसको उठा कर फिर उसकी जगह पर रख देते कि यह बेजगह होकर परेशान न हो। अल्लाहो अकबर नबूवत तेरी शान। कितना सख़्त इम्तहान, सुनने वाले भी हैरान।

एक दफ़ा अल्लाहतआला की तरफ़ से कहा गया कि ऐ अय्यूब, तुम्हारे बदन में जितने कीड़े हैं सब हमारा ज़िक्र करते हैं और उस ज़िक्र का सवाब तुमको दिया जाता है। यह ख़ुशख़बरी सुनकर आप बहुत खुश हुए। रोज़ाना अल्लाहतआला की तरफ़ से मिज़ाज पुर्सी के लिए हज़रत जिब्राईल आते थे। जब आप के ज़ख्मों से ख़ून, पीप बहने लगा और बदबू पैदा हो गयी तो बीबी रहमत का दिल घबराया और कहा—

ऐ नबी ऐ साहिबे माला मनाल,
क्या से क्या आपका हुआ जाता है हाल।

माल भी रुख़सत हुआ और औलाद भी,
आई नौबत अब तुम्हारी जान की।

काश वह रखे हमें साबित क़दम,
किस तरह देखूँ आह यह दर्दो ग़म।

आपने फ़रमाया, ऐ ग़मखुवार ! अल्लाह के नबी और नेकबन्दे इम्तहान में बड़ी-बड़ी तकलीफ़ें उठाया करते हैं। देखो, तुम्हारे दादा याक़ूब (अ० स०) कितनी मुद्दत तक युसुफ़ (अ० स०) के ग़म में रोते रहे। हज़रत इब्राहीम (अ० स०) आग में डाले गये और इम्तहान में पूरे उतरे। हज़रत यूसुफ़ (अ० स०) एक

ख़ौफ़नाक कुएँ में डाले गये, फिर तेरह साल क़ैद रहे और इम्तहान में पास हुए। ऐ रहमत हमको भी चाहिए कि इम्तहान में साबित क़दम रहें और फ़रमाया मेरे बदन से पीप और ख़ून बहता है और बदबू पैदा हो गयी है। यह मस्जिद पाक जगह है। मुझे किसी और जगह ले चलो। बीबी रहमत आपको एक चबूतरे पर ले आयीं। ज़ख्मों की बदबू से लोग घबरा गये और बीबी रहमत से कहा कि इस बीमार को बाहर जंगल में ले जाओ वर्ना हम इनको पत्थरों से मार डालेंगे। आपने उनकी बेरहमी देख कर बीबी रहमत से फ़रमाया कि बेहतर यही है कि तुम बाहर बस्ती से दूर मुझे ले चलो, यह लोग मुझको बहुत जल्दी भूल गये। यह किसी किस्म की मदद नहीं कर सकते। तुम इस तरह करो कि बस्ती से बाहर जाकर रास्ते में बैठ जाओ। अगर मुसाफ़िर रास्ते में मिलें तो उनको बुला लाओ। वह मुझे यहाँ से उठाकर बाहर ले जायेंगे। बीबी रहमत रास्ते पर पहुँची कि दो जवान मुसाफ़िर आये, उनसे फ़रमाया कि ऐ जवानो ! कुछ इस दुखिया की भी मदद करोगे ? कहा ज़रूर करेंगे। फ़रमाया मेरे शौहर सख़्त बीमार हैं, उनको उठाकर यहाँ बाहर कूड़े पर पहुँचा दो। जवानों ने कहा, बीबी जी। तुम्हारे शौहर का क्या नाम है और वह कौन है ? फ़रमाया वह अल्लाह के नबी अय्यूब हैं।

**जवानों ने कहा—**

आह ! वह अय्यूब वह पैगम्बर,
वो ख़लील अल्लाह का नूरे नजर।

चल बता ऐ सालेहा वह हैं किधर,
जान भी क़ुर्बान है अय्यूब पर।

दोनों जवान बीबी रहमत के साथ आये और हज़रत अय्यूब को सलाम किया और आपको वहाँ से उठाकर बस्ती के बाहर एक कूड़े के ढेर पर पहुँचा दिया और सलाम करके चले गये। आपने बीबी रहमत से फ़रमाया कि यह दोनों जवान फ़रिश्ते जिब्राईल और मीकाईल थे जो अल्लाह के हुक्म से नबियों की ख़िदमत और मदद को ज़मीन पर आया करते हैं। फिर आपने बीबी रहमत से फ़रमाया कि ऐ ग़मख़ुवार ! तुम मेरे साथ क्यों तकलीफ़ उठाती हो ? मैं तुमको खुशी से इजाज़त देता हूँ कि जहाँ तुम्हारा दिल चाहे चली जाओ और आराम करो। उन्होंने फ़रमाया, ऐ अल्लाह के नबी और मेरे सर के ताज यह आपकी मेहरबानी है कि मेरी तकलीफ़ को पसन्द नहीं करते, लेकिन क़यामत के रोज़ खुदा को क्या जवाब दूँगी ? जब वह फ़रमायेगा कि ऐशो आराम में तो हमारे बन्दे के पास रही और तकलीफ़ में छोड़ कर अलग हो गयी। मैं तो अपनी ज़िन्दगी को

आप पर कुर्बान कर दूँगी। आप यह जवाब सुनकर बहुत खुश हुए। आप सात बरस उसी कूड़े पर पड़े रहे और जो कुछ खाते-पीते वह पीप बनकर बह जाता, मगर ज़ुबान और दिल से अल्लाह की याद में लगे रहते। बीबी रहमत मेहनत मज़दूरी करके एक-आध रोटी लाती। खुद भी खातीं और आपको भी खिलातीं। मज़बूरी यह थी कि लोगों के दरवाज़ों पर जाकर कहती, ऐ घरवालों, कोई मुझसे पानी भरवा ले, कोई मुझसे झाड़ू दिलवा ले, कोई मुझसे अनाज पिसवा ले, कोई मुझसे बर्तन और कपड़े धुलवा ले और इसके बदले एक रोटी दे दे। शैतान दुश्मने इन्सान को अब भी चैन न पड़ी और एक बुज़ुर्ग सूरत में बनकर बस्तियों में फिरकर लोगों से कह-फिरा कि इस औरत को अपनी बस्ती में न आने दो और इससे कोई काम न लो। इसका आदमी कोढ़ की बीमारी में बीमार है, उस पर खुदा का ग़ज़ब है और यह अपने हाथों से उसका ख़ून, पीप साफ़ करती है, ऐसा न हो कि वह मर्ज़ तुमको भी लग जाये। लोगों ने यह बात सुनकर बीबी रहमत को धक्के देकर बस्ती से बाहर निकाल दिया और सब बस्ती वालों ने कहा कि ख़बरदार जो फिर यहाँ आयी। आप रोती हुई हज़रत अय्यूब के पास आयीं और आपसे कहा—

बिन्ते युसूफ़ ज़ोजए अय्यूब को,
नूरे दीदा दुख़्तरे याक़ूब को।

क़ौम ने सद हैफ़ धक्के दे दिये,
ऐसे वह अल्लाह से बे डर हुए।

कुछ न खाया तर्स एक बेचार पर,
कुछ न आया रहम एक बीमार पर।

आपने फ़रमाया, ऐ रहमत ! हमारा इम्तहान है। सब्र करने का मुक़ाम है। घबराया नहीं करते। अल्लाहतआला साबिरों के साथ है। सब्र का बदला बहुत अच्छा होता है। अल्लाहतआला ने चाहा तो बहुत जल्दी आराम और खुशी देखोगी। अब इस कूड़े पर मेरा दिल नहीं लगता। बस्ती से दूर कहीं जंगल में झोंपड़ी बनाओ और वहाँ ले चलो। बीबी रहमत ने दरख़्तों की शाख़ों से और पत्तों से कुछ साया-सा बना लिया और यह इन्तज़ार था कि कोई मुसाफ़िर आये। क्योंकि बस्ती के आदमी सब दुश्मन थे और हज़रत अय्यूब खुद बैठ नहीं सकते थे। यह परेशानी देखकर फ़रिश्ते भी घबरा गये। फ़रिश्तों ने अर्ज़ की— ऐ रब्बे करीम ! हमको इजाज़त हो तो रहमत की मदद करें। चार फ़रिश्तों को हुक्म हुआ कि जाओ, हमारी ताबेदार बन्दी की मदद करो। फ़रिश्ते आदमी की सूरत में आये और उन्होंने हज़रत अय्यूब को उठाकर झोंपड़ी में लिटा दिया। वह फ़रिश्ते कहने

लगे कि यह अल्लाह के नबी हैं और जन्नत में बादशाह होंगे। मगर इस दुनिया-ए-फ़ानी में यह टूटी हुई हालत है। फ़रिश्ते आपको सलाम करके रोते हुए रुख़सत हो गये। आपने फ़रमाया— बीबी रहमत, यह वह फ़रिश्ते थे जो जन्नत में मेरी कोठियों के दरबान होंगे। आप सात रोज़ के फ़ाक़े से बेहोश हो गये। बीबी रहमत आपको चादर उढ़ाकर एक बस्ती में गयीं और हर दरवाज़े पर कहतीं, ऐ घरवालो, अल्लाह के नबी अय्यूब फ़ाक़े से बेहोश हैं। कोई एक रोटी उनको दे दो और अल्लाह से जन्नत ले लो। सब घरवाले जवाब देते कि दूर हो जा, यहाँ खड़ी भी न हो। आप बेउम्मीद होकर एक दरख़्त के नीचे बैठ गयीं ! कि इतने में शैतान एक बुज़ुर्ग आदमी की सूरत में आया और कहा— ऐ रहमत ! तेरा शौहर अय्यूब और बाप- दादा का यह नाम है। तुम सब लोग पहले बड़े दौलत वाले थे और अब तुम मोहताज हो गये और अय्यूब बीमार हैं। इसकी वजह यह है कि वह आसमान वाले खुदा की इबादत करते हैं। उस खुदा का अख़्तियार आसमानों पर है और यहाँ ज़मीन पर मैं खुदा हूँ। यहाँ मेरा अख़्तियार है और अय्यूब मेरा कहना नहीं मानते। मेरी इबादत नहीं करते। इसलिए मैंने ग़ुस्से में आकर उनको और उनके कुनबे को तबाह और बर्बाद कर दिया। तुम्हारी परेशानी पर मुझे रहम आता है। लो यह बकरी का बच्चा ले जाओ और आसमान वाले खुदा का नाम लेकर इसको ज़िबह करना और पका कर अय्यूब को खिला देना और फिर मेरी क़ुदरत का तमाशा देखना कि गोश्त खाते ही तंदरुस्त हो जायेंगे। आप ग़म और फ़ाक़े की वजह से बेहवास थीं। शैतान के धोखे में आ गयीं और यह समझीं कि यह शख़्स जो ग़ैब की बातें बतलाता है, तो मुमकिन है ज़मीन पर इसी का अख़्तियार हो। बकरी का बच्चा ले आयीं। सब क़िस्सा हज़रत अय्यूब से बयान किया। आपको बहुत ग़ुस्सा आया और फ़रमाया— ऐ रहमत क्या तू नहीं जानती कि ज़मीन व आसमान और मख़लूक़ का ख़ालिक़ और मालिक वही एक खुदा है और उसी को सब अख़्तियार है। वही मारता है, वही जिलाता है, वही हँसाता है, वही रुलाता है, वही बीमारों को शिफ़ा देता है। और यह तो शैतान था। इसी बेईमान के धोखे से हज़रत आदम (अ० स०) और हव्वा (अ० स०) जन्नत से निकाले गये।

बीवी रहमत शर्मिंदा हुईं और कहा—वाकई मुझसे ग़लती हुई। मैं अल्लाहतआला से माफ़ी चाहती हूँ। आपने फ़रमाया—ऐ रहमत, यह बतलाओ हम ऐशो आराम में कितनी मुद्दत रहे? अस्सी बरस। आपने कहा कि तकलीफ़ में कितना ज़माना गुज़रा? कहा अट्ठारह बरस। आपने फ़रमाया— फिर तो तुमने अल्लाहतआला के बारे में बेइन्साफ़ी की। उसकी भेजी हुई तकलीफ़ों पर कम से

कम अस्सी बरस तो हमको सब्र करना चाहिए। आज से मैं तुम्हारे हाथ की कोई चीज़ न खाऊँगा। और अपने एक सच्चे ख़ुदा की क़सम, अगर मैं अच्छा हो गया तो तुम्हारी इस ग़लती पर सौ कोड़े मारूँगा। फिर आप इस सख़्त परेशानी की हालत में बहुत घबराये कि अब शैतान बीबी रहमत के ज़रिये से मेरा ईमान ख़राब करना चाहता है। और बेचैन होकर यह दुआ की—

आ पड़ी है मुझ पे सख़्ती ऐ ख़ुदा,
किस से मैं चाहूँ मदद तेरे सिवा।

सब से बढ़कर रहम वाला है तू ही,
दु:ख में बेकस का सहारा है तू ही।

माँगता हूँ मैं तुझसे तेरी पनाह,
शर से शैतानों के हरदम या इलाह।

मुझको शैतानों की छोड़ों से बचा,
मुझ पे वह ग़ालिब हो न जाये ऐ ख़ुदा।

आप यह दुआ माँग ही रहे थे कि जिब्राईल (अ० स०) अल्लाहतआला का सलाम और पैग़ाम लाये कि ऐ अय्यूब! तुम बड़े साबिर व शाकिर बन्दे हो, हम तुमसे बहुत खुश हैं। तुमने दुआ की और हमने क़बूल की। अब तुम अपनी ऐड़ी ज़मीन पर मारो और हमारी कुदरत का तमाशा देखो। आपने ऐड़ी मारी और पानी उबलना शुरू हो गया और ज़रा-सी देर में पानी का चश्मा भर गया। हज़रत जिब्राईल ने फ़रमाया कि आप इस पानी में गुस्ल करें और पियें। आपने गुस्ल किया और ख़ूब प्यास भरकर पानी पिया। उसी वक़्त अल्लाहतआला के हुक्म से सेहतयाब हो गये और निहायत हसीन व जमील नौजवान बन गये और तमाम बदन चाँदी की तरह चमकने लगा और वह बारह हज़ार कीड़े अल्लाहतआला का ज़िक्र करते हुए बदन से बाहर हो गये और सब सोने के बन गये। फिर हज़रत जिब्राईल ने आपको जन्नती कपड़े पहनाये और खाने को जन्नत का एक सेब दिया। आपने आधा खाया और आधा बीबी रहमत के लिए रक्खा। वह उस वक़्त रोटी की तलाश में गयी हुई थीं। आख़िर भूखी-प्यासी लौट आयीं। आपको झोपड़ी में न पाया तो निहायत परेशान होकर इधर-उधर तलाश करने लगीं। हज़रत जिब्राईल ने पूछा कि बीबी तुम किसको देख रही हो। फ़रमाया, मैं अपने बीमार को देखती हूँ। ख़ुदा जाने उन पर क्या गुज़री? उन्होंने कहा, यहाँ तो कोई बीमार नहीं है। आप बेचैन होकर रोने लगीं। हज़रत अय्यूब ने फ़रमाया कि तुम अपने बीमार को पहचानती हो? कहा हाँ। जिस वक़्त वह जवान थे, आप जैसे थे। आपने फ़रमाया—

ग़म न कर रहमत न घबरा दिल में तू,
पहले से बेहतर कर दिया अल्लाह ने।

हो गई अब रहमते परवरदिगार,
नैमतें अब उसने दे दी बेशुमार।

शुक्र किस मुँह से अदा उसका करूँ।
कर दिया इब्लीस को जिसने ज़बूं।

यानी ऐ ग़मख़ुवार और ताबेदार बीवी अपना दिल ख़ुश करो। अल्लाहतआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से ज़रा-सी देर में मुझको सेहत बख़्शी और दोबारा जवानी अता की। इम्तहान में पास कर दिया और मेरे दुश्मन शैतान को शिकस्त दी, हार दी और वह ज़ालिम अपनी मुराद को न पहुँचा। लो यह जन्नत का सेब खाओ। बीबी रहमत सेब खाने से नौजवान शहज़ादी बन गयीं। फिर हज़रत जिब्राईल (अ० स०) ने आपसे फ़रमाया कि बीबी रहमत की ग़लती पर जो क़सम खायी थी वह इस तरह पूरी कीजिए की झाड़ू के सौ तिनकों को मुट्ठी में लो और बीबी रहमत के बदन से लगा दो। बस क़सम पूरी हो जायेगी। यह हल्की-सी तदबीर इसलिए मुक़र्रर हुई है कि बीबी रहमत से अल्लाहतआला बहुत ख़ुश हैं। आपने अल्लाह के इस हुक्म के मुवाफ़िक़ क़सम को पूरा कर दिया। बस ताबेदारी और सब्र का ताज बीबी रहमत के सर पर है। उनकी भूल-चूक माफ़ है। अल्लाहतआला ने आपकी सब औलाद और बाँदी गुलाम दोबारा ज़िन्दा कर दिये और दोचन्द औलाद और माल व दौलत और कुल सामान अता फ़रमाया। तीन रात और तीन दिन सोने की टिड्डियाँ बरसीं और हमेशा के वास्ते आप साबिरो शाकिर मशहूर हुए और आपका ज़िक्र मुबारक साबिरो शाकिर लोगों के लिए रहबर बना और अल्लाहतआला ने फ़रमा दिया—

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا اَيُّوْبَ ط

यानी ऐ हमारे बन्दो! हमारे पैग़म्बर अय्यूब के हालात पढ़ो और सब्र व शुक्र करने का तरीक़ा सीखो। चार सौ बरस की उम्र शरीफ़ पाकर आपने वफ़ात पायी और बीबी रहमत की ख़िदमत और ताबेदारी और सब्र का कमाल नेक बीबियों के लिए एक बेहतरीन नमूना बना। इन मुबारक हालात में अगर कोई समझे तो बड़े-बड़े फ़ायदे हासिल हो सकते हैं। जैसे रंज व ग़म और आफ़त में ज़्यादा परेशान न होना। बलाओं को अल्लाहतआला की रहमत और इम्तहान समझना और उसकी याद और ताबेदारी में लगे रहना। शैतान के धोखों में न आना। अल्लाहतआला के सिवा किसी को मददगार न समझना। मज़बूती से अपने

दीन और ईमान पर क़ायम रहना। बीवियों को अपने मर्दों की ख़िदमत और ताबेदारी करना। हर तकलीफ़ में उनका साथ देना। खुदा की नाफ़रमानियों से बचना। हर हालत में अल्लाहतआला के हुक्म पर राज़ी रहना। इन्शाअल्लाहतआला फिर देखना कि तुम पर अल्लाहतआला की कितनी रहमतें बरसेंगी।

# शैतान के दोस्त और दुश्मन

एक दफ़ा अल्लाहतआला ने शैतान को हुक्म दिया कि तू हमारे रसूल मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) के पास जा और उनकी बातों का जवाब दे। शैतान आपको मिला और कहा, खुदा ने मुझको आपके पास भेजा है। आपने फ़रमाया कि हम मुसलमानों में कौन लोग तेरे दोस्त हैं और कौन दुश्मन हैं ? कहा पन्द्रह क़िस्म के यह लोग मेरे दुश्मन हैं—

(1) सब से बड़े दुश्मन तुम हो, (2) और बादशाह इन्साफ़ करने वाला और इसमें एहले रियासत और सब हाकिम आ गये, (3) वह मालदार जो अपने को औरों से छोटा समझे, (4) जो आदमी तिजारत करता हो और सच बोलता हो, (5) वह आलिम और नमाज़ी जो खुदा से डरता हो, (6) वह आदमी जो लोगों को दीन की बातें सिखलाता हो, (7) वह आदमी जो लोगों पर रहम करता हो, (8) जो आदमी खुदा के सामने तौबा करता हो, (9) जो हलाल खाता हो और हराम कमाई से बचता हो, (10) जो पेशाब वग़ैरा नापाकी से बचता हो और पाक साफ़ रहता हो।, (11) जो ख़ैरात ज़्यादा करता हो, (12) जो अच्छी आदतें रखता हो, (13) जो लोगों को नफ़ा पहुँचाता हो, (14) जो क़ुरआन हमेशा पढ़ता हो, (15) जो तहज्जुद की नमाज़ पढ़ता हो।

और यह दस क़िस्म के लोग मेरे दोस्त हैं, वह मेरे हैं और मैं उनका हूँ।

(1) बादशाह ज़ालिम जो लोगों पर ज़ुल्म करे और इसी में एहले रियासत और सब हाकिम आ गये, (2) वह मालदार मुसलमान जो अपने को बड़ा समझता हो, (3) जो अपना माल झूठ बोलकर धोखा-फ़रेब से बेचता हो। कम तोलता और कम नापता हो, (4) शराब पीता हो, (5) ग़ीबत चुग़ली करता हो, (6) जो नेक कामों से दिखावा करता हो, (7) जो यतीमों का माल खाता हो, (8) हमेशा वक़्त पर नमाज़ न पढ़ता हो, (9) जो ज़कात न अदा करता हो, (10) जो दुनिया की हिर्स ज़्यादा करता हो।

बस ऐ मौहम्मद (स०) ! यह लोग मेरे प्यारे है और बड़े दर्जे के दोस्त हैं। यह कहकर शैतान नाफ़रमान भाग निकला।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाईयो और बहिनो! अक़्ल की बात यही है कि शैतान को अपना दुश्मन समझो और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी से बचो। कोई बुरा काम न करो कि शैतान के दोस्त बन जाओ।

इतनी ग़फ़लत तो न कर मुस्लिम ख़ुदा के वास्ते,
फ़िक्र कर कुछ तो भला रोज़े जज़ा के वास्ते।

हिर्सो गुस्सा, बुग्ज़ो कीना, ग़ीबतो, मुक्रो फ़रेब,
रात दिन करता है उम्रे बेबक़ा के वास्ते।

पढ़ के तू कुर्आन को कुछ जमा करलें अब सवाब,
कब्र पर कौन आयेगा फिर फ़ातेहा के वास्ते।

हक़ की नाफ़रमानियों से बाज़ आ तू बाज़ आ,
आग दोज़ख़ की भड़कती है सज़ा के वास्ते।

काम दोज़ख़ के करे और जन्नत का है उम्मीदवार,
कस्रे जन्नत तो बना है पारसा के वास्ते।

या इलाही अपनी ज़ाते किब्रिया के वास्ते,
सरवरे आलम मौहम्मद मुस्तफ़ा के वास्ते।

दिल को मेरे उल्फ़ते दुनिया से करदे पाक साफ़,
तो मेरे सब काम हों तेरी रज़ा के वास्ते।

## मुसलमान को ऐश व आराम जन्नत में मिलेगा

हज़रत उमर (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

ऐ ख़त्ताब के बेटे उमर, क्या तुम इस बात से खुश नहीं होते कि हमारे लिए अख़िरत में आराम होगा और काफिरों को दुनिया में आराम होगा।

**फ़ायदा—** हज़रत उमर (रज़ी०) फ़रमाते हैं कि मैं एक रोज़ हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में हाज़िर हुआ तो आप खजूर की चटाई पर लेटे हुए थे। कोई कपड़ा उस पर बिछा हुआ नहीं था और चटाई के निशान आपकी कमर मुबारक पर पड़ गये थे। और सर के नीचे चमड़े का तकिया था जिसमें खजूर के दरख़्त की छाल भरी हुई थी। मैंने अर्ज़ की— या रसूल अल्लाह! रोम व फ़ारस और ईरान के बादशाह ख़ुदा की इबादत नहीं करते, काफ़िर हैं। जो कि ख़ुदाए तआला ने उनको माल व दौलत और ऐश व आराम बहुत कुछ दिया है। दुआ फ़रमाइए

कि अल्लाहतआला आप पर और आपकी उम्मत पर यानी मुसलमानों पर रिज़्क़ कुशादा करे। तब आपने फ़रमाया कि ऐ उमर, तुम किस ख़याल में हो? मुसलमान को मुनासिब नहीं कि इस दुनियाए फ़ानी के ऐशो आराम की आरज़ू करे। इसलिए की मुसलमान के आराम करने की जगह जन्नत में है और काफ़िरों को दुनिया में आराम है। दुनिया उनके लिए जन्नत है और आख़िरत में उनका ठिकाना दोज़ख़ है और दुनिया मुसलमान के लिए जेल ख़ाना है। ज़ाहिर है कि जेल ख़ाने में आराम नहीं होता। (मुस्लिम व बुख़ारी)

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि काफ़िरों की दौलत और ऐशो आराम देखकर मुसलमान को राल न टपकानी चाहिए। बल्कि मज़बूती से अल्लाह व रसूल के हुक्मों पर चलकर अपनी आख़िरत बनाये—

वास्ते दुनिया के क्यों ऐ बेख़बर,
ठोकरें खाता फिरे है दरबदर।

आख़िरत के कार से ग़ाफ़िल न हो,
दौलते दुनिया पे तू मायल न हो।

ख़्वाब से सर को उठा और आँख खोल,
नेक, बद को अक़्ल में अपनी तोल।

यह आख़िर को जां तन से होगी जुदा,
तेरा कौन है फिर ख़ुदा के सिवा।

ग़नीमत समझ ले जो है ज़िन्दगी,
तू ख़ुदा की इसमें कर बन्दगी।

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है,
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है।

है यह जन्नत वास्ते कुफ़्फ़ार के,
ज़ालिम व फ़स्साक़ व बद अतवार के।

और मोमिन को है ज़िन्दा यह जहाँ,
ऐशो आराम ज़िन्दा में कहाँ।

बाज़ मुसलमान ऐसे भी हैं जो काफ़िर लोगों की ख़ुश हाली और माल-दौलत देखकर राल टपकाते हैं। और अल्लाहतआला काफ़िरों के बारे में यह फ़रमाता है कि ऐ मुसलमानों, तुमको काफ़िरों के माल और औलाद हिर्स और धोखे में न डालें कि अल्लाह तआला ने इनकी दुनिया क्यों बना रखी है। उनकी

दुनिया अच्छी नहीं बना रखी, बल्कि अल्लाह यह चाहता है कि इन काफ़िरों को दुनिया की ज़िन्दगी में माल और औलाद की वजह से गिरफ़्तारे अज़ाब ही रखे और यह दुनिया ही के मज़ों में रहकर कुफ़्र ही की हालत में मर जावें। -(सूरह अल्तोबा)

**फ़ायदा—** अल्लाहतआला के फ़रमान के मुवाफ़िक़ देखने में भी आता है कि काफ़िर लोग दिन-रात इसी धुन में लगे रहते हैं और ख़ूब माल को जमा करते हैं और बड़े-बड़े महलात और कोठियाँ और बाग़ात वग़ैरा बनवाते हैं और आख़िर सब कुछ छोड़-छाड़ कर एक दिन राख का ढेर हो जाते हैं। मुसलमान को सबक़ हासिल करना चाहिए—

देख फ़रमाते हैं यह ख़ैरुलबशर,
जो कोई दुनियाए फ़ानी छोड़ कर।

दीन को दिल से करे है अख़्तियार,
खुदबख़ुद दुनिया हो आ उस पर निसार।

काम उसके दुनिया व दीं के तमाम,
होते हैं आसान ऐ नेक नाम।

जिसने की दुनिया मुक़द्दम दीन पर,
वह हुआ ख़ुवारो तबाह ख़स्ता जिगर।

हो गया उस शख़्स पर क़हरे ख़ुदा,
जो हुआ दुनियाए दूँ पर मुब्तला।

## काफ़िर को आख़िरत में सवाब नहीं मिलेगा

मुस्लिम शरीफ़ में हज़रत उन्स (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि काफ़िर जब कोई नेक काम करता है तो उसकी वजह से दुनिया में उसकी रोज़ी कुछ ज़्यादा कर दी जाती है और मुसलमान की नेकियों को हक़ तआला उसकी आख़िरत के लिए जमा कर लेता है और दुनिया में भी उसको बदला मिलता है।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अल्लाहतआला किसी की नेकी बर्बाद नहीं करता। वह बड़े इन्साफ़ वाला है। काफ़िर को अच्छे काम करने का आख़िरत में सवाब नहीं मिलेगा। इसीलिए उसके नेक काम का बदला दुनिया में ही देता है और मुसलमान के नेक काम का बदला दुनिया में भी मिलता है और आख़िरत में भी मिलेगा। सुबहान अल्लाह ! मुसलमान होना भी क्या आला

दर्जे की नैमत है।

## दीन पर मज़बूत रहने वालों की इज़्ज़त

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

बेशक ज़ाहिर हुआ इस्लाम शुरू में मुसाफ़िर ग़रीब की तरह। फिर आख़िर में वैसा ही हो जायेगा जैसा कि पहले था तो ख़ुशी हो मुसाफ़िर ग़रीबों को। (मुस्लिम)

**फ़ायदा**— इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि शुरू-शुरू में दीने इस्लाम बहुत कमज़ोर था। कोई यारो मददगार नहीं था। जैसे सफ़र में ग़रीब मुसाफ़िर को कोई नहीं पूछता। फिर बढ़ते-बढ़ते दीने इस्लाम सारी दुनिया में फैल गया। इसलिए हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि आख़िरी ज़माने में क़यामत के क़रीब दीने इस्लाम फिर कमज़ोर हो जायेगा जैसा कि पहले कमज़ोर था। बस उस वक़्त के मुसलमान भी ग़रीब मुसाफ़िरों की तरह बेयारो-मददगार हो जायेंगे। देखने में आता है कि आजकल वह वक़्त आ गया है कि जो अल्लाह का नेक बन्दा दीन की बातों पर चलता है और दीनदारी अख़्तियार करता है तो मुसलमान ही उस पर हँसते हैं कि यह बड़ा मुसलमान व अहड़िया हो गया है। तो हुज़ूर (स०) ने ऐसे ही वक़्त के लिए यह इरशाद फ़रमाया है कि जो अल्लाह का नेक बन्दा या बन्दी ऐसी बेदीनी के वक़्त में अल्लाहतआला के हुक्मों पर मज़बूती से चलेगा और साबित क़दम रहेगा उसको बशारत है जन्नत की। यानी वह सीधा जन्नत में जायेगा।

## ख़ुदा के सिवा किसी को सजदा न किया जाये

मौहसिने आज़म (स०) फ़रमाते हैं कि—

अल्लाहतआला लानत करे यहूद और नुसारा पर कि उन्होंने अपने नबियों की क़ब्रों को सजदागाह बनाया। हुज़ूर (स०) ने जिस बीमारी में वफ़ात फ़रमायी उसी में यह फ़रमाया। आपको यह ख़ौफ़ हुआ कि कहीं मेरी उम्मत के लोग भी यहूद और नुसारा की तरह मेरी क़ब्र को सजदा न करने लगें और हज़रत जुदब (रज़ी०) से रिवायत है कि मैंने रसूल अल्लाह (स०) की वफ़ात से पाँच रोज़ पहले यह फ़रमाते सुना कि पहली उम्मतों के लोगों ने अपने नबियों और वलियों की क़ब्रों को सजदागाह बनाया। तुम ख़बरदार हो जाओ, क़ब्रों को सजदागाह न बनाना। मैंने तुमको मना कर दिया है। (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** यहूद और नुसारा लोग नबियों और वलियों की क़ब्रों पर इबादतख़ाना बनाकर उसकी तरफ़ सजदा करते थे, जो बिल्कुल शिर्क है। इसीलिए हुज़ूर (स०) ने बड़े ज़ोर के साथ मना फ़रमाया और लानत फ़रमायी है। मालूम हुआ कि जो इबादत मस्जिद और काबे शरीफ़ के लिए ख़ास है, वह क़ब्रों पर न होनी चाहिए। चाहे नबी की क़ब्र हो या वली की। इसलिए क़ब्रों को सजदा करना और उनका तवाफ़ करना हराम है कि तवाफ़ करना काबे शरीफ़ के लिए ख़ास है और इसीलिए क़ब्रिस्तान में बिला किसी आड़ के क़ब्र के सामने नमाज़ पढ़ना दरुस्त नहीं। बड़े अफ़सोस की बात है कि आजकल जाहिल लोगों ने वलियों की क़ब्रों को सजदागाह बना लिया। यानी उनकी क़ब्रों को सजदा करते हैं। अल्लाह व रसूल की लानत का तौक़ अपने गलों में डालते हैं। मुसलमान का सर तो अल्लाह के लिए है, उसी को सजदा करे। उसी वहदहूलाशरीक पर क़ुर्बान करे। देखो, ग़ौर करो, समझो कि सहाबा (रज़ी०) ने अपने हादीए बरहक़ हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) के फ़रमाने वाला शान पर अमल करके दिखला दिया। उनके ज़माने में किसकी मजाल थी कि हुज़ूर की क़ब्रे अनवर को कोई सजदा कर सके। और सहाबा से बढ़कर वह कौन ख़बीस है और किसका ऐसा मुँह है कि सहाबा के बराबर हुज़ूर की मुहब्बत और अताअत और ताज़ीम व तकरीम को भी संभाला और हुज़ूर की शरीयत को भी संभाला। जब हज़ूर की ज़ाते अतहर और क़ब्रे अनवर को हुज़ूर के ही फ़रमानेपाक से सजदा करना दरुस्त नहीं तो फिर किसी पीर या फ़क़ीर को या उसकी क़ब्र को सजदा करना कैसे दरुस्त होगा।

मुस्तफ़ा एक दिन कहीं को थे गये,
बकरियों ने उनको वां सजदे किये।

वह सहाबी जो कि हाज़िर थे वहाँ,
अर्ज़ की ऐ बादशाहे इन्सो जाँ।

जबकि हैवाँ आपको सजदा करें,
किस तरह ख़ामोश हम बैठे रहें।

दीजिए हमको इजाज़त ऐ रसूल,
ताकरें इस फ़ैज को हम भी हसूल।

मुस्तफ़ा ने सुन के फ़रमाया यह तब,
किसको सजदा है मुनासिब ग़ैरे रब।

गर खुदा यह हुक्म दे देता मुझे,
है रवा हर कस तुझे सजदा करे।

मैं यह देता औरतों को हुक्म आम,
शौहरों को तुम करो सजदे तमाम।

## अल्लाहतआला के हुक्म में सिफ़ारिश न मानो

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

इसी बेइन्साफ़ी ने तो उन लोगों को बर्बाद कर डाला था, जो तुमसे पहले थे कि जब उनमें कोई रईस या अमीर या शरीफ़ आदमी चोरी करता था तो उसको सज़ा न देते और छोड़ देते थे और जब उनमें कोई ग़रीब आदमी चोरी करता था तो उसको सज़ा देते थे। और अल्लाहतआला की क़सम अगर फ़ातिमा (रज़ी०) मौहम्मद की बेटी यानी मेरी बेटी भी चोरी करे तो बेशक मैं उसका भी हाथ काटूँगा। फ़ातिमा बिन्ते क़ैस क़ुरैशी शरीफ़ ख़ानदान में से थी। उसने चोरी की। लोगों ने उसकी सिफ़ारिश की। शहनशाहे दो आलम (स०) ने फ़रमाया कि अल्लाह- तआला ने जो सज़ा चोर की मुकर्रर फ़रमायी है तुम उसके ख़िलाफ़ सिफ़ारिश करते हो। मैं अल्लाहतआला के हुक्म में किसी की सिफ़ारिश न मानूँगा और न कुछ रिआयत करूँगा। पहली उम्मतों के लोग इसी ज़ुल्म और बेइन्साफ़ी की वजह से तबाह व बर्बाद कर दिये गये थे। अल्लाहतआला के क़ानून में सब बराबर हैं। अमीर हो या फ़क़ीर और चाहे कोई शरीफ़ हो या हक़ीर। बादशाह हो या वज़ीर। अगर मेरी बेटी फ़ातिमा भी चोरी करे तो मैं उसका भी हाथ काट डालूँगा— (बुखारी व मुस्लिम)। अल्लाहो अकबर! क्या शाने अज़ीम है आपकी और आपके इन्साफ़े पाक की—

क्या रिसालत हुई ऐ ख़त्मे रिसालत तेरी,
कलमा पढ़ते हैं सभी सुन के नबूवत तेरी।

देखकर आपको लरज़ जाते थे कुफ़्फ़ार के दिल,
दिले आदा में जगह करती थी अज़मत तेरी।

शर्क़ से ग़र्ब तलक दीने नबी फैल गया,
मरहबा सल्लेअला तरज़े रिसालत तेरी।

## मुसलमान की मुसलमान पर सब चीज़ हराम है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

मुसलमान की मुसलमान पर हर चीज़ हराम है। उसका खून, उसकी इज़्ज़त, उसका माल। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से ज़ुल्म और लड़ाई-फ़िसाद की जड़ कट गयी। क्योंकि दुनिया में इन्हीं जुर्मों की वजह से फिसाद और झगड़े पैदा होते हैं। तो जब नाहक़ ख़ून करना हराम हुआ तो झूठा दावा करना और झूठी गवाही देना भी हराम हुआ और जब मुसलमान की बेइज़्ज़ती हराम हुई तो उसको ज़लील करना और उसकी हँसी उड़ाना और उसकी बहू-बेटी वग़ैरा पर बदनज़र करना और उसकी चुग़ली खाना और ग़ीबत करना भी हराम हुआ। और जब उसका माल लेना दरुस्त न हुआ तो चोरी, डकैती, धोखेबाज़ी, रिश्वत और जुएबाज़ी वग़ैरा भी हराम हुई। क्योंकि इन बुरे कामों से उसका माल नाहक़ बर्बाद होता है।

## हलाल कमाने और खाने की ताकीद

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

लोगो! बेशक अल्लाहतआला पाक है। वह क़बूल नहीं करता, मगर पाक अमल और पाक माल को। बेशक अल्लाहतआला ने हुक्म किया है मुसलमानों के जैसा कि हुक्म दिया नबियों को कि ऐ नबियो! खाओ पाक माल और रिज़्क़ हलाल और अमल करो अच्छे। बेशक मैं तुम्हारे अमलों को जानने वाला हूँ। और अल्लाह तआला ने फ़रमाया है, ऐ मुसलमानो! खाओ हलाल माल और पाक चीज़ों को जो मैनें तुमको दी हैं। फिर हज़ूर (स०) ने एक आदमी का ज़िक्र फ़रमाया कि जिसने बड़ा लम्बा चौड़ा सफ़र किया हो। बाल बिखरे और ख़ाक में भरे हुए हों और फैलाता है वह अपने दोनों हाथ आसमान की तरफ दुआ के लिए और कहता है ऐ मेरे रब, हालाँकि उसका खाना हराम, पीना हराम और उसका बदन पाला गया हराम खानों से। फिर ऐसे आदमी की दुआ किस तरह क़बूल हो। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** अल्लाह व रसूल के नज़दीक पाक माल वह है कि जिसमें किसी का कोई झगड़ा और दावा न हो और शरीयत के हुक्म के मुवाफ़िक़ हो। चोरी, रिश्वत, धोखेबाज़ी, लूटमार, मुक्रो फ़रेब से माल हासिल किया हुआ पाक नहीं है। इसलिए कि दूसरे का हक़ और दावा उसमें मौजूद है। इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि हराम माल से ख़ैरात करना बे फायदा है। अल्लाहतआला इसको क़बूल नहीं करता। इसलिए कि अल्लाहतआला पाक है, नापाक चीज़ को क़बूल नहीं करता। अल्लाहतआला ने नबियों और मुसलमानों को हलाल माल हासिल करने की ताकीद फ़रमायी है। बाज़ लोग कहा करते हैं कि मियाँ हम और नबी बराबर नहीं हो सकते। नबियों की तरह कौन मेहनत और मुशक्क़त उठाये। यह बड़ी सख़्त ग़लती है। तौबा करनी चाहिए। इस हदीस शरीफ़ में इरशाद है कि—

बेक़रार और बेकस और ग़रीब और मुसाफ़िर ग़मज़दा की दुआ ज़रूर क़बूल होती है। लेकिन जब कि उसका खाना-पीना और गोश्त-पोस्त हराम माल से पलता हो तो उसकी दुआ क़बूल नहीं होती। चाहे हज ही का सफ़र क्यों न हो। खुलासा इस हदीस शरीफ़ का यह है कि मुसलमान पर वाजिब है कि सब इबादतों से पहले हलाल रिज़्क़ हासिल करे और खाये। बग़ैर इसके न इबादत में कुछ मज़ा होगा और न दुआ और इबादत क़बूल होती है। और बाज़ लोग जो यह कहते हैं कि हलाल माल या रोज़ी आजकल दुनिया में कहाँ मिलती है। यह बिल्कुल ग़लत बात है। क्योंकि मेहनत, मज़दूरी करना, ज़राअत व तिजारत करना, दस्तकारी और मुलाज़्मत शरीयत के हुक्म के मुवाफ़िक़ करना या किसी को तोहफ़े के तौर पर बिला उसकी तलब के और लालच के लोगों की ख़िदमत से माल का आना सब दुरुस्त है और जो माल इन तरीक़ों से हासिल हो वह सब पाक और हलाल है।

अलहासिल! जिस आदमी को यह डर हो कि मैनें आख़िरत में खुदा की कचहरी में हाज़िर होना है और हिसाब देना है, उसको चाहिए कि हलाल रिज़्क़ कमाये और खाये ताकि सब पकड़-धकड़ से बचे।

## जो चीज़ें बे माँगे मिलें उनको ले लो

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जो माल तुम्हारे पास इस तरह आये कि न तुमको उसका इन्तज़ार हो और न तुमने माँगा हो तो उसको ले लो और जो ऐसा माल न हो उसके पीछे अपनी जान मत डालो। हज़रत उमर (रज़ी०) फ़रमाते हैं कि—

हुज़ूर (स०) ने मुझे बतौर तोहफ़ा कुछ माल दिया। मैने अर्ज़ की— या रसूल अल्लाह! जो मुझसे ज़्यादा ज़रूरत वाला हो उसको दीजिए। तब आपने फ़रमाया कि इसको ले लो और तुम्हारे ख़र्च से ज़्यादा हो तो तुम किसी ज़रूरत वाले को दे देना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा**— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जो चीज़ माल वग़ैरा बे माँगे और बे इन्तज़ार के मिले वह अल्लाहतआला का तोहफ़ा है, उसका लेना दुरुस्त है और सुन्नत है।

## मुसलमान तीन जुर्मों में क़त्ल हो सकता है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

ख़ून हलाल नहीं उस मुसलमान का जो यह गवाही देता हो कि अल्लाह

के सिवा कोई माबूद इबादत के क़ाबिल नहीं और यह गवाही देता हो कि मौहम्मद अल्लाह का रसूल है। मगर तीन सूरतों में एक निकाह किया हुआ मर्द या औरत जो ज़िना करें। दूसरे जान के बदले जान तीसरे मुरतद जिसने दीन को छोड़ दिया हो और मुसलमानों की जमाअत से जुदा हो गया हो। (बुख़ारी शरीफ़)

## अल्लाह व रसूल को बुरा कहने वाले को क़त्ल करना चाहिए

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

कौन है ऐसा जो काब बिन अशरफ़ को क़त्ल करे। बेशक उसने अल्लाह और उसके रसूल को बहुत तकलीफ़ दी है। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—**

कॉब बिन अशरफ़ यहूदियों का सरदार और शायर भी था। हज़ूर (स०) की और आपके सहाबा की बुराई करता था और बेईमान लोगों को आपके साथ लड़ाई करने के लिए उभारता था। इसलिए आपने उसके क़त्ल करने का हुक्म फ़रमाया।

हज़रत मौहम्मद बिन मुसल्लमा ने उसका सर काटकर आपके सामने ला डाला। आप बहुत खुश हुए। इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जो अल्लाह को और उसके रसूल को बुरा कहे, उसको क़त्ल करना चाहिए। मगर याद रहे क़त्ल करने की कुदरत भी हो यानी दुनिया की किसी हकूमत के क़ानून की रोक-टोक, पकड़-धकड़ न हो।

## उस उम्मत का फ़िरऔन "अबुजहल"

बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

तुममें से कौन ऐसा है कि अबुजहल को देख आवे कि वह ज़िन्दा है या मर गया।

**फ़ायदा—** बदर एक जगह मदीने से तीन मंज़िल पर है। पहली जंग बेईमान लोगों से वहाँ पर हुई। बेईमानों का लश्कर एक हज़ार आदमियों के क़रीब था और हुज़ूर (स०) के साथ तीन सौ तेरह आदमी थे। जब वह काफ़िर लोग जंग में हार गये उस वक़्त हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि कोई अबुजहल की खबर लावे कि वह ज़िन्दा है या मर गया। हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसूद (रज़ी०) ख़बर लेने

गये। उन्होंने देखा कि अबुजहल जख़्मी हुआ ज़मीन पर पड़ा है। हज़रत अब्दुल्लाह ने उसकी दाढ़ी पकड़ कर हिलायी तो उसने कहा कि फ़तह किसकी हुई। उन्होंने जवाब दिया कि फ़तह अल्लाह की और उसके रसूल की हुई। उन्होंने उसका सर काट कर हुज़ूर (स०) के सामने ला डाला। हज़ूर ने अल्लाहतआला का शुक्र किया और फ़रमाया कि वह इस उम्मत का फ़िरऔन था।

**फ़ायदा**— अल्लाह व रसूल के हुक्मों को न मानना और उनके मिटाने की कोशिश करना फ़िरऔन बनना है।

## अबुजहल की दुश्मनी

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

अगर अबुजहल मेरे पास आता तो फ़रिश्ते उसके जोड़-जोड़ तोड़ डालते।

**फ़ायदा**— एक दफ़ा अबुजहल ने अपने साथियों से कहा कि तुम्हारे होते हुए मौहम्मद अपना मुँह ख़ाक पर मलता है यानी सजदा करता है। साथियों ने कहा कि हाँ। अबुजहल ने कहा, मैं लात व उज़्ज़ा की क़सम खाता हूँ कि अगर मैं उसको सजदा करते देखूँ तो उसकी गर्दन अपने पाँव से कुचल डालूँ। एक रोज़ हुज़ूर (स०) नमाज़ पढ़ रहे थे कि वह मरदूद उसी नापाक इरादे से चला। जब हुज़ूर के क़रीब पहुँचा तो डर के मारे उल्टे क़दमों भाग पड़ा। उसके साथियों ने पूछा कि तू कुत्ते की तरह क्यों भागा आता है। उसने कहा कि मुझको अपने और मौहम्मद के दर्मियान आग की ख़न्दक भरी हुई नज़र आती है और आग के शोले निकलते नज़र आते हैं। उस वक़्त हुज़ूर ने फ़रमाया कि यह बेईमान मेरे पास आता तो फ़रिश्ते उसके टुकड़े-टुकड़े कर डालते। यह हुज़ूर का मौजज़ा था। अबुजहल बेईमान ऐसे-ऐसे मौजज़े देखकर भी मुसलमान न हुआ। दुनिया और आख़िरत दोनों बर्बाद कर बैठा।

मुसलमानो! सबक़ हासिल करो। अल्लाह व रसूल की पूरी-पूरी ताबेदारी करो।

## दुनिया मोमिन के लिए जेलख़ाना है।

रसूले ख़ुदा (स०) ने फ़रमाया कि—

दुनिया मोमिन के लिए जेलख़ाना है और काफ़िर के लिए जन्नत है। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा**— दुनिया मोमिन मुसलमान के लिए जेलख़ाना इस तरह है कि मुसलमान

अगर बादशाह भी हो फिर भी उसको दुनिया-ए-फ़ानी से ख़तरा रहता है। कहीं गुनाह में फँस जाने का डर। कहीं ईमान पर ख़ात्मा न होने का डर, कहीं मौत की सख़्ती का डर, कहीं क़ब्र में अज़ाब का डर, कहीं आख़िरत मे हिसाबो किताब का डर। यह वाक़ेआत ईमान वाले के सामने आ जाते हैं। फिर ज़िन्दगी का मज़ा मुसलमान को कैसे आये कि गुनाह करके फिर डरता है। बस जेलख़ाने की तरह कि उसमें आराम नहीं होता। इसीलिए मुसलमान को दुनिया में आराम नहीं होता। यानी खुदा के डर से आज़ाद नहीं होता और काफ़िर के लिए दुनिया इसलिए जन्नत है कि वह आख़िरत को और अल्लाह व रसूल के हुक्मों को नहीं मानता। बेफिक्री से जो दिल में आता है, करता है। मज़े उड़ाता है। जिस तरह भी दुनिया का माल मिले हासिल करता है। न मौत की सख़्ती का डर न क़ब्र के अज़ाब का डर। न आख़िरत के हिसाबो-किताब का डर। न दोज़ख़ में जलने का डर।

## तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त खुला है।

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

बेशक अल्लाहतआला रात को अपनी (ख़ास) रहमत का हाथ फैलाता है कि दिन में बुरा काम करने वाला तौबा कर ले और दिन में अपनी रहमत का हाथ फैलाता है कि रात को बुरा काम करने वाला तौबा कर ले। यहाँ तक कि सूरज मशरिक़ से निकले। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा**— मतलब यह है कि जब तक सूरज मशरिक़ की तरफ़ से निकले उस वक़्त तक तौबा का दरवाज़ा हर वक़्त दिन-रात में खुला रहता है कि जब किसी बन्दे का दिल चाहे, तौबा कर ले और अल्लाह व रसूल की ताबेदारी में लग जावे। और जब सूरज मग़रिब की तरफ़ से निकलेगा तो फिर तौबा का दरवाज़ा बन्द हो जायेगा फिर तौबा हर्गिज़ क़बूल न होगी। याद रखो, तौबा करने से और अल्लाह तआला से माफ़ी माँगने से गुनाह माफ़ हो जाते हैं।

## दुनिया की तकलीफों से गुनाह माफ़ हो जाते हैं

इरशाद फ़रमाया हुज़ूरे अक़दस (स०) ने कि—

ऐसा कोई मुसलमान नहीं कि जिसको कुछ रंज व तकलीफ़ न पहुँचे। बीमारी से या किसी और वजह से। मगर अल्लाहतआला उस रंज और तकलीफ़ के बदले उसके गुनाह झाड़ डालता है। जैसे कि दरख़्त अपने पत्ते झाड़ देता है। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** यानी हर दुःख और तकलीफ़ के बदले अल्लाहतआला मुसलमान के गुनाह माफ़ कर देता हैं जबकि वह तकलीफ़ पर सब्र करे। अल्लाहतआला की शिकायत न करे। इसके लिए मुसलमानों को चाहिए कि तकलीफ़ में ऐसा परेशान न हों कि अल्लाह की शिकायत करने लगें और नाम-ए-आमाल में बेसब्री लिखी जावे, बल्कि तकलीफ़ को अल्लाह की रहमत समझे कि तकलीफ़ से गुनाह माफ़ हो जाते हैं। दर्जे बढ़ते हैं। अल्लाह की मारफ़त बढ़ती है। तकब्बुर और ग़रूर टूट जाता है। ऐशो आराम में आदमी खुदा को भूल जाता है। बड़ाई में इतराता है। अगर तकलीफ़ रहमत न होती तो अल्लाहतआला अपने नबियों और वलियों को ज़र्रा भर भी तकलीफ़ न देता।

तुझ पे जो आये मुसीबत सब्र कर और कर ख़याल,
सख्तियाँ क्या-क्या हुई हैं अम्बिया के वास्ते।

## कोशिश करने से बुरी आदत बदल जाती है

बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

मेरे पास जो माल होगा, मैं तुमसे छुपा कर जमा करके नहीं रखूँगा। और जो आदमी अपने को सवाल करने से और बुरे कामों से बचावे और परहेज़गारी अख़्तियार करे तो अल्लाहतआला उसको परहेज़गार बना देगा और जो दुनिया से बेपरवाही का इरादा करेगा तो अल्लाहतआला उसके दिल को दुनिया के माल से बेपरवाह कर देगा। और जो आदमी आफ़त और बलाओं में हिम्मत से और मज़बूती से सब्र अख़्तियार करेगा तो अल्लाहतआला उसको सच्चा और पूरा साबिर बना देगा। और सब्र से बढ़कर और कोई अच्छी नैमत क्या हो सकती है?

**फ़ायदा—** कुछ अन्सारी सहाबा ने हज़ूर (स०) से माल माँगा था। आपने दे दिया। फिर माँगा, फिर दे दिया। जब आपके पास कुछ बाक़ी न रहा। उस वक़्त यह फ़रमाया कि मैं तुमसे माल छुपा कर न रखूँगा। इस हदीस शरीफ़ में माँगने और सवाल करने की बुराई मालूम हुई। क्योंकि हज़ूर ने यह भी फ़रमाया है कि अगर कोई आदमी माँगने का पेशा अख़्तियार कर ले तो उसके लिए माँगने का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। चाहे जितना माँगे उसका पेट नहीं भरेगा। और जो लोगों से न माँगे तो अल्लाहतआला उसके लिए माँगने का दरवाज़ा बन्द कर देता है और ग़ैब से उसको रिज़्क़ पहुँचाता है और लोगों से बेपरवाह कर देता हैं। इसी तरह जो शख़्स मज़बूत इरादा करके तौबा करे और यह चाहे कि मेरी बुरी आदतें बदल जायें और खूब हिम्मत और कोशिश करे तो इन्शाअल्लाहतआला

उसकी बुरी आदत बदल जायेगी। हज़ार हा बन्दे तौबा करके और मेहनत व हिम्मत से अल्लाहतआला के प्यारे बन्दे बन गये।

हुज़ूर (स०) ने इस हदीस शरीफ़ में नफ़्स के सँवारने का तरीक़ा भी बतला दिया कि हिम्मत और कोशिश करने से नफ़्स सँवर जाता है। अगर कोई सँवारने का इरादा ही न करे और मेहनत ही न उठाये तो उसको क्या हासिल हो सकता है। बस ऐ अल्लाह के बन्दो! अपने को सँवारो और किसी कामिल पीर का दामन पकड़ो और उससे अपनी इस्लाह कराओ—

देख ले अच्छा-सा रहबर ऐ अज़ीज़,
गर तुझे हो कुछ भी अक़लो तमीज़।

उसकी ख़िदमत कर बजानो दिल क़बूल,
फ़ैज़ हक़ कर उसके सीने से हसूल।

बेकिये ख़िदमत कोई कुछ पाता नहीं,
ख़िदमती महरूम कभी रहता नहीं।

जिसने की ख़िदमत हुआ मख़दूम वह,
की ख़ुदी जिसने हुआ महरूम वह।

# दुनिया के कारोबार छोड़ने की बुज़ुर्गी

रहमते आलम (स०) फ़रमाते हैं—

अल्लाहतआला ने फ़रमाया, ऐ आदम के बेटे! तू मेरी इबादत के लिए फ़ारिग़ हो जा। मैं तेरे दिल को बेपरवाही से भर दूँगा और तेरी मोहताजी को रोक दूँगा और अगर तू ऐसा नहीं करेगा तो तेरे दोनों हाथों को दुनिया के तआल्लुक़ात से भर दूँगा और तेरी मोहताजी को बढ़ा दूँगा।

**फ़ायदा—** बुज़ुर्गों का अकसर यही तरीक़ा रहा है कि दुनिया के कारोबार को बिल्कुल छोड़ दिया है जिस पर बाज़ बेसमझ लोग ऐतराज़ करते हैं कि हाथ-पाँव तोड़ कर बैठ गये। इस हदीस शरीफ़ से साफ़ मालूम होता है कि यह बहुत बड़ी बुज़ुर्गी का अमल है। जिस पर बहुत बड़े दर्जे के बुज़ुर्ग अमल करते हैं कि वह अल्लाह तआला की याद में और दीन की ख़िदमत में लगे रहते हैं। मगर यह तरीक़ा हर किसी के लिए दुरुस्त नहीं। यह तरीक़ा उन्हीं बुज़ुर्गों के वास्ते है जो साबिरो शाकिर हों। परेशानी से परेशान न हों और जो बहरूपिये दुनिया कमाने के लिए और बेसमझ लोगों को लूटने के लिए कारोबार, मेहनत-मज़दूरी छोड़कर बुज़ुर्गों की-सी सूरत बना कर बैठे हैं, वह डाकू हैं और वे पीर और बै

सनद लोग हैं। ऐसे पीरजियों और साईनियो से बचना चाहिए।

## ज़ोहद व तवक्कुल निशान-ए-औलिया है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

ज़ोहद यह नहीं यानी दुनिया को छोड़ना कि हलाल चीज़ों को अपने ऊपर हराम कर लिया जाये और न यह कि माल को उड़ा दिया जाये। बल्कि ज़ोहद यह है कि जो चीज़ें अल्लाहतआला के कब्ज़े में हैं, उस पर तुम्हारा भरोसा ज़्यादा हो, बनिस्बत उन चीज़ों के जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं और असल ज़ोहद यह है कि—

"तुम पर जब कोई आफ़त आये तो तुमको उसके सवाब से ज़्यादा शौक़ हो, यहाँ तक कि वह आफ़त और सख़्ती बाक़ी न रहे और ऐसा ज़ोहद और तवक्कुल निशाने औलिया हैं।" (तिरमिज़ी)

## सब्र करने वाला बहादुर और आरिफ है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

"दुनिया मोमिन के लिए क़ैदख़ाना है।"

**फ़ायदा—** फिर क़ैदी के कैदख़ाने में आराम कहाँ। कभी आराम नहीं मिल सकता अलबत्ता मोमिन साबिर के चेहरे पर आराम और ख़ुशी की निशानियाँ होंगी और दिल में रंजो ग़म भरा हुआ होगा। ज़ाहिर में ख़ुश नज़र आयेगा लेकिन बातिन में बलायें और सख़्तियाँ उसके टुकड़े कर रहीं होंगी। गोया कपड़ों के नीचे उसके ज़ख़्मों पर पट्टियाँ बंधी हुई होंगी और वह अपने ज़ख़्मों को ख़न्दा पेशानी से छुपाये रखता है और उसकी इस हालत पर उसका रब फ़ख़्र के साथ फ़रिश्तों से फ़रमाता है कि देखो मेरे बन्दे की तरफ़ कि कितना सब्र करने वाला। बस ऐसा आदमी अल्लाहतआला के मुल्क का बहादुर है, साबिर है, आरिफ़ कामिल है। आरिफ़ ही बलाओं पर सब्र किया करता है और अल्लाहतआला की भेजी हुई बलाओं पर और हुक्मों पर जो कोई जितना सब्र करेगा वह उसी क़दर अल्लाह तआला का महबूब और मक़बूल बन जायेगा। (अज़ हज़रत शाह अब्दुल क़ादिर जिलानी (रह०)

## इल्म-ए-लुद्दनी व अब्दाल व औताद-अक़ताब किसे कहते हैं?

इन्सानों में बाज़ लोग ऐसे भी होते हैं कि उनकी रूह इल्म व मारफ़ते ख़ुदावन्दी के लिए एक आईना-ए-पुरजिला होती है। उस वक़्त उन पर बिला

तवस्सुत किसी के आलमुलग़ैब के बाज़ असरार मालूम और इलक़ा होते हैं और इसी को इल्म-ए-लुदन्नी कहते हैं। जैसा कि हज़रत ख़िज्र (अ० स०) को इल्म-ए-लुदन्नी दिया गया था और वह लमकियत ग़ालिब आ जाने की वजह से रज्जालुलग़ैब और मलायेका में मिल गये थे। इसलिए नज़र से ग़ायब हो जाना और हज़ारों कोस दम मारने में चले जाना। समुंदरों से पार उतर जाना, उनके नज़दीक कुछ मुश्किल नहीं था। हज़रत मूसा (अ० स०) ने दिखला दिया कि हमारे बाज़ बन्दे ऐसे भी होते हैं कि जो फ़रिश्तों की तरह जो कुछ करते हैं, हमारे हुक्म से करते हैं। गो ज़ाहिर में उनके काम किसी भेद की वजह से किसी की समझ में न आवें। इसीलिए ख़िज्र (अ० स०) ने हज़रत मूसा (अ० स०) से कहा था कि तुम मेरे साथ न रह सकोगे। मुझे और इल्म दिया गया है और आपको और इल्म दिया गया है।

खातिमुल अम्बिया हुज़ूर (स०) की उम्मत में भी खिज्र की-सी सिफ़त वाले लोग हर ज़माने में मौजूद रहते हैं, उनको अबदाल, औताद-अक़ताब कहते हैं। मगर जाहिल लोग, फ़क़ीर अफ़ीमी, भंग पीने वाले गुमराह और बेदीन होते हैं। अल्लाह की पनाह ! अब्दाल, औताद-अक़ताब बेशरह नही होते। वह कोई काम अल्लाह तआला के हुक्म के ख़िलाफ़ नहीं करते। यूँ समझो कि औलिया अल्लाह दो क़िस्म के होते हैं। एक वह जिनके मुताल्क़ि ख़िदमत, इरशाद व हिदायत व इस्लाहे क़लूब और तर्बियत नफ़ूस और तालीम व तरीक़ कुर्बे खुदाए ज़ुल्जलाल है। यह हज़रात एहले इरशाद कहलाते हैं और इनमें जो अपने ज़माने में अफ़ज़ल व अकमल हो और उसका फ़ैज़ बढ़ा हुआ हो उसको कुतबुलइरशाद कहते हैं और यह अम्बिया (अ० स०) के नायब होते हैं और उनका तरीक़ तरीक़े नबूवत होता है। दूसरी क़िस्म के औलियाओं के मुताल्क़ि ख़िदमत, इस्लाहे मआश और अमूर दीनविया और दफ़ा बल्लियात हैं कि अपनी हिम्मते बातनी से हक़ तआला के हुक्म से उन अमूर की दरुस्ती करते हैं। उन हज़रात को एहले तकवीन कहते हैं और उर्फ़ में एहले ख़िदमत कहते हैं और उनमें जो अफ़ज़ल व अकमल हैं और दूसरों पर हाकिम हैं वह कुतबुलतक्वीन कहलाते हैं और यह ज़ाहिर सूरत में शकिस्ता हाल और ज़लीलो खुवार रहते हैं। मगर ऐसे लोगों से न दीन का नफ़ा और न दुनिया का और यह दो क़िस्म के लोग होते हैं। एक मलाम्ती और दूसरे को क़लन्दरी कहते हैं। मलाम्ती फ़र्ज़ों के सिवा और सब नफ़ली इबादत को छुपकर करते हैं ताकि मामूली आदमी समझे जावें और क़लन्दरी वह हैं जो नफ़ली इबादत कम करें और दिल से यादे इलाही में मशग़ूल रहें। याद रखो जो आदमी शरह के ख़िलाफ़ हो वह पागल है, मजनून है। वह वली नहीं हो

सकता। (अज़्रतफ़सीर हक़्क़ानी व अज़्र तकशफ़ मुसन्निफ़ा हज़रत थानवी)

## अल्लाह वालो की ख़िदमत करने की बज़ुर्गी

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

तुम अपना खाना दीनदार और परहेज़गारो को खिलाया करो और उनको कपड़े पहनाया करो। जब तुम अपना खाना परहेज़गारों को खिलाओगे और उनको कपड़े पहनाओगे या उनको ख़र्च दोगे कि वह खुद अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ अपनी ख़ुराक और पोशाक का इन्तज़ाम कर लें तो तुम्हारे खाने की ताक़त और कपड़े पहनने की वजह से जो वह इबादत और अच्छे काम करेंगे तो तुम भी उसमें शरीक होंगे और तुमको भी सवाब मिला करेगा। क्योंकि तुमने उनको अल्लाहतआला की इबादत के लिए फ़ारिग़ कर दिया और वह रिज़्क़ के फ़िक्र से बच गये। और अगर तुमने अपना खाना किसी नाफ़रमान को खिलाया तो उसके बुरे कामों में तुम भी शरीक होंगे और तुमको भी अज़ाब होगा। क्योंकि तुमने खुदा की नाफ़रमानी करने के लिए उसकी मदद की। बस अल्लाह वालों की ख़िदमत बेहतरीन ख़िदमत है।

(अज़्रशाह अब्दुल क़ादिर जिलानी)

## जो ग़रीब लोग माँगते नहीं उनकी ख़िदमत मुक़द्दम है

रहमते आलम (स०) ने फ़रमाया कि—

ग़रीब वह नही जिसको एक छुवारा या दो छुवारे और एक लुक़मा या दो लुक़मे का लालच दर-बदर फिराये। ग़रीब तो असल में वह है जो हराम खाने से और सवाल करने से बचा रहे। अगर तुम चाहो तो इसका मतलब कुरआन में पढ़ लो कि ख़िदमत करने के लिए क़ाबिल वह लोग और वाक़ेई वह ग़रीब हैं जो लोगों से सवाल नही करते। लिपट कर नही माँगते कि बे लिए पीछा नही छोड़ते। (बुख़ारी व मुस्लिम)

फ़ायदा— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जो लोग सवाल नहीं करते उनकी ख़िदमत करने में ज़्यादा सवाब मिलता है। भीख माँगने वाले फ़क़ीरों से उनका हक़मुक़द्दम है। और माँगने वाले लोगों ने पेशा अख़्तियार कर रखा है। एक जगह न मिले तो दूसरी जगह से माँग लेंगे और एहले तवक्कुल जो लोगों से नही माँगते उनकी ख़िदमत मुक़द्दम है और उनकी ख़िदमत करने-से सवाब भी ज़्यादा मिलता है।

# लोगों को आराम पहुँचाने की बुज़ुर्गी

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

एक आदमी चला जा रहा था। रास्ते में उसने काँटे की टहनी पड़ी देखी तो उसने उसको रास्ते से अलग कर दिया। अल्लाहतआला ने इस अमल को पसन्द फ़रमाया और उस आदमी को बख़्श दिया। (बुखारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि लोगों को आराम और नफ़ा पहुँचाना अल्लाहतआला को बहुत पसन्द है और यह भी मालूम हुआ कि हल्का और छोटा-सा भी कोई नेक काम हक़तआला को खुश करने के लिए किया जावे तो बाज़ दफ़ा उसी की वजह से बख़्शीश हो जाती है।

# जानवरों पर भी रहम करना वाजिब है

रहमते आलम हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

क्या तू खुदा से नहीं डरता? इस जानवर ऊँट के बारे में कि जिसको खुदा ने तेरे अख़्तियार में दिया है। यह ऊँट मुझसे तेरी शिकायत करता है कि तू इसको भूखा रखता है। और मेहनत इससे ज़्यादा लेता है। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** हुज़ूर (स०) ने यह उस वक़्त फ़रमाया कि जब आप एक अन्सारी आदमी के बाग़ में तशरीफ़ ले गये। वहाँ एक ऊँट था। जब उस ऊँट ने आपको देखा तो वह रोने लगा और उसने आपको आवाज़ दी कि या रसूल अल्लाह (स०)! ज़रा मेरी ख़बर लीजिए। जब आपने ऊँट के आँसू बहते देखे तो आपने उसको प्यार किया और अपना हाथ मुबारक उस पर फेरा। फिर आपने दरियाफ़्त किया कि यह ऊँट किसका है? अन्सारी ने कहा मेरा है। यह हुज़ूर का मौजज़ा है कि जानवर भी आपको अल्लाह का रसूल जानते और आपसे कलाम करते थे।

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जानवरों पर भी रहम करना वाजिब है। उनको आराम न देना, भूखा-प्यासा रखना, ज़्यादा काम लेना, गुस्से में आकर बेदर्दी से ज़्यादा मारना-पीटना, बोझ ज़्यादा लादना वग़ैरा सब ज़ुल्म है। जो उन पर रहम नहीं करेगा ज़ुल्म की सज़ा पायेगा। दुनिया में भी ज़लील व ख़ुवार रहेगा। रिज़्क़ तंग हो जायेगा।

# मरने के बाद छोड़ा हुआ माल काम न आयेगा

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

तुममें ऐसा कौन है कि जो अपने वारिस का काम अपने माल से ज़्यादा प्यारा रखता हो। सहाबा ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! हम में से कोई ऐसा नहीं जो अपने माल से वारिस का माल ज़्यादा प्यारा समझता हो। आपने फ़रमाया बेशक माल तो वही काम आयेगा जो आगे भेज दिया यानी अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया और जो माल छोड़कर मर गया वह वारिसों का हो गया। (बुख़ारी)

**फ़ायदा—** अपना माल वही है जो अपने काम आवे और अपने काम वही माल आयेगा जो अल्लाह की राह में ख़र्च किया होगा। जो लोग अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते और जोड़-जोड़ रखते हैं, वह बेसमझ हैं। मरने के बाद उस माल को वारिस उड़ायेंगे और यह ख़ाली हाथ जायेगा।

# ख़ैरात, माल ख़र्च करने का ही नाम नहीं है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

हर रोज़ जब कि सूरज निकले तो आदमियों की हर एक हड्डी और जोड़ पर ख़ैरात है। जैसे इन्साफ़ करना, किसी की मदद करना, सवारी पर चढ़ा देना या किसी का असबाब सवारी रखवा देना वग़ैरा भी ख़ैरात है, और अच्छी बात से किसी का दिल खुश करना, कलमा सिखा देना भी सदक़ा और ख़ैरात है और जो क़दम नमाज़ के वास्ते चले वह भी ख़ैरात है और तकलीफ़ देने वाली चीज़ जैसे काँटा, हड्डी, पत्थर रास्ते से दूर कर देना भी ख़ैरात है। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** यानी हर रोज़ आदमी को अपने तमाम बदन के जोड़ों के बदले सदक़ा यानी ख़ैरात देना चाहिए। इसलिए कि हर रोज़ की ज़िन्दगी अता करना और तन्दरुस्त रखना यह अल्लाहतआला का बहुत बड़ा एहसान है। इसलिए बन्दों को चाहिए कि उसका शुक्र अदा करें। शुक्र करना और ख़ैरात देना माल ही ख़र्च करने का नाम नहीं है बल्कि लोगों को नफ़ा पहुँचाना वग़ैरा सब ख़ैरात में दाख़िल है।

# दो क़िस्म की हिजरत है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

अफ़ज़ल हिजरत करने वाला वह है जो छोड़ दे उन बातों को जो अल्लाह-

तआला ने मना फ़रमायी हैं। (बुखारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** हिजरत उसको कहते हैं कि मुसलमान काफ़िरों का मुल्क छोड़कर मुसलमानों के मुल्क में जाकर रहें। इसलिए हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया कि—

यह एक ज़ाहिरी हिजरत है, जिसमें वतन छूट जाता है और दूसरी जो बड़े दर्जे की बातिनी हिजरत है, वह यह है कि इन्सान अल्लाहतआला की नाफ़रमानियों से हिजरत करे यानी सब बुरे कामों को छोड़ दे।

## अल्लाहतआला का प्यारा बन्दा कैसे होता है?

इरशाद फ़रमाया रसूल (स०) ने कि—

अल्लाहतआला फ़रमाता है कि मेरा बन्दा नफ़ली इबादतों से हमेशा मेरा कुर्ब चाहता है। यहाँ तक कि मैं उसको चाहने लगता हूँ। फिर मैं उसके कान हो जाता हूँ जिनसे वह सुनता है और उसकी आँखें हो जाता हूँ जिनसे वह देखता है और उसके हाथ हो जाता हूँ जिनसे वह पकड़ता है और उसके पाँव हो जाता हूँ जिनसे वह चलता है। और अगर वह मुझसे कुछ माँगे तो मैं उसको देता हूँ और अगर वह मुझसे पनाह माँगता है तो मैं उसको पनाह देता हूँ। (बुखारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ में उस ख़ास मुक़ाम का बयान है, जिसको इल्म सलूक में यानी फ़क़ीरी या तरीक़त में फ़नाफ़ील्लाह और बक़ाबिल्लाह कहते हैं। यानी जब बन्दा अल्लाहतआला की ख़ूब इबादत करता है और बुरे कामों को छोड़ देता है तो वह अल्लाहतआला का प्यारा और मक़बूल बन्दा हो जाता है। फिर अल्लाह- तआला अपनी मेहरबानी से उसके कानों की और उसकी आँखों की और उसके हाथ-पाँव की हिफ़ाज़त करता है। बुरे कामों से बचाता है। इबादत और ताबेदारी करते-करते अल्लाहतआला की मुहब्बत और अज़मत उस बन्दे के दिल में बस जाती है और वह हर वक़्त अल्लाहतआला को राज़ी करने में लगा रहता है। फिर उस बन्दे से अल्लाहतआला की मर्ज़ी के ख़िलाफ़ कोई काम नहीं होता। आँख, कान, हाथ, पाँव, सब अल्लाहतआला के ताबेदार हो जाते हैं। इस हदीस शरीफ़ में यह अज़ीमुश्शान दर्जा हासिल करने का तरीक़ा बतलाया गया है कि नफ़ली इबादत की कसरत से अल्लाहतआला की मुहब्बत व मारफ़त बढ़ जाती है। अल्लाहतआला के बेशुमार बन्दो ने मुजाहदे किये और मेहनतें उठायीं और इस अज़ीमुश्शान मर्तबे को हासिल किया। मगर यह रुतबा बेमशक्क़त और मेहनत के और बिला कामिल पीर के हासिल नहीं हो सकता और यह समझने की बात है कि बग़ैर कामिल उस्ताद के कोई दुनिया का फ़न या हुनर भी हासिल नहीं

हो सकता। बस अल्लाह पाक से मुहब्बत और ताल्लुक़ पैदा करने का तरीक़ा यही है कि कामिल पीर का दामन पकड़ो और अपने आपको उसके सपुर्द कर दो। जो वह बतलाये उस पर चलो।

बेइनायात हक़ व ख़ासाने हक़,
गर मलक बाशद सियाह हस्तश वरक़।

यानी बग़ैर ख़ुदा की मेहरबानी और उसके प्यारे बन्दों की मेहरबानी के अगर कोई फ़रिश्ता भी हो जावे तब भी उसका आमालनामा सियाह होगा।

बे रफ़ीक़े हर कि शुद दर राहे इश्क़,
उम्र बगुज़श्त वल्लाह आगाहे इश्क़।

यानी अल्लाहतआला की मुहब्बत के रास्ते पर जिसने बग़ैर रहबर और रफ़ीक़ के क़दम रखा उसकी तमाम उम्र गुज़र गयी मगर अल्लाह पाक की रज़ा हासिल न कर सका।

# अमलों का ऐतबार नीयतों पर है

**इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लह (स०) ने कि—**

अमलों का ऐतबार नीयतों पर है और हर एक आदमी के लिए वही है जो उसने नियत की हो। बस जिसकी हिजरत अल्लाह व रसूल के लिए हुई तो उसे हिजरत का सवाब मिलेगा और जिसकी हिजरत दुनिया के लिए हुई वह उसको पायेगा या किसी औरत के लिए कि उससे निकाह करूँगा, तो उसकी यह हिजरत उसी के लिए हुई जिसके लिए उसने हिजरत की नीयत की। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** एक आदमी ने एक औरत के लिए हिजरत की जिसका नाम उम्मे क़ैस था। लोगों ने यह हाल हुज़ूर (स०) से अर्ज़ किया। तब आपने यह फ़रमाया कि ऐसी हिजरत का कोई सवाब नहीं, कि नियत ख़ालिस नहीं, नीयत दिल के इरादे का नाम है। हिजरत दीन के अन्दर बड़े सवाब की इबादत है। मगर ख़ालिस नियत के बग़ैर बेसवाब है। इसी तरह इल्म और दर्वेशी, ख़ैर, ख़ैरात वग़ैरा हर क़िस्म की इबादत और नेक कामों के बारे में समझ लिया जाये। नियत सिर्फ़ अल्लाहतआला की रज़ा के लिए हो तो सवाब मिलेगा वर्ना जान है, उसमें रूह नहीं है। नीयत अगर अल्लाहतआला की रज़ा के लिए हो तो इतनी बड़ी नैमत है कि छोटे-छोटे अमलों पर भी बहुत सवाब मिल जाता है। जैसे खाना इस नियत से खावे कि इबादत करने की क़ुव्वत होगी और कपड़ा इसलिए पहने कि नमाज़ दरुस्त होगी या अपनी बीवी से हमबिस्तर इसलिए हो कि औलाद नेक

होगी और बदकारी से बचूँगा। ग़रज़ कि जो काम करे वह अल्लाह के वास्ते करे कि अल्लाह ख़ुश होगा। बस ख़ालिस नीयत इसी का नाम है। फिर इन्शाअल्लाहतआला हमारा खाना, पीना, चलना-फिरना वग़ैरा सब इबादत में शुमार होगा और सवाबों से मालामाल होंगे।

## जहाद करने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

बेशक जन्नत के दरवाज़े तलवारों के साये के नीचे हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ में शहीदों को ख़ुशख़बरी है कि जो दीन की ताक़त बढ़ाने के लिए और अल्लाहतआला को राज़ी करने के लिए काफ़िरों से जंग करते हैं और अपनी जानों को क़ुर्बान करते हैं। बेशक वह लोग जन्नती हैं।

और जो शख़्स अल्लाहतआला की राह में लड़ने वाले का सामान दरुस्त कर दे वह भी अल्लाह की राह में काफ़िरों से लड़ने वाला है और जो अल्लाहतआला की राह में लड़ने वाले के पीठ पीछे उसके घरवालों की यानी उसके बाल बच्चों की ख़बर ले, ख़िदमत करे तो वह भी जिहाद ही करने वाला है और उसको भी जिहाद करने वाले के बराबर सवाब मिलेगा। (बुख़ारी शरीफ़)

## नेक काम बतलाने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जो नेक बात किसी को बतलायेगा तो उसके करने वाले के बराबर सवाब मिलेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** मसलन एक आदमी ने किसी को नमाज़ सिखायी तो जब तक वह सीखने वाला नमाज़ पढ़ेगा तो जितना सवाब उस पढ़ने वाले को मिलेगा उतना ही बतलाने वाले को मिलेगा। उतना ही सिफ़ारिश करने वाले को मिलेगा। इसी तरह सब अच्छे कामों में समझ लिया जाये और इसी तरह बुरे कामों के बतलाने का अज़ाब समझ लिया जाये।

## तंदरुस्ती बड़ी नैमत है

रहमते आलम हज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

दो नैमतें ऐसी हैं जिनमें बहुत से लोग नुक़सान उठाते हैं। एक तंदरुस्ती और दूसरे रिज़्क़ की कुशादगी। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा**— इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि तंदरुस्ती और रिज़्क़ की फ़राग़ती ऐसी बड़ी नैमत है कि अगर आदमी चाहे तो इबादत और अच्छे काम खूब कर सकता है। मगर अक्सर लोग ऐसे ही हैं जो इस नैमत की क़द्र नहीं करते और दिन रात फ़िज़ूल बेकार बातों में अपनी ज़िन्दगी बर्बाद करते हैं।

कुछ न अपने रब की याद की,
उम्र अपनी मुफ्त में बर्बाद की।

## बन्दा हर वक़्त अल्लाह की इबादत का मोहताज है

शहंशाहे दो आलम (स०) ने फ़रमाया कि—

क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ। यह हुज़ूर ने जब फ़रमाया जबकि आपके दोस्तों ने दरियाफ़्त किया कि रसूल अल्लाह ! आप इबादत में इतनी मेहनत क्यों उठाते हैं। जबकि अल्लाहतआला ने आपको मासूम और बेगुनाह कर दिया है।

हुज़ूर सरापानूर (स०) रात को बहुत जागते थे और तहज्जुद की नमाज़ में कुरआन-ए-करीम बहुत पढ़ते थे। यहाँ तक कि आपके पाँव मुबारक पर वरम आ जाता। तब अस्हाबों ने अर्ज़ किया कि आप इतनी तकलीफ़ और मेहनत क्यों करते हैं? आपने फ़रमाया कि मेरी यह इबादत गुनाहों के बख़्शवाने के लिए नहीं है। मैं तो अपने रब की मेहरबानियों का और नैमतों का शुक्र अदा करता हूँ कि मेरे रब ने मुझ पर बेशुमार मेहरबानियाँ फ़रमायी हैं। और मुझको रसूलों का सरदार और अपना महबूब बनाया है तो क्या मैं शुक्रगुज़ार बन्दा न बनूँ? (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा**— इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि बन्दा हर वक़्त अल्लाहतआला की इबादत का मोहताज है। बाज़ जाहिल साईं फ़क़ीर दीन के दुश्मन कहा करते हैं कि जब आदमी कामिल हो गया और खुदा से मिल गया तो उसको इबादत की क्या ज़रूरत है? खूब याद रखो यह लोग अल्लाह व रसूल के दुश्मन हैं। समझने की बात है कि रसूलों के सरदार महबूबे किरदिगार (स०) से और आपके

अस्हाबेकराम से ज़्यादा अल्लाह की पनाह कौन मरदूद अल्लाहतआला से मिला हुआ होगा। अल्लाहतआला तो यूँ फ़रमाते हैं कि—

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ط

यानी तुम अपने रब की इबादत करते रहो। यहाँ तक कि तुमको मौत आ जाये।

तू बराये बन्दगी है याद रख,
फर्ज़ तुझ पर बन्दगी है याद रख।

वर्ना फिर शर्मिंदगी है याद रख,
चन्द रोज़ा ज़िन्दगी है याद रख।

यहाँ से है तुझको जाना एक दिन,
कब्र में होगा ठिकाना एक दिन।

मुँह खुदा को है दिखाना एक दिन,
अब न ग़फ़लत में गँवाना एक दिन।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## जो अमल हमेशा हो वह ख़ुदा को पसन्द है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

अल्लाहतआला के नज़दीक सब अमलों से ज़्यादा प्यारा वह अमल है जो हमेशा होता रहे। चाहे थोड़ा ही हो। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** मतलब यह है कि अल्लाहतआला उस अच्छे अमल और इबादत को ज़्यादा पसन्द करता है जो हमेशा अदा होता रहे। क्योंकि अमल करने वाला खुदा की याद से ग़ाफ़िल नहीं है और हमेशा अमल जारी रखने से चाहे थोड़ा ही हो दिल में नूर पैदा हो जाता है और कभी कर लिया और कभी छोड़ दिया, इससे दिल में नूर पैदा नहीं होता। जैसे बिजली चमकने से उस वक़्त तो रोशनी हो जाती है मगर फिर अँधेरा हो जाता है। यही वजह है कि अल्लाहतआला के प्यारे बन्दों ने जब कोई नफ़ली इबादत अल्लाहतआला की याद के लिए शुरू की तो उसको हमेशा करते रहे तो अल्लाहतआला ने उनको अपना प्यारा बना लिया। याद रखो, हमेशा अमल करने में यह बहुत बड़ा फ़ायदा है कि उसकी आदत हो जाती है, फिर वह छूटता नहीं। जैसे किसी को अफ़ीम खाने की, हुक्क़ा पीने

वग़ैरा की आदत हो जाती है और वह छूटती नहीं। इसी तरह अल्लाहतआला को याद करने की जब आदत हो जाती है तो वह छूटती नहीं। इसलिए नबी-ए-करीम (स०) ने हम गुलामों को अल्लाहतआला के याद करने की यह तदबीर बतलायी कि हमेशा करोगे तो अल्लाहतआला के प्यारे बन जाओगे।

कैसी-कैसी की तदाबीर-ए-हुस्न
बुत परस्तों को बनाया बुतशिकन।

## काने दज्जाल का फ़ितना

काना दज्जाल यहूदी लोगों में से होगा। रंग उसका गोरा और क़द लम्बा और आँख से काना होगा। पहले वह नबूवत का दावा करेगा कि मैं ईसा मसीह हूँ। उसके माथे पर काना दज्जाल लिखा हुआ होगा। उस ज़माने का हर एक आदमी उस लिखे हुए को पढ़ लेगा। मुसलमान उसको पहचान लेंगे कि यह काना दज्जाल है और काफ़िर लोग उसके साथ हो जायेंगे। फिर वह ख़ुदाई का दावा करेगा और अजीब-अजीब करतब लोगों को दिखायेगा। दोज़ख़ और जन्नत बनाकर अपने साथ रखेगा। आसमान से पानी बरसायेगा। बेमौसम दरख़्तों से फल पैदा करेगा। जो गाय, बकरी वग़ैरा दूध न देती होगी, उसके हुक्म से दूध देने लगेंगी। ज़मीन के ख़ज़ाने उसके साथ होंगे। मुर्दों को ज़िन्दा करके दिखलायेगा। बस ऐसी-ऐसी बातें देखकर लोग उसको ख़ुदा समझेंगे। तमाम मुल्कों में फिरेगा और लोगों को बेईमान करेगा। यमन वग़ैरा मुल्कों में जायेगा। फिर मक्का शरीफ़ में पहुँचेगा। वहाँ फ़रिश्तों का पहरा देखकर बेहवास होकर भाग निकलेगा और मदीना शरीफ़ तक जायेगा। उस वक़्त मदीना शरीफ़ के सात दरवाज़े होंगे। हर दरवाज़े पर दो फ़रिश्ते नंगी तलवार लिये खड़े होंगे। उनको देखकर डरेगा और शहर में दाख़िल न हो सकेगा। दो रोज़ मदीना शरीफ़ से बाहर रहेगा और शहर में तीन दफ़ा ज़लज़ला आयेगा। मुर्तिद और मुनाफ़िक़ और बेईमान लोग ख़ौफ़ के सबब शहर से निकल कर उसके पास आ जायेंगे और शहर बेईमान लोगों के निकलने से पाक हो जायेगा। वह वक़्त मुसलमानों पर बड़ी मुसीबत का होगा। एक बज़ुर्ग उसके पास जाकर कहेंगे—

तुझे मैं जानता हूँ ऐ ख़बीस,
तूही है दज्जाल अज़ रूए हदीस।

हाल तेरी सूरतो सीरत का कुल,
हू-ब-हू फ़रमा गये ख़त्मुलरसूल।

कि वह होगा बानिए ज़ुल्मो फ़िसाद,
सरकशो गुमराह भी हद से ज़्यादा।

यह सच्ची बात सुनकर वह बेईमान गुस्से में आगबबूला हो जायेगा और आरा मँगवाकर उस बुज़ुर्ग को चिरवायेगा। फिर अपने मानने वालों को दिखाने के लिए उनको ज़िन्दा करेगा और उन बुज़ुर्ग से कहेगा कि मैं मारता हूँ, ज़िन्दा करता हूँ। अब भी मुझको खुदा मानते हो या नहीं। वह बुज़ुर्ग कहेंगे, तू झूठा है, बेईमान है, काना दज्जाल है और यह इस्तिदराज है जो खुदाए वहदहूलाशरीक का तुझ पर अज़ाब है। उसी सच्चे खुदा ने तुझको यह क़ुदरत दे रखी है और वह ईमानदार और बेईमान का इम्तिहान ले रहा है। फिर दज्जाल गुस्से में आकर उनपर तलवार चलायेगा। मगर तलवार का उनपर कुछ असर न होगा। फिर उनको आग में डलवायेगा। आग भी उनको न जला सकेगी। फिर वह अपने साथियों के सामने ज़लील होगा और परेशान होकर मुल्क शाम में दमिश्क़ के क़रीब पहुँचेगा और अल्लाहतआला ने उसको जो क़ुदरत दे रखी थी, वह छीन ली जायेगी। उस वक़्त हज़रत इमाम मेहंदी (अ० स०) मुसलमानों का एक बहुत बड़ा लश्कर जमा करेंगे और हज़रत ईसा (अ० स०) से फ़रमायेंगे कि यह लश्कर लीजिए और दुनिया से बेईमान लोगों का नाम व निशान मिटाइए और दीने मौहम्मदी को रोशन कीजिए। आप फ़रमायेंगे, यह क़ाम आप ही का है। मैं तो आसमान से इसलिए आया हूँ कि दज्जाल को क़त्ल करूँ क्योंकि वह साहिब ईस्तिदराज है और मैं साहिबे मौजज़ा हूँ। मेरा और उसका जोड़ है और उस ज़ालिम की मौत मेरे हाथ है। मुझे एक घोड़ा और एक नेज़ा दीजिए कि उसको क़त्ल करने जाऊँ। बस आप घोड़ा और नेज़ा लेकर दज्जाल का पीछा करेंगे। वह आपको देखकर भागेगा। यहाँ तक कि मुल्क-ए-शाम में एक पहाड़ के सामने गिर जायेगा और आप उस काफ़िर, बेईमान, झूठे खुदा को नेज़े से मार डालेंगे और उसके साथियों को कहेंगे कि देखो वह मुसलमानों का दुश्मन, नबूवत और खुदाई का दावा करने वाला फ़िसादी कैसी ज़िल्लत के साथ दुनिया से ख़त्म कर दिया गया। फिर इस्लामी बहादुर उसकी फ़ौजों को, उसके साथियों को क़त्ल करेंगे। उस वक़्त अल्लाहतआला की क़ुदरत से यह हाल होगा कि अगर कोई बेईमान किसी दरख़्त की आड़ में भी छुपा होगा तो वह दरख़्त पुकार कर कहेगा, ऐ मुसलमान बहादुर! इस खुदा के दुश्मन को क़त्ल कर। ग़रज़ कि दज्जाल और उसकी जमाअत के सब आदमी मर्द व औरत क़त्ल कर दिये जायेंगे। हज़रत ईसा और हज़रत इमाम मेहंदी (अ० स०) मुल्को में फिरेंगे। जो मुसलमान दज्जाल के और उसकी जमाअत के सताये हुए होंगे, उनको जन्नत की खुशख़बरी देंगे।

उस वक़्त तमाम रूए ज़मीन पर मुसलमान ही मुसलमान होंगे। काफ़िर लोगों का नामोनिशान मिट जायेगा। सात या आठ बरस हज़रत ईमाम मेहंदी (अ० स०) बड़े इन्साफ़ के साथ बादशाहत करेंगे। फिर उनकी वफ़ात हो जायेगी और हज़रत ईसा (अ० स०) आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़ायेंगे। फिर उनको दफ़न कर दिया जायेगा। आपकी उम्र शरीफ़ अड़तालीस बरस की होगी। फिर आपके बाद हज़रत ईसा का दौर पुरअमन होगा। आप इमामुलअम्बिया हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की शरीयत पर अमल करेंगे। फिर आप भी वफ़ात पा जायेंगे और मुसलमान आपके जनाज़े की नमाज़ पढ़कर आपको हुज़ूर (स०) के रोज़ाए अक़दस में दफ़न कर देंगे।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाईयो! देखो हुज़ूर (स०) ने दज्जाल के फितने का सब हाल पहले ही बतला दिया कि मेरी शरीयत और मेरे तरीक़े को मिटाने वाले दज्जाल आते ही रहेंगे और सबके आख़िर में सबसे बड़ा काना दज्जाल आयेगा। हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों की हकूमत आने के बाद बहुत से लोगों ने नबूवत का दावा कर दिया। दज्जाल की तरह बहुत से बेइल्म और बेसमझ और लालची मुसलमानों को अपने जाल में फँसा लिया। ऐसे लोगों से बचना चाहिए और अपने ईमान की हिफ़ाज़त करनी चाहिए और काने दज्जाल के क़िस्से से सबक़ हासिल करना चाहिए कि दीन के दुश्मनों और गुमराह लोगों की मौत बुरी तरह आती है। रूहसियाह और ज़लीलो ख़ुवार होकर मरते हैं। अल्लाह की पनाह।

## बहत्तर फ़िरक़े होने की वजह

मुसलमानों में एक मर्ज़ यह भी तूफ़ान की तरह फैल रहा है कि लोगों को बुज़ुर्गों की पहचान नहीं रही। हर किसी के मौतक़िद हो जाते हैं। यही वजह है कि दिन-ब-दिन फ़िरक़े होते जाते हैं। कोई एहले क़ुर्आन है। कोई एहले हदीस है। किसी ने कोई तरीक़ा अख़्तियार किया और किसी ने कोई राह निकाली। किसी ने पंजाब में नबूवत का ही दावा कर दिया। ईमान गया मगर नबूवत में और बुज़ुर्गी में फ़र्क़ न आया। एक दफ़ा बुज़ुर्गी की रजिस्ट्री हो जावे फिर वह ऐसी मज़बूत हो जाती है, जैसे बीबी तमीज़ा का वज़ू मशहूर है कि बीबी तमीज़ा एक बदकार औरत थी। एक बुज़ुर्ग ने उसको नसीहत की और वज़ू कराके नमाज़ पढ़वायी और ताकीद कर दी कि हमेशा इसी तरह पढ़ते रहना। वह कहकर चले गये। कुछ दिनों के बाद वह फिर उनको मिली। उन्होंने पूछा कि बी नमाज़ पढ़ा करती हो? उसने कहा, जी हाँ पढ़ा करती हूँ। उन्होंने कहा, वज़ू भी किया करती हो? कहा वज़ू तो उस रोज़ आपने करा ही दिया था। बस जैसे उसका वज़ू

ऐसा पुख़्ता था कि न बदकारी से टूटा और न पेशाब पाख़ाना करने से टूटा। इसी तरह आजकल की बुज़ुर्गी भी ऐसी पुख़्ता हो जाती है कि उसमें किसी तरह का फ़र्क़ ही नहीं आता। चाहे बुज़ुर्ग साहब नमाज़-रोज़े के पाबन्द भी न हों और कैसे ही बदअमल और बदअक़ीदा हों, तब भी बुज़ुर्ग हैं। बस एक जहालत और तूफ़ान बेतमीज़ी है कि उसने अक़्ल जैसी नैमत को ख़राब कर रखा है और ऐसे बदअमलों को वली और नबी समझते हैं। अफ़सोस है कि मुसलमानों की कैसी हालत बिगड़ गयी है कि ईमान और क़ुरआन व हदीस की भी परवाह नहीं करते और ऐसे बदअक़ीदा लोगों में बाज़ ऐसे भी हैं जो मुन्शी, फ़ाज़िल और मौलवी फ़ाज़िल वग़ैरा इम्तिहान पास किये हुए हैं। यूँ तो जर्मन और बैरूत वग़ैरा के बहुत से ईसाई अरबी के अलिम हैं मगर क्या वह पेशवा-ए-दीन हैं। हरगिज़ नहीं। दावा करने से कोई शख़्स आलिम और बुज़ुर्ग नहीं हो सकता। आलिम और बुज़ुर्ग वह है जिसको आलिम और बुज़ुर्ग लोग पसन्द कर लें। बड़े ही ग़ज़ब की बात है कि अरबी की दो-चार किताबें पढ़कर यह लोग क़ुर्आन व हदीस में दख़ल दें और अपना मतलब बनाने की मायने बदलें। इसी वजह से तो बहत्तर फ़िरक़े हो गये हैं कि क़ुर्आन व हदीस में हर जगह अपनी राय और ख़ुवाहिश को ठूँसने लगते हैं। इसका नाम हक़परस्ती नहीं कि जो अपनी समझ में आया कह दिया और जो चाहा कर लिया। अगर दीन ऐसे लोगों के हाथों में होता तो ख़ुदा जाने क्या कुछ कतर-बौंत करते। मगर ख़ुदा ने अपने दीन की हिफ़ाज़त ख़ुद की है। और मायने बदल लेने से दीन को कुछ नुक़सान न होगा। अगर सारी दुनिया नाहक़ पर जमा हो जाये तब भी दीन और शरीयते मौहम्मदी को नहीं बदल सकती वर्ना दीन के दुश्मनों ने दीन के मिटाने में कोई कमी नहीं रखी। और शरीयत गोया ज़ुबाने हाल से यह कहती है कि—

"तुमने मेरे मिटाने में और बिगाड़ने में कसर नहीं छोड़ी मगर मेरी क़िस्मत ने तुम्हारे हाथों मिटना और बिगड़ना नहीं था।"

याद रखो! ऐ शरीयते मौहम्मदी के मिटाने वालो! शरीयत हर हालत में क़यामत तक जारी रहेगी। किसी के मिटाने से न मिटी और न मिटेगी—

आज तक नक़्शे शरीयत न मिटा पर न मिटा,<br>
मिट गये आप ही जितने थे मिटाने वाले।

## बुज़ुर्गाने दीन को ज़लील मत समझो

आजकल मुसलमानों में यह बीमारी ज़ोरों पर है कि बुज़ुर्गाने दीन को ज़लील समझने लगे हैं और इसीलिए उनके पास जाना छोड़ दिया है। क्योंकि

उनकी आमदनी कम है। आराम का सामान उनके पास नहीं। नौकर-चाकर नहीं। बढ़िया लिबास नहीं। कुर्सियाँ और क़ीमती फ़र्श नहीं। सिर्फ़ दो-चार आने की चटाई है और वह भी मैली-कुचैली होती है। कपड़े भी मैले-कुचैले, मोट-झोटे पेबन्द लगे होते हैं। यह देखकर अपने को बड़ा और उनको छोटा समझते हैं। याद रखो, इसी बड़ाई की वजह से शैतान बर्बाद हुआ। जिसके बर्बाद और ख़राब होने से आज तुम बर्बाद और ख़राब हो रहे हो। उसने अपनी ज़ाहिरी शानोशौकत देखकर ही तो कहा था कि मैं बड़ा हूँ, आग से पैदा किया गया हूँ और आदम तो सड़ी हुई मिट्टी से पैदा हुए हैं और मेरे मुक़ाबले में ज़लील हैं। इसीलिए मरदूद बारगाहे इलाही हुआ और लानत का तौक़ गले में पड़ा।

साहिबो! इस ज़ाहिरी टीप-टाप ने तुम्हें राह से बेराह कर दिया। ज़ाहिरी शानो शौकत को मत देखो। बुज़ुर्गों में, आलिमों में दीनदारी और ख़ुदापरस्ती देखो। ज़रा सोचो तो अगर इन्सान ज़ाहिरी शानोशौकत से बुज़ुर्ग और बड़ा होता तो सय्यदे आलम (स०) में और अबुजहल मरदूद में क्या फ़र्क़ होता। क्योंकि अबुजहल उस ज़माने में बड़ी शानोशौकत रखता था। और हज़रत मूसा (अ० स०) और फ़िरऔन और क़ारून में क्या फ़र्क़ था और हज़रत इब्राहीम (अ० स०) में और नमरूद में क्या फ़र्क़ है और हज़रत इमाम हुसैन (अ० स०) और यज़ीद में क्या फ़र्क़ है। ख़ूब समझ लो कि दुनिया की शानोशौकत बुज़ुर्गी और बड़ाई काम की नहीं जब तक कि अल्लाह व रसूल की ताबेदारी न हो। आजकल लोग दुनिया में डूब गये हैं और दुनिया की टीप-टाप और शानोशौकत को बड़ी नज़र से देखते हैं और बुज़ुर्गों को इस हाल से ख़ाली देखकर उनको ज़लील समझते हैं और उनके पास बैठने में अपनी कसरे शान समझते हैं और इसी वजह से दीन का रास्ता सीखना उनसे छोड़ दिया है। यह बात याद रखने की है कि अल्लाहतआला का नूरे हिदायत हज़ूर पुरनूर (स०) पर नाज़िल हुआ और आपके तुफ़ैल से आपके अस्हाबों पर और उनके बाद उल्मा और औलिया पर नाज़िल होता रहेगा। और यह सिलसिला न ख़त्म हुआ है और न क़यामत तक ख़त्म होगा। नबूवत का औहदा तो बेशक ख़त्म हो चुका है, मगर विलायत का औहदा ख़त्म नहीं हुआ और जब यह सिलसिला ख़त्म हो जायेगा और कोई अल्लाह का रास्ता बतलाने वाला न रहेगा, तो दुनिया ही ख़त्म हो जायेगी। ग़रज़ कि उल्मा-ए-मुत्तक़ीन और बुज़ुर्गाने दीन का सिलसिला बड़ी बरकत वाला है कि हर एक आदमी अगर चाहे तो इन बुज़ुर्गाने दीन से मिलकर और उनके फ़रमान पर अमल करके अल्लाह व रसूल का प्यारा बन सकता है।

मुसलमानो! अगर अल्लाहतआला के अज़ाब से बचना चाहो तो मुत्तक़ी

आलिमों और बुज़ुर्गों से ताल्लुक़ पैदा करो और उनसे दीन के अहकाम सीखो और उन पर अमल करो—

आप पर मत कर क्यासे औलिया,
गोकि वह है हम शक्ल तेरे ए फ़ता।

तू करे गरअहले हक़ की हमसरी,
है तेरी गुस्ताख़ी व फ़ितना गरी।

हुब्बे दुनिया शहवते हिर्सो हवा,
रात दिन तू तो है उनमें फँसा।

खोल आँखे होश कर ग़ाफ़िल न हो,
ढूँढ ले रहबर कोई काहिल न हो।

वर्ना हो शैतान तेरा पेशवा,
क़स्रे दोज़ख़ में तुझे देगा गिरा।

पैरवी तू मुर्शिदे कामिल की कर,
ता बदी कुछ कम हो तेरी बेख़बर।

सोहबते कामिल है ऐसी कीमिया,
जिससे दिल होवेगा नूरानी तेरा।

काम का अपने अब तू मुख़त्यार है,
बात हक़ कहनी हमारा कार है।

## गुलज़ार-ए-नसीहत

मोहसिने आज़म हुज़ूरे अकरम (स०) फ़रमाते हैं कि खुशनसीब वह आदमी है जो दूसरे की हालत देखकर इबरत हासिल करे। सुबहान अल्लाह! बड़े ही काम की बात है और बिल्कुल हमारी समझ के मुवाफ़िक़ है। देखो, एक चोर को सज़ा हो तो दूसरे के लिए फायदा इसमें है कि चोरी करना छोड़ दे। और नुक़सान इसमें है कि दूसरे की सज़ा देखे और बराबर चोरी करता रहे। तो यह बात मशहूर है कि सौ दिन चोर के एक दिन शाह का। किसी न किसी दिन यह भी पकड़ा जायेगा। हज़रत उमर (रज़ी०) के पास एक चोर को पकड़ कर लाया गया तो आपने शरह के मुवाफ़िक़ उसका हाथ काट देने का हुक्म फ़रमाया। उस चोर ने कहा कि अमीरुलमोमिनीन यह मेरा पहला क़सूर है। इस दफ़ा माफ़ कीजिए, फिर कभी चोरी नहीं करूँगा। आपने फ़रमाया, तू ग़लत कहता है।

अल्लाहतआला पहले क़सूर में किसी को रुसवा नहीं किया करता और तहक़ीक़ कराने से मालूम हुआ कि वह पहले भी कई दफ़ा चोरी कर चुका है।

सच बात है कि अल्लाहतआला अपने रहम व करम से बहुत कुछ हमारे गुनाहों पर पर्दा डालते हैं। दरगुज़र फ़रमाता है। लेकिन जब हम हद से बिल्कुल निकल जाते हैं तो आख़िर अल्लाहतआला का क़हर हमको रुसवा कर देता है। वर्ना अल्लाहतआला की वह शान है कि गुनाहों पर भी हमको कम पकड़ता है। बाज़ लोग कहा करते हैं कि खुदा जाने हमसे क्या गुनाह हो गया है जिसकी वजह से हम पर यह मुसीबत आयी है। अल्लाहो अकबर! क्या ठिकाना है ग़फ़लत का कि रात-दिन गुनाह करते रहते हैं। सर से पाँव तक गुनाहों में डूबे हुए हैं और फिर अपने आपको बेगुनाह समझते हैं। न नमाज़, रोज़े की पाबन्दी और न हराम और हलाल की परवाह। जो चाहा कह दिया और जो चाहा कर लिया और जिस तरह चाहा कमा लिया और खा लिया। देखा एक नमाज़ ही ऐसी ज़रूरी चीज़ है कि एक वक़्त की नमाज़ छोड़ देने की सज़ा में हज़ारों बरस दोज़ख़ की आग में जलना पड़ेगा। बेइल्म जाहिल लोगों की हालत तो ख़राब है ही, मगर बाज़ लिखे-पढ़े हाफ़िज़, मौलवी, क़ारी-पीरजी-हाजी-नमाज़ी, मुल्ला जी, मियाँ जी जो दीनदार कहलाते हैं उनको भी अपनी आदतें सँवारने का ख़याल नहीं। सिर्फ़ नाम के दीनदार हैं। उनके नज़दीक बस यही कमाल है कि दाढ़ी दरुस्त हो, पाजामा और तहबन्द टख़नों से ऊँचा हो, नीचा कुर्ता हो। बस हमने ज़ाहिरी लिबास और सूरत को तो दरुस्त कर लिया मगर हमारे अन्दर हज़ारों ख़राबियाँ भरी पड़ी हैं उनको दरुस्त नहीं किया। जैसे बुग्ज़, गुस्सा, हसद, तकब्बुर, ग़ीबत, झूठ, मुक्रो फ़रेब, उज़्ब, हिर्स, लालच, शहवत, बदनज़री, बदमामलगी वग़ैरा। ज़ाहिर तो ऐसा अच्छा कि हज़रत पीराने पीर शाह अब्दुल क़ादिर जैलानी (रह०) भी देखकर शर्मा जायें और अन्दर से ऐसे ख़राब कि काफ़िर भी नफ़रत करे। ऐसे ही दीनदार लोगों को देखकर लोग सब दीनदारों से बदगुमान होते जाते हैं और दीन ही से नफ़रत करने लगे हैं। क्योंकि शैतान ने उनको यह धोखा देकर एक बहाना समझा दिया है कि दीनदार बनके फ़लां मौलवी या हाफिज़ या क़ारी या हाजी या नमाज़ी जैसे हो जायेंगे। तो फिर ऐसी दीनदारी किस काम की। देखो यह कितना बड़ा नुक़सान हुआ कि ऐसे दीनदारों की आदतें देखकर दीनदारी ही से लोग नफ़रत करने लगे। हम खुद तो बिगड़े ही थे मगर दूसरों के लिए भी बुरा नमूना बन गये। तो ऐ दीनदारो ! अपनी आदतें दरुस्त करो और ज़ाहिर व बातिन एक-सा बनाओ। और ऐ मुसलमानो ! तुम शैतान के इस धोखे से बचो कि ऐसी दीनदारी किस काम की। तुम्हारा ईमान दीनदारों पर नहीं है तो तुम

अल्लाहतआला और उसके रसूले पाक (स०) पर ईमान लाये हो। तुमको चाहिए कि अल्लाह व रसूल के हुक्मों पर चलो। खुद भी दीनदार बनो और अपनी औलाद वग़ैरा को भी दीनदार बनाओ। हाफ़िज़ मौलवी बनाओ। क़ारी और नमाज़ी बनाओ और अल्लाह व रसूल के प्यारे बनो। याद रखो, जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। कोई अल्लाह व रसूल की ताबेदारी करके क़ब्र में और जन्नत में ऐश करेगा, आराम पायेगा। कोई अपनी बदअमली की सज़ा क़ब्र में और दोज़ख़ में चखेगा। बस खुशनसीब वही आदमी है जो दूसरे की बुरी हालत देखकर इबरत हासिल करे।

आख़िरत की फ़िक्र करनी है ज़रूर,
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर।

उम्र यह एक दिन गुज़रनी है ज़रूर,
क़ब्र में मैय्यत उतरनी है ज़रूर।

आने वाली किस से टाली जायेगी,
जान तेरी जाने वाली जायेगी।

रूह रग-रग से निकाली जायेगी,
तुझ पे एक दिन ख़ाक डाली जायेगी।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
करले जो करना है आख़िर मौत है।

## कबीरा गुनाह करने वाले मुसलमान को सज़ा

एक दफ़ा हज़ूर (स०) के पास जिब्राईल (अ० स०) आये और अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! आपकी उम्मत के लोग जो बड़े-बड़े गुनाह करके बे तौबा किये मर गये होंगे, क़यामत में उनको बड़ी सख़्त सज़ा होगी। अल्लाहतआला फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि इन नाफ़रमानों को घसीट कर दोज़ख़ में डाल दो। बस, फरिश्ते उनको दोज़ख़ में डाल देंगे। उस वक़्त दोज़ख़ का बड़ा फ़रिश्ता "मालिक" उनसे कहेगा—

कौन हो तुम क्या तुम्हारा नाम है,
किसलिए तुम पर अज़ाबे आम है?

किसकी उम्मत में हो तुम ऐ अशक़िया,
नाम तो अपने नबी का दो बता?

दहशतो हैबत से वह नामे रसूल,
रोब से मालिक के उस दम जायें भूल।

फिर कहे मालिक कि ऐ क़ौमे शक़ी,
क्यों नहीं लेते हो तुम नामे नबी?

जब कहेंगे वह नबी का नाम हम,
भूले हैं ए मुसद्दरे फ़ैज़ो करम।

है हमारा एक बेशक वह रसूल,
जिस पे कुर्आं को किया हक़ ने नज़ूल।

उसकी उम्मत में हैं हम ऐ नेक ज़ात,
जिस के बाइस है यह सारी कायनात।

नाम उनका है दवाए हर बला,
अपनी हम शामसत से भूले हसरता।

शामते आमाल से वा हसरता,
हो गये हम इस बला में मुब्तला।

जब कहे मालिक कि कुर्आने मतीं,
जुज़ मौहम्मद और पर उतरा नहीं।

नामे अहमद सुन के बोलेंगे सभी,
हम हैं बेशक सब उसी के उम्मती।

पूछेगा मालिक कि कुर्आं में भला,
ज़िक्रे दोज़ख़ क्या नहीं था जा बजा।

तुम पर पहुँचा क्या न था वादा वईद,
जानते तुम क्या न थे नेको पलीद।

करते तुम जो कुछ नबी ने था कहा,
खेंचते क्यों यह मुसीबत और बला।

करते गर कुर्आं के ऊपर तुम अमल,
होता क्यों दोज़ख़ तुम्हारा अब महल।

करते तुम दुनिया में गर फ़ेले जमील,
होते क्यों उक़बा में अब ऐसे ज़लील।

या रसूल अल्लाह! इन सवालों पर सब दोज़ख़ी बहुत पछतायेंगे। फिर मालिक फ़रिश्ता कहेगा, ऐ दोज़ख़! यह सब नाफ़रमान तेरे अन्दर हैं। जो-जो अज़ाब तू चाहे इनको दे और इन ज़ालिमों को जला डाल मगर इनके दिल न

जलाइयो कि उनमें ईमान है। और जब तक खुदा को मंज़ूर होगा, दोज़ख़ में जलते रहेंगे। फिर बहुत अर्से के बाद अल्लाहतआला का हुक्म होगा, ऐ जिब्राईल! दोज़ख़ पर जाओ और मौहम्मद की उम्मत के नाफ़रमानों की हालत देखो। फिर जिब्राईल दोज़ख़ में जायेंगे। दोज़ख़ का बड़ा फ़रिश्ता मालिक कहेगा कि तुम यहाँ कैसे आये। जिब्राईल कहेगा कि मैंने मौहम्मद की उम्मत के मुसलमान नाफ़रमानों का हाल देखना है।

उम्मते अहमद के आसी क्या हुए,
हाल क़ी उनके ख़बर कुछ मुझको दे।

किस तरह दोज़ख़ में उनका हाल है,
जान पर क्या आफ़तो ज़न्जाल है।

हाले बदसे उनके तू आगाह कर,
उनकी तकलीफ़ात की दे कुछ ख़बर।

यूँ कहे मालिक ऐ सफ़ीरे इलाह,
हाल उनका है निहायत ही तबाह।

तंग है दोज़ख़ का बस उन पर मकां,
राख जल कर हो गया है जिस्मो जाँ।

आग ने फूँका है तन का गोश्त सब,
हालत उनकी देखता हूँ मैं अजब।

या रसूल अल्लाह! दोज़ख़ का फ़रिश्ता कहेगा, ऐ जिब्राईल अमीन! उन सब बदकारों का बदन जलकर कोयले के तरह हो गया है मगर ईमान की बरकत से उनके दिल बचे हुए हैं। मैं कहूँगा, ऐ मालिक! तुम दोज़ख़ का दरवाज़ा खोलो। मैं खुद उनका हाल देखूँगा। बस दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दिया जायेगा। या रसूल अल्लाह! आपकी उम्मत के वह बड़े-बड़े गुनाह करने वाले मर्द और औरतें मुझे देखकर—

पूछेंगे सब मालिक से यह मर्दे खुदा,
कौन है नाम उसका तू हमको बता।

यूँ कहे मालिक कि है यह जिब्राईल अमीन,
है रसूले हक़ यही बे क़ालो क़ील।

वही लाता था मौहम्मद पर मदाम,
हक़ का पहुँचाता था अहमद को सलाम।

सुन के वह नामे मौहम्मद सब के सब,
रो कर के यूँ मुझसे बोलेंगे तब।

कह पैगम्बर से हमारा तू पयाम,
हमको दोज़ख़ से छुड़ाओ ऐ नेकनाम।

हम तेरी उम्मत में हैं ऐ मुस्तफ़ा,
इस मुसीबत से हमें लीजिए बचा।

गो कि हम करते थे दुनिया में गुनाह,
मगर ईमान तुझपे था बे इश्तबाह।

उम्मते आसी की तू पेशे खुदा,
कर शिफ़ाअत ऐ नबी-ए-मुजतबा।

या रसूल अल्लाह! मैं सब हाल देखकर आ जाऊँगा। अल्लाहतआला फ़रमायेगा, ऐ जिब्राईल! मौहम्मद की उम्मत के नाफ़रमानों का हाल बयान कर। मैं अर्ज़ करूँगा, ऐ परवरदिगार! आपको तो सब मालूम है कि वह तबाह हो चुके हैं। रोते-चिल्लाते हैं। मुझसे कहा कि तुम हमारे नबी को हमारा सलाम और पैग़ाम पहुँचा दो कि वह अल्लाहतआला से हमारी सिफ़ारिश करें और हमको दोज़ख़ के अज़ाबों से बचायें। अल्लाहतआला का हुक्म होगा कि जाओ, हमारे रसूल को उनका सलाम और पयाम पहुँचाओ। फिर मैं आपसे अर्ज़ करूँगा कि या रसूल अल्लाह! आपकी उम्मत के नाफ़रमान लोग दोज़ख़ में पड़े जलते हैं और वह आपको सलाम कहते हैं और कहते हैं कि हमको दोज़ख़ से निकालिए।

रहमते दो आलम (स०) फ़रमाते हैं कि यह ख़बर वहशत असर—

सुन के मैं यह बात होकर बदहवास,
गम के हाथों निहायत हुआ उदास।

जाके ज़ेरे अर्शबासद इज़्तराब,
करके हक्के सुबहानहू को मैं ख़िताब।

जाके सजदे में करूँ हम्दो सना,
वह सना जिसकी न हो कुछ इन्तहा।

हुक्म हक़ का हो उठा सजदे से सर,
माँग क्या माँगे है ऐ ख़ैरुलबशर।

सर उठाकर मैं कहूँगा ऐ खुदा,
मेरी अब उम्मत को दोज़ख़ से बचा।

आतिशे दोज़ख़ से अब उनको निकाल,
रहम कर ऐ बादशाहे ज़ुलजलाल।

हुक्म तेरा उनपे हो लिया
अपने जुर्मों की पा गये हैं सज़ा।

अब मुझे कर आसयों का तू शफ़ीह,
है तेरी दरगाह आला ओ-रफ़ीह।

हुक्म जब होगा कि तू ऐ मुस्तफ़ा,
अब दरे दोज़ख़ पे उठकर जल्द जा।

सिद्क़ दिल से जिसने है कलमा पढ़ा,
नूरे ईमां दिल में है जिनके भरा।

आग से दोज़ख़ की तू उनको निकाल,
मैंने बख़्शा उनको ऐ नेको ख़िसाल।

दस्तगीरे बेकसां, शफ़ीहे आसियों, रहमते दो आलम (स०) फ़रमाते हैं कि मैं अल्लाहतआला का यह हुक्म सुनकर दोज़ख़ के दरवाज़े पर जाऊँगा। फ़रिश्ता मालिक बड़ी ताज़ीम व तकरीम से पेश आयेगा। मैं उससे पूछूँगा, ऐ मालिक! दोज़ख़ के थानेदार! मेरी उम्मत के गुनहगारों का क्या हाल है? वह कहेगा, या रसूल अल्लाह! उनकी बुरी हालत है। लकड़ी की तरह वह आग में जलते हैं और आपको याद करते हैं। अफ़सोस है कि इन नाफ़रमानों ने दुनिया में आपको याद न किया और आपकी ताबेदारी न की और दोज़ख़ का अज़ाब अपने सर पर लिया। फिर मैं कहूँगा ऐ मालिक! तुम दोज़ख़ का दरवाज़ा खोल दो। बस दरवाज़ा खोल दिया जायेगा। और सब मर्द और औरतें रो-रोकर कहेंगे—

ऐ रसूल अल्लाह! या हबीब अल्लाह! हम आग में जल गये, अपने किये की सज़ा पा गये। अब आप हम गुनहगारों पर मेहरबानी फ़रमाइए और हमको दोज़ख़ से निकालिए। अगर हम दुनिया में आपकी ताबेदारी करते तो दोज़ख़ में न जलते। बस मैं उसी वक़्त—

मेरी उम्मत के जो आसी हैं कमाल,
छाँटकर मैं लूँगा दोज़ख़ से निकाल।

आग में जलकर बदन उनका सियाह,
कोयले की शक्ल हो बे इश्तबाह।

नहर एक जन्नत में है माउलहयात,
हों नहा कर उसमें वह ऐ नेकज़ात।

रंगो रू रश्के क़मर होगा तमाम,
और लिखे हों जबीं पर यह कलाम।

इस जमाअत पर हुआ है लुत्फ़े रब,
दोज़ख़ी थे हो गये आज़ाद सब।

रहमते हक़ से हुए हैं जन्नती,
थे मौहम्मद के यह आसी उम्मती।

दोज़ख़ो जन्नत में तू भी ग़ौर कर,
हैं तेरे यह फ़ेल के दोनों समर।

जैसे दुनिया में तेरे होंगे अमल,
बाग़ वैसा ही मिलेगा बेख़लल।

तेरी यह ज़ैदो सख़ावत ऐ मियाँ,
बाग़े जन्नत में हो नहरे जावदां।

तेरी यह तस्बीह व तहलील व दरूद,
संबलो रीहाना गुल हैं ऐ वदूद।

दिल का तेरे नूरो ईमानो यक़ीन,
बाग़े जन्नत होगा यह सब बिल्यक़ीं।

तेरे यह अफ़आल व आमाले निको,
बाग़ इनसे हश्र में सर सब्ज़ हो।

दरुस्त कर तू अपने दिल में ऐतक़ाद,
हश्र में बर आये ता तेरी मुराद।

गर अक़ायद तेरे हैं दुनिया में सुस्त,
तो अमल तेरे हैं सब नादरुस्त।

दिल से तू अपने ख़ुदा को एक जान,
दूसरे का रख न दिल में कुछ ध्यान।

क़ादिरे मुतलक़ समझ अल्लाह को,
दूसरे का ख़तरा भी दिल में न हो।

हो हज़ारों गर मुसीबत और ख़तर,
ग़ैरे हक़ पर न हो कुछ हरगिज़ नज़र।

ग़ैब से आवे अगर तुझ पर बला,
जान तू उसको कि है हुक्मे ख़ुदा।

है जो तेरा कुफ्रो इस्यां व नफ़ाक़,
हश्र में दोज़ख़ हो यह बिल इत्तफ़ाक़।

क़ल्ब में तेरे जो कुछ हैं वहम बद,
पकड़ेंगे उस दिन यह सूरत नेको बद।

ख़स्लते बद तुझमें जितनी हैं तमाम,
उनसे हो तकलीफ़ तुझको लाकलाम।

होंगी यह ज़न्जीरो तौक़ी हथकड़ी,
फ़ासिक़ों की होंगी गर्दन में पड़ी।

लग्व मत जान तू इन अफ़आल को,
इम्तहां कर इनका तू ग़ाफ़िल न हो।

रात-दिन रख अपने कामों पर नज़र,
नेको बद का कर हिसाब ऐ बेख़बर।

अपने बातिन को ज़रा तू साफ़ कर,
ताकि नूरे हक़ हो उसमें जल्वा गर।

मादर व हमशीर व जद व पदर,
यारो ग़ारो हम बादर हम पिसर।

दफ़न सबको क़ब्र में तू कर चुका,
ख़्वाबे ग़फ़लत में न पड़ अब तू ज़रा।

अब तू अपने आपको मोहसिन बना,
ग़ैर हक़ से दिल को अपने मत लगा।

मुसलमान भाइयो और दीन की बहिनो ! अल्लाहतआला से डरो। अच्छे काम करो। मौत को न भूलो। किसी को ख़बर नहीं कि मौत कब आ जाये। देखो, अगर किसी को यह मालूम हो कि मेरे पकड़ने के लिए पुलिस फिरती है तो उसके दिल की क्या हालत होती है। ज़िन्दगी बेमज़ा हो जाती है। हर वक़्त यही फ़िक्र होता है कि किसी तरह इस मुसीबत से निकल जाऊँ। तो क्या मौत का इतना भी ख़याल न होना चाहिए जो दुनिया के सब मज़ों का ख़ात्मा कर देगी। ख़ासकर जब गुनाहों का बोझ भी सर पर लदा हुआ है, जिससे दुनिया में भी और आख़िरत में भी सज़ा का डर है। दुनिया में नाफ़रमान लोगों पर जो मुसीबत आती है वह अक़सर गुनाहों की वजह से आती है। और हम यह समझते हैं कि हम जो गुनाह दिन-रात करते हैं उन पर कोई पकड़ नहीं होती। यह कोई

ज़रूरी बात नहीं कि अगर आज गुनाह किया है तो आज ही उसकी सज़ा भी मिल जाये। देखो फ़िरऔन ने चार सौ बरस तक खुदाई का दावा किया। लेकिन कभी सर में दर्द भी न हुआ और पकड़ा गया तो इस तरह कि एक दम में ग़र्क़ कर दिया गया। खुदा का हर काम हिकमत से होता है। कभी जल्दी सज़ा मिल जाती है और कभी देर में सज़ा मिलती है। तो अगर कभी गुनाह करने की सज़ा जल्दी न मिले तो यह खयाल न करना चाहिए कि खुदाए तआला उस गुनाह से नाराज़ नहीं हुआ। क्योंकि जल्दी सज़ा नहीं दी, यह शैतान का धोखा है। देखो! जब कोई मर जाया करे तो यह ख़याल किया करो कि हमारे लिए भी एक दिन आने वाला है। मगर आजकल जितनी उम्रें कम हो गयी हैं उतनी ही ग़फ़लत बढ़ गयी है। यहाँ तक कि मुर्दे को देखकर भी हमारी हालत ज़रा नहीं बदलती। दुनिया की मिसाल रेल की-सी है कि कोई उसमें सवार होता है और कोई उससे उतरता है। इसी तरह आज कोई पैदा होता है और कल कोई दुनिया से चल देता है। दम बदम घंटी बजती रहती है और वह घंटियाँ यही तो हैं कि अपने दोस्तों और अज़ीज़ों का मरना देखते हैं फिर भी खुवाबे ग़फ़लत में ऐसे सो रहे हैं कि आँखें नहीं खोलते और नसीहत हासिल नहीं करते।

मुसलमानो! ख़बरदार हो जाओ। मौत सर पर खड़ी है। कहीं यह तमन्ना न करनी पड़े कि ऐ अल्लाह! मुझको ज़रा-सी मोहलत मिल जावे तो मैं तेरा ताबेदार हो जाऊँ। मगर उस वक़्त यह तमन्ना पूरी न होगी और खुदाए तआला की तरफ़ से जवाब होगा कि अब एक दम की मोहलत भी न होगी। और ख़ूब समझ लो, अपने आपको खुदाए तआला के क़ब्ज़े से बाहर मृत समझो। जब वह पकड़ता है तो सख़्त सज़ा देता है। देखो नमरूद चार सौ बरस तक नाफ़रमानी करता रहा, मगर जब उसको पकड़ा तो खुदा ने एक मच्छर को हुक्म दिया कि उस ज़ालिम की नाक में घुस जा। मच्छर नाक में घुस गया और नमरूद सर की पिटाई करवाता हुआ खुदाई का दावा लेकर आख़िर दुनिया से ख़त्म हो गया।

साहिबो! अब भी तो मच्छर मौजूद हैं और खुदा की अब भी तो वही क़ुदरत है। ख़याल तो करो कहाँ इतना बड़ा बादशाह और कहाँ ज़रा-सा मच्छर! न उसके फ़ौज काम आयी और न किसी साथी ने उसको बचाया। और अल्लाह तआला ने दिखला दिया कि हमारी मख़लूक़ में से हमारा एक मामूली-सा मच्छर भी तुमको हलाक करने को काफ़ी है। बस अगर कोई सबक़ हासिल करना चाहे तो नमरूद और फिरऔन ही के हालात से सबक़ हासिल कर सकता है। इसके अलावा अल्लाहतआला की और भी हर तरह की क़ुदरत है। जैसे हाथ-पाँव तोड़ दे। अंधा या कोढ़ी कर दे। आपस में लड़ा-भिड़ाकर मार दे। ज़मीन में धँसा

दे या कोई बीमारी लगा दे। या और किसी आफ़त में मुब्तला कर दे। सुबहान अल्लाह! सच फ़रमाया है रहमते आलम (स०) ने कि खुशनसीब वही आदमी है जो दूसरे की हालत देखकर इबरत और नसीहत हासिल करे। अल्लाहतआला की पकड़ से डरे और बुरे कामों को छोड़ दे—

अब तो कुछ होश में लिल्लाह आ,
बाक़ी हैं जो साँस उनको मत गँवा।

क़ब्र है ऐ बेख़बर तेरा तो घर,
तू दरुस्ती से है इसकी बेख़बर।

वह तेरी तन्हाई और बेकसी,
वह अंधेरा और तंगी क़ब्र की।

न कोई ग़मखुवार और हमसाया वहाँ,
जिस से अपना हाले दिल कीजे बयाँ।

भागने की न वहाँ छुपने की जा,
खानए तारीक है डरने की जा।

होंगे वां मुनकिर और नकीर,
बड़े पुर ग़ज़ब और सख़्तगीर।

करना उस हाल में फिर तफ़तीशे हाल,
दीन और ईमान का करना सवाल।

न भाई बहन और न यारो आशना,
न मादर पदर वां पे शफ़क़्क़त नुमा।

## हज़रत इब्राहीम (अ० स०) की क़ुर्बानी

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि— فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ

यानी ऐ रसूलु मौहम्मद (स०)! बस आप अपने रब की नमाज़ पढ़िए और क़ुर्बानी कीजिए—

हुज़ूर (स०) पर क़ुर्बानी करना फ़र्ज़ थी। आपके लिए मालदार होना ज़रूरी नहीं था और आपकी उम्मत के मालदारों पर, मर्द हो या औरत, क़ुर्बानी करना वाजिब है। आप फ़रमाते हैं कि क़ुर्बानी के दिनों में आदमी का कोई अमल खुदा के नज़दीक क़ुर्बानी से ज़्यादा मक़बूल नहीं। उन दिनों में यह नेक काम सब नेक कामों से बढ़कर है और क़ुर्बानी का ख़ून ज़मीन पर गिरने से पहले ही खुदा के

यहाँ क़बूल हो जाता है। बस तुम ख़ूब दिल खोल कर क़ुर्बानी किया करो। जो क़ुर्बानी अल्लाहतआला का हुक्म समझकर खुशी से की जाये वह दोज़ख़ से बचाने के लिए आड़ बन जायेगी और जो मालदार मर्द या औरत क़ुर्बानी न करे तो वह चाहे यहूदी होकर मरे या नस्रानी और ऐसा आदमी हमारी ईदगाह में न आवे।

**फ़ायदा—** इस हदीसपाक से कैसे हुज़ूर (स०) की कितनी नाराज़गी मालूम होती है। वह कैसा मुसलमान है जो हुज़ूर की नाराज़गी को बर्दाश्त करे और क़ुर्बानी न करे। हज़रत ज़ैद बिन अरक़िम (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) से लोगों ने पूछा कि या रसूल अल्लाह ! क़ुर्बानी क्या चीज़ है? हमको इसमें क्या सवाब मिलेगा? हुज़ूर ने फ़रमाया कि तुम्हारे बाप इब्राहीम (अ० स०) की सुन्नत और यादगार है और तुमको हर बाल के बदले सवाब में एक नेकी मिलेगी। सुबहान अल्लाह ! कितना बड़ा सवाब है। देखो भेड़, बकरी, दुंबा, ऊँट, गाय वग़ैरा जिन जानवरों की क़ुर्बानी दरुस्त है, उनके बदन पर कितने बाल होंगे कि शुमार में नहीं आ सकते और फिर एक नेकी पर दस नेकियाँ और ज़्यादा मिलती हैं तो क़ुर्बानी करने से बेशुमार नेकियाँ मिल जाती हैं। जिन नेकियों को बाद में करने के लिए तरसेंगे।

मुसलमानो ! अपने प्यारे रसूल करीम (स०) की मुहब्बत तो देखो कि आपने हम ग़ुलामों की तरफ़ से भी क़ुर्बानी की है। आपके दोस्त हज़रत तलहा (रज़ी०) फ़रमाते हैं कि एक दफ़ा हुज़ूर (स०) ने अपनी तरफ़ से एक दुंबा क़ुर्बान किया और दूसरे दुंबे के ज़िबह पर फ़रमाया कि इसका सवाब उसके वास्ते है जो मुझ पर ईमान लाया और मुझको अल्लाह का सच्चा रसूल माना।

सुबहान अल्लाह ! हुज़ूर (स०) ने हम ग़ुलामों को क़ुर्बानी में भी याद फ़रमाया और हमारी तरफ़ से भी क़ुर्बानी की। अगर हम भी एक बकरी या एक हिस्सा गाय वग़ैरा में हुज़ूर की तरफ़ से कर दिया करें तो खुशनसीबी है—

इस जहाँ में रोशनी की मिल के महरो माह ने,
दोनों आलम कर दिये रोशन रसूल अल्लाह ने।

दो आलम में कोई महबूब का सानी नहीं,
करके साया दूर यह दिखला दिया अल्लाह ने।

चलने वाला इस शरीयत पर भटक सकता नहीं,
रहबरी अल्लाह तक की तेरी सीधी राह ने।

चाहने वाला जो हो अल्लाह का ऐसा तो हो,
जान की क़ुर्बान अल्लाह पर ज़बीह अल्लाह ने।

हज़रत इब्राहीम (अ० स०) पर बहुत से इम्तहान आये और सब इम्तहानों में आप पास हुए। अल्लाहतआला फ़रमाता है कि जिस वक़्त इम्तहान लिया इब्राहीम का उनके रब ने, चन्द बातों में तो वह उनको पूरे तौर से बजा लाये। उन इम्तहानों में से एक यह इम्तहान भी बड़ा अज़ीमुश्शान है कि जब हज़रत इस्माईल बारह बरस के हुए तो हज़रत इब्राहीम (अ० स०) ने आठ ज़िल्हिज्जा की रात को ख़ुवाब देखा कि कोई कहता है— इब्राहीम क़ुर्बानी करो। आप जाग उठे और सोचने लगे कि यह ख़ुवाब है या ख़याल। इसी सोच और ग़ौर करने की वजह से उस दिन को योमेतर्रादिदया कहते हैं। दूसरी रात को फिर वही ख़ुवाब देखा तो आप समझ गये कि ख़ुवाब है ख़याल नहीं है और अल्लाहतआला की तरफ़ से क़ुर्बानी करने का हुक्म है। इसी वजह से नवीं ज़िल्हिज्जा के दिन को योमे अरफ़ा कहते हैं।

ख़ुवाब में देखा ख़लील अल्लाह ने,
हुक्मे क़ुर्बानी दिया अल्लाह ने।

सुबह को उठकर बाअदब व ऐहतराम,
कर दिये सौ ऊँट क़ुर्बां हक़ के नाम।

दूसरी शब भी यही आया नज़र,
यानी कहता है ख़ुदा क़ुर्बान कर।

फिर सुबह उठकर ख़लील अल्लाह ने,
एक सौ ऊँट और क़ुर्बां कर दिये।

तीसरी शब भी यही था माजरा,
यानी क़ुर्बानी को था हुक्मे ख़ुदा।

अर्ज़ की यारब मैं क्या क़ुर्बां करूँ,
हक़ तआला का हुआ इरशाद यूँ।

तुझको जो सब से ज़्यादा हो अज़ीज़,
कर दे मेरी राह में क़ुर्बां वह चीज़।

थे जो इस्माईल हज़रत के पिसर,
थे वही हर चीज़ से महबूब तर।

बस, आप समझ गये कि अल्लाहतआला का यही हुक्म है कि अपने बेटे इस्माईल को हम पर क़ुर्बान कर। क्योंकि इस्माईल से ज़्यादा मुझे कोई चीज़ प्यारी नहीं। इसी वजह से इसको दसवीं ज़िल्हिज्जा योमे नहर कहते हैं "यानी

कुर्बानी का दिन"। बस आपने दसवीं तारीख़ को सुबह के वक़्त हज़रत इस्माईल की वालिदा हज़रत हाजरा से फ़रमाया कि तुम अपने दिल के टुकड़े इस्माईल को अच्छी तरह नहला-धुलाकर साफ़ कपड़े पहना दो। मैं इसको आज एक दोस्त के यहाँ दावत में ले जाऊँगा।

गुस्ल देकर माँ ने फिर फ़रज़न्द को,
कपड़े नये पहना दिये दिल बन्द को।

इत्र मलकर कंघा बालों में किया,
और आँखों में दिया सुरमा लगा।

चूमकर मुँह और गले से भी लगा,
बाप के उनको हवाले कर दिया।

ली बग़ल में बाप ने रस्सी दबा,
आस्तीं में एक छुरी भी ली छुपा।

हज़रत इब्राहीम (अ० स०) अपने चहीते और इकलौते बेटे को कुर्बान करने के लिए घर से निकले। उस वक़्त शैतान बहुत परेशान हुआ कि ऐसा परेशान कभी नहीं हुआ था। हज़रत इस्माईल दौड़ते-कूदते चले जा रहे थे। शैतान ने हज़रत इब्राहीम से कहा कि ग़ज़ब करते हो, तुम अपने बेटे पर रहम करो। यह एक ही तो बेटा है। बुढ़ापे की औलाद है। देखो तो कैसा ख़ूबसूरत और अच्छे क़द का बेटा। ऐसा बेटा फिर तुम्हारे हाथ नहीं आयेगा और तुम ख़ुवाब को ख़ुदा का हुक्म ही समझ गये। आपने फ़रमाया, ऐ शैतान, दुश्मने इन्सान, नबियों का ख़ुवाब अल्लाहतआला का हुक्म ही होता है और मैं अल्लाहतआला के हुक्म पर इस्माईल जैसे बेटे हज़ारों कुर्बान कर दूँ। शैतान यह जवाब सुनकर बहुत हैरान हुआ कि अफ़सोस यह मेरे धोखे में न आये। जल्दी से हज़रत हाजरा के पास आया और कहा बीबी दौड़ो और अपने बेटे को बचा लो। इब्राहीम उसको ज़िबह करने के लिए ले जा रहे हैं। वह ख़ुवाब को ख़ुदा का हुक्म ही समझ गये। हज़रत हाजरा ने जवाब दिया कि अल्लाह के नबी झूठा ख़ुवाब नहीं देखा करते। अगर उन्होंने ऐसा ख़ुवाब देखा है तो बेशक ख़ुदा ही का हुक्म है और मैं ख़ुदा के हुक्म पर हज़ारों बेटे कुर्बान कर दूँ। जब शैतान का यहाँ भी धोखा न चला तो जल्दी से हज़रत इस्माईल के पास आया और कहा, ऐ बच्चे! होश कर। तू हँसता-कूदता है। अब ज़रा-सी देर में तेरी ज़िन्दगी ख़त्म हो जायेगी। देखो तो सही तेरे बाप ने वह रस्सी और छुरी छुपा रक्खी है। रस्सी से तेरे हाथ-पाँव बाँधकर तेरा गला काट डालेगा। तू भागकर छुप जा।

तब लगे इब्लीस से कहने यह आप,
मारता है कब कोई बेटे को बाप।

फिर तो यूँ बोला वह इब्लीसे लई,
है यही अब हुक्म रब्बुल आलेमीन।

बोले वह गर है यही फ़रमाने हक़,
ऐसी जानें लाख हों कुर्बान हक़।

ऐसे मरने का नहीं कुछ ख़ौफ़ो ग़म,
जिसके बदले हो मेरे रब का करम।

चल दूर हो ऐ शैताने लई,
तेरे धोखे में हम आ सकते नहीं।

जब शैतान ने हज़रत इस्माईल से यह जवाब पाया तो बहुत बेचैन हुआ और चाहा कि किसी और धोखे से बहकाना चाहिए। हज़रत इस्माईल ने एक पत्थर का कंकर उसकी आँख पर मारा। फिर शैतान परेशान होकर भागा। इसीलिए हाजियों को हुक्म है कि उस मुक़ाम पर पत्थर की कंकरियाँ मारा करें। बस दोनों बाप-बेटा कुर्बानी की जगह मना में पहुँचे। फिर—

अपने बेटे से वह यूँ कहने लगे,
ऐ मेरे फ़रजन्द जिगर गोशा मेरे।

ख़्वाब में हक़ ने यह फ़रमाया मुझे,
राह में उसकी करूँ कुर्बां तुझे।

इसमें अपनी राय मुझको तू बता,
सुनते ही उनको जवाब ऐसा दिया।

क्या मुबारक है तेरा ख़ुवाब ऐ पदर,
ज़िबह कर मुझको कुछ अन्देशा न कर।

अब छुरी को हल्क़ पर मेरे चला,
गर ख़ुदा चाहे तो साबिर पायेगा।

हज़रत इब्राहीम अपने नूरे नज़र का यह जवाब सुनकर बहुत ख़ुश हुए और फ़रमाया, अल्हम्दो लिल्लाह! मेरे रब ने मुझे ताबेदार बेटा अता फ़रमाया, जैसा माँगा था वैसा ही दिया। हज़रत इस्माईल ज़बीह अल्लाह ने कहा, अब्बा जान कुछ वसीयतें अर्ज़ करता हूँ। एक, यह कि मेरे हाथ-पाँव बाँधें कि ज़िबह करते वक़्त मेरे तड़पने से ख़ून की छीटों से आपके कपड़े ख़राब न हों। दूसरे,

यह मेरा मुँह ज़मीन की तरफ़ कीजिए। कहीं ऐसा न हो कि मेरा मुँह देखकर आपको प्यार आ जाये और अल्लाहतआला का हुक्म पूरा न हो सके। तीसरे, यह कि ज़िबह करने की ख़बर मेरी अम्मा जान को न दीजिए कि उनको मेरा ग़म हो। चौथे, यह कि छुरी को ख़ूब तेज़ कर लीजिए और मेरे गले पर एक दम ख़ूब ज़ोर से फेर दीजिएगा कि गला जल्दी से कट जाये और आप अल्लाह तआला के हुक्म से जल्दी फ़ारिग़ हो जायें। पाँचवें, यह मेरा कुर्ता मेरी अम्मा जान को दे दीजिएगा और मेरी अम्मा जान से यह भी कह दीजिएगा कि मैंने इस्माईल को एक बहुत बड़े अज़ीमुश्शान दोस्त के पास छोड़ दिया है। उसके यहाँ वह राहत व आराम से रहेगा और आपको जब कोई लड़का मेरी उम्र का मिले उसको न देखें कि मैं याद आ जाऊँ और आपको ग़म होगा। आपने फ़रमाया, ऐ मेरे जिगर के टुकड़े और मेरी आँखों के नूर, तुम बहुत अच्छे बेटे हो कि अपनी तकलीफ़ का ख़याल नहीं करते और माँ-बाप को तकलीफ़ से बचाते हो। और खुद अल्लाहतआला पर कुर्बान होते हो।

जब हुआ राज़ी वह उनका पिसर,
बाप ने उस काम पर बाँधी कमर।

दस्त पा उस गुलबदन के बाँधकर,
उस घड़ी उसको गिराया ख़ाक पर।

तेज़ कर ली हाथ में अपने छुरी,
उसके नाज़ुक हल्क़ पर बेखटके धरी।

रख के शह रग पर ए अतक़िया,
जोर सारा जिस्म का बस दे दिया।

दस्त व कोहनी पे दिया सीने का ज़ोर,
पड़ गया दोनों जहाँ में सख़्त शोर।

आह ! इब्राहीम क्या करता है तू,
हो रही है काहे की यह जुस्तजू।

किस पे यह ज़ोर आज़माई है ख़लील,
दे रहे हैं सब दुहाई ऐ ख़लील।

सब फ़रिश्तों ने कहा यूँ ऐ खुदा,
किस सबब से अम्र यह वाक़े हुआ।

तब हुआ इरशाद रब्बे ज़ुल्जलाल,
कुछ फ़रिश्तों का था मुझसे यह सवाल।

या रब इब्राहीम को बाईस है क्या,
तूने फ़रमाया है ख़लीले बासफ़ा।

देख लें इस तरह से है शाकिर ख़लील,
राह में मेरी है यूँ हाज़िर ख़लील।

अल हासिल हज़रत इब्राहीम (अ० स०) ने, अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ ख़ूब ज़ोर से हज़रत इस्माईल (अ० स०) के गले पर छुरी चलाई, मगर वह गला न काट सकी और न कोई बाल भर ज़ख़्म कर सकी। हज़रत इस्माईल ने फ़रमाया, अब्बा जान! अल्लाहतआला के हुक्म में क्या देर है, क्यों जल्दी से मुझको ज़िबह नहीं कर डालते? क्या आपको मेरी मुहब्बत का जोश आ गया है या छुरी की धार मोटी है कि मेरे गले का गोश्त नहीं काटती? हज़रत इब्राहीम ने छुरी को एक पत्थर पर चलाकर देखा। उसको एक ही वार में दो टुकड़े कर दिया। आपने फ़रमाया, ऐ छुरी ! तू पत्थर को काटती है और गोश्त को नहीं काटती। तुझ पर अफ़सोस है।

तब छुरी बोली यह इब्राहीम से,
उज्ज्र से आदाब से ताज़ीम से।

जिसने आतिश तुम पे की गुलज़ार है,
उसने ही की कुन्द मेरी धार है।

आपका कहना करूँ मैं ऐ ख़लील,
या करूँ मैं ताअते रब्बे जलील।

आप कहते हैं ऐ छुरी अब काट तू,
रब कहता है ऐ छुरी मत काट तू।

यानी अल्लाहतआला के हुक्म से छुरी बोली कि ऐ ख़लील ! आप मुझ पर ख़फ़ा न हों। आप एक दफ़ा फ़रमाते हैं काट, और अल्लाहतआला सत्तर दफ़ा फ़रमाता है, मत काट। बतलाइए मैं आपका कहना मानूँ या अल्लाहतआला का। बस इम्तहान ख़त्म हो चुका और उसी वक़्त अल्लाहतआला ने फ़रमाया, ऐ इब्राहीम, शाबाश ! हमने तुमको ख़ुवाब में एक हुक्म दिया, तुमने उसको पूरा कर दिया। अब हम तुमको बड़े-बड़े ईनाम और दर्जे देंगे। और हम अपने फ़रमांबरदार साबिर बन्दों को अच्छे से अच्छा बदला दिया करते हैं यानी मुश्किल काम का हुक्म देकर आज़माते हैं फिर उनको उस हुक्म पर साबित क़दम रखते हैं और मख़लूक़ को उनका साबित क़दम रहना दिखा देते हैं। बेशक यह बहुत ही बड़ा इम्तहान था। फिर हमने एक भेड़ क़ुर्बानी उनके बेटे के बदले में दी यानी जन्नत का एक

जानवर मुराद बकरी या दुंबा उनसे ज़िबह कराया और उनके बेटे को बचा लिया।

अलग़रज़ जिब्राईल को हुआ हुक्मे खुदा,
बकरी एक जन्नत से तू ले के जा।

और इब्राहीम को दे यूँ पयाम,
हक़ तआला तुमको कहता है सलाम।

तूने मेरी राह में जो कुछ किया,
फ़ज़्ल से मैंने क़बूल उसको किया।

अब जगह फ़रज़न्द की एक गोसफन्द,
ज़िबह कर तू है यही हमको पसन्द।

ज़िबह की बकरी ख़लील अल्लाह ने,
दस्तो पा खोले ज़बीह अल्लाह के।

हमें उनकी राह पर चलना चाहिए,
राहे हक़ में सर को धरना चाहिए।

हदीस शरीफ़ में है कि जिस वक़्त हज़रत जिब्राईल (अ० स०) क़ुर्बानी का जानवर लेकर आये। देखा कि हज़रत इब्राहीम (अ० स०) अपने बेटे के गले पर बड़ी ज़ोर से छुरी चला रहे हैं और कहते हैं—

अल्लाहुअकबरअल्लाहुअकबर,यह सुनकर जिब्राईल ने कहा लाइलाहाइलल्लाहु वल्लाहुअकबरऔर हज़रत इस्माईल ने कहा अल्लाहुअकबर वलिल्लाहिलहमदु

बस यह तकबीरें नौ ज़िल्हिज्जा अर्फ़े के दिन सुबह की नमाज़ के बाद से लेकर तेरहवीं तारीख़ अस्र के वक़्त तक हर फ़र्ज़ नमाज़ के बाद सैयदउलअम्बिया हुज़ूर (स०) की उम्मत को पढ़ना वाजिब है। हज़रत अब्दुल्ला इब्ने अब्बास (रज़ी०) फ़रमाते हैं कि अगर हज़रत इस्माईल (अ० स०) ज़िबह हो जाते तो मुसलमानों की हर साल क़ुर्बानी के दिनों में बेटे के ज़िबह करने का हुक्म दिया जाता। लेकिन अल्लाहतआला ने अपने फ़ज़्लो करम से हम आजिज़ बन्दों को इस इम्तहाने अज़ीम से बरी फरमा दिया और जानवरों की क़ुर्बानी देने का हुक्म दे दिया, जिसके सबब हम गुनहगारों को बेशुमार सवाब मिल जाता है। और याद रखो, जैसा कि हज़रते इब्राहीम और हज़रत इस्माईल (अ० स०) से अल्लाहतआला खुश हुआ वैसा ही उन खुशनसीब बन्दों से खुश होता है जो अल्लाहतआला को खुश करने के लिए जानवरों की क़ुर्बानी करते हैं और उनकी जानोमाल में बरकत देता है।

ऐ आजकल के नौजवान लड़को ! तुम हज़रत इस्माईल (अ० स०) के हालात से सबक़ हासिल करो और अपने माँ-बाप की ताबेदारी करके उनको खुश रखो।

अल्लाहतआला उन हज़रात की बरकत से हमको भी अपने हुक्मों पर चलने का शौक़ अता फरमाये।

कुर्बानी का बयां हो गया यारब तमाम,
शुक्र तेरा और पयम्बर पर सलाम।

# एक ईमानदार बीबी का दर्द भरा क़िस्सा

एक बीबी हज़रत मूसा (अ० स०) को अल्लाहतआला का सच्चा रसूल मानती थी। बड़ी अल्लाह वाली थी। वह फ़िरऔन की लड़की की ख़ादिमा थी। एक दिन वह फ़िरऔन की लड़की के सर में कंघी कर रही थी कि कंघी हाथ से छूटकर नीचे गिर गयी। उसने बिस्मिल्लाह कह कर उठा ली। फ़िरऔन की लड़की ने कहा, यह नाम तूने किसका लिया। कहा यह उस खुदा का नाम है जिसने तुझको और तेरे बाप को पैदा किया और यह बादशाहत दी।

लड़की ने कहा, खुदा तो मेरा बाप है। बीबी ने जवाब दिया कि वह झूठा है जो खुदाई का दावा करता है। लड़की ने यह सारा क़िस्सा फ़िरऔन से कह दिया। फ़िरऔन ने बीबी को बुलाया और कहा, जिस ख़ुदा का तू नाम लेती है उसको छोड़ दे और मुझे ख़ुदा मान ले।

बीबी ने कहा कि मैंने अब तक तो अपने ईमान को छुपाया था। मगर अब जब कि ज़ाहिर हो गया तो अब मैं बेख़ौफ़ कहती हूं कि सिवाय उस खुदाये वहदहूलाशरीक के कोई खुदा होने के क़ाबिल नहीं और मैं अपने उस सच्चे खुदा को जिसने ज़मीनों आसमान को और कुल मख़लूक़ को पैदा किया है हरगिज़ न छोड़ूँगी।

फ़िरऔन ने कहा, ऐ ख़ादिमा ! तेरी ख़िदमत के मुझ पर बहुत हक़ हैं, मैं तुझको सज़ा देना नहीं चाहता। तू बाज़ आजा और मेरी खुदाई में फ़र्क़ न डाल और मेरे सिवा किसी को खुदा न मान।

बीबी ने कहा, मैं अपना ईमान ख़राब नहीं करूँगी और मैं अपने सच्चे ख़ुदा पर अपनी जान कुर्बान कर दूँगी। अब जो तेरे दिल में आवे कर गुज़र और अपने दिल में कहा—

है यह ऐ दिल इम्तहां का वक़्त रह साबित क़दम,
सब्र कर हक़ की मशीयत पर न हरगिज़ मार दम।

सह ख़ुशी से जो भी पेश आये तुझे रंजो अलम,
यह नहीं रंजो अलम इसको समझ फ़ज़्लो करम।

शुक्र कर यह ख़ारे ग़म भी नश्तरे फ़िस्साद है,
ऐ ख़ुदा याक़ी है तू अपनी मुहब्बत दे मुझे।

देख ली फ़ानी है दुनिया इससे नफ़रत दे मुझे,
तेरे दर की ही रहूँ अब ऐसी हिम्मत दे मुझे।

छोड़ दूँ दुनिया को अब ऐसी नफ़रत दे मुझे,
देखली बस देखली यह सख़्त बेबुनियाद है।

ऐश दुनिया हेच हैं दुनियाए फानी हेच है,
हेच है वह चीज़ जो हो आनी जानी हेच है।

ज़िक्रे फ़ानी भी अबस हैं यह कहानी हेच है,
जिसका हो अन्जाम ग़म वह शादमानी हेच है।

ऐश में है बस वही दुनिया से जो आज़ाद है

फ़िरऔन ज़ालिम ने उस बीबी के हाथ-पाँव ज़न्ज़ीरों से बँधवाकर जेलख़ाने में डलवा दिया। यह मुसीबत देखकर वह बहुत परेशान हुई और बारगाहे इलाही में दुआ माँगी कि ऐ मेरे सच्चे ख़ुदा! मैं तेरी मुहब्बत और चाहत दिल में रक्खूं और दुश्मन की क़ैद में पड़ूँ। ग़ैब से आवाज़ आयी, ऐ मेरी प्यारी बन्दी! आदम ने हमारी मुहब्बत का दावा किया। हमने उनको तकलीफ़ों में डाला। इसी तरह नूह को तूफ़ान के इम्तहान में और अय्यूब को एक सख़्त बीमारी में और ज़िकरिया को आरे की तकलीफ़ में डाला और इब्राहीम को आग में और याकूब को युसुफ़ के ग़म में और युसुफ़ को कुएँ और क़ैदख़ाने की तकलीफ़ में डाला। ऐ ताबेदार बन्दी, जिसको दुनिया के लोग चाहते हैं उसको आराम देते हैं और जिसको हम चाहते हैं उसको भूखा-नंगा इम्तहानों में बे आराम रखते हैं। यह ग़ैब की आवाज़ में अल्लाहतआला का पैग़ाम सुनकर जोशे मुहब्बत में कहा।

ऐ मेरे माबूद बरहक़ ऐ ख़ुदा,
है नहीं मालिक कोई तेरे सिवा।

मानती हूँ मैं ख़ुदावन्दी तेरी,
जानती हूँ तुझको ऐबों से बरी।

बेक़रारी है बहुत ऐ किबरिया,
ढूँढने तुझको कहाँ जाऊँ बता।

तू ही अब बतला मुझको अपनी राह,
जिससे पहुँचू तुझ तलक ऐ बादशाह।

बिन बुलाये तेरे ऐ शाहे जहाँ,
तुझ तलक मैं पहुँच सकती हूँ कहाँ।

रख रज़ामन्द अपनी ख़ुवाहिश पर मुझे,
कर न दे हिर्स व हवा मुज़्तर मुझे।

मेरे हक़ में हुक्म जो कुछ हो तेरा,
हो भला उसका नतीजा ऐ ख़ुदा।

अलग़रज़ ! दूसरे दिन फ़िरऔन ज़ालिम ने बीबी को क़ैदख़ाने से बुलाया और कहा, देखा अब भी कुछ नहीं बिगड़ा। बाज़ आजा और मेरे सिवा किसी को ख़ुदा न मान। अपनी कमज़ोरी पर रहम कर। वर्ना मैं तेरे हाथ-पाँव कटवा दूँगा और तेरी आँखें निकलवा दूँगा। बीबी ने कहा, ऐ ज़ालिम जो चाहे कर मैं अपने सच्चे ख़ुदा को हरगिज़ न छोड़ूँगी। और यह हाथ-पाँव इसी क़ाबिल हैं कि काटे जायें कि इनसे तेरी और तेरी लड़की की ख़िदमत की गयी है। और यह आँखें निकलवाने ही के लायक़ हैं कि इन्होंने तुझको देखा है। फ़िरऔन यह जवाब सुनकर ग़ुस्से में भर गया और जल्लादों को हुक्म दिया कि इस औरत के हाथ-पाँव में कीलें ठोक दो और इसके बदन पर अंगारे रख दो। उन बेरहमों ने ऐसा ही किया। वह बीबी यह सब तकलीफ़ें उठाती रही और फ़िरऔन से कहा, ज़ालिम, बेईमान, जितना चाहे सता ले। मैं अपने सच्चे ख़ुदा को न छोड़ूँगी। जब फ़िरऔन ने देखा कि यह औरत सब तकलीफ़ बर्दाश्त कर रही है मगर अपने अक़ीदे और यक़ीन से बाज़ नहीं आती तो फिर उसने यह ज़ुल्म किया कि उस बीबी के दूध पीते बच्चे को आग के तनूर में झोंक दिया। इस पर वह बेचैन हो गयी और बेटे की तकलीफ़ और जुदाई में आँखों में आँसू भर आये। अल्लाहतआला की क़ुदरत से बच्चा आग में बोला, ऐ अम्मा जान! सब्र का मुक़ाम है। ईमान पर साबित क़दम रहो और मेरी तकलीफ़ और जुदाई से मत घबराओ। अब ज़रा-सी देर में तुम भी मेरे पास आ जाओगी। ज़रा देखो तो यह जन्नत तुम्हारे इन्तज़ार में है। अल्लाह- तआला तुम पर रहमत बरसा रहा है। बेटे की ज़ुबान से यह ख़ुशख़बरी सुनकर बीबी के दिल को राहत और तसल्ली हुई। फिर फ़िरऔन ने कहा, अब भी बाज़ आजा और मेरे सिवा किसी को ख़ुदा न मान। अगर तू मुझे ख़ुदा मान ले तो तेरी जान भी बच जायेगी और तुझे बहुत-सा माल देकर तेरी इज़्ज़त बढ़ाऊँगा। बीबी ने कहा, ऐ झूठे, ज़ालिम क्या बकता है? तूने जो कुछ करना था कर चुका और जो कुछ करना है कर ले।

यह वक़्त उस सच्चे ख़ुदा से मिलने का है जो हर चीज़ का मालिक और ख़ालिक़ है। मुझे तेरी इज़्ज़त ओर दौलत की ज़रूरत नहीं। इसी सवाल व जवाब में बीबी की नज़र आसमान की तरफ़ गयी तो क्या देखती है कि सब आसमानों के पर्दे उठे हुए हैं और अर्श-ए-आज़म पर वही बिस्मिल्लाह नूर से लिखी हुई देखी और अल्लाहतआला की बारगाह में अर्ज़ की—

आहो ज़ारी से उठा दस्ते दुआ,
माँगती हूँ तुझसे तुझको ऐ ख़ुदा।

न गदाई ताजदारी चाहिए,
पर तेरे कूचे की खुवारी चाहिए।

ग़ैर की उल्फ़त दिल से मेरे दूर हो,
तेरी उल्फ़त से यह दिल मामूर हो।

वास्ते अपने ज़रा सूरत दिखा,
अब तो अपने पास ले जल्दी बुला।

दूर कर दे मुझसे यह रंजो बला,
ज़ुल्मे ज़ालिम से मुझे जल्दी छुड़ा।

अलहासिल! बीबी साहिबा अल्लाहतआला की मुहब्बत के जोश में दुआ कर रहीं थीं कि फ़िरऔन ज़ालिम ने उस मज़लूमा को दहकती आग के तनूर में डलवा दिया। अल्लाहो अकबर! कैसी हिम्मत और सब्र करने वाली बीबी थीं कि ऐसे सख़्त इम्तहान में और कैसी सख़्त तकलीफ़ों में साबित क़दम रही और अपने ईमान को न छोड़ा और अल्लाहतआला की मुहब्बत में अपनी जान दे दी। (मुनतख़िबा रोज़ातुल्सफ़ा)

**फ़ायदा—** मुसलमान भाईयो! और दीन की बहिनों! देखो, दीन और ईमान बहुत बड़ी नैमत और दौलत है। अपने जी की चाहत से दुनिया की किसी तकलीफ़ या हिर्स व लालच से अपने दीन और ईमान में फ़र्क़ न आने देना और इस दुख भरे क़िस्से से सबक़ हासिल करना।

हमारे रसूल हुज़ूर (स०) मैराज को तशरीफ़ ले जा रहे थे। जब हज़ूर मिस्र के क़रीब पहुँचे तो आपके दिमाग़-ए-पाक में एक बड़ी आलीशान ख़ुशबू आयी। आपने हज़रत जिब्राईल से फ़रमाया, ऐ जिब्राईल! क्या यह ख़ुशबू जन्नत से आ रही है? उन्होंने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! जन्नत तो यहाँ से बहुत दूर है। यह ख़ुशबू तो फ़िरऔन की लड़की की जो ख़ादिमा थी उसकी क़ब्र से आ रही है कि उसने फ़िरऔन के ज़ुल्म व सितम उठाये मगर ईमान नहीं छोड़ा

और अल्लाहतआला की मुहब्बत में क़ुर्बान हो गयी। इसी वास्ते अल्लाहतआला ने उसको बड़ी इज़्ज़त बख़्शी है। सुबहान अल्लाह !

मुसलमानो ! खुदा की क़सम ईमान में और अल्लाह की मुहब्बत में और ताबेदारी में ऐसी तेज़ खुशबू है कि जिस ख़ाक में ईमानदार और ताबेदार बन्दा मिल जायेगा उस ख़ाक को भी जन्नत का नमूना बना देगा।

## तौबा करने की बुज़ुर्गी और उसका तरीक़ा

जानना चाहिए कि जैसे बुख़ार, खाँसी, नमूनिया, ख़ारिश वग़ैरा बीमारियों का ईलाज है वैसे ही अल्लाह व रसूल ने गुनाहों की बीमारियों का इलाज तौबा करना बतलाया है। जैसा कि बुख़ार वग़ैरा बीमारियों से आदमी का बदन कमज़ोर और नाक़िस हो जाता है वैसा ही ईमान गुनाहों की बीमारियों से कमज़ोर और नाक़िस हो जाता है। उसका ईलाज यह है कि जब किसी मुसलमान को किसी गुनाह की बीमारी लग जावे तो बहुत जल्दी तौबा करके उसको बदन से दूर करे।

अल्लाहतआला फ़रमाता है कि जिस बन्दे ने तौबा की और ईमान लाया और अमल अच्छे किये तो ऐसे बन्दों के गुनाहों को अल्लाहतआला नेकियों से बदल देगा। (सूरतुलफ़ुरक़ान)

**फ़ायदा—** देखो, दुनिया में दो क़िस्म के लोग हैं, एक तो वह हैं कि गुनाह की परवाह ही नहीं करते तो ऐसे लोगों से कलाम करना ही बेकार है। दूसरे वह लोग हैं कि गुनाह को छोड़ देते हैं। लेकिन वह फिर हो जाता है। फिर छोड़ देते हैं और उसके बाद फिर पाँव फिसल जाता है और इसी परेशानी में उम्र गुज़र जाती है। लेकिन फिर भी वह गुनाह उनसे नहीं छूटता। तो ऐसे लोगों के लिए अल्लाहतआला ने इस आयत शरीफ़ा में जिसका तर्जुमा ऊपर बयान हुआ है, ईलाज तौबा करना बतलाया है और यह तौबा का नुस्ख़ा बहुत ही मुफ़ीद है। जो शख़्स थोड़ा-सा भी अल्लाह के अज़ाब से डरता होगा, वह ज़रूर गुनाहों को छोड़ना चाहेगा।

अल्लाहतआला ने अपनी मेहरबानी से बतला दिया है कि तौबा करने से गुनाह की आदत और उसका तक़ाज़ा बदल जाता है। यह एक बेमेहनत बूटी है इसके लिए कहीं जाना ही नहीं पड़ता। इस बूटी में बड़ी तासीर है। मगर अल्लाहतआला के बतलाये हुए ईलाज की लोग क़दर नहीं करते।

साहिबो ! आज़माकर तो देखो। अगर असर न हो तो फिर शिकायत करना। बस जब गुनाह हो जाया करे, तौबा कर लिया करो। अगर फिर हो जाये फिर तौबा कर लो। फिर हो जाये फिर तौबा कर लो। ग़रज़ हर गुनाह के बाद

तौबा करना लाज़िम कर लो। इन्शाअल्लाह एक दिन वह आयेगा कि गुनाह की बीमारी बिल्कुल निकल जायेगी।

साहिबो! अल्लाहतआला के बतलाये हुए इस ईलाज का यह असर होगा कि वह गुनाह सारी उम्र नहीं चलेगा। क्योंकि यह हरगिज़ नहीं हो सकता कि बन्दा बार-बार खुदा के सामने तौबा करे और फिर गुनाह चलता रहे। रसूल पाक हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स ने मर्द हो या औरत, हर गुनाह के बाद तौबा कर ली वह गुनाह पर अड़ा न रहा। अगरचे उसने एक दिन में सत्तर दफ़ा गुनाह किया हो। सुबहान अल्लाह! कितनी आसान तदबीर बतलायी कि जब गुनाह हो जावे, तौबा भी कर लो। मगर बात यह है कि ज़ब शैतान ने देखा कि यह तो बड़ा तासीर वाला नुस्ख़ा है। लोग इसको बरतेंगे और गुनाह करने में जो मैंने कोशिश की थी वह सारी मिट जायेगी तो उसने धोखा दिया और यह समझा दिया कि जब तौबा के बाद फिर गुनाह हो जायेगा तो फिर ऐसी तौबा से क्या फ़ायदा।

साहिबो! तौबा हर हालत में करना ज़रूरी और मुफ़ीद है क्योंकि खुदा की बारगाह बेउम्मीदी की बारगाह नहीं है। अगर सौ बार भी तौबा टूट चुकी है तब भी लौट आओ। बेउम्मीद न होना चाहिए। अफ़सोस है कि अल्लाह व रसूल का बतलाया हुआ ऐसा मुफ़ीद नुस्ख़ा मगर शैतान बरतने नहीं देता।

भाइयो और बहिनो! यह नुस्ख़ा दस-पाँच दफ़ा बरत के तो देखो, खुदा की क़सम गुनाह की बीमारी दूर हो जायेगी और तौबा का यह असर होगा कि अल्लाहतआला मदद फ़रमायेगा और बुरी आदतें बदल देगा मगर तौबा ऐसी हो कि जिस तरह रसूले पाक (स०) ने हमको बतलायी है कि पहले वज़ू करो और दो रकत नफ़िल नमाज़ पढ़ो। फिर खूब दिल लगाकर शर्मिंदगी के साथ अल्लाह-तआला से माफ़ी माँगो और वादा करो कि फिर ऐसा काम नहीं करूँगा। बस फ़ारिग़ हो जाओ। मगर वह गुनाह फिर हो जाये, फिर ऐसा ही करो। इसके बाद देख लोगे कि वह गुनाह की बीमारी किस तरह दूर हो जायेगी। क्योंकि जब कोई इसकी पाबन्दी करेगा कि जब गुनाह हो जाया करे हर दफ़ा गुनाह के बाद तौबा भी कर लिया करे तो शैतान इस अमल से आजिज़ हो जायेगा और खुद-बखुद पीछा छोड़ देगा। यह हिकमत है तौबा करने में। जब शैतान पीछा छोड़ देगा तो ज़ाहिर बात है कि अच्छे काम होने लगेंगे। क़ुर्आन व हदीस से अच्छी तरह साबित हो गया कि जब गुनाह हो जाया करे उसी वक़्त तौबा भी कर लिया करे। फिर हो जावे तो फिर तौबा कर ले। कैसी सस्ती और आसान बूटी है और कितना बाअसर नुस्ख़ा है अगर अब भी कोई इसको न बरते तो

यह समझा जायेगा कि उसकी क़िस्मत ही फूट गयी है कि अपना इलाज ही नहीं करना चाहता और ख़ुदा की पकड़ से नहीं डरता और उसको यह कहा जायेगा—

उसके अल्ताफ़ तो हैं आम शहीदी सब पर,
मुझसे क्या ज़िद थी अगर तू किसी क़ाबिल होता।

## एक गुनहगार आदमी की तौबा

हिकायत कि किसी ज़माने में एक मालदार आदमी बदकार था। एक नेक बीबी से उसको मुहब्बत हो गयी। उसने बड़ी कोशिश की कि किसी तरह वह मेरे बस में आ जाये मगर वह नेक बीबी उसके बस में न आयी और वह शख़्स बे उम्मीद हो गया। एक दफ़ा उस नेक बीबी पर बड़ी सख़्ती का वक़्त आ पड़ा। रिज़्क की तंगी ने और क़र्ज़ के बोझ ने उसको दबा लिया और लोगों ने उससे क़र्ज लेना चाहा। बीबी लाचार और मजबूर होकर उसी परेशानी की हालत में उस मालदार आदमी के पास गयी और अपना सब हाल कह दिया। वह बहुत खुश हुआ और कहा कि जितना चाहे रुपया ले ले मगर आज रात को मेरे यहाँ आना पड़ेगा। कहा बहुत अच्छा मैं लोगों का क़र्ज़ अदा करके आ जाऊँगी। उस शख़्स ने रुपया दे दिया। बीबी ने जाकर सब क़र्ज़ अदा कर दिया और वादे के मुवाफ़िक़ रास्ते में यह दुआ करती जाती थी—

आ पड़ी है मुझपे सख़्ती ऐ ख़ुदा,
किससे मैं चाहूँ मदद तेरे सिवा।

सबसे बढ़कर रहम वाला है तू ही,
दुःख में बेकस का सहारा है तू ही।

तू हर एक शै पर है क़ादिर बेगुमां,
सब कुछ तू कर सकता है ऐ रब्बे जहाँ।

मेरी हर बिगड़ी को ऐ रब दे बना,
मेरी हर उलझी को सुलझा ऐ ख़ुदा।

तू जिधर जिस दिल को चाहे फेर दे,
तेरे ही काबू में है दिल ख़ल्क़ के।

बस हमारे दिल को अपने फ़ज़्ल से,
अपनी ताअत की तरफ़ तू फेर दे।

गरचे यारब मैं सरापा हूँ बुरी,
अब तो लेकिन तेरे दर पर आ पड़ी।

एक तेरी ही रहूँ मोहताज मैं,
ग़ैर की या रब न हूँ मोहताज मैं।

खुदा सुनता है तू मेरा कलाम,
मेरा घर तू देखता है और मुक़ाम।

ज़ाहिरो बातिन मेरा है जानता,
हाल मेरा कुछ नहीं तुझसे छुपा।

मैं हूँ फ़रियादी ग़रीबो बेनवा,
कौन पूछेगा मुझे तेरे सिवा।

या इलाही रद्द न कर मेरी दुआ,
फ़ज़्ल से अपने मुझे लीजे बचा।

माँगती हूँ तुझसे मैं तेरी पनाह,
शर से शैतानों के ऐ मेरे इलाह।

लिखा है कि उस आदमी ने बुरे काम के शौक़ में अपने मकान को खूब सजाया और दोनों आदमी मकान में एक जगह बैठे। बीबी साहिबा ने कहा कि तुम पहले मेरी बात सुन लो फिर जो दिल में आये वह करना। बात यह है कि तुम इस वक़्त अपने जी को एक बुरे काम के साथ खुश करना चाहते हो और अल्लाहतआला को नाराज़ करते हो। कल क़यामत के रोज़ वह मालिकउलमुल्क अहकमउलहाकिमीन अपने तख़्त पर बैठेगा और ज़रा-ज़रा सी नेकी और बदी का हिसाब लेगा और फ़रिश्तों को हुक्म देगा कि उस बदकार और बदकारा को पकड़ कर हमारे सामने लाओ तो उस वक़्त का जवाब दो। मैं उस सच्चे ख़ुदा की जिसने तमाम मख़लूक़ को पैदा किया है और आदमियों पर अपनी ताबेदारी फ़र्ज़ कर दी है और जो ऐसा साहिबे क़ुदरत है कि ज़रा-सी देर में फ़क़ीर को अमीर कर दे और अमीर को फ़क़ीर कर दे और जो हाज़िरो-नाज़िर है। हमारे हाल को देख रहा है। मैं क़र्ज़ वालों के दबाव से तुम्हारे पास आयी थी। वर्ना दिल से मैं इस बुरे काम पर खुश नहीं हूँ। बुरा काम मैंने कभी नहीं किया है।

अल्लाहतआला की क़ुदरत और मदद से और बीबी साहिबा की बरकत से वह आदमी अल्लाहतआला की पकड़ से डर गया और बहुत शर्मिंदा हुआ और बीबी साहिबा से माफ़ी माँगी और अल्लाहतआला को खुश करने के लिए बहुत- सी दौलत देकर बीबी को रुख़सत कर दिया और खुद यह सोचकर रोना शुरू किया कि उस नेक बीबी ने एक दफ़ा गुनाह करने को बुरा समझा और मेरी तो सारी उम्र गुनाहों में ही गुज़र गयी। आह! अफ़सोस मैं अपने रब को क्या

जवाब दूँगा। इसी ख़ौफ़ और शर्मिंदगी से रात भर रोता रहा और यूँ दुआ करता रहा—

या इलाही, या इलाही, या इलाह,
मैं हूँ अपनी बदअमाली से तबाह।

तूने जिन कामों के करने को कहा,
मैं उन्हीं कामों में रदगर्दा रहा।

और जिन कामों से तूने रोका मुझे,
रात-दिन मुझसे वही सर-ज़द हुए।

तौबा की अब मैंने ऐ परवरदिगार,
कुल गुनाहों से हूँ मैं शर्मसार।

अब तो जो होना था मुझसे हो चुका,
काँटे अपनी राह में खुद बो चुका।

कर चुका खुद ज़ुल्म अपनी जान पर,
अपने हाथों लुट चुका हूँ सर-बसर।

अब मेरे बचने की है तदबीर क्या,
या इलाही तेरी रहमत के सिवा।

कौन बख़्शेगा मुझे तेरे सिवा,
छोड़कर तुझको कहाँ जाऊँ बता।

रहम कर तू मेरे हाले-ज़ार पर,
और जहन्नुम से मुझे आज़ाद कर।

मैं हूँ मुज़्तर कर दुआ मेरी क़बूल,
और न कर मुझको तू महरूमो मलूल।

अलहासिल! वह शख़्स तीन रात और तीन दिन अपने गुनाह से शर्मिंदा होकर अल्लाहतआला के सामने रोता रहा और उसी हालत में सच्ची तौबा करके दुनिया से कूच कर गया। उस ज़माने में जो नबी थे उनको अल्लाहतआला ने हुक्म दिया कि ऐ नबी! हमारे एक प्यारे बन्दे का इन्तक़ाल हुआ है। तुम अपने दोस्तों को ले जाकर उसके गुस्ल और कफ़न का इन्तज़ाम करो और नमाज़े जनाज़ा पढ़ो। ऐ नबी, यह वह बन्दा है कि जिसने कुदरत के होते हुए भी हमसे डरकर गुनाह को छोड़ दिया और हमारे सामने बहुत शर्मिंदा है। हमसे माफ़ी माँगी और सच्ची तौबा करके इन्तक़ाल कर गया। तुम गवाह रहो कि हमने उस प्यारे बन्दे

के सब गुनाह माफ़ किये और उसको बख़्श दिया।

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह! क्या शान व इज़्ज़त है। अल्लाहतआला से डरकर गुनाहों को छोड़ने वालों की और शर्मिंदा होकर माफ़ी माँगने वालों की और तौबा करना किस क़दर आलीशान अमल है। बेशक तौबा करने वालों से अल्लाह-तआला खुश होता है।

तौबा करके ऐसे हो जाता है ज़ाहिर आदमी,
जैसे माँ के पेट से दुनिया में आया है अभी।

तौबा जो करता है होते हैं माफ़ उसके गुनाह,
मग़फ़िरत की उसके होते हैं फ़रिश्ते भी गवाह।

मौत को तू याद रख यह है हदीसे मुस्तफ़ा,
तौबा करने में न होवे देर ऐ मर्दे खुदा।

## क़र्ज़दार को तंग न करने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

एक शख़्स लोगों को क़र्ज़ दिया करता था। वह अपने ख़ादिम से कह देता कि जब तू इस ग़रीब के पास जाये तो द-गुज़र करना। सख़्ती से तक़ाज़ा न करना। मुमकिन है कि अल्लाहतआला हमसे भी दर गुज़र करे। फिर वह अल्लाह तआला से डरने वाला मर गया। अल्लाहतआला ने उसको बख़्श दिया। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जो शख़्स ग़रीब क़र्ज़दार को क़र्ज़ लेने में तंग न करे, सख़्ती करबे से बचे तो अल्लाहतआला उसको तंग नहीं करेगा और उसके गुनाह माफ़ फ़रमायेगा।

क़र्ज़ देने के बारे में हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

मैंने मैराज की रात में जन्नत के दरवाज़ों पर लिखा देखा है कि ख़ैरात का सवाब दस हिस्से मिलता है और क़र्ज़ देने का सवाब अट्ठारह हिस्से मिलता है और ग़रीब कर्ज़दार को मोहलत देने के बारे में हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जब तक क़र्ज़ अदा करने के वादे का वक़्त न आया हो उस वक़्त तक अगर किसी को मोहलत दे तो हर रोज़ ऐसा सवाब मिलता है जैसा कि इतना रुपया ख़ैरात कर दिया और जब उसके अदा करने का वक़्त आ जाये और फिर मोहलत दे तो हर रोज़ दोगुने रुपये अल्लाह की राह में ख़ैरात करने का सवाब मिलता

है। और जो क़र्ज़ अल्लाहतआला की रज़ा के लिए बे-सूद कर दिया जाये उसको क़र्ज़ हस्ना कहते हैं। हुज़ूर (स०) फ़रमाते है कि जो शख़्स अपने भाई मुसलमान की मुश्किलों में से दुनिया की कोई मुश्किल दूर करेगा, तो अल्लाहतआला क़यामत के रोज़ उसकी मुश्किल दूर करेगा और जो शख़्स अपने मुसलमान भाई का काम बनायेगा, क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसका काम बनायेगा।

**फ़ायदा—** इन्सान हर वक़्त अल्लाहतआला की मेहरबानी का मोहताज है। बस जो इन्सान यह चाहे कि अल्लाहतआला मेरा काम बनाये तो उसको चाहिए कि अपने अख़्तियार के मुवाफ़िक़ अपने भाई मुसलमान का काम बनाये। क़र्ज़ देने का बहुत बड़ा सवाब है, मगर क़र्ज़ लेने में बाज़ लोग बहुत सख़्ती से तक़ाज़ा करते हैं जबकि यह जानते हैं कि इस ग़रीब के पास होता तो बहुत जल्द अदा कर देता। तो यह सख़्ती सारे सवाब को मिटा देती है। इससे बढ़कर यह ज़ुल्म है कि बाज़ लोग क़र्ज़ लेकर बेपरवाह हो जाते हैं और हज़ारों रुपये ग़ैर ज़रूरी कामों पर ख़र्च करते रहते हैं, मगर क़र्ज़ अदा नहीं करते। बल्कि जब माँगो तो बुरा मानते हैं और लड़ने को तैयार हो जाते हैं। बस जिस तरह ख़ुशामद से क़र्ज़ लिया था उसी तरह ख़ुशी से अदा करना चाहिए।

## अच्छे कामों में माल ख़र्च करने का सवाब

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

जो लोग रात और दिन छुपे और ज़ाहिर जब भी मौक़ा मिले अपने माल को अल्लाहतआला की राह में ख़र्च करते हैं उनके ख़र्च करने का सवाब उनके रब के यहाँ उनको मिलेगा और क़यामत के दिन न उनको कोई ख़ौफ होगा और न वह कोई ग़म देखेंगे। **(सूरत आलेइमरान)**

हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

अपनी बुज़ुर्गी में एक दरहम ख़ैरात करना इससे अच्छा है कि मरने के बाद सौ दरहम ख़ैरात किये जायें। (अबुदाऊद)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि अगर कोई मर्द या औरत अपनी ज़िन्दगी में एक रुपया अल्लाह की राह में ज़रूरत की जगह ख़र्च करे तो यह ज़्यादा अच्छा और मुफ़ीद है इससे कि मरने के बाद सौ रुपये ख़र्च किये जायें।

रहमते दो आलम (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो मुसलमान किसी ग़रीब मुसलमान को कपड़े पहनाये तो अल्लाहतआला

उसको जन्नत के सब्ज़ रेशम के कपड़े पहनायेगा। और जो मुसलमान किसी भूखे मुसलमान को खाना खिलाये तो अल्लाहतआला उसको जन्नत के मेवे खिलायेगा, और जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलायेगा तो अल्लाहतआला उसको जन्नत की शराबे पाक पिलायेगा। (तिरमिज़ी)

**इरशाद फ़रमाया रसूलअल्लाह (स०) ने कि—**

सात चीज़ें ऐसी हैं कि उनका सवाब मरने के बाद भी मिलता रहता है। वह यह हैं—

1. दीन का इल्म सिखाना या सिखाने वालों की रुपये वग़ैरा से मदद और ख़िदमत करना कि वह बेफिक्री से पढ़ाते-सिखाते रहें।
2. ज़रूरत की जगह कुँआ बनाना।
3. ज़रूरत की जगह मस्जिद बनाना।
4. दरख़्त लगवाना कि लोग आराम करें।
5. किसी ग़रीब मुसलमान के लिए रहने का मकान बनवा देना या मुसाफ़िर-ख़ाना बनवा देना की मुसाफिरों को आराम मिले।
6. क़ुर्आन मजीद या हदीस व तफ़सीर व फ़िक़ा-ए-दीन के मसलों की किताबें छोड़ जाना या किसी ज़रूरत-मन्द को ख़रीद कर ले देना या छपवा देना।
7. नेक औलाद छोड़ जाना या दीनी मदरसा या पुल वग़ैरा बनवा देना या ऐसे कामों में चन्दा देना सब सदक़ा जारिया कहलता है।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो और बहिनो! ग़रीब लोगों की जान से, माल से मदद और ख़िदमत करना, उनकी हाजित पूरी करना, आलिमों और तालिबइल्मों की ख़िदमत और मदद करना बहुत ही आलीशान अमल है। भूखों का पेट भरना, प्यासों को पानी पिलाना, नंगों को कपड़े पहनाना, भूले हुए को रास्ता बतलाना, यह सब बेहतरीन अमल और अच्छी कमाई हैं। मरने के बाद यह कमाई काम आयेगी।

हदीस शरीफ़ में है कि अर्शे आज़म के नीचे यह तीन बातें लिखी हुई हैं कि—

1. अल्लाह एक है, 2. मख़्लूक़ गुनहगार है, 3. नफ़ा उस आदमी को है जो अल्लाह का दिया हुआ माल मरने से पहले उसकी राह में खर्च कर दे, और उसको आख़िरत में निजात का ज़रिया बनाये और नुक़सान उस आदमी को है जिसमे खाया न पिया और न अल्लाह की राह में दिया और सब छोड़-छाड़ कर मर गया।

मालूम होना चाहिए कि अपना माल, रुपया, पैसा, कपड़े वग़ैरा ऐसे लोगों को देना अफ़ज़ल है कि जो बुज़ुर्ग हों और दीनदार हों, जो नमाज़-रोज़े के पाबन्द हों और शर्म व हया से माँगते न हों। बाक़ी ज़रूरत के मौक़े पर हर हाजित-मन्द ग़रीब की और मोहताज की ख़िदमत करना बहुत बड़ा सवाब है चाहे वह मोहताज ग़रीब ग़ैर मुस्लिम हो।

# क़ुर्आन पढ़ने और पढ़ाने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

तुम सबमें सबसे ज़्यादा अच्छा वह आदमी है जो क़ुर्आन पढ़े और पढ़ावे। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** पढ़ने-पढ़ाने में क़ुर्आन के अल्फ़ाज़ और उसके मायने तफ़सीर व हदीस और फ़िक़ा यानी दीन के सब अहकाम और सब मसले आ गये। इस तरह वह मुसलमान बड़े ख़ुशनसीब हैं जो अपने माल से, जान से ख़िदमत करते हैं और दीन के इल्म को जारी रखते हैं। बेशुमार सवाबों से मालामाल होते हैं।

इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

जिसने क़ुर्आन हिफ़्ज़ किया तो उसके माँ-बाप के सर पर क़यामत के रोज़ ऐसा बुज़ुर्गी का ताज रखा जायेगा कि जिसकी रोशनी सूरज से भी ज़्यादा रोशन होगी। यानी नूर भरी रोशनी होगी। किसी और को ऐसा बुज़ुर्गी का ताज न मिलेगा और जिसने क़ुर्आन हिफ़्ज़ किया और उसके हुक्मों पर अमल किया तो अल्लाहतआला उसको जन्नत में दाख़िल करेगा और उसकी सिफ़ारिश से उसके घर के दस ऐसे आदमियों को बख़्शेगा कि जो दोज़ख़ में होते। (तिरमिज़ी)

**फ़ायदा—** इन हदीसों में हाफ़िज़ को और उसके माँ-बाप को ख़ुशख़बरी है। सुबहान अल्लाह! क़ुर्आन पाक का हिफ़्ज़ करना और कराना भी क्या आलीशान दौलत है।

हज़रत अली (अ० स०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स नमाज़ में खड़े होकर क़ुर्आन पढ़ता है उसको हर हर्फ़ के बदले सौ नेकियाँ मिलती हैं और जो नमाज़ में बैठकर पढ़ता है उसको हर हर्फ़ के बदले पचास नेकियाँ मिलती हैं और जो बग़ैर नमाज़ के वज़ू के साथ पढ़ता है उसको हर हर्फ़ के बदले पच्चीस नेकियाँ मिलती हैं और जो बेवज़ू ज़ुबानी पढ़े उसको हर हर्फ़ के बदले दस नेकियाँ मिलती हैं। (मुल्ला अलीक़ारी)

और जब तुममें से कोई चाहे मर्द हो या औरत कह अल्लाहतआला से

बातें करूँ तो वह कुर्आन को पढ़ लिया करे। मुसलमान भाइयो ! कुर्आने पाक अल्लाहतआला को तमाम ज़मीनों आसमान और तमाम जहानों से ज़्यादा प्यारा है। जो कोई मर्द या औरत इसको पढ़े और इसके साथ मुहब्बत करे और इसकी इज़्ज़त और ताज़ीम करे अल्लाहतआला उसको अपना प्यारा बनायेगा। यहाँ तक कि जिस घर में कुर्आन पाक पढ़ा जाता हो वह घर भी बड़ी बरकत वाला हो जाता है और कुर्आन पाक क़यामत के रोज़ अपने पढ़ने वाले को बख़्शवायेगा।

रिवायत यह है इमामे अहमद से और,
सुन ज़रा इसको तू और कर इसमें ग़ौर।

इमामे अहमद ने एक बार खुदा को अख़ी,
लिया खुवाब में देख ऐ मर्दे वली।

यह की अर्ज़ ऐ मेरे रब्बे जलील,
हो बन्दा तेरा किस तरह से ख़लील।

कहा जो पढ़े मेरे कुर्आन को,
वही दोस्त मेरा है तुम जान लो।

कहा मैं अगर मायने कुर्आन के,
न समझे पढ़े लफ़्ज़ पहचान के।

दोस्त तेरा फिर भी हो या न हो,
कहा गो न समझे वह कुर्आन को।

वह लेकिन वह अलफ़ाज़ मुँह से कहे,
ग़रज़ होके मुश्ताक़ उसको पढ़े।

की जिस ने हँसी मेरे कुर्आन से,
हो गया दूर वह बस ईमान से।

तिलावत किया कर तू कुर्आन की,
बढ़ा रोशनी अपने ईमान की।

## कुर्आन को भुला देने की सज़ा

रसूल अल्लाह (स०) फ़रमाते हैं कि—

जिसके सीने में कुछ भी कुर्आन न हो वह ऐसा है कि जैसा उजड़ा हुआ घर। और जिसने कुर्आन पढ़ा और फिर उसको भुला दिया और उसके हुक्मों पर अमल न किया कि यह भी एक तरह का भुला देना ही है तो वह

क़यामत के रोज़ अल्लाहतआला के सामने इस हाल में लाया जायेगा कि वह कोढ़ी होगा। (अबुदाऊद)

**फ़ायदा—** रसूल अल्लाह (स०) ने कुर्आन पढ़ने की बहुत ताकीद फ़रमायी है, कि वह हमेशा पढ़ने से याद रहेगा वर्ना भूल जाओगे और ऐसी बेमिसाल नैमत जो बड़ी मेहनत उठाकर हासिल की थी, मुफ़्त में बर्बाद हो जायेगी। ऐ कुर्आन पाक के हाफ़िज़ो ! इस आलीशान नैमत की क़दर करो और ख़ूब शौक़ से पढ़ा करो।

देखा ! हाफ़िज़े कुर्आन अगर ज़हन वग़ैरा की ख़राबी से हिफ़्ज़ न पढ़ सके तो देखकर आसानी से इतना ज़्यादा पढ़ सकता है कि देखकर पढ़ने वाला उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता।

पढ़ के तू कुर्आन को कुछ जमा कर ले अब सवाब,
क़ब्र पर कौन आयेगा फिर फ़ातेहा के वास्ते।

# अल्लाह की किताब का पढ़ना कोई मामूली बात नहीं

मुसलमानो ! अल्लाहतआला की किताब का पढ़ना कोई मामूली बात नहीं है। अल्लाहतआला के नज़दीक इसका पढ़ना बहुत ही प्यारा है। अल्लाहतआला को कुर्आन पढ़ने के वक़्त पढ़ने वाले की तरफ़ ख़ास तवज्जह होती है। यहाँ से अन्दाज़ा हो सकता है कि हाफ़िज़ व क़ारी हक़ तआला के नज़दीक किस क़दर महबूब और मौअज्जिज़ हैं। क्योंकि वह हक़तआला के कलाम के पढ़ने वाले हैं और इसकी हिफ़ाज़त करने वाले हैं। फिर जिस शख़्स के साथ हक़ तआला को मुहब्बत हो उसकी अज़मत का क्या ठिकाना है। इससे मालूम हो गया होगा कि कुर्आन का हिफ़्ज़ करना कितनी बड़ी दौलत है। इसी तरह कुर्आन का पढ़ना गो नाज़रे ही हो हक़तआला के साथ हमकलामी है तो जिस शख़्स को हक़ तआला से कलाम करने की दौलत नसीब हो सकती हो उसको तो किसी तरह ऐसे मौक़े से चूकना ज़ेबा नहीं और अगर चूक गया तो बड़े टोटे में रहा। ज़रा ग़ौर तो करो कि कितने-कितने सफ़र करने पड़ते हैं और कितना माल ख़र्च करना पड़ता है और कितना वक़्त लगता है। जब जाकर एक अदना बादशाह से जो तुम जैसा ही आदमी है, एक बात करना नसीब होती है। और हक़ तआला के यहाँ किसी वक़्त की बंदिश नहीं। जिस वक़्त जिसका जो चाहे हक़ तआला से बातचीत कर सकता है। फिर बादशाहों से बातचीत करने में किस कदर बखेड़े

हैं, ज़रा-सी कमी रह जाये तो उसका अन्जाम नाखुशी है और यहाँ कुछ नहीं बल्कि कोई शख़्स ग़लत भी पढ़ता हो तो उसको भी रद्द नहीं किया जाता। हाफ़िज़ और क़ारियों का तो क्या कहना है ! अगर कोई और भी उल्टा-सीधा पढ़े तो हर हर्फ़ के बदले दस नेकियों के देने का वादा है। बल्कि यहाँ तक भी आया है कि जो शख़्स अटक- अटक कर भी पढ़े तो उसके वास्ते दो गुना सवाब है। क्योंकि एक तो पढ़ने का, दूसरे उसकी मेहनत का सवाब कि उससे चलता नहीं फिर भी जी पर ज़ोर डाल कर पढ़े जाता है।

हक़ तआला के यहाँ क़ुर्आन पढ़ने वाले की बहुत इज़्ज़त है। हक़तआला को क़ुर्आन का पढ़ना बहुत पसन्द है। यहाँ से क़ुर्आन पढ़ने की फ़ज़ीलत समझ में आ गयी होगी और यह ऐतराज़ भी जाता रहा जो आजकल अंग्रेज़ी पढ़े हुए लोगों की ज़ुबान पर है। जो बच्चों को क़ुर्आन नहीं पढ़वाते और कहते हैं कि तोते की तरह पढ़ने का क्या फायदा। पढ़ना तो वह है जो मायने समझ कर पढ़ा जाये। बच्चों को इतनी समझ नहीं होती कि मायने समझें। फिर पढ़ने का क्या फ़ायदा। खुदा रहम करे। ऐ ऐतराज़ करने वालों ! मैं पूछता हूँ कि फ़ायदा किसको कहते हैं ? क्या सारा फ़ायदा समझने ही में मुन्हसिर है। हरगिज़ नहीं, बल्कि समझना भी एक फ़ायदा है, बल्कि समझने का अख़ीर अन्जाम भी मुसन्निफ़ को खुश करना है। क्योंकि ताबेदारी करने से ग़रज़ यही है कि हक़-तआला खुश हो। जो लोग कहते हैं कि बेसमझे पढ़ने से क्या फ़ायदा, उनसे पूछना चाहिए कि समझकर पढ़ने से क्या फ़ायदा इसका जवाब शायद यह देंगे कि समझकर पढ़ा जायेगा तो इस पर अमल होगा। फिर हम कहेंगे कि अमल से क्या फ़ायदा। अख़ीर में दो घण्टे के बाद या चार घण्टे के बाद ही कहना पड़ेगा कि इससे खुदा खुश होगा। आपने इतनी देर के बाद यह नतीजा निकाला और हमने शुरू से यह बात कही थी मगर आपकी समझ में न आयी और घूमघाम कर वहीं आये कि फ़ायदे की हक़ीक़त खुदा-ए-तआला को खुश करना है। बस, जबकि हम खुदा और उसके रसूल के कलाम से साबित कर रहे हैं कि क़ुर्आन का हर तरह पढ़ना खुदा-ए-तआला को खुश करना है फिर इस सवाल के क्या मायने कि बिला समझे पढ़ने से क्या फ़ायदा।

हदीस शरीफ़ में यह फ़ायदा आया है कि हर हर्फ़ के पढ़ने पर एक-एक नेकी मिलेगी और एक नेकी के बदले दस नेकियाँ मिलती हैं। देखिये किस क़दर सवाब है। अब तो फ़ायदा भी मालूम हो गया और फ़ायदा भी कैसा बेहद व बेहिसाब। कोई छोटी से छोटी सूरत भी पढ़ो तो इतना सवाब हो जाये कि उठाये न उठे।

देखो अल्हमदु में पाँच हर्फ़ हैं। ज़रा-सा लफ़्ज़ पढ़ने से पाँच नेकियाँ मिलती हैं। फिर इन पाँच की पचास हो जाती हैं। बस, वह फ़ायदा यह है। अब तो समझ में आ गया कि कुर्आन के पढ़ने का फ़ायदा मायने समझने ही में मुन्हसिर नहीं है। जैसा कि मैंने समझ रक्खा है। अगर मुन्हसिर है भी तो मायने समझने से किसने रोका है। अरबी पढ़ो और समझो, हम कब कहते हैं कि बस तोते ही की तरह पढ़ो, बल्कि यह कहते हैं कि तोते की तरह भी पढ़ो और मायनी समझ कर भी पढ़ो। अब फ़ायदा मालूम करके भी कोई कुर्आन के पढ़ने से महरूम रहे। न आप पढ़े और न अपने बच्चों को पढ़ावे, तो उसकी बदबख़्ती है। इसको यह कहा जावेगा।

उसके अल्ताफ़ तो हैं आम शहीदी सब पर,
तुझसे क्या ज़िद थी, अगर तू किसी क़ाबिल होता।

# तीन क़िस्म के लोगों की ताज़ीम वाजिब है

मोहसिने-आज़म हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

मैराज की रात में अल्लाहतआला ने मुझसे फ़रमाया कि ऐ मौहम्मद! अपनी उम्मत को ख़बर कर देना कि तीन क़िस्म के लोगों की ताज़ीम किया करें। एक अपने माँ-बाप की, दूसरे आलिम बा-अमल की, तीसरे हाफ़िज़-ए-कुर्आन बा-अमल की। और ऐ मौहम्मद (स०)! अपनी उम्मत को डराओ कि जो शख़्स इन तीनों पर ग़ुस्सा करेगा और उनसे लड़ेगा और उनकी बेअदबी करेगा तो मैं उस पर अपना क़हर नाज़िल करूँगा। और ऐ मौहम्मद (स०), कुर्आन के हाफ़िज़ मेरे अहल हैं और बहुत ही प्यारे बन्दे हैं। अगर कुर्आन इनके सीनों में न होता तो बेशक दुनिया और दुनिया के लोग बर्बाद हो जाते। और ऐ मौहम्मद (स०), कुर्आन का हाफ़िज़ जो इसको हमेशा पढ़ता है, जब मर जाता है तो उसके ग़म में ज़मीन व आसमान भी रोते हैं। और क़यामत के दिन कुर्आन के हाफ़िज़ को मैं अज़ाब नहीं दूँगा और बिला हिसाब जन्नत में दाख़िल करूँगा। और ऐ मौहम्मद (स०), जन्नत तीन आदमियों की आशिक़ है। एक आपकी, दूसरे आपके दोनों अस्हाब अबुबक़र (रज़ी०) और उमर (रज़ी०), तीसरे हाफ़िज़-ए-कुर्आन बा-अमल की। (कुरातुलवायेज़ीन)

**फ़ायदा—** मेरे अज़ीज़ भाइयों, हाफ़िज़ों! अपना रुतबा पहचानो और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानियों से बचो। देख लेना कि मुसलमानों के दिलों में भी तुम्हारी मुहब्बत और इज़्ज़त होगी। कुर्आन के हाफ़िज़ों को बड़ी ऐहतियात से रहना चाहिए। ख़ुदा का कलाम पाक सीने में हो फिर अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी

करना बड़े ऐब की बात है।

मुसलमान भाईयो! तुम दीनदार और परहेज़गार आलिमों और हाफ़िज़ों की ख़ूब ख़िदमत और इज़्ज़त किया करो ताकि तुम भी अल्लाह व रसूल के प्यारे बन जाओ। शहनशाहे दो आलम (स०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स क़ुर्आन सुने, उसको भी हर हर्फ़ के बदले दस नेकियाँ मिलती हैं और उसके दस गुनाह माफ़ होते हैं और दस दर्जे बुलन्द होते हैं। सुबहान अल्लाह क़ुर्आन का पढ़ना भी नूर न और न पढ़ना भी नूर और सुनना भी नूर और अहले क़ुर्आन यानी आलिमों और हाफ़िज़ों की ख़िदमत और इज़्ज़त जान व माल से करना भी नूर। इन्शाअल्लाह- तआला दोज़ख़ की मार से भी यह सब रहेंगे दूर।

## दुआ

क़ब्र की वहशत को या रब दूर कर,
इस अंधेरे घर को तू पुरनूर कर।

और क़ुर्आन-ए-अज़ीमुश्शान से,
ऐ ख़ुदा नूरे हिदायत दे मुझे।

पेशवा मेरा हो क़ुर्आने अज़ीम,
इसकी बरकत से बख़्श तू ऐ रहीम।

है मेरा वही इमाम व पेशवा,
हो इसी का नूर मेरा रहनुमा।

और न हो जो बात इसकी मुझको याद,
तू करादे याद ऐ रब्बुल अबाद।

रात-दिन इसकी तिलावत हो नसीब,
इससे ज़ौक़ व शौक़ व उल्फ़त हो नसीब।

## मस्जिद बनवाने का सवाब

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

बेशक मस्जिदों का बनवाना (और उनका आबाद करना) उन्हीं लोगों का काम है जो अल्लाह पर और क़यामत के दिन पर ईमान रखते हैं और हमेशा नमाज़ पढ़ते हैं और अपने मालों की ज़कात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। ऐसे लोगों के लिए वादा है वह राहे निजात तक यानी जन्नत में पहुँच जायेंगे। (सूरतउल तौबा)

हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो मर्द या औरत ख़ास अल्लाहतआला को खुश करने के लिए मस्जिद बनवाये (या मस्जिद को आबाद करे) तो अल्लाहतआला उसके लिए जन्नत में मोती और याक़ूत के महल बनवायेगा। (तबरानी)

मस्जिद बनवाना या उसके लिए ज़मीन देना या ख़रीद कर ज़मीन ले देना, जान व माल से उसकी ख़िदमत करना उसके तआल्लुक़ में पानी का और वज़ू और गुस्ल की जगह का या पेशावख़ाना बनवाना, चटाई, दरी वग़ैरा बिछवाना और उसके और उसके अख़राजात के लिए दुकानें या मकानात वग़ैरा बनवाना या वक़्फ़ कर देना, ताक़त के मुवाफ़िक़ इसमें चन्दा देना या किसी मस्जिद की मरम्मत करा देना या उसके क़रीब मदरसा खोल देना सब सदक़ा जारिया है और यह ऐसा जारी रहने वाला अमल है कि मरने के बाद जब क़ब्र में आदमी पड़ा होगा और एक-एक नेकी को तरसेगा उस वक़्त भी इसका सवाब पहुँचता रहेगा।

**मसला—** मस्जिद में हलाल माल लगाया जाये। ज़मीन, ईंट, चूना वग़ैरा सब हलाल माल से हो और मस्जिद वहाँ बनवायें जहाँ मुसलमानों को इसकी ज़रूरत हो।

# मस्जिद को पाक-साफ़ रखने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

मस्जिद का कूड़ा निकालना बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों का महर अदा करना है। और जिसने मस्जिद को झाड़ू देकर साफ़ कर दिया, अल्लाहतआला उसके लिए जन्नत में महल बनायेगा। (इब्ने माजा)

एक हब्शन बीबी मस्जिदे नबवी में झाड़ू दिया करती थी। वह किसी रात में मर गयी। सहाबा ने हुज़ूर (स०) को तकलीफ़ से बचाने की वजह से उसके मरने की आपको ख़बर न की और नमाज़ जनाज़ा पढ़कर उसको दफ़न कर दिया। और सुबह को हुज़ूर (स०) को मालूम हुआ तो सहाबा से फ़रमाया, तुमने उसके मरने की ख़बर मुझे क्यों न दी। मैंने उस बीबी को जन्नत में देखा है। वह हमारी मस्जिद में झाड़ू दिया करती थी। इस अमल की बरकत से वह जन्नत में गयी। फिर हुज़ूर ने उस बीबी की क़ब्र पर नमाज़ पढ़ी। यह क़ब्र पर नमाज़ पढ़ना आप (स०) ही के लिए ख़ास था। दूसरों को जायज़ नहीं। मस्जिदे नबवी में रोशनी का कोई इन्तज़ाम नहीं था। एक शख़्स ने उसमें चिराग़ की रोशनी कर दी। हुज़ूर (स०) चिराग़ की रोशनी देखकर बहुत खुश हुए और यह दुआ फ़रमायी।

ऐ अल्लाह! जिसने तेरे घर में रोशनी की है तू उसकी क़ब्र को नूर की

रोशनी से भर दीजियो। जब वह शख़्स हुज़ूर (स०) को मिले, आप उनसे बहुत खुश हुए। सुबहान अल्लाह ! मस्जिद बनवाना, आबाद करना, उसमें झाड़ू देना और उसमें रोशनी का इन्तज़ाम करना क्या आलीशान अमल है।

## मस्जिद के आदाब और हक़ूक़

मस्जिद में खुशबू लगाना, छिड़कना और धूनी खुशबू वाली देना, उसको पाक साफ़ रखना, उसमें नमाज़ पढ़ना, बिला किसी सख़्त उज़्र के जमाअत से नमाज़ न पढ़ना, मकरूह वक़्त न हो तो बैठने से पहले दो रकअत नफ़िल नमाज़ पढ़ना, अदब के साथ उसमें दाख़िल होना और दिल लगाकर बैठना और अल्लाह की याद करना, मसले सीखना और सिखाना, बदबूदार चीज़, कच्चा लहसुन, प्याज़, मूली और तम्बाकू, सिग्रेट खाकर या पीकर न जाना। अगर जावे तो पहले मुँह की बदबू दूर करना, दुनिया की बातें न करना, नहाने की हालत में दाख़िल न होना, उसमें हवा ख़ारिज न करना, उसमें न थूकना न वज़ू करना न उसमें ख़रीदो फ़रोख़्त करना, उसकी कोई चीज़ लोटा या चटाई वग़ैरा अपने काम के लिए बाहर न ले जाना, नमाज़ियों की नमाज़ में फ़र्क़ पड़ने की वजह से कुर्आन या कोई वज़ीफ़ा बुलन्द आवाज़ से न पढ़ना, उसमें शोरो-ग़ुल न करना, कोई नापाक चीज़ उसमें न ले जाना, जो शख़्स लोगों में ज़्यादा दीनदार हो और नमाज़ के मसलों से वाक़िफ़ हो, कुर्आन मजीद सही पढ़ता हो, उसको इमाम बनाना। उससे दीन के मसले पूछना, अपने बच्चों को उससे कुर्आन पढ़वाना, ग़रज़ कि मस्जिद की आबादी में और इज़्ज़त में फ़र्क़ न आने देना।

तुमसे यह इल्तजा है हामियाने मस्जिद,
न होने पाये हरगिज़ कम इज़्ज़ोशाने मस्जिद।

क्या आफ़ताबे महशर का ग़म ग़ाज़ियों को,
साया करेगा सर पर वह सायेबान मस्जिद।

फूलों की तरह यारब सदा ग़ाज़ी,
फूले-फले इलाही यह गुलिस्ताने मस्जिद।

मसऊल महरो माह में तारे हैं यह ग़ाज़ी,
क्या जगमगा रहा है यह आसमाने मस्जिद।

मस्जिद पुकारती है तुम सबको पंचगाना,
दौड़ो शिताब आओ ऐ आशिक़ाने मस्जिद।

करो ग़ुस्ल पंचगाना हो दूर मैल सारा,
जारी किया खुदा ने बहरे खाने मस्जिद।

ख़िदमत से मस्जिदों की मख़दूम होंगे एक दिन,
ऐ मोमिनो बनो तुम सब ख़ादिमाने मस्जिद।

## मस्जिद की बददुआ

एक बुज़ुर्ग किसी बस्ती में गये। मस्जिद में देखा कि कूड़े से भरी पड़ी है, न पानी का इन्तज़ाम है न चिराग़-बत्ती का सामान, और न किसी नमाज़ी का नामोनिशान। उन्होंने कूड़ा निकाल कर मस्जिद को साफ़ किया। रात को भूखे-प्यासे उसी में लेट गये। रात भर मस्जिद की बददुआ सुनते रहे। वह कहती थी—

ऐ अल्लाह! मैं तेरा घर हूँ और तेरी इबादत के लिए मुझे बनाया गया है। जिस तरह यहाँ के लोगों ने मुझे बर्बाद किया है तू इनको भी बर्बाद कर दे। उन बुज़ुर्ग ने बस्ती के लोगों को जमा किया और मस्जिद की बददुआ का ज़िक्र किया। लोगों ने वादा किया कि हम इसकी ख़िदमत किया करेंगे। वह बज़ुर्ग नसीहत करके चले गये। उन लोगों ने लोटे, चटाई और पानी का इन्तज़ाम कर दिया और एक आदमी को चिराग़ जलाने और झाड़ू देने के लिए मुक़र्रर कर दिया। कुछ दिनों के बाद वह बज़ुर्ग फिर वहाँ आये और मस्जिद में ठहरे। रात भर फिर वही बददुआ सुनते रहे। उन्होंने कहा, ऐ मस्जिद! अब तो इन लोगों ने तुझे आबाद कर दिया, फिर बददुआ कैसी? मस्जिद से आवाज़ आयी कि यह आबाद करना मेरे लिए काफ़ी नहीं, मेरी आबादी तो नमाज़ियों से होती है। यह लोग जब तक मेरे अन्दर नमाज़ न पढ़ेंगे, मैं इनको बददुआ ही करती रहूँगी। उन्होंने लोगों को बुलाकर मस्जिद की बात बयान की। वह लोग डर गये और दिल से तौबा की और सब छोटे-बड़े नमाज़ पढ़ने लगे और एक दीनदार इमाम भी मुक़र्रर कर दिया और मवज़्ज़न भी रख लिया। इमाम साहब ने बच्चे पढ़ाने शुरू कर दिये और मस्जिद आबाद हो गयी। वह बज़ुर्ग यह इन्तजाम करके चले गये। कुछ दिनों के बाद वह फिर गये, और नमाज़ियों की मस्जिद में रौनक़ देखकर बहुत ख़ुश हुए। लोगों ने दीन का रास्ता पूछने के लिए उनको अपना पीर बना लिया। उन्होंने मस्जिद में क़याम किया। रात भर दुआ सुनते रहे। ऐ अल्लाह! जिस तरह इन लोगों ने मुझे आबाद किया है तू इनको आबाद कर और इनकी जान में, माल में बरकत दे और इनसे ख़ुश हो।

**फ़ायदा—** मुसलमानो! तुम भी मस्जिदों को आबाद करो, ख़ुदा तुम्हें आबाद करेगा। छोटे-बड़े मर्द-औरत सब नमाज़ी बन जाओ और सच्चे आलिम पीरों की नसीहत करो। फिर तुम पर अल्लाहतआला की दुनिया में भी और आख़िरत में भी रहमतें बरसेंगी।

# आजकल नाकारों को मस्जिद का इमाम बनाया जाता है

मवज़्ज़न भी आजकल अक्सर ऐसे ही लोग रखे जाते हैं जो किसी काम के न हों। बेइल्म मवज़्ज़न और इमाम बनाये जाते हैं और ऐसे लोगों के इमाम और मवज़्ज़न बनाने में यह ग़र्ज़ होती है कि ख़र्च ज़्यादा न करना पड़े। क्योंकि जो आदमी काम का होगा वह तो ख़र्च से ही मिलेगा। इमाम जो रखे जाते हैं वह भी वह होते हैं जो किसी काम के न रहे। जब तक काम के रहे, नौकरी-चाकरी करते रहे और जब अपाहिज हो गये तो ख़ुदा के दरबार की वकालत के लिए पसन्द किये गये। क्योंकि इमामत दरबारे ख़ुदावन्दी की वकालत है। ज़रा सोचो तो अगर आप बादशाह से मिलने जायें और क़िस्मत से रसाई हो जाये तो आपको बादशाह के सामने पेश करने के लिए कोई कुली, मज़दूर आगे नही बढ़ायेगा। बल्कि कोई रईस या बड़ा हाकिम भी यह काम न कर सकेगा, बल्कि यह काम कोई वज़ीर या वाइसराय कराएगा। और ख़ुदा के सामने जो अहकमउल-हाकिमीन है, पेश करने के लिए ऐसे लोग पसन्द किये जायें जो लोगों में सबसे ज़्यादा रद्दी और नाकारा बेइल्म नाम के मौलवी बने हुए हों, उनको मुकर्रर करते है।

जैसे एक बेइल्म इमाम थे। उन्होंने नमाज़ पढ़ाई और आख़िर में सजदा-ए-सहव भी किया। उस रोज़ उनके पीछे एक आलिम भी थे। उन आलिम ने पूछा कि इमाम साहब भूल का सजदा क्यो किया है? कहा कुछ नहीं, ज़रा-सी बात हो गयी थी। आलिम ने कहा, हमको भी बतला दो वह ज़रा-सी बात क्या है ? कहा कुछ नहीं, ज़रा-सी हवा पीछे से निकल गयी थी। उन्होने कहा कि फिर नमाज़ कहाँ हुई, हवा निकलने से वज़ू टूट जाता है, जब वज़ू न रहा तो नमाज़ भी न हुई। वज़ू करके आओ और फिर नमाज़ पढ़ाओ।

यह हाल है आजकल के बेइल्म इमामों का। यह ख़राबियाँ कम ख़र्च करने से और दीन की तरफ़ से बेपरवाह होने की वजह से है। तब ही तो ऐसे लोगों को इमाम बनाया जाता है जो निहायत बदनियत और लालची होते हैं। जैसा कि मिसाल मे कहा जाता है कि फ़लाने की तो मल्लानो की-सी नीयत हो गयी है। मगर अपनी ख़ता को कोई नहीं देखता। अव्वल तो पसंद ही ऐसे लोगों को करते हैं जो फितरती तौर पर दिल के कमज़ोर और लालची होते हैं। फिर इमामों की ख़िदमत की यह हालत है कि ख़ुशी मे तो बिरादरी की पूछ होती है। और इमामों को कोई नहीं पूछता। और ग़मी मे जब कोई मर जाये या बीमार हो जाये या हैज़ा और ताऊन आ लिपटे तो फिर इमाम और मवज़्ज़न

को पूछा जाता है। क्योंकि सदक़ा देना रद बला का सबक़ याद किया हुआ है। उस वक़्त यह सूझती है कि मवज़्ज़न और इमाम को खाना खिला दीजिए। और कहते हैं कि मुल्ला जी ज़रा दुआ करना और पाँचों वक़्त नमाज़ के बाद लोगों से भी दुआ कराना। वह जैसी दुआ करेंगे मालूम है। अगर ज़ुबान से दुआ भी दे तो दिल से कभी नहीं करेंगे क्योंकि किसी के अच्छा होने से उनको क्या फ़ायदा? उनका फ़ायदा तो मरने ही में है कि कुछ दिनों की रोटियाँ तो चलेंगी। क्योंकि मरे मोटा और भरे लोटा। हलवा, पराठा, पुलाव, ज़र्दा वग़ैरा ख़ाने को मिलेगा। तीजे, चालीसवें वग़ैरा में शर्बत, चाय, मेवा और कपड़े, रुपये वग़ैरा सब कुछ मिलेंगे। ग़रज़ उनका फ़ायदा तो किसी के मरने ही में है कि आमदनी बढ़ती है और जीने में तो उनका नुक़सान ही है कि बिल्कुल कोरे रहते हैं। जैसे एक हिकायत है कि शबेबरात आयी। लोगों में रिवाज है कि अपने मुर्दों को सवाब पहुँचाने के लिए मवज़्ज़न या इमाम को घर बुलाकर ख़त्म दिलवाते हैं जिसका नाम फ़ातेहा और ख़त्म दरूद रखा हुआ है। इमाम ने कुछ पढ़ा और मुँह पर हाथ फेरकर कह दिया कि ख़त्म दे दिया। ख़त्म दिलाने वालों ने कहा कि खाना ले जाओ। बस वह मौहल्ले भर में ख़त्म दे-देकर खाना हुजरे में ला-ला कर रखते हैं। इसी तरह एक इमाम साहब खत्म देने गये थे। उनके पीछे मस्जिद में एक बुढ़िया कुछ खाना लेकर आयी। उसने देखा कि मस्जिद में इमाम साहब नहीं है। उसने देखा कि एक मुसाफ़िर बैठा हुआ है। वह खाना बुढ़िया ने उसको दे दिया। खाना देकर जब वह मस्जिद से निकली तो इमाम साहब भी आ गये। पूछा कि माई किस तरह आयी हो? उसने कहा कि खाना लेकर आयी थी। आप मिले नहीं, मैंने सोचा कि आपके यहाँ तो आज खाने के ढेर लगे हुए हैं, यह मुसाफ़िर भूखा है, इसका पेट भर जायेगा तो सवाब ज़्यादा मिलेगा। इसलिए खाना इसको दे दिया है। इमाम ने ग़ुस्से में होकर कहा, माई! तूने तो मेरे साथ जंग खड़ी कर दी। और मुसाफ़िर को भी तेज़ नज़र से देखा कि आज तू कहाँ आ मरा, ज़रा ठहर अभी तेरी ख़बर लेता हूँ। यह कहकर आप हुजरे में खाना रखने गये। इतने में मुसाफ़िर भाग निकला कि मियाँ जी आकर मारने न लगें। आप एक मोटा-सा सोटा लेकर मारने के लिए आये। देखा तो मुसाफ़िर ग़ायब। फिर इमाम साहब ने जायेनमाज़ में, जो कफ़न के साथ लोग दिया करते हैं, हालाँकि वह कफ़न में शुमार ही नहीं, सबको सर पर बाँध लिया और आँखें खुली रखीं और एक बाँस लेकर मस्जिद में कभी इधर और कभी उधर दीवारों पर मारना शुरू किया और ख़ूब ज़ोर से शोर मचा दिया कि मार दिया, मार दिया। कोई है इस फ़ौज से छुड़ाए। उसका यह शोरगुल सुनकर मौहल्ले के लोग सब आ गये और यह हाल देखकर हैरान हो गये। जब इमाम साहब ने देखा कि सब

लोग जमा हो गये तो आप एकदम चक्कर काटकर ज़मीन पर गिर पड़े। लोगों ने हाथ-पाँव दबाये और मुँह में पानी डाला तो उसको होश आया। लोगों ने कहा कि मियाँ जी साहब यह क्या मुसीबत है? कहा कि यह सारी मुसीबत उस बुढ़िया ने मुझ पर डलवायी। उसने एक ग़लती तो यह की कि मुझसे ख़त्म न दिलवाया, दूसरे ग़लती यह की कि खाना बे ख़त्म दिये मुसाफ़िर को दे दिया। अव्वल तो मुसाफ़िर को क्या पता कि मौहल्ले में कौन मरा है? सवाब किसको पहुँचाता। बस इस मौहल्ले के मुर्दे नाराज़ हो गये और सबने जमा होकर मुझे मारना शुरू कर दिया। मैंने बड़ी मुश्किल से बाँस पर उनके हमले रोके। आख़िर उन्होंने मुझे गिरा दिया। क्योंकि वह बहुत थे, मैं अकेला कहाँ तक लड़ता। यह सारा क़सूर उस बुढ़िया का है। न मुसाफ़िर को खाना देती, न मुर्दे मुझसे लड़ाई करते। सब मुर्दों ने कहा कि अब इसको छोड़ दो, अगर इसने फिर ख़त्म न दिया तो इसको जान से मार डालेंगे। बस अगर तुम लोगों ने मुझसे ख़त्म न दिलाया और दूसरे लोगो को खाना खिला दिया तो मुर्दे मुझे मार जायेंगे। इसलिए अब मुझको मस्जिद में रहना अच्छा नही। लोगों ने कहा कि मियां जी साहब, आप मस्जिद में रहें, हम सब आप ही से ख़त्म दिलाया करेंगे। आपके सिवा न किसी को खाना खिलायेंगे और न देंगे। तब इमाम साहब को चैन पड़ी।

यह हाल है नाअहल बेइल्म इमामों का। बस यह कहना दरुस्त है कि नीम हकीम ख़तरा-ए-जां और नीम मुल्ला ख़तरा-ए-ईमान।

अल्लाह की पनाह! दीन की बातों में बेइल्म और बेसमझ लोगों ने एक जहालत का तूफ़ान मचा रखा है। बस वह काम हो रहा है कि अंधों में काना सरदार।

मुसलमान भाइयो! इस बेढंगेपन को दूर करो और इमाम ऐसे शख़्स को बनाया करो जो नमाज़ के मसलों से वाक़िफ़ हो और दीनदार व समझदार हो।

## वज़ू करने का सवाब

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स अच्छी तरह वज़ू करे उसके गुनाह माफ़ हो जाते हैं। यानी गुनाहे सग़ीरा, सहाबा ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! आप क़यामत के रोज़ उन मुसलमानों को किस तरह पहचानेंगे जो आपके बाद होंगे। आपने फ़रमाया तुम यह बतलाओ कि अगर किसी शख़्स के घोड़े सफ़ेद पाँव और सफेद माथे के हों और वह सियाह घोड़ों में मिले हुए हो तो क्या वह शख़्स अपने घोड़ों को पहचान लेगा। सहाबा ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह! वह ज़रूर अपने घोड़ों

को पहचान लेगा। आपने फ़रमाया, बस इसी तरह मैं भी अपनी उम्मत के मुसलमानों को पहचान लूँगा कि वज़ू की बरकत से उनके माथे और हाथ-पाँव सफ़ेद और नूर से रोशन होंगे और उनके आमालनामे उनके दाहिने हाथों में होंगे। और जन्नत की कुन्जी नमाज़ है और नमाज़ की कुन्जी वज़ू है। (मिशकात)

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह! वज़ू करना भी अल्लाहतआला की रहमत और मग़फ़िरत की चीज़ है।

इसलिए हर नमाज़ी को चाहिए कि वज़ू ख़ूब अच्छी तरह किया करे। कोई जगह सूखी न रह जाये वर्ना वज़ू दरुस्त न होगा और जब वज़ू दरुस्त न होगा तो नमाज़ भी दरुस्त न होगी।

## नमाज़ पढ़ने का सवाब

जानना चाहिए कि पाँच बातें दीन-ए-इस्लाम की जड़ हैं और फ़र्ज़ हैं—

1. ईमान लाना, 2. नमाज़ पढ़ना, 3. रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना,

4. हंज करना, 5. ज़कात देना।

• इनका छोड़ने वाला फ़ासिक़ और सख़्त मुजरिम और सज़ा का मुस्तहक़ है और इन्कार करने वाला काफ़िर और बाग़ी और बेईमान है। अल्लाह व रसूल ने नमाज़ पढ़ने की बहुत ताकीद फ़रमाइयी है।

रसूल-ए-पाक (स०) फ़रमाते हैं कि—

बेशक अल्लाहतआला ने हर मुसलमान मर्द और औरत पर पाँच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ कर दी हैं। बस जो कोई पाँच वक़्त की नमाज़ हमेशा पढ़ता रहेगा, अल्लाहतआला उस पर दोज़ख़ की आग हराम कर देता है। बेशक नमाज़ दीन का सतून है। जिसने नमाज़ को अच्छी तरह पढ़ा, उसने दीन को क़ायम रखा और जिसने नमाज़ न पढ़ी उसने दीन को गिरा दिया और अपना दीन बर्बाद कर दिया। और नमाज़ पढ़ने वाले मर्द और औरतें क़यामत के रोज़ नबियों, वलियों और शहीदों के साथ जन्नत में दाख़िल होंगे और बेनमाज़ी फ़िरऔन, हामान, क़ारून, नमरूद और अबीबिन ख़लफ़ वग़ैरा इन बड़े-बड़े काफ़िरों के साथ दोज़ख़ में जायेंगे। ख़ुदा की पनाह! नमाज़ न पढ़ना किस क़दर संगीन जुर्म है कि नमाज़ न पढ़ने वाला अमल में काफ़िरों के बराबर समझा गया और काफ़िरों के साथ दोज़ख़ में रहेगा।

## बेनमाज़ी काफ़िरों के साथ क्यों रहेगा?

दुनिया में माल खाने के चार तरीक़े हैं—

**अव्वल** बादशाहत या रियासत। **दूसरे मुलाज़मत और औहदे या वज़ारत** वग़ैरा। **तीसरे** ज़राअत और काश्तकारी। **चौथे** तिजारत और दस्तकारी और मज़दूरी वग़ैरा।

1. बस जिस आदमी ने बादशाहत और रियासत की मशग़ूली में नमाज़ न पढ़ी वह फ़िरऔन और नमरूद वग़ैरा के साथ दोज़ख़ में रहेगा।
2. और जिस आदमी ने मुलाज़मत और विज़ारत वग़ैरा में पड़कर नमाज़ न पढ़ी वह फ़िरऔन के वज़ीर हामान बेईमान के साथ दोज़ख़ में रहेगा।
3. और जिस आदमी ने ज़राअत और तिजारत में पड़कर नमाज़ न पढ़ी वह अबी बिन खल्फ़ सौदागर ज़मीदार के साथ दोज़ख़ में रहेगा कि वह अल्लाह व रसूल का दुश्मन तिजारत और खेती करता था।
4. और जिस आदमी ने दस्तकारी और मज़दूरी वग़ैरा के कामों में पड़कर नमाज़ न पढ़ी होगी वह क़ारून बेईमान के साथ दोज़ख़ में रहेगा।

जा बजा क़ुरआन में ऐ मोमिनों ताकीद है,
सुस्ती मत करना नमाज़ो में अगर फ़हमीद है।

मोमिनो काफ़िर में गर कुछ है तो यह इम्तियाज़,
यानी मोमिन है नमाज़ी और काफ़िर बेनमाज़।

साथ कोई भी न देगा तुम्हारा हश्र में,
हां तुम्हे देंगी नमाज़ें ही सहारा हश्र में।

बाप बेटे का न बेटा बाप के काम आयेगा,
हश्र में पहले नमाज़ों का ही पैग़ाम आयेगा।

## क़यामत में बेनमाज़ियों के मुक़द्दमात

हदीस शरीफ़ में है कि क़यामत के दिन बेनमाज़ी अल्लाहतआला के सामने बुलाये जायेंगे। उनसे नमाज़ों की बाबत पूछा जायेगा। वह तरह-तरह के उज्र और बहाना करेंगे। बादशाह और अहले रियासत और नवाब वग़ैरा कहेंगे कि मुल्की इन्तज़ाम वग़ैरा की वजह से हम नमाज़ न पढ़ सके। उनके मुक़ाबले में हज़रत दाऊद और हज़रत सुलेमान (अ० स०) पेश होंगे। अल्लाहतआला उन बे नमाज़ियों से फ़रमायेगा कि देखो, हमने इनको कितनी बड़ी सल्तनत दी थी, मगर यह नमाज़ से ग़ाफ़िल न हुए। ऐ नाफ़रमानों, तुमने जानबूझ कर नमाज़ छोड दी थी।

ऐ फ़रिश्तो ! ले जाओ और इनको दोज़ख़ में डाल दो।

फिर बाज़ लोग बीमारी का बहाना करेंगे और मुक़ाबले में हज़रत अय्यूब (अ० स०) आयेंगे। अल्लाहतआला फ़रमायेगा कि बीमारी की तकलीफ़ इनको ज़्यादा थी या तुमको। मगर यह इतनी सख़्त और लम्बी बीमारी में हमको न भूले। यहाँ तक कि इशारों से नमाज़ पढ़ते रहे।

ऐ फ़रिश्तो ! इन नाफ़रमानों को भी दोज़ख़ में डाल दो।

फिर औलाद वाले बहाना करेंगे। उनके मुक़ाबले में हज़रत याक़ूब (अ० स०) आयेंगे। अल्लाहतआला फ़रमायेगा कि हमने इनको तुमसे ज़्यादा औलाद दी थी और इनको इनके बेटे यूसुफ़ की जुदाई का ग़म दिया था और बहुत दिनों तक इनको रुलाया था। मगर यह नमाज़ पढ़ते रहे। इसी तरह औरतें हेला बहाना करेंगी कि हमारे शौहर ज़ालिम थे। उनके ख़ौफ़ से हम हर वक़्त घर के काम-काज में लगी रहती थीं। उनके मुक़ाबले में हज़रत आसिया फ़िरऔन की बीवी आयेंगी। अल्लाहतआला फ़रमायेगा "ऐ बेनमाज़ी औरतो ! तुम्हारे शौहर ज़्यादा ज़ालिम थे या इसका शौहर फ़िरऔन ज्यादा ज़ालिम था। इस हमारी प्यारी बन्दी ने उसके सब ज़ुल्म व सितम सहे। यहाँ तक कि हमारी ताबेदारी में जान दे दी और नमाज़ की पाबन्द रही। ऐ फ़रिश्तो ! ले जाओ, इनको भी दोज़ख़ में डाल दो।"

ग़रज़ कि इसी तरह सब बेनमाज़ मर्द और औरतें मुक़दमा हार-हारकर दोज़ख़ में डाले जायेंगे। उस वक़्त दोज़ख़ का फ़रिश्ता मालिक उनसे कहेगा—

مَاسَلَكَكُمْ فِىْ سَقَرَ ۝ قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝

यानी ऐ लोगो ! तुम किस गुनाह की वजह से दोज़ख़ में आये। वह कहेंगे कि हम दुनिया में नमाज़ नहीं पढ़ते थे।

हादी-ए-बरहक़ हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) ने फ़रमाया कि—

एक वक़्त की नमाज़ न पढ़ने से अस्सी बरस दोज़ख़ में जलना पड़ेगा। अल्लाह की पनाह ! नमाज़ न पढ़ना कितना बड़ा जुर्म है।

जो चाहे तू हक़ की रज़ा मत कर नमाज़ अपनी क़ज़ा,
ऐसे की दोज़ख़ है सज़ा लानत गले की हार है।

हक़ की इबादत कुछ न की गोर अपनी आतिश से भरी,
दोज़ख़ की सीधी राह ली दहका जहाँ अंगार है।

ऐ बेनमाज़ी बेख़बर तेरी तो दोज़ख़ है मुक़र,
फरमा चुके ख़ैरुल बशर अल्लाह का यह इक़रार है।

अब ज़िन्दगी का राज है कर ले जो करना आज है,
जब मर गया मौहताज है फिर तू नहीं मुख़तार है।

# हर आदमी पर पाँच सख्तियाँ आयेंगी

इरशाद फ़रमाया रसूल-ए-ख़ुदा (स०) ने कि—

**हर आदमी पर यह पाँच घाटियाँ और सख्तियाँ ज़रूर आयेंगी**— 1. मौत की सख़्ती, 2. क़ब्र की सख्ती, 3. क़यामत के मैदान की सख़्ती, 4. पुलसिरात पर से गुज़रने की सख़्ती, 5. जन्नत में जाने से पहले हिसाबो-किताब की सख़्ती।

बस जो मर्द या औरत दुनिया में पाँच वक़्त की नमाज़ हमेशा पढ़ता रहेगा उसको इन पाँच सख्तियों से अल्लाहतआला बचायेगा। सुबहान अल्लाह! नमाज़ कैसी ज़रूरी और प्यारी इबादत है कि इसकी बरकत से इन्सान मरने के बाद तमाम मुसीबतों से निजात पायेगा। इसीलिए—

रहमत-ए-आलम (स०) ने यह हुक्म फ़रमाया है कि—

जब औलाद सात बरस की हो जाये तो उनसे नमाज़ पढ़वायें और जब दस बरस की हो जाये तो डरा-धमकाकर या कुछ लालच देकर पढ़वायें। इसमें हिकमत यह है कि जवान होने तक उनको नमाज़ पढ़ने की आदत हो जायेगी। और इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

जो मर्द या औरत नमाज़ न पढ़ता हो उसमें दीन नहीं है। नमाज़ का दीन से ऐसा ताअल्लुक़ है जैसा कि सर का तमाम बदन से कि सर न हो तो तमाम बदन बेकार है। इसी तरह नमाज़ न हो तमाम अमल मुर्दा और बेजान है। (तिबरानी)

ऐ अज़ीज़ो हर तरह से फ़र्ज़ है तुम पर नमाज़,
चाहिए पढ़ते रहें छोटे-बड़े घर-घर नमाज़।
है बहुत ताकीद क़ुर्आं में नहीं होती मुआफ़,
शादी हो या ग़म किसी हालत में मोमिन पर नमाज़।
तंदरुस्ती हो या बीमारी वतन हो या सफ़र,
गर नामुकिन हो उतरना पढ़ सवारी पर नमाज़।
या न हो पानी मयस्सर या करे पानी ज़रर,
पढ़ तयम्मुम से बराबर हो के तू बेडर नमाज़।
बेनमाज़ों से कोई पूछे कि ताबेह किसके हो,
पेशवा तो जितने थे पढ़ते थे अफ़ज़ूं तर नमाज़।

पेशवाओं के तरीक़े ही पर चलना चाहिए,
पढ़ते आये हैं हमेशा पीर-ओ-पैग़म्बर नमाज़।

पढ़ती बीबी फ़ातमा पढ़ते हसन (अ०) पढ़ते हुसैन (अ०),
पढ़ते थे सिद्दीक़, फारूक़ व ग़नी, हैदर नमाज़।

उन इमामों के अगर क़दमों पे रक्खोगे क़दम,
हो के शाफ़ेह हश्र में दिखलायेगी जौहर नमाज़।

## दिन रात में "सतरह" फ़र्ज़ क्यों मुक़र्रर हुए

अल्लाहतआला ने अपनी मेहरबानी से हम आजिज़ बन्दों पर दिन-रात में सतरह रकअत फ़र्ज़ मुक़र्रर फ़रमाये हैं। इनमें यह हिकमत है कि जो आदमी मर्द हो या औरत दिन में चार फ़र्ज़ ज़ोहर के वक़्त और चार फ़र्ज़ अस्र के वक़्त हमेशा पढ़ता रहेगा तो अल्लाहतआला उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल देगा कि जिस दरवाज़े से वह चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाये। रात में तीन फ़र्ज़ मग़रिब के वक़्त और चार फ़र्ज़ इशा के वक़्त जो हमेशा पढ़ता रहेगा तो अल्लाहतआला उसके लिए सातों दरवाजे दोज़ख़ के बन्द कर देगा और दो फ़र्ज़ फ़ज्र के वक़्त हैं, न वह दिन में हैं और न रात में। जो शख़्स इनको हमेशा पढ़ता रहेगा अल्लाहतआला उसके दिन-रात के गुनाह माफ़ कर देगा।

मोहसिन-ए-आज़म हुज़ूर (स०) ने अपने असहाबों से फ़रमाया कि—

"बतलाओ अगर किसी के घर के सामने साफ़ पानी की नहर बहती हो और वह घर वाला दिन-रात में पाँच दफ़ा उसमें ग़ुस्ल कर लिया करे तो क्या उसके बदन पर कुछ मैल रहेगा?"

असहाबों ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! कुछ भी मैल नहीं रहेगा। आपने फ़रमाया— बस इसी तरह जो मर्द या औरत पाँच वक़्त की नमाज़ हमेशा वक़्त पर पढ़ता रहेगा, उस पर गुनाह का मैल न रहेगा। ख़ूब याद रखो, नमाज़ मेरी आँखों की ठण्डक है। क्योंकि—

मौला से अपने मिलता है बन्दा नमाज़ में,
उठ जाता है जुदाई का पर्दा नमाज़ में।

आ पहुँचा ख़ास अपने शहनशाह के हुज़ूर,
जब बन्दा हाथ बाँध के आया नमाज़ में।

मौला में और बन्दे में रहता नहीं हिजाब,
बेपर्दा है तजल्ली ऐ मौला नमाज़ में।

जब हाथ उठाये बाँध के नियत तो यूँ समझ,
दोनों जहाँ से हाथ उठाया नमाज़ में।

हम्दो सना दरूदो क़िरत व दुआ सलाम,
है जमा हर तरह का वज़ीफ़ा नमाज़ में।

गर क़ब्र के अंधेरे से डर है तो पढ़ नमाज़,
है ज़ुल्मते लहद का उजाला नमाज़ में।

नरमी से करता है मलाकुल्मौत क़ब्ज़ जान,
सख़्ती-ए-मौत का है बचावा नमाज़ में।

यह कब्र में अनीस यह महशर में हो शफ़ीह,
उक़बा की राहतें हैं सरापा नमाज़ में।

# सुन्नतों के पढ़ने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जो मुसलमान मर्द हो या औरत, दिन-रात में पाँचों वक़्त यह बत्तीस रकअतें हमेशा पढ़ता रहेगा, अल्लाहतआला उसके सब गुनाह माफ़ कर देगा ओर अपने दीदार से उसको मुशर्रफ़ फरमायेगा। दिन-रात में सतरह फ़र्ज़ और इशा की नमाज़ के बाद तीन वितर वाजिब और बारह सुन्नतें मौकदा हैं। दो सुबह को फर्ज़ों से पहले, चार सुन्नत ज़ोहर के फ़र्ज़ों से पहले और दो फ़र्ज़ों के बाद और दो मग़रिब के फ़र्ज़ों के बाद और दो इशा के फ़र्ज़ों के बाद। इन बारह सुन्नतों के पढ़ने की बहुत ताकीद है।

रहमते आलम हुज़ूर (स०) से अर्ज़ की गयी कि या रसूल अल्लाह! जो शख़्स फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ता हो और सुन्नतें न पढ़ता हो उसके लिए आपका क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया— अल्लाह की क़सम! जो शख़्स इन बारह सुन्नतों को न पढ़ेगा, वह क़यामत के रोज़ मेरी शिफ़ाअत से महरूम रहेगा और जो शख़्स इन बारह सुन्नतों को हमेशा पढ़ेगा, मैं उसकी शिफ़ाअत करूँगा और उसको जन्नत दिलवाऊँगा।

**फ़ायदा—** बस जो शख़्स मर्द हो या औरत, इन बत्तीस रकअतों के अलावा नफ़िल नमाज़ें जितनी भी पढ़े, जैसे तहज्जुद, अशराक़, चाश्त वग़ैरा, उसको बेशुमार सवाब मिलेगा।

दम में जब तक दम रहे तू पढ़ नमाज़,
ताकि तुझको दोस्त रखे वह बेनियाज़।

है नमाज़ी का बहुत रुतबा बुलन्द,
हक़ तआला को नमाज़ी है पसंद।

है नमाज़ी की बहुत इज़्ज़त बड़ी,
याद में रहता है हक़ की हर घड़ी।

है नमाज़ी का बहुत आली मुक़ाम,
रहमते हक़ है नमाज़ी पर मदाम।

बे नमाज़ी को न जानो दीनदार,
पीर हो या हो मुरीदे नाबकार।

थे नमाज़ी जितने भी थे अम्बिया,
बेनमाज़ी औलिया में कौन था।

आक़बत है बेनमाज़ी की तबाह,
हश्र में होवेगी उसकी रूह स्याह।

मोमिनों दिल से करो सोमो सलात,
छोड़ दो दुनिया की सारी वाहियात।

## नमाज़ मैराज-उल-मोमिनीन है

रहमत-ए-आलम हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

اَلصَّلٰوةُ مِعْرَاجُ الْمُؤْمِنِيْنَ ط

**फ़ायदा**— नमाज़ तमाम अमलों में बहुत बड़ी इबादत है और बहुत बड़ा दर्जा रखती है और ईमान तमाम अमलों की जड़ है और तमाम अमलों और इबादतों से बढ़कर दर्जा रखता है। क्योंकि अगर ईमान न हो तो नमाज़ और कोई इबादत होती ही नहीं, और ईमान इतनी बड़ी चीज़ है कि यह बिला नमाज़ के भी मुफ़ीद हो जाता है। क्योंकि इन्सान ईमान की बरकत से आख़िर जन्नत में दाख़िल हो जायेगा। नमाज़ का मर्तबा दूसरी इबादतों से बढ़ा हुआ इसलिए है कि नमाज़ में सब इबादतें आ जाती हैं। नमाज़ की मिसाल उस जामह नुस्ख़े की-सी है कि जिसमें तमाम मुफ़ीद दवाओं को जमा कर दिया गया हो और ख़मीरा या माजून बना दिया हो तो वह अकेली दवा से ज़्यादा मुफ़ीद होगा। इसी तरह नमाज़ में

सब इबादतों को जमा करके एक जामेह नुस्खा बना दिया है। मसलन रोज़ा है, कलाम-ए-इलाही का पढ़ना है। तौहीद व रिसालत का इक़रार है। ऐतकाफ़ और कुर्बानी है। हज है, ज़कात है। रोज़े रखने का और कुर्आन पढ़ने का और ऐतकाफ़ में बैठने का और कुर्बानी करने का किस क़दर सवाब है और यह सब नमाज़ के अन्दर मौजूद है। तो नमाज़ का रुतबा किस क़दर बढ़ा हुआ होगा। देखो नमाज़ में रोज़ा इस तरह है कि रोज़े में तीन चीज़ों को मना किया गया है। खाने और पीने और सोहबत से, तो नमाज़ में यह सब मौजूद है। बल्कि रोज़े से भी बढ़कर नमाज़ में पाबन्दी है, कि बोलना, इधर-उधर देखना और चलना-फिरना और हँसना वग़ैरा भी मना है। नमाज़ में खुदा की नज़दीकी है। खुदा के साथ हमकलामी और सब चीज़ों से अलैहदगी भी है। बस नमाज़ खिल्वत गाहे हक़तआला भी है यानी बिल्कुल हुज़ूरी है। मजलिसे ख़ास का जलवा है। सिवाय हक़तआला के कोई और पास नहीं है। नमाज़ में हज भी है कि काबा शरीफ़ की तरफ़ मुँह करना फ़र्ज़ है। ऐतकाफ़ भी है कि जो बुरी बातों से रुकना है। कुर्आन का पढ़ना फ़र्ज़ है कि बे इसके पढ़े नमाज़ न होगी। नमाज़ में दुआ, सूरा-ए-फ़ातेहा भी है। तस्बीह सुब्हाना रब्बिल अज़ीम और सुबहान रब्बिल आला भी है, दरुद शरीफ़ और सुबहान कल्लाहुम्म व बिहमदिका व तबारकस्समुका व तआला जदुका और सना भी मौजूद है, ज़कात भी है, नमाज़ जो कि कपड़े पहनकर पढ़ी जाती है जिन पर रुपये खर्च होते हैं। नमाज़ में कुर्बानी भी है जिसकी ग़र्ज़ अपने को कुर्बान कर देना है। जैसा कि हज़रत इब्राहीम (अ० स०) ने बिस्मिल्लाह, अल्लाहो अकबर कहकर हज़रत इस्माईल (अ० स०) के गले पर छुरी फेरी थी। सुबहान अल्लाह! चार मिनट में सब तरह की इबादत हो जाती है और सब तरह के सवाब हासिल हो जाते हैं।

खूब याद रखो, जिसने पाँचों वक़्त की नमाज़ वक़्त पर पढ़ी, न वह मरने के वक़्त परेशान होगा और न क़ब्र में और न क़यामत में परेशान होगा।

इतनी ग़फ़लत तू न कर इल्मी खुदा के वास्ते,
फिक्र कर कुछ तो भला रोज़ेजज़ा के वास्ते।

हैफ़ तू सोता रहे हर सुबह और वक़्ते अज़ां,
मुर्ग़ व माही सब उठें यादे खुदा के वास्ते।

मालोज़र मुल्को ज़मीं फ़ौजो सिपाह गंजो हशम,
कब किसी को है बक़ा सब हैं फ़ना के वास्ते।

काम तू वह कर प्यारे कि जिन की वाइस गोर में,
बाग़े रिज़वां से खुले खिड़की हवा के वास्ते।

पंचगाना पढ़ शरीयत में वहुत ताकीद है,
फ़ज्र ओ ज़ोहर अस्र को मग़रिब और इशा के वास्ते।

तर्क कर सब काम मत कर देर जब सुन ले अज़ां
पढ़ ले जल्दी से नमाज़ अपनी ख़ुदा के वास्ते।

पढ़ के तू क़ुर्आन को कुछ जमा करले अब सवाब,
क़ब्र पर कौन आयेगा फिर फ़ातेहा के वास्ते।

तुझ पे जो आये मुसीबत सब्र कर और कर ख़याल,
सख्तियाँ क्या-क्या हुई हैं अम्बिया के वास्ते।

हक़ की नाफ़रमानियों से बाज़ आ तू बाज़ आ,
आग दोज़ख़ की भड़कती है सज़ा के वास्ते।

काम दोज़ख़ के करे और जन्नत का है उम्मीदवार,
क़सरे जन्नत तो बना है पारसा के वास्ते।

# जमाअत से नमाज़ पढ़ने का सवाब

रसूल-ए-खुदा (स०) ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स इशा की नमाज़ जमाअत से पढ़े और फिर सुबह की नमाज़ जमाअत से पढ़े तो उसकी सारी रात इबादत ही में लिखी जावेगी। आप उस आदमी से बहुत नाराज़ होते थे जो नमाज़ जमाअत से न पढ़ता। एक दफ़ा आप (स०) ने एक आदमी को देखा कि उसने अकेले नमाज़ पढ़ी। आपने उससे फ़रमाया क्या तुम मुसलमान नहीं थे जो जमाअत से नमाज़ नहीं पढ़ी? और आपने फ़रमाया कि जो आदमी पाँचों वक़्त की नमाज़ जमाअत से पढ़ेगा, वह पुलसिरात से बिजली की तरह गुज़र जायेगा और वह उन लोगों में होगा जो जन्नत में सबसे पहले दाख़िल होंगे और उसका चेहरा चौदहवीं रात के चाँद की तरह नूर से रोशन होगा और उसको हर रोज़ एक हज़ार शहीदों के बराबर सवाब मिलता है।

जन्नत में मकां अपना बनाते हैं नमाज़ी,
मस्जिद में बड़े शौक़ से जाते हैं नमाज़ी।

क्या शौक़े जमाअत है इबादत से है मुहब्बत,
मस्जिद में अज़ां सुनते ही जाते हैं नमाज़ी।

डरते हैं क़ज़ा होने से मिटते हैं अदा पर,
जान अपनी नमाज़ों में लड़ाते हैं नमाज़ी।

सजदे का निशां चाँद-सा रोशन है जबी पर,
हूराने बहिश्ती को लुभाते हैं नमाज़ी।

कहता है यह दरवाज़े पर दारोग़-ए-जन्नत,
हट जाओ कि फ़िरदौस में जाते हैं नमाज़ी।

## जुमे की नमाज़ पढ़ने का सवाब

जुमे का दिन सब दिनों का सरदार है और बहुत ही बरकत वाला दिन है। हज़रत आदम (अ० स०) इसी दिन में पैदा किये गये और इसी दिन जन्नत में दाख़िल हुए। और इसी दिन दुनिया में भेजे गये। और बहुत से बड़े-बड़े वाक़ात इस दिन में हुए। यहाँ तक कि क़यामत भी इसी दिन में होगी। ग़रज़ कि जुमे के दिन अल्लाहतआला की बहुत-सी रहमतें नाज़िल होती हैं। इसी मुबारक दिन में अल्लाहतआला ने हम आजिज़ बन्दों पर यह रहमत फ़रमायी कि हमारे ही फ़ायदे के लिए जुमे की नमाज़ हम पर फ़र्ज़ कर दी। जुमे की नमाज़ का इन्कार करने वाला बेईमान है और इसका छोड़ने वाला फ़ासिक़ और सख़्त गुनहगार और मुजरिम है। जुमे की नमाज़ शहरों और क़स्बों में फ़र्ज़ है और हज़रत इमाम आज़म (रह०) के नज़दीक गाँव में जुमे की नमाज़ दरुस्त नहीं। वहाँ हनफ़ी लोगों को ज़ोहर ही की नमाज़ पढ़नी चाहिए।

हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

दोपहर के वक़्त रोज़ाना दोज़ख़ को तेज़ किया जाता है। मगर जुमे के रोज़ तेज़ नहीं किया जाता और तुम जुमे के रोज़ मुझ पर दरूद ज़्यादा पढ़ा करो। और याद रखो, क़यामत के रोज़ जब वह वक़्त आयेगा कि जिस वक़्त मुसलमान दुनिया में जुमे की नमाज़ के लिए मस्जिदों में जाते थे, अल्लाह तआला की तरफ़ से ऐलान होगा कि ऐ जन्नती बन्दो ! तुम सब मैदान में चलो जहाँ पर अल्लाह तआला की रहमत बरस रही है। बस सब जन्नती लोग उस मैदान में पहुँचेंगे। उस मैदान में तमाम नबियों और रसूलों को नूर के मिम्बरों पर बैठाया जायेगा और जन्नती लोगों को याक़ूत की कुर्सियों पर बैठाया जायेगा। जब यह तमाम लोग अपनी-अपनी जगह पर बैठ जायेंगे तो अल्लाहतआला एक हवा मुश्क की खुशबू से भरी हुई भेजेगा। वह खुशबू उन लोगों के कपड़ों को और चेहरों को और बालों को लगेगी। उस खुशबू से बड़ी फ़रहत होगी। फिर अल्लाहतआला फ़रमायेगा, ऐ ग़ैब पर ईमान लाने वाले बन्दो। तुमने हमको दुनिया में देखा नहीं था। फिर भी हमारे हुक्मों को तुमने माना और उन पर चले और तुमने हमारे रसूल का कहना माना। अब हम तुमको ईनाम देंगे क्योंकि आज का दिन ईनाम

देने का है। बस आज जो तुम माँगोगे, हम देंगे। लोग अर्ज़ करेंगे, ऐ हमारे रब ! हम आपको देखना चाहते हैं। बस उसी वक़्त पर्दा उठाया जायेगा और अल्लाहतआला के दीदार से मशर्रफ़ होंगे। फिर इरशाद होगा कि अब तुम अपने-अपने मुक़ाम पर जाओ।

अल्लाहतआला के देखने से उन लोगों का हुस्नो जमाल बहुत बढ़ जायेगा फिर यह लोग अपनी बीवियों के पास आयेंगे। वह देखकर कहेंगीं कि जाते वक़्त तुम ऐसे ख़ूबसूरत नहीं थे। अब तो तुम्हारा हुस्नो जमाल बहुत बढ़ गया है। यह लोग कहेंगे कि हमने अल्लाहतआला को देखा है। यह उसके जमाल-ए-पाक की बरकत है। (शरह अल सफ़रुल सआदत)

**रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—**

जो शख़्स जुमे के रोज़ गुस्ल करे और ताक़त के मुवाफ़िक़ साफ़ कपड़े पहने और ख़ुशबू और आँखों में सुर्मा लगाये, मिस्वाक करे और ख़ूब बन-ठनकर जुमे की नमाज़ पढ़ने जावे और मस्जिद में आकर किसी को उसकी जगह से उठाकर न बैठे और कोई ऐसी हरकत न करे कि जिससे लोगों को तकलीफ़ हो। फिर चाहे नफ़िल पढ़कर सुन्नतें पढ़े तो पिछले जुमे से लेकर इस वक़्त तक के सब गुनाह उसके माफ़ होंगे। (बुख़ारी शरीफ़)

**और फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—**

जुमे के रोज़ उस मस्जिद के दरवाज़े पर जिसमें जुमे की नमाज़ पढ़ी जाती हो, फ़रिश्ते आकर खड़े हो जाते हैं। जो लोग अव्वल से आख़िर तक आते रहते हैं उनके नाम लिखते जाते हैं कि कौन पहले आया और पीछे कौन आया। पहले आने वाले के आमालनामे में एक ऊँट की कुर्बानी करने का सवाब लिखते हैं। उनके बाद आने वालों के लिए गाय की कुर्बानी का, फिर बकरी का, फिर मुर्ग़ का, फिर अण्डा ख़ैरात करने का सवाब लिखते हैं और जब ख़ुतबा शुरू हो जाता है तो फ़रिश्ते लिखना बन्द करके ख़ुतबा सुनने में मशग़ूल हो जाते हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** अब जो नफ़े की बात है ख़ुद समझ लो कि जल्दी जाने में नफ़ा है या देर में।

## जुमे की नमाज़ न पढ़ने की सज़ा

**रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—**

लोग जुमे की नमाज़ छोड़ने से बाज़ आ जायें वर्ना अल्लाहतआला उनके

दिलों पर मोहर कर देगा। फिर वह बड़ी ग़फ़लत में पड़ जायेंगे और मोहर करने का अन्जाम यह होगा कि जब ग़फ़लत बढ़ जायेगी तो सिवाय दोज़ख़ के कोई ठिकाना न होगा। और जो लोग जुमे की नमाज़ नहीं पढ़ते मैं चाहता हूँ कि उनके घरों को आग लगा दूँ। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** अल्लाह की पनाह! जो लोग शहर में रहकर जुमे की नमाज़ नहीं पढ़ते कि उन पर फ़र्ज़ है। हुज़ूर (स०) उनसे किस क़दर नाराज़ होते हैं!

**मसला—** औरतों पर जुमे की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं। उनको हमेशा की तरह अपने घरों में ही ज़ोहर की नमाज़ पढ़नी चाहिए और ऐ मर्दों—

गर करोगे तुम अदा ऐ दोस्त जुमे की नमाज़,
सात दिन का बख़्श देगा सब गुनाह वह बेनियाज़।

एक हफ़्ते के गुनाह जितने हैं बख़्शे जायेंगे,
एक नेकी के एवज़ सत्तर का बदला पायेंगे।

की नमाज़ जुमा जिसने मोमिनों क़स्दन क़ज़ा,
बस जहन्नुम में ठिकाना उसका लाज़िम हो गया।

हैं मौहम्मद उससे राज़ी और न ख़ुश उससे ख़ुदा,
बल्कि नाराज़ उससे हो जाते हैं सारे अम्बिया।

कर अमल तुझसे जहाँ तक हो सके है कर अमल,
ताकि क़ब्र व हश्र का होवे दूर तुझसे ख़लल।

जुज़ अमल कोई भी तेरे काम आयेगा नहीं,
बाद मरने के क़ब्र पर कोई जायेगा नहीं।

## जुमे की फ़र्ज़ों के बाद कितनी सुन्नतें है?

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जब कोई जुमे के फ़र्ज़ पढ़ चुके तो उसके बाद चार रकअतें सुन्नतें पढ़ो। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** हज़रत इमाम आज़म और हज़रत इमाम शाफ़ेई (रह०) का यही तरीक़ा है कि जुमे के फ़र्ज़ों से पहले भी चार सुन्नतें पढ़ें और फ़र्ज़ों के बाद भी चार सुन्नत पढ़ें और हज़रत इमाम अबुयूसुफ़ के नज़दीक बाद फ़र्ज़ों के छः सुन्नत हैं। इससे ऐहतियात की बात यह है कि फ़र्ज़ों के बाद छः सुन्नत पढ़ा करें कि सब इमामों के मुवाफ़िक़ हो जायें।

## नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा किसने बतलाया?

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जिब्राईल (अ० स०) आये। फिर उन्होंने मेरी इमामत की और मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी। फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी। फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी। फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी। फिर मैंने उनके साथ नमाज़ पढ़ी।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि जिब्राईल (अ० स०) ने हुज़ूर (स०) के साथ पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ी और नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बतला दिया कि हुज़ूर और लोगों को भी इसी तरह नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा बतलायें।

## इमाम को हल्की-फुल्की नमाज़ पढ़ानी चाहिए

हज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो कोई लोगों को नमाज़ पढ़ावे यानी इमाम बने तो उसको चाहिए कि हल्की-फुल्की नमाज़ पढ़ावे क्योंकि लोगों में कमज़ोर और बूढ़े और बीमार भी होते हैं। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** अगर अकेला नमाज़ पढ़े तो जितनी चाहे लम्बी नमाज़ पढ़े।

## हज़रत आदम (अ० स०) की पैदाइश

रसूल-ए-ख़ुदा (स०) ने फ़रमाया—

अल्लाहतआला ने हफ़्ते के दिन ज़मीन पैदा की और इतवार के दिन पहाड़ों को और पीर के दिन दरख़्तों को और मंगल के दिन रंजोग़म को और बुद्ध के दिन रोशनी को और जुमेरात के दिन जानवरों को और जुमे के दिन बाद अस्र की आख़िरी घड़ी में हज़रत आदम (अ० स०) को पैदा किया। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि इन्सान अशरफ़-उल-मख़लूक़ात को सब मख़लूक़ के बाद पैदा किया। इसलिए कि तरीक़ा यही है कि पहले ख़ेमे और फ़र्श वग़ैरा और ख़ादिमों का इन्तज़ाम किया जाता है कि सब ख़ादिम मौजूद हों। फिर बादशाह की सवारी आती है तो कुल मख़लूक़ इन्सान की ख़ादिम है और इन्सान की ख़िदमत के लिए पैदा की गयी है। फिर अफ़सोस ही की बात है कि इन्सान अपने मालिक और ख़ालिक़ और राज़िक़ को भूल जाये और उसकी नाफ़रमानी करे और उसके हुक्मों की इज़्ज़त न करे। जुमे के दिन साअत **अस्र**

से मग़रिब तक है। जिस वक़्त हज़रत आदम (अ० स०) पैदा किये गये वह घड़ी बड़ी बरकत वाली है। उस वक़्त खुदा की याद में लगा रहना बाइसे बरकत है और दुआ क़बूल होती है।

## नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबुहरैरा (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया— जाओ नमाज़ पढ़ो, तुम्हारी नमाज़ नहीं हुई।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि हादी-ए-आज़म हुज़ूर (स०) मस्जिद में थे। एक आदमी नमाज़ पढ़कर चलने लगा और उसने आपको सलाम किया। आपने सलाम का जवाब दिया और फ़रमाया, तुम नमाज़ फिर पढ़ो, तुम्हारी नमाज़ नहीं हुई। इसी तरह तीन दफ़ा उस आदमी ने नमाज़ पढ़ी। इसके बाद उसने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! क़सम खुदा की मुझको इससे ज़्यादा अच्छी नमाज़ पढ़नी नहीं आती। आपने फ़रमाया— जब तुम नमाज़ पढ़ने को खड़े हुआ करो तो अल्लाहो अकबर कहकर जो कुछ तुमको क़ुर्आन से याद हो, पढ़ा करो। फिर तसल्ली से रकूह करो, फिर सर उठाकर ख़ूब सीधे खड़े हो जाया करो। फिर सजदे में जाओ और तसल्ली से सर उठाया करो। और अच्छी तरह बैठकर फिर सजदा किया करो और फिर तसल्ली से सर उठाया करो। इसी तरह हर रकअत में किया करो।

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि नमाज़ ख़ूब तसल्ली से पढ़ें। जल्दी-जल्दी बेसोचे समझे पढ़ना अच्छा नहीं और नमाज़ सही भी नहीं होती।

ए अज़ीज़ ! हर तरह से फ़र्ज़ है तुम पर नमाज,
चाहिए पढ़ते रहें छोटे-बड़े घर-घर नमाज़।

ऐसी बेतरकीब मत पढ़ना खुदा के वास्ते,
रोज़े महशर जो उलट मारे तेरी तेरे मुँह पर नमाज़।

है बहुत ताकीद क़ुर्आं में नहीं होती माफ़,
शादी हो या ग़म किसी मोमिन पर नमाज़।

देखो शाहे कर्बला को क़त्ल के मैदान में,
सामने थे मौत के बैठे न छोड़ी पर नमाज़।

होके मोमिन जो अदा करता नहीं इस फ़र्ज़ को,
हो भला उसके जनाज़े की रवा क्योंकर नमाज़।

वक़्त हो जाये न तंग ऐ दिल तू सुस्ती दूर कर,
चाहिए पढ़ना हर साअते मसनून के अन्दर नमाज़।

हैं वही मक़बूल दरगाहे ख़ुदा-ए-दो जहाँ,
जो पढ़ते रहते हैं ज़ौक़ व शौक़ से अकसर नमाज़।

## नमाज़ में इमाम की ताबेदारी वाजिब है

बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

क्या तुम में कोई डरता नहीं कि इमाम से पहले अपना सर उठाये और अल्लाहतआला उसके सर को गधे के सर से बदल डाले या उसकी सूरत गधे की-सी कर दे।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि— इमाम से पहले जो मुक़तदी सज्दे से सर उठाये वह गधा है कि वह अपने इमाम की ताबेदारी नहीं करता, ऐसे शख़्स की नमाज़ नहीं होती। इमाम से पहले कोई भी फ़ेअल न करे। यहाँ तक कि सलाम भी इमाम से पहले न फेरे। इसलिए मुक़तदी को चाहिए कि नमाज़ में इमाम की ताबेदारी करे, वर्ना सज़ा मिलेगी।

## सजदे-तिलावत से शैतान रोता है

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जब आदम (अ० स०) का बेटा क़ुर्आन में सजदे की आयत पढ़ता है और फिर सजदा करता है तो शैतान रोता हुआ अलग हो जाता है और कहता है, हाय! मेरी बदबख़्ती, आदम के बेटे को सजदे का हुक्म हुआ तो उसने सजदा किया और यह जन्नत में जायेगा और मुझे सजदे का हुक्म हुआ, मैंने सजदा न किया तो मैं दोज़ख़ में जाऊँगा।

**फ़ायदा—** जो लोग पाँचों वक़्त की नमाज़ अल्लाहतआला का हुक्म समझकर पढ़ते रहते हैं तो फिर शैतान को किस क़दर सदमा पहुँचता होगा?

## अज़ान का जवाब दो, और जन्नत लो

हज़रत उमर (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

अज़ान का जवाब सच्चे दिल से देने वाला जन्नत में जायेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा**— इस हदीस शरीफ़ में हुज़ूर (स०) ने अज़ान का जवाब देने की बज़ुर्गी बयान फ़रमायी है कि जो मर्द या औरत अज़ान का जवाब देगा, वह जन्नत में जायेगा।

आठ हालतों में अज़ान का जवाब न देना चाहिए—

1. नमाज़ की हालत में, 2. ख़ुतबा सुनने की हालत में, चाहे वह कोई ख़ुतबा हो, 3. हैज़ की हालत में, 4. नफ़ास की हालत में, 5. इल्मदीन पढ़ाते हुए, 6. जिमाह करते हुए, 7. पेशाब-पाख़ाना करते हुए, 8. खाना खाते हुए,

अज़ान का जवाब यह है कि जो अल्फ़ाज़ मवज़्ज़न से सुने वही कहे और حَيَّ عَلَى الصَّلٰوةِ اور حَيَّ عَلَى الْفَلَاحِ के जवाब में لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللّٰهِ कहे और اَلصَّلٰوةُ خَيْرٌ مِّنَ النَّوْمِ के जवाब में صَدَقْتَ وَبَرَرْتَ कहे और अज़ान के बाद पहले दरूद शरीफ़ और फिर जो दुआ मशहूर है वह पढ़े।

## तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने का सवाब

जानना चाहिए कि फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद सुन्नत और नफ़िल नमाज़ों के पढ़ने का भी बहुत बड़ा सवाब है। जैसे तहज्जुद, इशराक़, चाश्त, सलात उल तस्बीह वग़ैरा। पिछली रात को सुबह होने से पहले नमाज़ पढ़ने को तहज्जुद की नमाज़ कहते हैं। यह नमाज़ अल्लाहतआला को बहुत प्यारी है। हमारे रसूल हुज़ूर (स०) पर फ़र्ज़ थी और आपकी उम्मत के लोगों पर सुन्नत है। जो मर्द या औरत इस नमाज़ को पढ़ेगा, दुनिया में किसी का मोहताज न होगा। क़ब्र के अज़ाब से बचेगा। क़ब्र में रोशनी होगी। यह नमाज़ क़ब्र का चाँद है और क़यामत के दिन तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने वाला सत्तर आदमियों को बख़्शवायेगा और जब क़ब्र से उठेगा तो उसका चेहरा नूर की रोशनी से चमकता होगा। नबियों ने और वलियों ने और नेकबन्दों ने इस नमाज़ को हमेशा पढ़ा है। इस नमाज़ का इतना बड़ा सवाब इसलिए है कि आराम और नींद छोड़कर पढ़ी जाती है जो बड़ी हिम्मत का काम है। बस जैसी मेहनत वैसी उजरत।

हादी-ए-दोआलम (स०) फ़रमाते हैं कि जब कोई मर्द या औरत तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने को उठता है, तो अल्लाहतआला फ़रमाता है, ऐ फ़रिश्तो! देखो मेरे बन्दे की तरफ़ कैसी मीठी नींद छोड़कर मेरी इबादत के लिए उठा है। तुम गवाह रहो कि हमने इसको बख़्श दिया और हम इससे हिसाब नहीं लेंगे और जन्नत में इसको नबियों के साथ रखेंगे और दोज़ख़ इस पर हराम है।

और इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

जब आधी रात हो जाती है और एक हिस्सा बाक़ी रहती है तो अल्लाह तआला बड़ी रहमतों और बरकतों वाला उतरता है पहले आसमान तक, फिर फ़रमाता है कि है कोई बन्दा माँगने वाला जो वह माँगे उसको दिया जाये। कोई है दुआ करने वाला कि उसकी दुआ क़बूल की जाये। कोई है गुनाह बख़्शवाने वाला कि उसके गुनाह बख़्श दिये जायें। इसी तरह हमेशा सुबह तक ऐलान फ़रमाता है। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** अल्लाहतआला जिस्म से पाक है। उतरना चढ़ना उसकी शान-ए-अज़ीम के खिलाफ है। मतलब यह है कि आधी रात के जाने के बाद सुबह तक अल्लाह-तआला की ख़ास रहमतें तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने वाले बन्दों पर बरसती हैं। अब मालूम हो गया होगा कि तहज्जुद का वक़्त बहुत ही आलीशान और बड़ी बरकतों वाला है।

**फ़ायदा—** ऐ इन्सान! कितनी बड़ी नैमत अल्लाह तआला की हर एक रात में है और तू इससे ग़ाफ़िल है। उठ और हिम्मत कर और इस नमाज़ की बरकतें हासिल कर। दुनिया में भी इस नमाज़ के पढ़ने वाले का चेहरा नूरानी हो जाता है।

**क़ैलूला—** तहज्जुद की नमाज़ पढ़ने वाला अगर दोपहर में ज़रा आराम कर ले और सो जाया करे तो इसको क़ैलूला कहते हैं। इसमें सुन्नत के सवाब के अलावा यह भी फ़ायदा है कि दिमाग़ में और अक्ल में ताक़त पैदा होती है। रात को नमाज़ के लिए उठने में सहूलियत होती है। इस नमाज़ की कम से कम दो रकअत या चार रकअत या ज़्यादा से ज़्यादा बारह रकअत है। जितनी ताक़त और फ़ुर्सत हो, उतनी पढ़ें।

## इशराक़ की नमाज़ पढ़ने का सवाब

इशराक़ की नमाज़ पढ़ने का तरीक़ा यह है कि सुबह की नमाज़ जमाअत के साथ पढ़कर उसी जगह बैठा हुआ अल्लाह की याद करता रहे। जैसे कलमा या दरूद शरीफ़ या क़ुरआन-ए-पाक या कोई और वज़ीफ़ा पढ़ता रहे और दुनिया की बातचीत न करे और जब सूरज निकल आये तो दो रकअत या चार रकअत नफ़िल पढ़े तो एक हज और उमरा करने का सवाब मिलेगा।

**फ़ायदा—** अगर कभी जमाअत न मिले और किसी ज़रूरत की वजह से बैठ भी न सके तो फिर भी यह नमाज़ पढ़े तो भी सवाब मिलेगा। जो औरत अपने घर में इस नमाज़ को पढ़े उसके लिए भी यही सवाब है।

# चाश्त की नमाज़ पढ़ने का सवाब

जब धूप ज़रा तेज़ हो जाये यानी नौ बजे से बारह बजे तक नफ़िल नमाज़ पढ़ने को चाश्त के वक़्त की नमाज़ कहते हैं। इस नमाज़ की दो रकअत या चार रकअत या आठ रकअत या बारह रकअत हैं। हस्बे ताक़त और फ़ुर्सत जितनी चाहे, पढ़ें।

मोहसिन-ए-आज़म हुज़ूर (स०) का फ़रमान है कि—

जो कोई चाश्त की नमाज़ पढ़े, मर्द हो या औरत, दुनिया में भी किसी का मोहताज न होगा और आख़िरत में दोज़ख़ की आग से बचेगा और जन्नत में उसके वास्ते सोने का एक महल बनाया जायेगा और अल्लाहतआला उसके सब गुनाह माफ़ करेगा, चाहे उसके गुनाह दरिया के झाग के बराबर हों।

**सवाल—** पाँच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ पढ़ लेने के बाद यह तीन वक़्त की नफ़िल नमाज़ यानी तहज्जुद, इशराक़, चाश्त के पढ़ने में क्या हिकमत है?

**जवाब—** यह हिकमत है कि आदमी के आठों पहर नमाज़ पढ़ने में शुमार होंगे। दिन-रात में चौबीस घण्टे होते हैं और आठ पहर होते हैं। तो हर तीन घण्टे के बाद एक नमाज़ पढ़ी गयी। आधे दिन के बाद अव्वल पहर में ज़ोहर की नमाज़। दूसरे पहर में अस्र की नमाज़। तीसरे पहर में मग़रिब की नमाज़। चौथे पहर में इशा की नमाज़। पाँचवे पहर में तहज्जुद की नमाज़। छठे पहर में सुबह की नमाज़। सातवें पहर में इशराक़ की नमाज़। आठवें में चाश्त की नमाज़।

बस जो अल्लाहतआला के बन्दे पाँच वक़्त की फ़र्ज़ नमाज़ें और तीन वक़्त की यह नफ़िल नमाज़ें पढ़ते रहते हैं, अल्लाहतआला के नज़दीक दिन-रात आठों पहर उनके नमाज़ पढ़ने में ही शुमार होते हैं।

# सलात-उल-तस्बीह पढ़ने का सवाब

रहमत-ए-आलम हुज़ूर-ए-अक़दस (स०) ने यह नमाज़ अपने चचा हज़रत अब्बास (रज़ी०) को बतलायी थी और फ़रमाया था कि चचा साहब इस नमाज़ के पढ़ने से आपके अगले-पिछले, नये-पुराने, छोटे-बड़े, ज़ाहिर और छुपे सब गुनाह माफ़ हो जायेंगे। अगर हो सके तो आप इसको रोज़ पढ़ें। यह न हो सके तो हफ़्ते में एक दफ़ा पढ़ें। यह भी न हो सके तो महीने में एक दफ़ा पढ़ें, अगर यह भी न कर सको तो साल भर में एक दफ़ा पढ़ें। अगर यह भी न कर सको तो उम्र भर में एक ही दफ़ा पढ़ लें। इस नमाज़ के पढ़ने की आसान तरकीब यह है कि—

चार रकत नफिल नमाज़ की नीयत बाँधकर सुब्हानाकल्लाहुम्मा और अल्हमदु और इसके बाद कोई सूरत पढ़कर रुकुअ से पहले पन्द्रह बार यह कलिमा सुब्हानल्लाहि वल्हमदुल्लिाहि वलाइलाहा इल्लल्लाहु वल्लाहुअकबर पढ़े, फिर रुकुअ में जावे और सुब्हाना रब्बिलअलीयिल अज़ीम पढ़ने के बाद फिर वही कलिमा तमजीद पढ़े फिर रुकुअ से उठकर समिअल्लाहुलिमन हमिदाह रब्बना लकलहमद के बाद फिर वही दस बार कलिमा पढ़े फिर सजदे में सुब्हाना रब्बियिलआला के बाद दस बार कलिमा पढ़े फिर सजदे से उठकर बैठकर दस बार पढ़े। फिर दूसरे सजदे में तस्बीह के बाद दस बार पढ़े। फिर सजदे से सर उठाकर बैठे और दस बार पढ़कर दूसरी रकअत के वास्ते खड़ा हो।

यह कलिमा एक रकअत में पिचहत्तर बार पढ़ा गया। इसी तरह सना छोड़कर दूसरी रकअत में पढ़े और अत्तहिय्यात से पहले दस बार पढ़े। बस चारों रकअतें इसी तरह पूरी करे। इन चारों रकअतों में अल्हमदु के बाद जो सूरत चाहे पढ़े।

नबी करीम (स०) ने अपने चचा साहब के तुफ़ैल से हम गुलामों को यह अज़ीमउश्शान नैमत अता फ़रमायी है कि तुम लोग भी अगर इस नमाज़ को पढ़ा करोगे तो तुम्हारे भी सब गुनाह अल्लाहतआला माफ़ कर देगा। सुबहान अल्लाह ! क्या शान-ए-रहमत है आपकी कि हम गुलामों को हर जगह याद फ़रमाते हैं—

गुनहगारों को बख्शवा देने वाले,
दिलों की कदूरत मिटा देने वाले।

खुदाई की दौलत लुटा देने वाले,
जहन्नुम को जन्नत बना देने वाले।

ग़रीबों की बिगड़ी बना देने वाले,
फक़ीरों को सुल्तां बना देने वाले।

कहाँ तक करें शुक्र उसका कि हमको,
मिले हैं खुदा से मिला देने वाले।

## अस्तग़फ़ार पढ़ने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूलअल्लाह (स०) ने कि—

जो मर्द या औरत अस्तग़फ़ार बहुत पढ़ा करे अल्लाहतआला उसको हर एक रन्जो ग़म से बचायेगा और उसको ऐसी जगह से रिज़्क़ पहुँचायेगा कि उसके दिल में इसका ख़्याल भी न गुज़रेगा। उस खुदा की क़सम कि जिसके क़ब्ज़े में

मेरी जान है, अस्तग़फ़ार यानी खुदा से माफ़ी माँगना, गुनाहों को इस तरह खा जाता है जैसे आग लकड़ी को खा जाती है। तुमको चाहिए कि चलते-फिरते, उठते-बैठते अस्तग़फ़ार पढ़ा करो कि यह अल्लाहतआला से बख़्शीश और माफ़ी माँगना है। अस्तग़फ़ार कई तरह पर है। एक यह

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِی لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ ط

है इस अस्तग़फ़ार को सुबह की नमाज़ के बाद सौ दफ़ा और सोते वक़्त तीन दफ़ा पढ़ लेना तमाम गुनाहों को माफ़ कराता है। एक अस्तग़फ़ार यह है اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ رَبِّیْ مِنْ کُلِّ ذَنْبٍ وَّاَتُوْبُ اِلَیْهِ ط और एक हल्का-सा यह है اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَاَتُوْبُ اِلَیْهِ ط

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जब कोई बन्दा गुनाह कर बैठे, फिर शर्मिन्दा होकर सजदे में जाकर اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِیْ ذُنُوْبِیْ पढ़े। यानी ऐ अल्लाह ! मुझको बख़्श दे और मेरे गुनाह को, तो अल्लाहतआला फ़रमाता है कि मेरे बन्दे ने गुनाह किया यानी मेरी नाफ़रमानी की और फिर मुझसे डरा और समझा कि मेरा कोई रब है जो गुनाह पर पकड़ता है और गुनाह को माफ़ भी कर देता है। यह समझ कर मुझसे माफ़ी माँगी तो मैं उसका गुनाह माफ़ कर देता हूँ।

## ग़ैब से रिज़्क़ मिलने का वज़ीफ़ा

एक शख़्स ने अर्ज़ की-या रसूल अल्लाह (स०) ! दुनिया मुझसे फिर गयी, रिज़्क़ तंग हो गया। आपने फ़रमाया— तुम फ़रिश्तों की तस्बीह पढ़ा करो, उसकी बरकत से रिज़्क़ बढ़ता है। वह तस्बीह यह है कि सुबह की नमाज़ से पहले या سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِیْمِ وَبِحَمْدِهٖ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ

बाद सौ दफ़ा पढ़ा करो। इसकी बरकत से दुनिया तुम्हारे पास ज़लीलो ख़ुवार हो कर आयेगी और तुमको ग़ैब से रिज़्क़ मिला करेगा। और इस तस्बीह के हर कलमे की बरकत से अल्लाहतआला एक फ़रिश्ता पैदा करेगा, जो क़यामत तक यह तस्बीह पढ़ता रहेगा। और तुमको उसका सवाब मिलता रहेगा। उस शख़्स का कहना है कि मैंने यह वज़ीफ़ा पढ़ना शुरू किया और हमेशा पढ़ता रहा। थोड़े ही दिनों में अल्लाहतआला ने मेरा रिज़्क़ खोल दिया और मेरी तंगदस्ती दूर कर दी।

और इरशाद फ़रमाया हुज़ूर (स०) ने कि—

سُبْحَانَ اللّٰہِ وَبِحَمْدِہٖ जो मर्द या औरत दिन-रात में सौ दफ़ा पढ़ेगा तो उसके सब गुनाह माफ़ हो जायेंगे, अगरचे समन्दर के झाग के बराबर हों। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह ! बेशक अल्लाहतआला की पाकी बयान करने में भी तासीर है। कोई बन्दा करके तो देखे।

## कलिमा 'तैय्यब' पढ़ने का सवाब

कलिमा तैय्यब "लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्म्दुर्रसूलुल्लाह" इस कलिमे शरीफ़ का पढ़ना सब ज़िक्रों से बढ़कर हैं और यह कलिमा ईमान की और जन्नत की कुञ्जी है।

इरशाद फ़रमाया रसूलअल्लाह (स०) ने कि—

जिस किसी ने सच्चे दिल से इसको पढ़ा होगा वह मेरी शफ़ाअत का हक़दार हो जायेगा। ऐ लोगों, तुम अपने ईमान को तरोताज़ा किया करो और बहुत पढ़ा करो कि इसके पढ़ने से ईमान तरोताज़ा हो जाता है। और जो मर्द या औरत पाँचों नमाज़ों के बाद सौ दफ़ा इसको पढ़ा करेगा वह जन्नत में जायेगा और अगर इस कलिमे शरीफ़ को ज़मीन व आसमान के चौदह तबक़ के साथ तराज़ू के एक पलड़े में रखा जावे और दूसरे पलड़े में यह कलिमा रखा जावे तो इस कलिमे का पलड़ा भारी होगा। (नसाई व तबरानी)

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह ! यह कलमा-ए-मुबारक ईमान की जड़ है। इसके मायनी पर यक़ीन करने को ईमान कहते हैं। मुसलमानों ! इतनी बड़ी नैमत और हमको इसके पढ़ने से ग़फ़लत। देखो बड़े-बड़े आलीशान बुज़ुर्गों ने इस कलिमें को पढ़कर बड़े-बड़े दर्जे पाये। सुबहान अल्लाह ! क्या मुबारक कलिमा है कि सैकड़ों बरस का काफ़िर व मुशरिक भी इसके पढ़ने से जन्नती बन जाता है। अलहम्दोलिल्लाह, हुज़ूर (स०) के तुफ़ैल यह नैमत हमको मिली।

है महशर में काफ़ी वसीला तुम्हारा,
तुम आक़ा हो मेरे मैं बन्दा तुम्हारा।

समाये नज़र में खिंचे मेरे दिल में,
वह सूरत तुम्हारी वह नक़्शा तुम्हारा।

ख़बर तुम न लोगे तो फिर कौन लेगा,
मैं आख़िर तो हूँ नाम लेवा तुम्हारा।

हराम उस पे हो जाये नार-ए-जहन्नुम,
पढ़े सिद्क़ दिल से जो कलिमा तुम्हारा।

तमन्ना है आजिज़ की कि बरोज़-ए-क़यामत,
उठे पढ़ के मदफ़न से कलिमा तुम्हारा।

## कलिमा-ए-शहादत पढ़ने का सवाब

**कलमा-ए-शहादत—**

**"अशहदु अल्लाइला-ह इल्लल्लाहु, वहदहू ला शरी-क लहू व अशहदुअन-न मुहम्मदन अबदुहु व रसूलुहू०"।**

यानी मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद इबादत के क़ाबिल नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मौहम्मद अल्लाह के बन्दे और उसके रसूल हैं।

हबीब-ए-खुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो शख़्स मरते वक़्त यह कलिमा पढ़ लेगा उसके सब गुनाह माफ़ हो जायेंगे। नमाज़ों में अत्तहीयात के आख़िर में भी यह कलिमा पढ़ा जाता है। अगर कोई मर्द या औरत वज़ू करने के बाद तीन दफ़ा इस कलिमे को पढ़ा करेगा तो उसके लिए क़यामत के दिन जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिये जायेंगे कि जिस दरवाज़े से उसका दिल चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाये (बुख़ारी व मुस्लिम)। और सोते वक़्त इस कलिमे को तीन बार पढ़ लेने से ईमान के साथ दुनिया से उठाया जायेगा।

और हुज़ूर-ए-अक़दस (स०) फ़रमाते हैं कि—

क़यामत के दिन अल्लाहतआला एक ऐसे नाफ़रमान को बुलायेगा कि जिसके बदअमलों के निन्नानवे रजिस्टर होंगे। उससे फ़रमायेगा, ऐ बन्दे! क्या तुझे अपने इन बदअमलों में कुछ शक है और बदी लिखने वाले फ़रिश्तों ने तेरे ऊपर कुछ ज़्यादती की है? वह कहेगा, ऐ परवरदिगार! फ़रिश्तों ने बिल्कुल ठीक लिखा है। इरशाद होगा कि तेरे पास कोई हेला बहाना है, वह कहेगा नहीं। हुक्म होगा, ऐ बन्दे! आज भी तेरे ऊपर ज़्यादती न होगी। हमारे यहाँ तेरी एक नेकी इस पर्चे में है। ले इस पर्चे को तराज़ू के पलड़े में रख और दूसरे पलड़े में अपने बदअमलों के रजिस्टर रख और तोल। वह अर्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मेरे बदअमलो के सामने यह पर्चा क्या चीज़ है?

हुक्म होगा, ऐ बन्दे ! हमारी रहमत से बेउम्मीद न हो, ज़रा तू तोल कर देख।

बस एक पलड़े में यह पर्चा और एक पलड़े में वह बदअमलों के रजिस्टर रखे जायेंगे। बस भारी होगा पलड़ा पर्चे का। फिर हुक्म होगा, ऐ बन्दे ! इस पर्चे को खोलकर देख तो यही कलिमा-ए-शहादत लिखा पायेगा।

फिर हुक्म होगा, ऐ बन्दे ! तूने दुनिया में इसको सच्चे दिल से यक़ीन के साथ पढ़ा था।

आज इसकी बरकत से हमने तुझको बख़्श दिया और तेरे सब गुनाह माफ़ किये। (अज़्ाक-उल-आरफ़ीन)

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह ! क्या शान-ए-करीमी है तेरी।

ऐ ख़ुदा ए मेरे सत्तारूलअयूब,
मेरे मौला मेरे ग़फ्फ़ारूल-ज़ुनूब।

ग़र्क़ बहरे मुसीबत हूँ सरबसर,
रहम कर मुझ पर इलाही रहम कर।

सुन मेरे मौला मेरी फ़रियाद को,
आ मेरे मालिक मेरी इमदाद को।

दिल में तेरी याद लब पर नाम हो,
उम्र भर अब तो यही बस काम हो।

तुझ पे रोशन हैं मेरे सारे अयूब,
जानता है तू मेरी हालत को ख़ूब।

गो तेरे आगे ज़लीलो खुवार हूँ,
हश्र में रुस्वा न ऐ सत्तार हूँ।

तुझसे दम भर भी मुझे ग़फ़लत न हो,
तेरे ज़िक्रो फ़िक्र से मुझे फ़ुर्सत न हो।

जिस घड़ी निकले बदन से मेरे जां,
कलिमा-ए-शहादत हो विर्दे ज़बां।

सैकड़ों को तू कर देगा जन्नती,
एक यह नाअहल भी उनमें सही।

जब दमे वापसी हो या अल्लाह,
लब पे हो ला इलाहा इल्लल्लाह।

# कलिमा-ए-तमजीद पढ़ने का सवाब

**कलिमा तमजीद—**

**"सुब्हानल्लाहि वल् हम्दु लिल्लाहि व ला इला-ह इल-लल्लाहु वल्लाहु अक्बर व ला हौ-ल वला कुव्व-त इल्ला बिल्लाहिल अलीयिल अज़ीम०"।**

हज़ूर-ए-अक़दस (स०) फ़रमाते है कि—

सब कलिमे के सरदार यह कलिमात हैं। अल्लाहतआला ने अपने कलिम-ए-पाक से इन कलिमों को छाँट लिया है। जब कोई बन्दा कहता है "सुबहान अल्लाह" तो उसको दस नेकियाँ मिलती हैं और बीस बदियाँ उसकी मिटायी जाती हैं और जब अलहम्दुलिल्लाह कहता है तब भी ऐसा ही सवाब मिलता है। आख़िरी कलिमात तक पढ़ने वाले को ऐसा ही सवाब मिलता है। और जो मर्द या औरत सुबह व शाम सौ-सौ बार सुबहान अल्लाह पढ़े तो उसको अल्लाह की राह में सौ मुजाहिदों को घोड़े पर सवार करने वाले के बराबर सवाब मिलता है। और जिसने सुबह व शाम सौ-सौ बार ला इलाहा इल्लल्लाह पढ़ा उसको सौ ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलता है। और जो सुबह व शाम सौ मर्तबा अल्लाहो-अकबर पढ़े तो क़यामत के रोज़ इतना सवाब किसी को न मिलेगा मगर उसी को मिलेगा जिसने इसको पढ़ा होगा। (तिरमिज़ी)

ग़ुलाम आज़ाद करने के बारे में हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जिस मुसलमान ने ग़ुलाम आज़ाद किया तो अल्लाहतआला उस ग़ुलाम के हर जोड़ के बदले आज़ाद करने वाले के हर जोड़ को दोज़ख़ की आग से बचायेगा। हाथ को हाथ के बदले, पाँव को पाँव के बदले, शर्मगाह को शर्मगाह के बदले। (अज़ हज़रत इमाम अहमद हंबल रह०) सिर्फ़

لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰہِ

के मुताअल्लिक़ हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

एक कम सौ बीमारयों को इसका पढ़ना दूर करता है। रिज़्क़ का फ़िक्र भी नहीं रहता।

# कलिमा-ए-तौहीद पढ़ने का सवाब

कलमा-ए-तौहीद—

**"ला इला-ह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरी-क लहू लहुल मुलकु व लहुल हम्दु युहयी व युमीतु व हु-व हैयुल ला यमूतु अब-दन अ-ब-दा० ज़ुल जलालि वल इक्रामि बियदिहिल ख़ैरि व हु-व अला कुल्लि शैइन क़दीर"।**

हुज़ूर-ए-पुरनूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जब कोई शख़्स बाज़ार में जावे और इस कलिमे को पढ़े तो अल्लाहतआला उसको दस लाख नेकियाँ अता फ़रमाता है और दस लाख उसकी बदियाँ दूर करता है और दस लाख उसके दर्जे बुलन्द करता है और एक महल जन्नत में उसके लिए बनाता है। (तिरमिज़ी)

**फ़ायदा—** सहाबा (रज़ी०) इस कलिमे की बुज़ुर्गी मालूम करके कभी-कभी बाज़ार जाया करते थे और इस कलिमे को पढ़कर सवाब हासिल किया करते थे।

सैय्यद-उल-ज़ाकरीन हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि जो शख़्स पाँचों नमाज़ों के बाद सुबहान अल्लाह तैंतीस बार, अलहम्दो लिल्लाह तैंतीस बार, अल्लाहो अक़बर चौंतीस बार और एक बार यह कलिमा-ए-तौहीद पढ़े तो उसके सब गुनाह माफ़ हो जाते हैं चाहे समन्दर के झाग के बराबर हों। और इरशाद फ़रमाया है कि जो इस कलिमे को दस-दस बार सुबह व शाम पढ़ेगा तो उसको हज़रत इस्माईल (अ० स०) की औलाद से दस-दस ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिलेगा। (मुस्लिम शरीफ़)

सुबहान अल्लाह! क्या मुबारक कलमा है। अल्लाह के नाम की लूट है लूटी जा तो लूट।

# पाँचवा कलिमा पढ़ने का सवाब

**"अल्लाहुम-म इन्नी आऊज़ु बि-क मिन अन उशिर-कबि-क शैअंव -व अना अअलमु बिही व अस्तग़्फ़िरू-क लिमा ला अअलमु बिही तुब्तु अन्हू व तबर्राअतु मिनल क़ुफ़्रि**

**वश-शिर्कि वल किज़्बि वल ग़ीबति वल बिद अति वन्नमीमति वल फ़वाहिशि वल बुहतानि वल मआसी कुल्लिहा व अस्लम्तु व अक़ूलु ला इला-ह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर रसूलुल्लाह॰"**

जानना चाहिए कि बाज़ दफ़ा आदमी की ज़ुबान से कुफ़्र-ओ-शिर्क की बात मुँह से निकल जाती है और ग़लती से ख्याल भी नहीं करता कि मैंने क्या कहा तो इस कलिमे के पढ़ने से ऐसी बातों का जो गुनाह होता है, माफ़ हो जाता है। अल्लाहतआला की पकड़ नहीं रहती।

## अल्लाहतआला के नाम-ए-पाक पढ़ने का सवाब

**इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स॰) ने कि—**

अल्लाहतआला के एक कम सौ नाम हैं। जो मर्द या औरत इनको ज़ुबानी याद करे और सुबह व शाम पढ़ा करे तो वह जन्नत में जायेगा।

**फ़ायदा—** अल्लाहतआला के नाम-ए-पाक पढ़ने का आसान तरीक़ा यह है कि सुबह की नमाज़ के बाद और मग़रिब की नमाज़ के बाद एक-एक बार पढ़ लिया करें और उनकी बरकत से जन्नत हासिल करें। वह नाम-ए-पाक यह हैं—

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| या अल्लाहु | या रहमानु | या रहीमु | या मलिकु | या क़ुद्दुसु |
| या सलामु | या मुअमिनु | या मुहमीनु | या अज़ीज़ु | या जब्बारु |
| या मुतकब्बिरु | या ख़ालिक़ | या बारीउ | या मुसव्विरु | या ग़फ़्फ़ारु |
| या क़ह्हारु | या वह्हाबु | या रज़्ज़ाक़ु | या फत्ताहु | या अलीमु |
| या क़ाबिज़ु | या बासितु | या ख़ाफ़िज़ु | या राफिउ | या मुअज़्ज़ु |
| या मुज़म्मिलु | या समीउ | या बसीरु | या हुकमु | या अद्लु |
| या लतीफु | या ख़बीरु | या हलीमु | या अज़ीमु | या ग़फ़ूरु |
| या शकूरु | या अलीय्यु | या कबीरु | या हफ़ीज़ु | या मुक़ीतु |
| या हसीबु | या जलीलु | या करीमु | या रक़ीबु | या मुजीबु |
| या वासिउ | या हकीमु | या वदूदु | या मजीदु | या बाईसु |
| या शहीदु | या हक़्क़ु | या वकीलु | या कविय्यु | या मतीनु |
| या वलीय्यु | या हमीदु | या मुहसियु | या मबादिउ | या मुईदु |
| या मुहय्यी | या मुमितु | या हय्यु | या कय्यूम | या वाजिदु |
| या माजिदु | या वाहिदु | या अहदुयु | या समदु | या क़ादिरु |
| या मुक़्तादिरु | या मुक़द्दिमु | या मुवख़्ख़िरु | या अव्वलु | या आख़िरु |
| या ज़ाहिरु | या बातिनु | या मुतआलीयु | या बररु | या तव्वाबु |

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| या मुनईमु | या मुन्तक़िमु | या अफ़ुव्वु | या रऊफ़ु | या मालिकुल-मुल्कि |
| या ज़ुलजलालिवल्इकरामु | | या रब्बु | या मुक़्सितु | |
| या ज़ामिउ | या ग़नीय्यु | या मुग़नी | या मुअ़्तिउ | या मानिउ |
| या ज़ार्रू | या नाफ़िउ | या नूरू | या हादीउ | या वदीईउ |
| या वाक़ीउ | या वारिसु | या रशीदु | या सबूरू | या मादिकु |
| या सत्तारू | | | | |

لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ

यानी बेशक उस ज़ात-ए-पाक के मिस्ल कोई चीज़ नहीं है। वही सुनने वाला और देखने वाला है।

## फ़िक्र व ग़म दूर करने का वज़ीफ़ा

सुल्तान-ए-दो जहाँ, दस्तगीर-ए-बेकसां हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ज़्यादा पढ़ा करो कि यह कलिमा जन्नत के ख़ज़ानों में से एक ख़ज़ाना है और इसका पढ़ना एक कम सौ बीमारियों की दवा है और उन बीमारियों मे से हल्के दर्जे की बीमारी कोई फ़िक्र या ग़म है। जो इसको पढ़ेगा उसके सब फ़िक्र और ग़म दूर हो जायेंगे। (तिबरानी)

**फ़ायदा—** अगर कोई मर्द या औरत सुबह की नमाज़ के बाद सौ बार

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ

पढ़ा करे तो दोज़ख़ के उन उन्नीस फ़रिश्तों के अज़ाब से बच जायेगा जो दोज़ख़ पर सज़ा देने के लिए मुक़र्रर हैं और जन्नत में आराम पायेगा।

बिस्मिल्लाह शरीफ़ के हरूफ़ भी उन्नीस ही शुमार किये गये हैं। सुबहान अल्लाह ! क्या बेहतरीन वज़ीफ़ा है। दुनिया और आख़िरत दोनों बन जायेंगी।

## घर बैठे शहादत का दर्जा हासिल करो

रसूल-ए-ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) का फ़रमान है कि—

जो कोई सूरा-ए-हश्र की आख़िरी तीन आयतें सुबह व शाम यानी सुबह की नमाज़ के बाद और मग़रिब की नमाज़ के बाद पढ़ लिया करे तो सत्तर हज़ार फ़रिश्ते सुबह से शाम तक और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते शाम से सुबह तक उसकी बख़्शीश के लिए दुआ करते हैं। अगर उस दिन में या रात में वह मर जाये तो

शहादत का दर्जा पायेगा। (मिश्कात)

वह आयतें यह हैं। पहले तीन बार

أَعُوذُ بِاللهِ السَّمِيعِ الْعَلِيمِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ.

पढ़े फिर एक बार यह आयतें पढ़े—

هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ عَالِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ
اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ الْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ
السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۚ
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ
الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ يُسَبِّحُ
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

**फ़ायदा—** अल्लाह नाम की लूट है। लूटो जा तो लूट।

## माह शाबान की पन्द्रहवीं शब की बुज़ुर्गी

इरशाद फ़रमाया रसूलअल्लाह (स०) नें कि—

ऐ आयशा! तुम जानती हो उस रात में क्या होता है? अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! बतलाइये उसमें क्या होता है? आपने फ़रमाया उस रात में यह होता है कि आदम (अ० स०) की औलाद में से जो शख़्स उस साल में पैदा होगा और जो इस साल में मरेगा, उसका मरना और पैदा होना लिखा जाता है और जो फ़रिश्ते इन कामों पर मुक़र्रर हैं, उनको इत्तला दी जाती है और जितना-जितना रिज़्क़ मख़लूक़ को उस बरस में मिलेगा, सब लिखा जाता है। और उस पन्द्रहवीं रात में अल्लाहतआला सूरज के डूबते ही इस दुनिया के आसमान पर तशरीफ़ लाते हैं और इरशाद फ़रमाते हैं कि कोई नेकबन्दा ऐसा है जो हमसे बख़्शीश माँगे तो हम उसको बख़्श दें। कोई रिज़्क़ माँगे तो हम उसको रिज़्क़ दें। कोई मुसीबत का मारा दुआ करे तो उसकी मुसीबत दूर करें। इसी तरह सुबह होने तक इरशाद फ़रमाते हैं। बस बन्दों को चाहिए कि उस रात में ख़ूब इबादत करें

और अपने गुनाहों की माफ़ी माँगें और पंद्रहवीं तारीख़ को रोज़ा रक्खें और अल्लाहतआला उस रात में अपनी मेहरबानी से बेशुमार बन्दों को बख़्शता है। मगर काफ़िर, मुशरिक, कीना रखने वाले को और क़ातिल को नहीं बख़्शता। (मिश्कात)

**फ़ायदा—** यह ख़याल न किया जावे कि अल्लाहतआला के जिस्म है जो इस आसमान पर आता है। बस अल्लाहतआला को रसूल-ए-पाक ने जिस तरह बतला दिया है उसको सच्चा जानें और अमल करें।

## आख़िरत में बग़ैर ईमान के कोई काम न आयेगा

बुख़ारी शरीफ़ और मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

खुदा की क़सम! तुमको मालूम हो कि मैं तुम्हारे लिए माँगे जाऊँगा जब तक मुझको तुम्हारी बख़्शीश माँगने से रोका न जायेगा। फिर खुदा का हुक्म हुआ कि नबी को और दूसरे मुसलमानों को दरुस्त नहीं कि मुशरिकों के लिए बख़्शीश की दुआ माँगे चाहे वह रिश्तेदार ही हो। क्योंकि उन पर ज़ाहिर हो चुका है कि मुशरिक दोज़ख़ी हैं। यह अबुतालिब के मरने के वक़्त फ़रमाया गया।

मतलब इस हदीस शरीफ़ का यह है कि—

जब अबुतालिब मरने लगे तो रहमत-ए-आलम (स०) ने उनसे फ़रमाया कि—

चचा साहब ला इला-ह इल्लल्लाह कह लो, मैं अल्लाहतआला से तुम्हारी बख़्शीश करा लूँगा। अबूजहल भी उस वक्त वहाँ मौजूद था। उसने कहा, ऐ अबूतालिब! ख़बरदार, अपने बाप दादा का दीन न छोड़ना।

हुज़ूर (स०) बहुत देर तक उनको कलिमा पढ़ने को कहते रहे और अबूजहल मना करता रहा। आख़िर अबूतालिब ने कहा कि भतीजे, मैं तो अपने बाप-दादा ही के दीन पर मरता हूँ। अब मरते वक़्त बाप-दादा के दीन को क्या धब्बा लगाऊँ और कुफ्र की हालत में ही मर गये।

अबूतालिब हुज़ूर (स०) के चचा थे और हज़रत अली (अ० स०) के वालिद थे। हुज़ूर (स०) पर जान से और माल से फ़िदा थे। इसीलिए हुज़ूर चाहते थे कि किसी तरह यह ईमान ले आयें और दोज़ख़ के अज़ाबों से बच जायें। मगर वह ईमान न लाये।

फिर हुज़ूर को अल्लाहतआला ने मना कर दिया। फिर आपने मुश्रिक़ीन के लिए दुआ माँगनी छोड़ दी कि काफ़िर और मुश्रिक जन्नत में न जायेगा।

इस इदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि बग़ैर ईमान के रिश्तेदारी और दोस्ताना कुछ काम न आयेगा और बददीन लोगों का कहना मानना या उनकी सोहबत में रहना अल्लाह व रसूल के मुक़ाबले में बाप-दादा या बिरादरी के तरीक़ों पर चलना ज़हरे क़ातिल है। सीधा दोज़ख़ में पहुँचा देता है।

मुसलमानो ! अल्लाहतआला से डरो और पूरी तरह से हुज़ूर (स०) की ताबेदारी करो और हुज़ूर का रुतबा पहचानो।

ख़ातिम उल अम्बिया हक़ का प्यारा नबी,
सारे नबियों से अफ़ज़ल हमारा नबी।

तुम हो वह हुस्न वाले कि अल्लाह ने,
अपना महबूब कहकर पुकारा नबी।

और नबियों की मख़सूस थी उम्मतें,
है दोनों आलम का हादी हमारा नबी।

है शिफ़ाअत के सहरे की सरपे फबन,
आज दूल्हा बना है हमारा नबी।

आसमानों ही पर सब नबी रह गये,
अर्श-ए-आज़म पे पहुँचा हमारा नबी।

बहरे इस्यां के गरदाब में नाव है,
डूबा-डूबा मुझे दे सहारा नबी।

मुझ गुनहगार का पर्दा ढक लीजिए,
ऐब मेरे न हों आशकारा नबी।

कूच अकबर का जिस वक़्त दुनिया से हो,
लब पे जारी हो कलिमा तुम्हारा नबी।

## माहे रमज़ान के रोज़े रखने का सवाब

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

ऐ मुसलमानो ! जिस तरह तुमसे पहले लोगों पर रोज़े रखने फ़र्ज़ थे, तुम पर भी फ़र्ज़ किये गये हैं।

**फ़ायदा—** अल्लाहतआला के इस हुक्म से मालूम हुआ कि मुसलमान मर्द और औरत पर नमाज़ की तरह रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखना भी फ़र्ज़ है। अगर नमाज़ पढ़ी और रोज़े न रखे तो नमाज़ निजात के लिए काफ़ी न होगी। अगर कोई रोज़े रखे और नमाज़ न पढ़े तो रोज़े भी निजात के लिए काफ़ी न होंगे। माहे रमज़ान के रोज़ों का इन्कार करने वाला काफ़िर और बेईमान है और इनके छोड़ने वाला फ़ासिक़ और सख़्त मुजरिम है और बड़ी सज़ा का मुस्तहिक़ है।

हुज़ूर-ए-अक़दस (स०) ने फ़रमाया कि—

क़सम है उस ज़ात-ए-पाक की कि जिसके कब्ज़े में मेरी जान है। रोज़ेदार के मुँह की बदबू जो फ़ाक़े से हो जाती है, वह अल्लाहतआला के नज़दीक मुश्क की खुशबू से भी बहुत ज़्यादा खुशबूदार है। (बुख़ारी)

और इरशाद फ़रमाया है कि—

रोज़ेदार के लिए दो खुशियाँ हैं। एक दुनिया में रोज़ा खोलने के वक़्त और दूसरी आख़िरत में, जबकि अल्लाहतआला से मुलक़ात होगी। और क़यामत के दिन रोज़े रखने वालों के लिए अर्श-ए-आज़म के नीचे दस्तरखुवान बिछाया जायेगा। उस पर तरह-तरह के खाने रखे जायेंगे। वह उस पर बैठकर बड़ी इज़्ज़त व शान के साथ खाने-पीने मे लगे हुए होंगे और जिन लोगों ने दुनिया में रोज़े न रखें होंगे वह हिसाब के लिए क़यामत के मैदान में रुके खड़े होंगे। वह लोग रोज़ेदारों की यह इज़्ज़त व शान देखकर कहेंगे कि यह खुशनसीब कौन हैं जो ऐसी मुसीबत के वक़्त में खाने पीने में लगे हुए हैं। फ़रिश्ते जवाब देंगे— यह वह लोग हैं जो दुनिया में रमज़ान शरीफ़ के रोज़े रखते थे और भूख व प्यास की तकलीफ़ उठाते थे।

यह सुनकर वह लोग बहुत पछतायेंगे और कहेंगे कि अफ़सोस ! हमारी ग़फ़लत और बदबख़्ती कि हम मुसीबत में फँसे हुए हैं और आराम व चैन से महरूम हैं।

फ़र्ज़ हक़ ने किया रमज़ान का हम पर रोज़ा,<br>
चाहिए कि रखे मुसलमान बराबर रोज़ा।

ताकीद है क़ुर्आन व हदीस में रोज़े की,<br>
फिर भी रखते नहीं रमज़ान में अकसर रोज़ा।

ग़ीबत और झूठ की बातों से होवे परहेज़,<br>
इन खुराफ़ात से होता है मुकद्दर रोज़ा।

बल्कि जो हरकतें ऐसी करे उनसे कह दो,
मुझसे मत बोलो मेरे मुँह के है अन्दर रोज़ा।

फ़र्ज़ अल्लाह का भी सर से उतर जायेगा,
और गुनाहों से भी कर देगा मुतहर रोज़ा।

अपने ही पास रखा है जिसका खुदा ने बदला,
ऐसे पाये की इबादत है यह बढ़कर रोज़ा।

बेनमाज़ों के जो रोज़ा हुआ वह नाक़िस है,
होता कामिल है नमाज़ों को मिला कर रोज़ा।

## हूरों की दुआ

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

शुरू साल से आख़िर साल तक जन्नत को सजाया जाता है और जब रमज़ान का पहला दिन होता है तो अल्लाहतआला के अर्श के नीचे से एक हवा चलती है और वह हूरों को जन्नत में आकर लगती है। उस वक़्त हूरें यह दुआ करती हैं कि—

ऐ परवरदिगार! अपने बन्दों में से हमारे लिए बहुत जल्दी शौहर बना दीजिए कि उनसे हमारी आँखें ठण्डी हों। और रमज़ान की पहली रात ही से शैतानों को क़ैद कर दिया जाता है और जन्नत के दरवाज़े खोल दिये जाते हैं और दोज़ख़ के दरवाज़े बन्द कर दिये जाते हैं। और फ़रिश्ता ! पुकार-पुकार कर कहता है कि—

ऐ नेकी कमाने वाले आदमी आगे बढ़ कि यह वक़्त आगे बढ़ने का है और जन्नत हासिल करने का है। और ए बदी करने वाले आदमी, बुरे काम से बच कि यह वक़्त दोज़ख़ से बचने का हैं।

सुल्तान-ए-जहां हज़रत माहे रमज़ान है,
क्या शान है क्या शौकत-ए-माह रमज़ान है।

दर बन्द हैं दोज़ख़ के तो जन्नत के खुले हैं,
देखो तो अजब बरकत-ए-माहे रमज़ान है।

एक फ़र्ज़ अदा होवे तो सत्तर के मिले अज्र,
महबूब-ए-खुदा ताअते माहे रमज़ान है।

कुछ फ़र्ज़ से कम उसको न रुतबे में समझना,
जो तुमने पढ़ी सुन्नत-ए-माह रमज़ान है।

क़ुर्आन का नज़ूल इसमें, इसी में है शबेक़द्र,
क्या मर्तबा क्या इज़्ज़त माहे रमज़ान है।

बेशक उसे हो जायेगी दोज़ख़ से रिहाई,
जिसको कि बादिले उल्फ़ते माहे रमज़ान है।

होकर के सिपर आतिशे दोज़ख़ से बचायेगा,
दिन हश्र के यह शफ़क़्क़ते माहे रमज़ान है।

क़ुर्आन व तरावीह का चर्चा है जा बजा,
क्या नाम-ए-ख़ुदा शोहरते माहे रमज़ान है।

करना जो इबादत है करो वर्ना चला यह,
बे फ़ायदा फिर हसरते माहे रमज़ान है।

आइन्दा मिले या न मिले समझो ग़नीमत,
इन दिनों जो यह सोहबते माहे रमज़ान है।

## रोज़ों की और क़ुर्आन की सिफ़ारिश

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

रोज़े और क़ुर्आन क़यामत के दिन सिफ़ारिश करेंगे। रोज़ा कहेगा, ऐ रब! मैंने दुनिया में इसके खाने-पीने और जी की ख़ुवाहिश से रोके रखा था। अब इसके हक़ में मेरी सिफ़ारिश क़बूल फ़रमा, और इसको बख़्श दे। और क़ुर्आन कहेगा, ऐ रब! मैंने इसको पूरी नींद सोने नहीं दिया था। यह मेरे पढ़ने और सुनने में लगा रहता था। अब मैं इसकी सिफ़ारिश करता हूँ, इसको बख़्श दे।

बस अल्लाहतआला दोनों की सिफ़ारिश क़बूल फ़रमायेगा और रोज़े रखने वालों को बख़्श देगा और जो मर्द या औरत रमज़ान के आने से ख़ुश हों, अल्लाहतआला उसको क़यामत के दिन हर एक तकलीफ़ से बचायेगा। और जो मर्द या औरत माहे रमज़ान में दिल खोल कर ख़ैरात करे, भूखे को खाना खिलाये, या किसी ग़रीब को कपड़े या जूता पहनाये तो उसको ऐसा सवाब मिलता है कि जैसा ज़मीन के बराबर सोना अल्लाह की राह में ख़र्च कर दिया। और अल्लाहतआला क़यामत के दिन उसको बुराक़ की सवारी अता फ़रमायेगा, जो उसके पुलसिरात के ऊपर से बिजली की तरह गुज़र जायेगा।

और इरशाद फ़रमाते हैं रहमत-ए-आलम (स०) कि—

तुम अपना खाना दीनदार लोगों को खिलाया करो कि उनके नेक कामों

के सवाब में तुम भी शरीक होंगे और तुमको भी सवाब मिलेगा। खुद हुज़ूर-ए-पाक (स०) रमज़ान शरीफ़ में इस क़दर ख़ैरात करते थे कि लोग हैरान हो जाते थे।

सख़्त मुश्किल में तेरी जाने हज़ी फँस जायेगी,
जिस्म में तेरे तड़पकर रूह घबरा जायेगी।

कोई आयेगा नहीं उस दम तेरी इमदाद को,
और सुनेगा भी नहीं कोई तेरी फ़रियाद को।

कर सकेगा हल नहीं कोई तेरी मुश्किल अड़ी,
काम आयेगा तो आयेगा यह रोज़ा उस घड़ी।

चाहे हो ख़ात्मा बिल्ख़ैर गर ईमान से,
रखो रोज़े और मुहब्बत करो क़ुर्आन से।

राज़ेदारों को नहीं कुछ ख़ौफ़ क़ब्र व हश्र का,
बन के शाफ़ेह उनका रोज़ा हर जगह को खड़ा।

ऐ अज़ीज़ों ! तुम इस महीने को ग़नीमत जान लो,
मान लो बहरे ख़ुदा कहना हमारा मान लो।

इससे अच्छा और मौका कौन-सा तुम पाओगे,
बेख़बर अब भी रहे गर फिर बहुत पछताओगे।

वक़्ते आख़िर और मरक़द में यही काम आयेगा,
हर जगह तुमको अज़ाबों से यही छुड़ायेगा।

साल भर के बख़्शे जाते हैं गुनाह इस माह में,
शुक्र करना चाहिए मोमिनों अल्लाह की दरगाह में।

जिस क़दर भी हो सके नेकी करो ऐ मोमिनों,
क्या भरोसा है कि फिर हासिल दोबारा हो न हो।

वक़्ते आख़िर या ख़ुदा बेदम का यह नक़्शा रहे,
मेरे सर पर मेरी इमदाद का मेरा रोज़ा रहे।

## रोज़ा खुलवाने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

रमज़ान के महीने में जो मर्द या औरत किसी रोज़ेदार का रोज़ा खुलवा दे तो यह उसके गुनाहों की माफ़ी का और दोज़ख़ से बचने का सबब बन जायेगा

और उसको भी रोज़ेदार के बराबर सवाब मिलेगा और रोज़ेदार के सवाब में कुछ कमी न होगी।

सहाबा ने अर्ज़ की कि या रसूलअल्लाह—

हममें से हर शख्स को इतनी ताक़त नहीं कि रोज़ेदार को पेट भर कर खाना खिला दें।

आपने फ़रमाया— अगर किसी में इतनी गुंजाइश न हो तो अल्लाहतआला यह सवाब उसको भी देता है जो किसी का रोज़ा एक छुवारे से या प्यास भर पानी से या दूध की लस्सी से खुलवा दे। और जिसको जितनी गुंजाइश ज़्यादा हो ज़्यादा ख़र्च करके रोज़ा खुलवायेगा उसी क़दर सवाब ज़्यादा पायेगा। बाज़ लोग रोज़ा खोलने के वक़्त नमाज़ के लिए बड़ी जल्दी मचाया करते हैं और झट तकबीर शुरू कर देते हैं। यह बात सुन्नत के ख़िलाफ़ है। हज़ूर-ए-पुरनूर रोज़ा खोलने के बाद बड़े इत्मीनान से नमाज़ पढ़ते। अगर दस मिनट की देर नमाज़ में हो जावे तो कोई हर्ज नहीं बल्कि सुन्नत है।

बरकतों से है भरा हर रोज़ो शब सुबहो शाम,
इसलिए है मोमिनों ! माहे मुबारक इसका नाम।

इस महीने में नज़ूल-ए-रहमते हक़ बेशुमार,
इस महीने में कलामुल्लाह उतरा लाकलाम।

इस महीने में हुए दोज़ख़ के सब दरवाज़े बंद,
इस महीने में खुले जन्नत के दरवाज़े तमाम।

इस महीने में निजात आफ़त से हर मोमिन को हो,
इस महीने में शयातीन क़ैद होते हैं तमाम।

इस महीने में दुआएँ नेक होती हैं क़बूल,
इस महीने में तुम्हें तो यह मुनासिब है मदाम।

इस महीने में अदा एक फ़र्ज़ जो कोई करें,
पाये सत्तर का सवाब ऐसा है हक़ का फ़ज़्ल आम।

इस महीने में सुन्नतों का और नफ़िलों का सवाब,
मिस्ल फ़र्ज़ों के लिखा जाता है हर आबिद के नाम।

एक नेकी के एवज़ पाओगे सत्तर नेकियाँ,
हस्ब ताक़त इस महीने में करो तुम नेकियाँ।

नारे दोज़ख़ से बचाने को सिपर बन जायेगा,
और रोज़े हश्र में शाफेह हो यह आली मुक़ाम।

हस्बे फ़रमाने इलाही हस्बे इरशादे रसूल,
हर तरह लाज़िम है करना तुमको इसका ऐहतराम।

खाना-पीना छोड़ने से तो रोज़ा कामिल न हो,
चाहिए हर अज़ू के रोज़ा का करना इन्तज़ाम।

देखना सुनना है जिसका मना, करदे तर्क सब,
आँख का और कान का रोज़ा भी तो है लाकलाम।

ज़ुबान का रोज़ा है यह न कहे कोई झूठ बात,
ग़ीबत व फ़िसाद से बचना और न करना इत्तहाम।

हाथ से ईज़ा न दे लिखे बेजा न कोई हर्फ़,
वा न रखे पाँव जहाँ देखे गुनाहों का मुक़ाम।

साथ मिस्कीनों यतीमों के करो अफ़तार तुम,
रोज़ा खुलवाया करो लोगों के रोज़े वक़्त शाम।

जो कोई खुलवाये रोज़ा पाये रोज़े का सवाब,
हो अगरचे लायक़े अफ़तार थोड़ा सा तआम।

रोज़ेदारों को वह नैमत मिलेगी अज़ीज़,
कोई भी वाक़िफ़ न हो जिससे बजुज़ रब्बुल अनाम।

यानी दीदार-ए-खुदा होगा क़यामत का ज़रूर,
मिस्ल इसके कब है कोई नैमते दारुस्सलाम।

जितनी तुझसे हो सके मुस्लिम इबादत इसमें कर,
जाने आये या न आये फिर तुझे माहेस्याम।

## तरावीह पढ़ने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

माहे रमज़ान के रोज़ों को अल्लाहतआला ने तुम पर फ़र्ज़ किया, और मैंने तरावीह और कुर्आन पढ़ने को रमज़ान की रातों में सुन्नत-ए-मौकदा कर दिया जिसका पढ़ना हर मुसलमान मर्द और औरत पर ज़रूरी है। बस कोई अल्लाह का हुक्म समझकर रमज़ान के रोज़े रक्खे और मेरी सुन्नत समझकर रातों को जागे यानी तरावीह पढ़े और उसमें कुर्आन पढ़े या सुने तो अपने गुनाहों से ऐसा पाक हो जायेगा जैसा कि अपनी माँ के पेट से बेगुनाह पैदा हुआ था। (नसाई)

**फ़ायदा—** बाज़ औरतें तरावीह नहीं पढ़तीं, गुनाहगार होती हैं। मगर उनको सब नमाज़ें और तरावीह अपने घरों में ही पढ़नी चाहिए। हज़ूर (स०) ने रमज़ान को आने से एक रोज़ पहले यह नसीहत फ़रमायी कि—

ऐ मुसलमानो! तुम पर एक ऐसे बज़ुर्ग महीने से साया डाला है कि जो बड़ी बरकत वाला है। इसमें एक रात ऐसी है कि जो एक हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है यानी उस रात में इबादत करना हज़ार महीनों की इबादत से बढ़कर है और उसके रोज़े अल्लाहतआला ने तुम पर फ़र्ज़ कर दिये हैं और तरावीह का पढ़ना मैंने तुम पर सुन्नत कर दिया है।

बस जो मर्द या औरत तरावीह पढ़ेगा उसको हर सज़दे के बदले डेढ़ हज़ार नेकियाँ मिलेंगी और उसके लिए जन्नत में एक महल याक़ूत का बनाया जायेगा, जिसके साठ हज़ार दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े के साथ में एक मकान सोने का होगा जो सुर्ख़ याक़ूत से सजाया हुआ होगा।

**मसला—** तरावीह की बीस रकअतें हैं, इसमें बहस करने की ज़रूरत नहीं। तमाम रूए ज़मीन के उल्मा और औलिया (रह०) ने बीस ही रकअतें पढ़ी हैं। बस हमारे लिए किसी और दलील की ज़रूरत नहीं, यही दलील काफ़ी है। इसी पर हमको अमल करना चाहिए।

इन दिनों को क्या शरफ़ बख़्शा खुदा-ए-पाक ने,
मर्तबा उनका है बढ़ाया शहे लौलाक ने।

चलता फिरता, बैठता उठता है जिस जा रोज़ेदार,
हर जगह है बरस्ती उस पर रहमते परवरदिगार।

किसी मेमिन का खुलवायें कोई रोज़ा जनाब,
उसको मिलता है खुदा से एक रोज़े का सवाब।

एक नेकी के एवज़ मिलती हैं सत्तर नेकियाँ,
है यह इरशाद जनाबे शहनशाहे दो जहाँ।

कैसी-कैसी नैमतें इस माह में हासिल हुईं,
रहमते अल्लाह की बेइन्तहा नाज़िल हुईं।

इस महीने को खुदा ने भर दिया है नूर से,
किस क़दर मामूर हक़ ने कर दिया है नूर से।

इस महीने में करे गर कोई नफ़िल या सुन्नत अदा,
उसके बदले में सवाब उसको मिलता है फ़र्ज़ का।

**फ़ायदा—** बाज़ औरतें तरावीह नहीं पढ़तीं, गुनाहगार होती हैं। मगर उनको सब नमाज़ें और तरावीह अपने घरों में ही पढ़नी चाहिए। हज़ूर (स०) ने रमज़ान को आने से एक रोज़ पहले यह नसीहत फ़रमायी कि—

ऐ मुसलमानो! तुम पर एक ऐसे बज़ुर्ग महीने से साया डाला है कि जो बड़ी बरकत वाला है। इसमें एक रात ऐसी है कि जो एक हज़ार महीनों से अफ़ज़ल है यानी उस रात में इबादत करना हज़ार महीनों की इबादत से बढ़कर है और उसके रोज़े अल्लाहतआला ने तुम पर फ़र्ज़ कर दिये हैं और तरावीह का पढ़ना मैंने तुम पर सुन्नत कर दिया है।

बस जो मर्द या औरत तरावीह पढ़ेगा उसको हर सज़्दे के बदले डेढ़ हज़ार नेकियाँ मिलेंगी और उसके लिए जन्नत में एक महल याकूत का बनाया जायेगा, जिसके साठ हज़ार दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़े के साथ में एक मकान सोने का होगा जो सुर्ख़ याकूत से सजाया हुआ होगा।

**मसला—** तरावीह की बीस रकअतें हैं, इसमें बहस करने की ज़रूरत नहीं। तमाम रूए ज़मीन के उल्मा और औलिया (रह०) ने बीस ही रकअतें पढ़ी हैं। बस हमारे लिए किसी और दलील की ज़रूरत नहीं, यही दलील काफ़ी है। इसी पर हमको अमल करना चाहिए।

इन दिनों को क्या शरफ़ बख़्शा खुदा-ए-पाक ने,
मर्तबा उनका है बढ़ाया शहे लौलाक ने।

चलता फिरता, बैठता उठता है जिस जा रोज़ेदार,
हर जगह है बरस्ती उस पर रहमते परवरदिगार।

किसी मेमिन का खुलवाये कोई रोज़ा जनाब,
उसको मिलता है खुदा से एक रोज़े का सवाब।

एक नेकी के एवज़ मिलती हैं सत्तर नेकियाँ,
है यह इरशाद जनाबे शहनशाहे दो जहाँ।

कैसी-कैसी नैमतें इस माह में हासिल हुईं,
रहमते अल्लाह की बेइन्तहा नाज़िल हुईं।

इस महीने को खुदा ने भर दिया है नूर से,
किस क़दर मामूर हक़ ने कर दिया है नूर से।

इस महीने में करे गर कोई नफ़िल या सुन्नत अदा,
उसके बदले में सवाब उसको मिलता है फ़र्ज़ का।

इस महीने में अदा अगर फ़र्ज़ एक कोई करे,
उसके बदले में सवाबो अज्र सत्तर का मिले।

आख़िरत की ऐसी अच्छी चीज़ को खोता है तू,
गाफ़िल आँखें खोल अंधा किसलिए होता है तू।

बो रहा है हाथ से काँटे तू अपनी राहत में,
उस जहाँ को छोड़ता है इस जहाँ की चाह में।

**नोट—** (नमाज़ रोज़े के मसले बहिश्ती ज़ेवर में देखो।)

# ज़कात देने का बयान

जानना चाहिए कि अल्लाहतआला ने मालदारों पर ज़कात फ़र्ज़ कर दी है। उसका इन्कार करने वाला काफ़िर और न देने वाला फ़ासिक़ और सख़्त गुनहगार है और बहुत बड़ी सज़ा पायेंगे।

**हुज़ूर-ए-पुरनूर (स०) का इरशाद है कि—**

सोने-चाँदी का रखने वाला मर्द या औरत जो उसकी ज़कात न देगा क़यामत के दिन उसका यह हाल होगा कि उसको सज़ा देने के लिए, उस सोने चाँदी की तख़्तियाँ बनायी जायेंगी। फिर उनको दोज़ख़ की आग में पकाकर उस मालदार की पसलियों पर, पेशानी और पुश्त पर उनको लगाया जायेगा। जब वह तख़्तियाँ ठण्डी होने को होंगी, उनको फिर आग में पका कर लगाया जायेगा। (बुख़ारी)

**और इरशाद फ़रमाते हैं रसूल अल्लाह (स०) कि—**

जिसको अल्लाहतआला ने माल दिया हो फिर वह उसकी ज़कात अदा न करे तो क़यामत के दिन वह माल गंजे साँप की सूरत में बना दिया जायेगा। उसकी आँखों के बीच में दो नुक़्ते होंगे। ऐसा साँप बहुत ज़हरीला होता है। वह साँप उसके गले में तौक़ यानी हँसली की तरह लिपट जायेगा और उस मालदार के कल्ले पकड़कर कहेगा कि मैं तेरा माल हूँ, ख़ज़ाना हूँ जिसको तूने दुनिया में जमा किया था और उसकी ज़कात न दिया करता था। (बुख़ारी)

ऐ ग़नी है फ़र्ज़ तेरे माल की तुझ पर ज़कात,
क्यों नहीं करता अदा अल्लाह से डर कर ज़कात।

सोना और चाँदी तो दुनिया के काले साँप हैं,
इनके छूने के लिए ऐ यार है मन्तर ज़कात।

देखकर शाने सख़ी एहले मेहशर बोलेंगे यूँ,
क्या ही यह रखती है अपनी ज़ात में जोहर ज़कात।

गोर में एहले करम की दिल्लगी के वास्ते,
आयेगी बनकर बशक्ले हूर ख़ुश मन्ज़र ज़कात।

नाम कर देती है मशहूर अपने साहिब का यहाँ,
बाद मरने के दिखायेगी बड़े जौहर ज़कात।

## ज़कात ग़रीब मुसलमानों का हक़ है

मोहसिन-ए-आज़म हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

मालदारों पर अल्लाहतआला ने ज़कात में इतना हक़ फ़र्ज़ कर दिया है कि उनके ग़रीब भाई मुसलमानों के वास्ते काफ़ी हो जायें और ग़रीबों को जब भूखे और नंगे होने की तकलीफ़ होती है तो मालदारों ही की वजह से होती है कि वह ज़कात नहीं देते। याद रक्खो ! अल्लाहतआला मालदारों से इसके बारे में हिसाब लेने वाला है और उनको सख़्त सज़ा देने वाला है और ग़रीब लोग क़यामत के दिन अल्लाहतआला से मालदारों की शिकायत करेंगे। उन पर दुनिया में जो हमारे हक़ूक़ आपने फ़र्ज़ किये थे वह हमको उन्होंने नहीं दिये।

अल्लाहतआला फ़रमायेगा कि—

मुझको अपनी इज़्ज़त की क़सम है कि मैं तुमको जन्नत में आराम दूँगा और उनको दोज़ख़ में डालूँगा। (तिबरानी)

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो और बहिनो ! अल्लाहतआला से डरो और उसके हुक्म के मुवाफ़िक़ ज़कात दिया करो कि ग़रीब मुसलमान भाइयों का हक़ है। जो मुसलमान ग़रीब है और अपनी ग़रीबी को छुपाते हैं, सवाल नहीं करते, माँगते नहीं फिरते। ख़ूब तलाश करके ऐसे ग़रीबों की मदद करनी चाहिए।

दौलते दुनिया कि जिससे तुझको ज़्यादा प्यार है,
दे ख़ुदा की राह में गर आक़बत दरकार है।

राहे हक़ में दे न फिर दुनिया में देने आयेगा,
आ गई जब वह घड़ी सर पर तो बहुत पछतायेगा।

हाथ के देने से टलती हैं बलायें सैकड़ों,
तुम जो पूछो तो हदीसें हम दिखायें सैकड़ों।

देख शैतान के फन्दे में न तू आजाइयो,
मर्द दाना है तो इस दुश्मन से बच जाइयो।

नोट— (ज़कात के सब मसले बहिश्ती ज़ेवर में देखो।)

# हज करने का बयान

मालूम होना चाहिए कि अल्लाहतआला ने अपनी मेहरबानी से हज भी मालदारों पर फ़र्ज़ कर दिया है। इसके इन्कार करने वाला काफ़िर और इसको अदा न करने वाला फ़ासिक़ और सख़्त सज़ा का मुस्तहक़ है। तमाम उम्र में एक दफ़ा उस आदमी पर हज फ़र्ज़ हो जाता है जिसको हक़ तआला ने इतना माल दिया हो कि अपने वतन से मक्का शरीफ़ में चला जाये और फिर वहाँ से वतन में आ जाये और अपने बाल बच्चों का ख़र्च अपने आने तक का दे जाये।

अल्लाहतआला ने इरशाद फ़रमाया है कि—

ऐ लोगो! तुम पर अल्लाह के घर का हज करना फ़र्ज़ है। जिस आदमी को वहाँ जाने की कुदरत हो और हादी-ए-आज़म (स०) फ़रमाते हैं कि जिस आदमी को कोई ज़ाहिरी मजबूरी हज को रोकने की न हो जैसे बीमारी या रास्ते का ख़तरा या कोई हकूमत न जाने दे और फिर वह बेहज किये मर जाये तो उसको अख़्तियार है कि चाहे यहूदी होकर मरे या ईसाई, इसलिए ज़रूरी है कि जिस पर हज फ़र्ज़ हो उसको हज के अदा करने में बहुत जल्दी करना चाहिए। क्या ख़बर है कि ज़िन्दगी कितनी है। कहीं ऐसा न हो कि यह अल्लाह का हुक्म सर पर रह जाये। अगर हज के सफ़र में जान का या माल का नुक़सान हो जाये तो परेशान न होना चाहिए, बल्कि इसको हज के क़बूल होने की निशानी समझे और अल्लाहतआला से सवाब की उम्मीद रखे।

हुज़ूर (स०) फ़रमाते हैं कि—

जो मर्द या औरत हज की नियत से अपने घर से निकला और वह रास्ते ही में मर जाये तो क़यामत तक हर साल उसको हज और उमरा करने का सवाब मिलता रहेगा और जो मर्द या औरत हज करने को मक्का शरीफ़ में या मदीने शरीफ़ में मरेगा वह बेहिसाब दिये जन्नत में जायेगा।

है दौलतमंदों पर फ़र्ज़े इलाही हज्जे बैतउल्लाह,
तो लाज़िम है उन्हें समझे ज़रूरी हज्जे बैतउल्लाह।
नहीं है ऐतबारे ज़िन्दगी ग़फ़लत नहीं अच्छी,
बजा है हुक्म हक़ कर आयें जल्दी हज्जे बैतउल्लाह।
अगर आ जाये मौत इत्तफ़ाक़न इस सफ़र मुबारक में,
तो दिलवाता है यह अज्रे दवामी हज्जे बैतउल्लाह।

कैसे है मगर हज के बाद छुपा रहना मुश्किल है। असल हालत ज़रूर खुल जाती है। बस जिसकी हालत हज के बाद पहले से अच्छी हो जाये तो समझना चाहिए कि उसका हज क़बूल हो गया और जिसकी हालत पहले से बुरी हो जाये तो उसका हज ख़तरे में है तो मुमकिन है कि बाज़ लोग यह ख़्याल करें कि फिर हज न करना चाहिए ताकि क़लई न खुले। इसका जवाब यह है कि हज न करने में इससे ज़्यादा ख़तरा है। क्योंकि हदीस शरीफ़ में आया है कि—

जिस शख़्स पर हज फ़र्ज़ हुआ और वह फिर भी हज न करे तो ख़ुदा को इसकी परवाह नहीं है। चाहे वह यहूदी होकर मरे या नसरानी होकर मरे। बस अगर हज न किया तो बुरे ख़ात्मे का डर है और हज करने में तो यही डर है कि क़लई खुल जायेगी। वह भी उस वक़्त की उसके आदाबों में कमी की जावे। वरना अकसर यही होता है कि शौक़ और मुहब्बत के साथ जो हज अदा किया जाता है उसकी बरकत से दीनदारी बढ़ जाती है। बस हज करने वाले को चाहिए कि पहले किसी अल्लाह वाले से इसके आदाब मालूम करे। ग़रज़ कि हज मक़बूल की निशानियाँ है कि हज करने के बाद दुनिया से नफ़रत और बेरग़बती दिल में पैदा हो। अच्छे कामों के करने का शौक पैदा हो और बुरे कामों से नफ़रत पैदा हो और हज करने का फिर दोबारा भी शौक बाक़ी रहे।

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया है कि जिस मर्द या औरत ने ख़ास अल्लाह की रज़ामन्दी के लिए और उसका हुक्म समझकर हज किया और बुरी ग़रज़ों से बचा रहा तो वह गुनाहों से ऐसा पाक होकर वापस आता है जैसे अपनी माँ के पेट से बेगुनाह पैदा हुआ था। (बुख़ारी शरीफ़)

## हज-ए-मक़बूल का एक अजीब क़िस्सा

हज़रत अब्दुल्ला इब्ने मुबारक बग़दाद में एक बुज़ुर्ग थे। वह हज के लिए रवाना हुए। रास्ते में देखा कि एक औरत बुर्क़ा ओढ़े हुए कूड़े पर से मरे हुए कुत्ते के गोश्त का टुकड़ा ले चली। आपने उससे पूछा कि इस गोश्त को क्या करोगी। कहा कि हम तीन दिन की भूख से मजबूर हो गये और बच्चे बेचैन हैं और मेरा आदमी बीमार है। तंगदस्ती बहुत है। भूख दूर करने के लिए यह गोश्त ले जाती हूँ। यह हाल सुनकर उन बुज़ुर्ग को अफ़सोस हुआ और बीबी से फ़रमाया कि इस गोश्त को डाल दो और मुझे अपने घर ले चलो। मैं इन्शाअल्लाहतआला तुम्हारी मदद करूँगा। वह उनको अपने घर ले गयी। जाकर देखा तो वाक़ई बच्चे भूख की वजह से बेहोश पड़े हैं और उनका बाप बीमार है। उन बुज़ुर्ग ने जो रुपया उनके पास था, उसको दे दिया और फ़रमाया अपना

पेट भरे। कपड़े बनाकर अपना बदन ढको और कोई कारोबार कर लेना। यह नसीहत करके आप बे हज किये हुए वापस अपने घर आ गये।

लिखा है कि उस आदमी को खुदा ने शिफ़ा बख़्शी। उसने फिर कारोबार किया। अल्लाहतआला ने उन बुज़ुर्ग की बरकत से उसको खुशहाल कर दिया।

सुबहान अल्लाह ! ग़रीबों पर रहम करना और उनकी मदद करना अल्लाहतआला को बहुत पसन्द है। इस अमल और कारे ख़ैर की बरकत यह ज़ाहिर हुई कि जिस रोज़ हज हुआ तो अरफ़ात के मैदान में खुदा की तरफ़ से हाजियों को ग़ैब से यह आवाज़ आयी कि—

ऐ हाजियों ! अब्दुल्ला इब्ने मुबारक का हज हमने क़बूल किया और उनकी बरकत से तुम सबका हज भी क़बूल किया।

**फ़ायदा—** मुसलमानो ! याद रखो, हज भी तो अल्लाहतआला को खुश करने के लिए करते हैं। बस हर मौक़े पर इसका ख़याल होना चाहिए कि माल ख़र्च करने की कहाँ ज़रूरत है। आजकल बाज़ लोग हज पर हज तो करेंगे मगर किसी ग़रीब मुसलमान भाई की ख़बर नहीं लेंगे। चाहे कोई कैसा ही ग़रीब और तंगदस्त हो। मर्ज़ में, क़र्ज में, दबा हुआ हो। मकान रहने को न हो। रहमत-ए-दोजहाँ दस्तगीर-ए- बेकसाँ हज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

जो मुसलमान किसी ग़रीब मुसलमान को कपड़े पहनाये तो अल्लाहतआला उसको जन्नत के सब्ज़ रेशमी कपड़े पहनायेगा और जो मुसलमान किसी भूखे मुसलमान को खाना खिलायेगा तो अल्लाहतआला उसको जन्नत के मेवे खिलायेगा और जो मुसलमान किसी प्यासे मुसलमान को पानी पिलायेगा, अल्लाहतआला उसको जन्नत की शराब-ए-पाक पिलायेगा। (तिरमिज़ी)

**फ़ायदा—** ग़रीब दीनदार और सफ़दपोश लोगों का ज़्यादा ख़्याल रखा जाये ताकि जो वाक़ई गरीब हों और अपनी ग़रीबी को छुपाते हों, किसी से माँगते न हों, ख़ूब देखभाल कर ऐसे लोगों की मदद करना निहायत मुबारक अमल है।

याद रखो, अगर मालदार लोग ग़रीबों का हक़ अदा न करेंगे तो हकूमत के टैक्स वग़ैरा या किसी और सूरत से माल निकल जायेगा और ख़ुदा-ए-तआला की पूछगछ सर पर रहेगी।

## मदीना शरीफ़ में जाने का सवाब

अगर ख़र्च की कुदरत हो तो हज से पहले या बाद मदीना शरीफ़ में ज़रूर जाये और हुज़ूर-ए-अक़दस (स०) के रोज़ा-ए-अनवार की और आपकी मस्जिद

की ज़ियारत से बरकत हासिल करे। जिसके बारे मे आपने फ़रमाया है कि जिसने अल्लाह के घर का हज किया और मेरी क़ब्र पर न आया तो उसने मुझ पर ज़ुल्म किया और जो मेरी क़ब्र पर आया उसकी शिफ़ाअत मुझ पर वाजिब हो गयी। (मिश्कात)

और जिसने मेरी मस्जिद मे नमाज़ पढ़ी तो उसको एक रकअत के बदले पचास हज़ार रकअतों का सवाब मिलेगा। और मुझको सारी ज़मीन पर कोई जगह ऐसी पसन्द नही कि जिसको मैं अपनी क़ब्र के लिए मदीने से ज़्यादा पसन्द करूँ। जब आप सफ़र से तशरीफ़ लाते तो मदीने की दीवारों को देखकर मुहब्बत के जोश में अपनी सवारी को तेज़ कर दिया करते थे।

सुबहान अल्लाह! मदीना शरीफ़ भी क्या मुबारक जगह है।

इलाही दिखा दे बहारे मदीना,
कि दिल है बहुत बेक़रारे मदीना।

यह दिल हो और अनवार की बारिशें हों,
यह आँखे हों और जल्वाज़ारे मदीना।

वहाँ की तकलीफ़ राहत से बेहतर,
मुझे गुल से बढ़कर है ख़ारे मदीना।

कहाँ ऐसे दिन हैं कहाँ ऐसी रातें,
निराले है लैलो नहारे मदीना।

कहाँ जो लगे मेरा बागे जहाँ मे,
हैं आँखो मे मेरी बहारे मदीना।

पहुँच कर न फिर लौटना हो वहाँ से,
मैं हो जाऊँ बस जां निसारे मदीना।

बड़े ऐश से सोऊँ मैं ता क़यामत,
जो हो मेरा मरक़द दयारे मदीना।

दिल बने यारब मेरा मदीना,
और मदीने में ताजदारे मदीना।

## ज़मज़म के पानी की बरकत

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

बेशक ज़मज़म का पानी बरकत वाला है और खाना हैं आसूदगी।

**फ़ायदा—** यानी जैसे खाना खाने से भूख नहीं रहती वैसे ही ज़मज़म का पानी पीने से भूख नही रहती। जबकि कोई इस नियत से पीवे। शुरू इस्लाम में जब हज़रत अबुज़र बुख़ारी (रज़ी०) ने हुज़ूर (स०) की नबूवत की ख़बर सुनी तो मक्का में आये। उस वक़्त काफ़िरों का ज़ोर था। इसलिए वह हुज़ूर का किसी से हाल न पूछ सके। आख़िर एक रोज़ मुलाक़ात का मौका मिल गया।

हुज़ूर (स०) ने दरयाफ़्त फ़रमाया कि—

तुम कब से आये हुए हो? उहोंने अर्ज़ की कि एक महीना हो गया।

हुज़ूर ने फ़रमाया खाते कहाँ से हो? अर्ज़ कि सिवाय ज़मज़म के पानी के और कुछ खाने को नही मिलता।

तब हुज़ूर ने आब-ए-ज़मज़म की यह बरकत बयान फ़रमायी—

अगर कोई मरीज़ सेहत की नीयत से ज़मज़म का पानी पिया करे या दूसरे पानी में चन्द क़तरे मिलाकर बहुत-सा पानी बना ले और पिया करे तो इन्शाअल्लाह सेहत होगी मगर जब पिये तो मुंह काबे शरीफ़ की तरफ़ करे और खड़े होकर पिये तो बहुत बेहतर है।

ज़मज़म के मानी हैं "रुकजा"। यह अल्फ़ाज़ हज़रत हाजरा (अ० स०) के हैं।

## दुआ माँगना फ़र्ज़ है

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि तुम हमसे दुआ माँगते रहो। हम तुम्हारी दुआओं को क़बूल करेंगे। देखो अल्लाहतआला के सिवा ऐसा कौन है कि जब तुममें से कोई आदमी तकलीफ़ में बेचैन होकर दुआ माँगे तो उसकी तकलीफ़ दूर कर दे। यानी अल्लाहतआला के सिवाय कोई ऐसा नहीं कि तुम्हारी मुसीबत को दूर करे। बेशक, ऐ अल्लाह! आपका फ़रमाना बिल्कुल सच है।

तू वह दाता है कि देने के लिए,
दर तेरी रहमत के हर दम हैं खुले।
माँगना हम पर किया है तूने फ़र्ज़,
और सिखा हमको दिये आदाबे अर्ज़।

तेरे दर पर हाथ फैलाता है जो,
पा ही लेता है वह हर मक़सूद को।
माँगने को भी हमें फ़रमा दिया,
माँगने का ढंग भी बतला दिया।

बल्कि मज़मून भी हर एक दरख़ुवास्त का,
हमको या रब तूने ख़ुद सिखला दिया।

हर घड़ी देने को तू तैयार है,
जो न माँगे उससे तू बेज़ार है।

तुझसे बढ़कर देने वाला कौन है,
माँगने वालों का दाता कौन है।

मुसलमानो! दुआ माँगना नबियों और वलियों का तरीक़ा है।

हमारे नबी हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया है कि—

दुआ माँगना इबादत का सर और मग्ज़ है और मुसलमानों का हथियार और दीन का सतून है और आसमान व ज़मीन का नूर है। तुम लोग दुआ माँगने में कमी न किया करो। क्योंकि दुआ माँगते हुए कोई बर्बाद नहीं होता और दुआ माँगने वाले को तीन चीज़ों में से एक चीज़ ज़रूर मिल जाती है। एक यह कि उसके गुनाह माफ़ होते हैं। दूसरे जो चीज़ माँगी है वह उसी वक़्त मिल जाये या फिर किसी वक़्त मिल जायेगी। तीसरे क़यामत के रोज़ उसका बदला मिलेगा।

लिखा है कि क़यामत के रोज़ अल्लाहतआला बाज़ बन्दों को बेहद नैमतें अता फ़रमायेगा। वह बन्दे कहेंगे, ऐ परवरदिगार! यह बेशुमार नैमतें हमको किस अमल के बदले में दी हैं।

इरशाद होगा कि यह नैमतें तुम्हारी उन दुआओं का बदला हैं कि जिनको हमने तुम्हारे ही फ़ायदे के लिए दुनिया में क़बूल नहीं किया था। यह हाल देखकर वह लोग कि जिनकी दुआएँ दुनिया में क़बूल हुई थीं, और अपनी मुरादें पा चुके थे, बहुत अफ़सोस के साथ कहेंगे कि हाय! हमारी बदबख़्ती, क्या अच्छा होता कि दुनिया में हमारी कोई भी दुआ क़बूल न होती और आज हम भी इन नैमतों से महरूम न रहते।

# दुआ क़बूल होने के औक़ात

अल्लाहतआला ने हम आजिज़ बन्दों पर बड़ी मेहरबानी फ़रमायी है कि—

हर वक़्त और हर हालत में और हर जगह हमको दुआ माँगने की और बारगाहे आलिया में दरख़्वास्त पेश करने की इजाज़त दी है। लेकिन इन वक़्तों में ख़ास दर्जे की बरकत और क़बूलियत ज़्यादा है।

1. अज़ान में हइ-य अलस्सलाह- हइ-य अलल् फ़लाह के बाद, 2. अज़ान और तकबीर के दर्मियान, 3. मुसीबत के वक़्त, 4. फ़र्ज़ नमाज़ों के बाद, 5. नमाज़ों

के बग़ैर सज्दे में, 6. तहज्जुद की नमाज़ के बाद, 7. क़ुर्आन-ए-पाक पढ़ने के बाद जब कि क़ुर्आन-ए-पाक ख़त्म किया जावे, 8. अरफ़ात के मैदान में, 9. काबा शरीफ़ की ज़ियारत के वक़्त, 10. तवाफ़ करने के वक़्त, 11. हज्र-ए-अस्वद की ज़ियारत के वक़्त।

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

बन्दा अपने रब के नज़दीक ज़्यादातर सजदे की हालत में होता है। तो लोगों तुम, सजदे में ज़्यादा दुआ माँगा करो।

**फ़ायदा**— सजदे करने में हक़ तआला की इबादत और ताज़ीम कमाल दर्जा रखती है और बन्दे की आजिज़ी और मोहताजी ज़ाहिर होती है कि अपने आज़ा-ए-रईसा को खाक़ पर अपने मालिक के सामने रख दिया और अपनी कमज़ोरी और मोहताजी को ज़ाहिर कर दिया। इसलिए बन्दे को सजदे में नज़दीकी ज़्यादा होती है और उस वक़्त बन्दे पर हक़ तआला की ख़ास रहमतें बरसती हैं। इसलिए हुक्म है कि हक़ तआला के सिवा किसी मख़्लूक़ को सजदा करना शिर्क है, हराम है। बन्दे का सर अपने मालिक वहदहू लाशरीक के सिवा किसी के सामने न झुकना चाहिए।

## दुआ माँगने के आदाब

हलाल माल से खाना-पीना और पहिनना। दिल लगाकर माँगना, पाक-साफ़ होकर माँगना, काबा शरीफ़ की तरफ़ मुँह करके माँगना। नमाज़ की तरह बैठकर, दुआ से पहले और बाद अल्लाहतआला की हम्द-ओ-सना करना और दरूद शरीफ़ पढ़ना, दोनों हाथों को छाती तक या कंधों तक उठाना और दुआ के बाद मुँह पर फेर लेना। दुआ माँगते हुए आसमान की तरफ़ न देखना। आहिस्ता आवाज़ से माँगना, दूसरों को न सुनाना। नबियों का या वलियों का या क़ुर्आन पाक का वास्ता देना। कई बार लौटा-लौटाकर माँगना, क़बूल होने का यक़ीन करना।

हुज़ूर स० ने फ़रमाया कि—

मैं तुमको ऐसी बात बतलाये देता हूँ कि जो तुम्हारा रिज़्क़ बढ़ाये और दुश्मनों की शरारत से बचाये, वह यह है कि दिन-रात में जब मौक़ा मिले तुम अल्लाहतआला से दुआ माँगा करो। ख़ूब याद रखो, जिस आदमी के लिए दुआ करने का दरवाज़ा खुल गया तो उस पर अल्लाहतआला की रहमतों के दरवाज़े खुल गये।

# मुसलमान भाई के लिए दुआ करने का सवाब

**मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूलअल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—**

कोई ऐसा मुसलमान बन्दा नही जो अपने मुसलमान भाई के लिए उसकी पीठ पीछे दुआ करे। मगर फ़रिश्ता कहता है कि तुझको भी इस दुआ करने का सवाब मिलेगा।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि मुसलमान भाई के पीछे उसके लिए दुआ करना अल्लाहतआला के नज़दीक ऐसा अच्छा अमल है कि फ़रिश्ता भी दुआ करने वाले के वास्ते दुआ करता है। और पीछे दुआ करने में यह असर है कि वह क़बूल हो जाती है। क्योंकि इसमें रिआयत नहीं और मुँह दिखावा नहीं होता। सिर्फ़ ख़ैरख़ुवाही से होती है।

# सूरज की ताबेदारी

**बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—**

ऐ अबूज़र! क्या तुम जानते हो कि यह सूरज कहाँ जाता है? अर्ज़ की कि अल्लाह और उसका रसूल ख़ूब जानते हैं। फिर आपने फ़रमाया कि अर्श के नीचे जाता है और सजदा करता है। फिर अल्लाहतआला से मशरिक़ की तरफ़ से निकलने की इजाज़त चाहता है कि दूसरा दौरा करे। फिर उसको इजाज़त मिलती है। और बहुत क़रीब है कि वह सजदा करेगा और क़बूल न होगा और सजदा करने की इजाज़त माँगेगा। मगर इजाज़त न मिलेगी। फिर उसको हुक्म होगा कि लौट जा उसी जगह जहाँ से तू आया है। फिर वह मग़रिब की तरफ़ से निकलेगा।

**जैसा कि अल्लाह ने फ़रमाया है—**

وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ تَقْدِيرُ
الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ

यानी सूरज चलता रहता है, अपने ठिकाने की तरफ़ यह अन्दाज़ा बाँधा हुआ है उसका जो ज़बर्दस्त हुक्म वाला है।

**फ़ायदा—** क़ुरआन व हदीस से मालूम हुआ कि सूरज का हाल घड़ी का तरह है कि चाबी दे दो तो चलेगी वर्ना बन्द हो जायेगी। इसी तरह सूरज अल्लाहतआला के हुक्म से निकलता है। खुद निकलने का उसको अख़्तियार नहीं। फिर जब अल्लाहतआला का अन्दाज़ा पूरा हो जायेगा तो दुनिया की कल बिगड़ जायेगी

और सूरज मग़रिब से निकलेगा और उल्टी चाल चलेगा। फिर यह दुनिया का कारख़ाना टूट-फूट जायेगा। इसी का नाम क़यामत है।

ऐ इन्सान! ग़ौर कर और समझ कि सूरज हर वक़्त, हर दम अपने मालिक वहदहूलाशरीक की ताबेदारी में लगा रहता है। कभी उसके हुक्म के ख़िलाफ़ नहीं करता और तू अशरफ़उल मख़लूक़ात होकर अपने मालिक से नहीं डरता, ज़रा ख़ुवाब-ए-ग़फ़लत से जाग।

जागना है जाग ले अफ़लाक के साये तले,
हश्र तक सोता रहेगा ख़ाक के साये तले।

जाके गोरिस्तान में देखो अजब सूरत का हाल,
कैसे कैसे माहेरू वाँ हो रहे हैं पायेमाल।

ख़ाक में यकबारगी यूँ मिल गये ज़ेरे ज़मीं,
नाम को भी कुछ निशां जिन का कहीं बाक़ी नहीं।

है तक़ब्बुर से यहाँ जिनका दिमाग़ अफ़लाक पर,
क़ब्र में सोना पड़ेगा उनको फ़र्श ख़ाक़ पर।

आज कुछ कर लो इबादत वर्ना कल रोज़े क़याम,
सामने हक़ के तुम्हें होगी ख़िजालत ला कलाम।

पुरसिशे आमाल ख़ालिक़ जिस घड़ी फ़रमायेगा,
मुल्क व दौलत जाह व हशमत कुछ न वाँ काम आयेगा।

दीन व दुनिया का भला चाहे अगर इल्मी तो अब,
कर ख़ुदा की और मौहम्मद की अताअत रोज़ेशब।

## पहली ग़लती का जवाब

बाज़ लोग कहा करते हैं कि—

अब तो गुनाह कर लें, फिर तौबा करके माफ़ करा लेंगे। कोई उनसे पूछे कि ज़रा अपनी उँगली आग में डाल दो, फिर हम मरहम लगाकर अच्छी कर देंगे। क्या यह लोग इस बात को मानेंगे? हरगिज़ नहीं। फिर अफ़सोस ही की बात नहीं कि गुनाह करने की कैसे हिम्मत पड़ती है? और उन लोगों को यह कैसे मालूम हो गया कि अभी हम और ज़िन्दा रहेंगे? मुमकिन है कि चलते-फिरते ही मौत आ जाये या रात को सोते के सोते रह जायें, यह बड़ी गलती है। तौबा करने में हरगिज़ देर न की जाये।

## दूसरी ग़लती का जवाब

बाज़ लोग कहा करते हैं कि—

अल्लाह बड़ा ग़फ़ूरउर्रहीम है। हमारे गुनाहों की उसके यहाँ क्या हक़ीक़त है। उनके लिए यह जवाब है कि—

बेशक अल्लाह ग़फ़ूरउर्रहीम है। मगर क़हहार और मुंतक़िम भी तो है। तुमको यह कैसे मालूम हो गया कि ज़रूर ही बख़्शे जाओगे। मुमकिन है कि तुमको नाफ़रमानी की सज़ा दे।

कुर्‌आन पाक से तो यह मालूम होता है कि—

ग़फ़ूरउर्रहीम उन लोगों के लिए है जो किये हुए गुनाहों से तौबा करें और आईन्दा अपने अमलों को दरुस्त करें और अगर बिला तौबा किये मर गये तो गुनाहों की सज़ा ज़रूर मिलेगी। बाक़ी अल्लाहतआला के फ़ज़्ल का कोई रोकने वाला नहीं, मगर उन लोगों के पास क्या सबूत है कि ज़रूर ही बख़्शे जायेंगे, यह शैतानी धोखा है। इससे बचना लाज़िम है।

## तीसरी ग़लती का जवाब

बाज़ लोग कहा करते हैं कि—

हम क्या करें, हमारी तक़दीर ही में यूँ लिखा है और यह कहना ऐसा आसान है कि हर शख़्स इससे धोखा खाता है। इसका जवाब यह है कि अगर आप लोगों को तक़दीर पर ऐसा ही भरोसा है तो दुनिया के कामों में तक़दीर पर ऐसा भरोसा क्यों नहीं करते ? अगर कोई शख़्स तुमको नुक़सान पहुँचाये तो समझ लिया करो कि उसकी तक़दीर ही में यह लिखा है कि हमको नुक़सान पहुँचाये। फिर उससे बदला देने की कोशिश क्यों करते हो? वहाँ तक़दीर से फिर जाते हो और दीन के हुक्मों पर सबसे बढ़कर तुम्हारा तक़दीर पर ईमान होता है। यह भी शैतानी धोखा है। अक़्ल से काम लो।

## चौथी ग़लती का जवाब

बाज़ लोग कहा करते हैं कि—

अगर हमारी क़िस्मत में जन्नत लिखी है तो जन्नत में जायेंगे और दोज़ख़ लिखी है तो दोज़ख़ में जायेंगे। तदबीर और मेहनत बेकार है।

ऐसे लोगों को मालूम होना चाहिए कि—

साहिबो! अगर बात यह सच है तो दुनिया के कामों में तदबीरें और मेहनतें क्यों करते हो? देखो पेट भरने के लिए कितनी तदबीरें करते हो। मेहनतें उठाते हो कि ज़मीन कमाते हो। फिर दाना डालते हो। फिर ग़ल्ला तैयार करते हो। फिर आटा पिसवाते हो। उसको छानते हो। फिर गूँधते हो। फिर रोटी पकाते हो। फिर लुक़मा बनाकर मुँह में डालते हो। फिर निगलते हो। बस कुछ भी न किया करो। अगर क़िस्मत में है तो आप ही आप बन-बनाकर पेट में उतर जायेगा। या मसलन नौकरी क्यों करते हो? तिजारत व ज़राअत और मज़दूरी वग़ैरा क्यों करते हो? औलाद हासिल करने के लिए निकाह क्यों करते हो?

बस जिस तरह दुनिया के कामों में क़िस्मत को मानते हो और असबाब को जमा करते हो, इसी तरह जन्नत को हासिल करने के लिए अल्लाह व रसूल के हुक्मों पर मेहनतें क्यों नहीं करते। याद रखो यह भी शैतानी धोखा है।

बहरे ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

रह गुज़र है यह दुनिया बस्ती नहीं,
जाये ऐशो इशरतो मस्ती नहीं।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## पाँचवी ग़लती का जवाब

बाज़ लोग कहा करते हैं कि—

खुदा को हमारी इबादत की क्या परवाह, वो तो बेपरवाह है। साहिबो! यह सच है कि खुदा को हमारी इबादत की परवाह नहीं है और न उसका इसमें कुछ नफ़ा है। मगर क्या आप इबादत से नफ़ा हासिल करना नहीं चाहते कि जो इबादत और तावेदारी पर मिलता है।

साहिबो! इबादत और अच्छे काम करने तो आपके नफ़े के लिए मुक़र्रर हुए हैं। अगर खुदा बेपरवाह है तो आप तो बेपरवाह नहीं हैं।

इसकी मिसाल यह है कि—

अगर कोई मेहरबान हकीम या डाक्टर बीमार पर रहम करके दवा बतला दे और बीमार अपनी जान का दुश्मन यह कहकर टाल दे कि दवा करने से हकीम को क्या नफ़ा होगा।

भले आदमी हकीम का क्या नफ़ा होता। तेरा ही नफ़ा है कि बीमारी न रहेगी और तू तंदरुस्त हो जायेगा। साहिबों, इस नसीहत से सबक़ हासिल करो और शैतान के धोखे से बचो।

## छठी ग़लती का जवाब

बाज़ जाहिल फ़क़ीर दीन के दुश्मन कहा करते हैं कि—

हम मेहनत और मुजाहिदा करके अल्लाह के क़रीब पहुँच गये हैं और उसकी ज़ात में फ़ना हो गये हैं। अब हम खुद कुछ नहीं करते। जो कुछ अच्छा और बुरा करता है वही करता है। और यह भी कहते हैं कि असली जड़ तो खुदा की याद है, जो दिल में होती है और ज़ाहिरी नमाज़ रोज़ा तो एक ढोंग है जो मौलवियों का निकाला हुआ है। इसका जवाब यह है कि रसूल अल्लाह (स०) से बढ़कर न कोई खुदा के क़रीब पहुँचा और न कोई आपकी तरह खुदा की ज़ात में फ़ना हुआ और न आपके अस्हाब से बढ़कर आज तक किसी ने खुदा की तलाश का रास्ता सीखा। बस आपकी और आपके अस्हाब की इबादत और अताअत और नमाज़ रोज़े की पाबन्दी देख लो।

मुसलमानो! यह सब शैतानी मुक्र हैं। ऐसे ख़बीस लोगों को शैतान के सिपाही समझो और उनसे बचो।

## कारोबार करने का सवाब

बुख़ारी शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

बेशक मुसलमान जब सवाब समझकर अपने बीवी-बच्चों के खाने और पीने पर कुछ माल ख़र्च करता है तो वह माल सवाब में ख़ैरात करने के बराबर होता है।

**फ़ायदा—** यानी अगर कोई अपने बीवी और बच्चों के खाने और पीने पर इस नीयत से माल ख़र्च करेगा कि अल्लाहतआला ने उनका हक़ अदा करना मुझ पर फ़र्ज़ किया है तो अल्लाहतआला उसको ख़ैरात करने का सवाब देता है। और अगर यह नीयत न की तो न कुछ सवाब और न अज़ाब, बस जो शख़्स हलाल कमाई से अपने बाल बच्चों को पाले तो वह अल्लाह की राह में जिहाद करने वाले के बराबर सवाब पायेगा।

रिज़्क़ हलाल हासिल करना फ़र्ज़ है। सच बोलने वाला दुकानदार, सौदागर क़यामत के दिन नबियों और वलियों और शहीदों के साथ होगा। तिजारत व

ज़राअत करना, सनत और मेहनत मज़दूरी और मुलाज़मत वग़ैरा का कारोबार करना अम्बिया (अ० स०) की सुन्नत है।

रसूल अल्लाह (स०) से एक शख़्स ने दरियाफ़्त किया कि—

या रसूल अल्लाह! मैं दर्ज़ी का काम करता हूं। यह काम अच्छा है या नहीं? आपने फ़रमाया बहुत अच्छ काम है, अगर तुम इसमें चोरी न करो। न कपड़ा रखो और न कपड़े के सीने में कुछ कमी करो तो तुमको हर सुई के चलाने मे एक ऐसे तीर चलाने का सवाब मिलेगा जो अल्लाह की राह में काफ़िरों को मारा जाता है और अगर पाँचो वक़्त की नमाज़ पढ़ते रहे और अल्लाह की याद से ग़फलत न की तो तुमको हर सुई चलाने के बदले में एक साल इबादत करने का सवाब मिलेगा और अगर तुमने चोरी की तो हर सुई चलाने के बदले एक साँप तुमको डसने के लिए तुम्हारी क़ब्र में पैदा कर दिया जायेगा।

एक और आदमी ने पूछा कि—

या रसूल अल्लाह! मैं कपड़ा बुनता हूं। यह काम कैसा है? फ़रमाया बहुत अच्छा है जबकि तुम इसमें चोरी न करो। अगर एक धागा भी तुमने चुरा लिया तो तुम्हारे लिए वह दोज़ख का एक साँप बन जायेगा। अगर चोरी न की तो हर धागे के बदले जन्नत में तुमको एक बड़ा दर्जा मिलेगा।

एक और आदमी ने दरियाफ़्त किया कि—

या रसूल अल्लाह! मैं कपड़े की तिजारत करता हूं, इसमें मुझको क्या हुक्म है?

इरशाद फ़रमाया कि तुमको चाहिए कि झूट न बोलो, धोखा न दो, कि ख़राब को अच्छा बतलाओ और नाप में कमी न करो ताकि दोज़ख़ के अज़ाब-से बचो। अगर तुम अपनी ख़रीद-फ़रोख्त मे सच बोलोगे तो तुमको हज़रत सालेह (अ० स०) की-सी इबादत का सवाब मिलेगा।

एक और शख़्स ने अर्ज़ की—

या रसूल अल्लाह! मै खेती का काम करता हूं। मेरे लिए क्या हुक्म है? आपने फ़रमाया— अगर तुम पाँच वक़्त की नमाज़ और माहे रमज़ान के रोज़ों से ग़फ़लत न करो तो तुमको हर बेलचे के मारने पर एक ग़ुलाम आज़ाद करने का सवाब मिला करेगा और पैदावार में तरक्क़ी और बरकत हुआ करेगी।

एक और शख़्स ने दरियाफ़्त किया कि—

या रसूल अल्लाह! मैं बहुत-सी चीज़ों की तिजारत करता हूं और अक्सर सफ़र ही मे रहता हूं। मेरे लिए क्या हुक्म है?

इरशाद फ़रमाया, बहुत अच्छा काम है अगर तुमने नमाज़ को क़ज़ा न होने दिया। और माल की ज़कात देते रहे तो लेन-देन और ख़रीद-फ़रोख़्त की वजह से जितने दिन तुम सफ़र में रहोगे तो हर दिन के बदले तुमको एक हज और एक उमरा करने का सवाब मिला करेगा। (अनीस उल वाएज़ीन)

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह! कारोबार करने का कितना बड़ा सवाब है। और तमाम शरीयते मौहम्मदी की ग़र्ज़ यह है कि इन्सान अल्लाहतआला की इबादत और अताअत से ग़ाफ़िल न हो। लेन-देन, ख़रीद-फरोख़्त, नौकरी-चाकरी, मेहनत-मज़दूरी, तिजारत व ज़राअत जो काम भी करे, अल्लाह व रसूल के हुक्मों के मुवाफ़िक़ करे। जायज़ और नाजायज़ के मसले आलिमों से पूछे। देखो रसूल अल्लाह (स०) के अस्हाबों ने भी तो हुज़ूर से मसले दरियाफ़्त कर करके अमल किया।

याद रखो! दुनिया की ज़िन्दगी बहुत जल्द ख़त्म हो जायेगी। अगर अल्लाह व रसूल की ताबेदारी करोगे तो मरने के बाद ऐसा आराम देखोगे कि दुनिया की सब तकलीफ़ें भूल जाओगे और अगर दुनिया के आराम व लालच में आकर मज़े उड़ाये और अल्लाह व रसूल की नाफ़रमानी की तो मरते ही वह मुसीबत और अज़ाब देखोगे कि दुनिया के सब आराम और मज़े कड़वे हो जायेंगे।

उम्र यह एक दिन गुज़रनी है ज़रूर,
क़ब्र में मैय्यत उतरनी है ज़रूर।

आख़िरत की फ़िक्र करनी है ज़रूर,
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर।

आने वाली किस से टाली जायेगी,
जान तेरी जाने वाली जायेगी।

रूह रग-रग से निकाली जायेगी,
तुझ पे एक दिन ख़ाक डाली जायेगी।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## मौत की यादगारी

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

जब मौत का वक़्त आयेगा तो वह किसी तरह टल नहीं सकता और हर जानदार को मौत का मज़ा चखना पड़ेगा।

रसूल अल्लाह (स०) का फ़रमाम है कि—

तुम मौत को बहुत याद किया करो कि वह दुनिया के मज़ों को मिटा देने वाली है। अल्लाह व रसूल के हुक्म के मुवाफ़िक़ मौत का आना ऐसा सच्चा है कि इसका इन्कार कोई नहीं कर सकता। अल्लाहतआला की कुदरत का ऐसा एक अजब नक्शा है कि दिलों को हिला डालता है। दिन-रात देखने में आता है कि एक ही जगह है और एक शहर है। कहीं गुलाब के फूल, कहीं काँटे और बबूल, कहीं शादी का वलीमा, कहीं मैय्यत के फूल। कोई बड़े शौक़ में नई शादी की दुल्हन को पालकी या मोटरकार में लिए हुए खुशियाँ मनाता अपने घर को चला जाता है। इत्तफ़ाक़ से बाज़ार के बीच मैय्यत की बारात और शादी की बारात का मेल हो गया। अल्लाहो अकबर !

एक तरफ़ खुशी की बहार और एक तरफ़ ग़म का पहाड़। एक तरफ़ ख़ाना आबादी, एक तरफ़ बर्बादी। एक तरफ़ दुल्हन की पालकी और मोटरकार में उसकी छोटी बहिनें और सहेलियाँ, पान इलायची खाती और खुशियाँ मनाती जाती हैं। दूसरी तरफ़ जनाज़े की चारपाई के नीचे छोटे-छोटे बहिन-भाई रोते जाते हैं। कोई अपने बेटे की खुशी में अक़ीक़े के बकरे लिए चला आता है, कोई अपने खूबसूरत चाँद से बेटे का जनाज़ा लिए जाता है। अक़ीक़े वाला बकरे के गोश्त रिश्तेदारों और यार दोस्तों को खिलायेगा और दूसरे अपने कलेजे के टुकड़े को क़ब्र की ख़ाक पर लिटाकर उसके चाँद से बदन के गोश्त को क़ब्र के कीड़ों को खिलायेगा। कोई अपने दामाद के लिए दोशाला ख़रीदकर लिये आता है। कोई अपने बहनोई के लिए कफ़न का कपड़ा ख़रीदकर लिये जाता है। किसी को चौकी पर बैठाकर उसके बदन पर शादी का उबटन मला जाता है। किसी को एक टूटे से तख्ते पर लिटाकर पसलियों का लेप उतारा जाता है। किसी की आरामगाह में कमख़ुवाब के पर्दे जोड़कर पर्दा किया जाता है। किसी की लाश पर दफ़न करने के लिए क़ब्र के चारों तरफ़ पर्दा किया जाता है और आख़िरी घर सबसे जुदा रहने का बना दिया जाता है। कोई मख़मली बिछौने पर पड़ा सोता है, कोई क़ब्र की ख़ाक में पड़ा रोता है। किसी की एक आवाज़ पर सैकड़ों जवाब मिलते हैं। किसी की सैकड़ों आवाज़ों पर भी एक जवाब नहीं मिलता। कहीं गधे, घोड़े, ऊँट दरिया में नहलाये जाते हैं। वहीं शाफ़ह-ए-महशर महबूब-ए-ख़ुदा (स०) के नवासे एक बूँद पानी से तरसाये जाते हैं। किसी के बच्चे को गर्मी में ज़हरमोहरह और अर्क़ बैदमुश्क रगड़कर पिलाया जाता है और अली असग़र (अ० स०) शहीद-ए-कर्बला हज़रत इमाम हुसैन (अ० स०) के शीरख़ुवार बच्चे की प्यास में एक बूँद पानी के बदले हल्क़ पर तीर मारा जाता है। किसी के लिए सोने-चाँदी

के बर्तनों में पीने का पानी लाया जाये मगर अब्बास अलम्बरदार औलाद-ए-रसूल का सक़्क़ा बन कर पानी लेने जाये तो मश्क में तीर मारकर सूराख़ कर दिये जायें। किसी के बिछौने में रूई का बिनौला रह जाये तो उसे आराम की नींद न आये मगर कर्बला के शहीदों की लाशों पर घोड़े दौड़ाकर उनको कुचल दिया जाये।

किसी के महलों में सैकड़ों काफ़ूरी मोमबत्तियाँ गैस और बिजलियाँ रोशन हों। मगर शहनशाहे दो जहाँ दस्तगीरे बेकसाँ महबूब-ए-ख़ुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) बेचिराग़ अँधेरे हुजरे में वफात पायें। हाय-हाय ! आह ! हाय-हाय !

जगह दिल लगाने की दुनिया नहीं है,
यह इबरत की जा है तमाशा नहीं है।

खुशी की जगह हाय दुनिया नहीं है,
किसी ने सदा इसमें रहना नहीं है।

दमे मर्ग जब जान निकलेगी तन से,
फिर उस वक़्त कोई किसी का नहीं है।

गुज़ारा जो दो दिन का करना है कर लो,
क़याम इसमें हर्गिज़ किसी का नहीं है।

हज़ारों हसीन और नज़ाकत के पुतले,
कहाँ हैं पता उनका मिलता नहीं है।

वह सब मिट गये हम भी यूँ ही मिटेंगे,
यक़ीं मेरे कहने का है या नहीं है।

## मौत का एक डराने वाला मुशाहेदा

हर एक जानदार के सर पर मौत खड़ी रहती है। जब वह किसी को लेना चाहती है तो देखने वालों के होश उड़ जाते हैं। जब देखते हैं कि एक प्यारा लेटा हुआ है जिसके चाहने वाले चारों तरफ़ खड़े है। कोई दवा पिलाता है, कोई शहद चटाता है। दवा और शहद इधर-उधर होकर बह जाता है। चेहरा मुर्झा गया और ज़र्दी आ गयी। माथे पर पसीना आ रहा है। सीने में एक पीस डालने वाली चक्की चल रही है। ठण्डे और लम्बे-लम्बे साँस ले रहा है। आँखें ऊपर को चढ़ती जा रही हैं और उनसे पानी बह रहा है। हिचकियाँ आ रही हैं। चारों तरफ़ से कलिमा शरीफ़ पढ़ने की आवाज़ आने लगी और एक जुदा होने वाले प्यारे को कलिमा याद दिला रहे हैं। कोई सराहने बैठा हुआ सूरा-ए-यासीन

सुना रहा है कि इतने में दो-तीन हिचकियाँ लेकर और सबको रोता छोड़कर हमेशा के लिए दुनिया से चल देता है। फिर हाथ-पाँव सीधे करके मुँह पर ढाटा बाँध दिया जाता है कि मुँह न खुल जाये और एक चादर उढ़ाकर रोते हुए अलग हो जाते हैं। और अब अपने प्यारे को पोशाक पहनाने की और ख़ाक में मिलाने की तैयारी करते हैं। बाज़ार से पोशाक का कपड़ा और कपड़ों में और सजदा करने के आज़ा पर खुशबू और काफ़ूर लगाने को ले आये और सब सामान-ए-जहेज़ तैयार हो गया। अब दूल्हा या दुल्हन की रुख़सती में शरीक होने वाले बाराती आने लगे और एक मुसाफ़िर की ख़ानगी या दूल्हा-दुल्हन का डोला जाने को तैयार है और ताअल्लुक़ के मुवाफ़िक़ बाराती जमा हो गये। कोई कहता क्या देर है? कोई कहता ज़रा ठहरो अभी चलते हैं। कोई कहता है जल्दी करो, देर करना सुन्नत के ख़िलाफ़ है। जवाब मिलता है कि बस ग़ुस्ल की देर है और दूल्हा या दुल्हन को ग़ुस्ल देना शुरू कर दिया। पानी के सर्द और गर्म का पूरा ख़याल रखा गया है। ग़ुस्ल के लिए एक टूटे से तख़्ते पर लिटा दिया गया है। देखना भाई किसी जगह बदन को तकलीफ़ न हो, आहिस्ता आहिस्ता नहलाओ और नर्मी से हाथ फेरो। जब ग़ुस्ल दे चुके तो उस मुसाफ़िर को कपड़े पहनाये जाते हैं। काफ़ूर लगाया जाता है। मर्द है तो तीन कपड़े, औरत है तो पाँच कपड़े आख़िरी पोशाक पहना दी जाती है। दूल्हा सफ़ेद कपड़े पहने हुए लेटा है। जिस पर आँसुओं के मोती वारे जाते हैं। और एक खुदा से शर्माये हुए का घूँघट हटा-हटा कर उसकी मुँह दिखायी हो रही है। जो ग़रीब न मुँह से बोले और न हाथ-पाँव हिला सके, बस चुपचाप लेटा हुआ है कि इतने में बाराती आये और डोला उठाकर चल दिये।

ले चले दूल्हा बना कर ले चले,
ले चले बस आख़िरी घर ले चले।

शोरग़ुल घर में बस ऐसा हुआ,
हो गया गोया वहां मशहर बपा।

छुप छुपाते कूच दुनिया से किया,
दाग़े फ़ुरक़त कैसा अपनों को दिया।

रोते हैं छोटे-बड़े पीरो जवाँ,
चल दिया मुँह मोड़कर तू ऐ मेहरबां।

ऐसी जगह जाता है फिर आयेगा नहीं,
मुँह अपनों को फिर दिखायेगा नहीं।

या ख़ुदा रहम कर और हमको सब्र दे,

मरने वाले को हमारे बख़्श दे।

## हज़रत फ़ात्मा (अ० स०) का जनाज़ा शरीफ़

हज़रत फ़ात्मा (अ० स०) के जनाज़े शरीफ़ को जब क़ब्र में उतारा गया तो हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी (रज़ी०) ने अपने जोशे ग़म में आकर क़ब्र से फ़रमाया—

ऐ क़ब्र ! तुझे ख़बर भी है कि हमने तेरे अन्दर कैसा पाकीज़ा जनाज़ा रखा है ? यह रसूल अल्लाह (स०) की साहबज़ादी हैं और शेर-ए-खुदा अली मुर्तज़ा की बेगम हैं और शहज़ादा-ए-कौनैन हसन और हुसैन (अ० स०) की वालिदा फ़ात्माज़हरा हैं।

क़ब्र से अवाज़ आयी कि—

ऐ अबूज़र ! यह ख़ानदानी बुज़ुर्गी और शराफ़त जतलाने की जगह नहीं है। यहाँ तो ईमान और अच्छे अमलों का ज़िक्र करना चाहिए। मेरे अन्दर तो उसको आराम मिलेगा जो ईमान और अच्छे अमल लेकर आयेगा।

रहेगा भला कब तलक ख़ुवाब में,
और इस बहरे हस्ती के गरदाब में।

उठा ख़ुवाब से सर को आँख खोल,
नेक व बद को अक़्ल में अपनी तोल।

यह आख़िर को जान तन से होगी जुदा,
तेरा कौन है फिर ख़ुदा के सिवा।

ग़नीमत समझ़ जो है ज़िन्दगी,
तू कर इसमें ख़ुदा की ,बन्दगी।

गुनहगार जब तक कि रोता नहीं,
नज़ूल उसपे रहमत का होता नहीं।

गुनहगार जब रोके तौबा करे,
तो उसको ख़ुदा रहम से बख़्श दे।

डर ख़ुदा का है तेरे दिल में अगर,
जल्द इसका कर इलाज ऐ बेख़बर।

काम का अपने तू अब मुख़तार है,
बात हक़ कहनी हमारा कार है :

# अच्छी मौत की निशानी

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

मौत का एक दिन आना अफ़सोस के लायक़ है कि मरने वाला न कुछ कह सके और न कर सके। आपके ज़माने में कोई आदमी बैठा हुआ एक दम मर गया, तो किसी ने कहा—

क्या अच्छी मौत मरा है! न कोई बीमारी देखी और न कुछ जान निकलने की तकलीफ़ हुई।

हुज़ूर (स०) को जब उसका यह कहना मालूम हुआ तो आपने फ़रमाया कि तेरे पास इसका क्या सबूत है कि अचानक एकदम मरने से उसको तकलीफ़ नहीं हुई। अगर अल्लाहतआला उसको इस हाल में मौत देता कि वह बीमारी की तकलीफ़ उठाता तो उसके सब गुनाह माफ़ हो जाते। (मिश्कात)

**फ़ायदा—** बीमार होकर मरने में यह नफ़ा है कि बीमार तौबा कर लेता है। अपने गुनाहों की माफ़ी माँग लेता है। किसी का कोई हक़ ज़िम्मे हो तो उसको अदा कर देता है या हक़ वाले से माफ़ करा लेता है। नमाज़ या रोज़े वग़ैरा उसके ज़िम्मे हों तो उनका फ़िदया यानी बदला देने की या हक़ वालों के हक़ूक़ अदा करने की वसीयत और नसीहत कर देता है या खुद वारिसों का हक़ अदा कर देता है।

मोहसिन-ए-आज़म (स०) फ़रमाते हैं कि—

अल्लाहतआला अपनी इज़्ज़त व अज़मत की क़सम के साथ फ़रमाता है कि जब मैं किसी मुसलमान बन्दे के बारे में यह चाहता हूँ कि उसको अपनी रहमत में छुपा लूँ तो दुनिया से उसको ऐसी हालत में मौत देता हूँ कि वह दुनिया में तमाम गुनाहों का बदला पा लेता है और तरह-तरह की बीमारियाँ और सख़्तियाँ उठा लेता है। (मिश्कात)

कितने ही बीमार हो जाओ अगर,
रहमत-ए-रहमान समझो सरबसर।

जिस क़दर तकलीफ़ होगी दोस्तो,
पाक हो जाओगे इसको सुन रखो।

जितनी होगी सख़्त बीमारी तुम्हें,
घेर लेगी रहमते बारी तुम्हें।

जिस क़दर खुश होगे बस मौला से तुम,
जाओगे खुशनूद बस दुनिया से तुम।

# मौत को याद करने का तरीक़ा

**बाज़ लोग कहा करते है कि—**

अब तो आराम से गुज़रती है आक़बत की ख़बर ख़ुदा जाने। साहिबो! ख़ुदा तो जानता ही है लेकिन जिसको ख़ुदा ने बतला दिया है वह भी तो जान गया, फिर यह सरकशी और ग़फ़लत क्यों है? वजह इसकी यही है कि मौत को और आख़िरत के हिसाब को भुला दिया है। इसीलिए हमको रसूल अल्लाह (स०) ने बतला दिया कि तुम मौत को ज़्यादा याद करो कि वह दुनिया के मज़ों को मिटा देने वाली है। क्योंकि मरने का किसी को कुछ पता नहीं है। न मालूम किस वक़्त और किस हाल में मौत आ जाये।

एक अमीर आदमी थे। वह बाहर से घर में आये और खाना तलब किया। ख़ादिमा खाना उतार कर लायी तो क्या देखती है कि मियाँ साहब मरे पड़े हैं। न किसी से कुछ कहा और न सुना, ज़रा-सी देर में दुनिया से चल बसे और सब मज़े यहीं छोड़ गये। एक और खाते-पीते आदमी थे। बारह सौ रुपये तनख़्वाह थी। शिमला पहाड़ पर रहते थे। ताश के बड़े खिलाड़ी थे। ताश खेलते हुए हाथ से पत्ता छूट कर तख़्त से नीचे गिर गया। उसको उठाने के लिए झुके। बस वहीं रह गये और दुनिया से चल दिये और सब-खेल तमाशा ख़त्म हो गया।

इसी तरह एक अमीर घराने की बुढ़िया थी जो बेफ़िक्री से खा-खाकर खूब मोटी-झोटी हो रही थी। रात को सो गयी। जब आँख खुली तो एकदम चीख़ मारी कि दौड़ो, मुझे बचाओ। घर वाले दौड़े हुए आये। क्या देखते हैं कि अम्मा जान का साँस बन्द है और मरी पड़ी है। वह सब हैरान होकर कहने लगे कि अम्मा जान का तो किसी ने गला ही घोट दिया। एक और आदमी थे। रेल में चढ़ने लगे। उसी वक़्त पाँव फिसला, नीचे गिर गये और जान निकल गयी।

इसी तरह एक वकील साहब थे। कार में से उतरे, चक्कर खाकर ज़मीन पर गिर पड़े और एक दम जान ख़त्म हो गयी।

ग़रज़ कि ऐसे हालात हम रोज़ देखते हैं और सुनते हैं। लेकिन फिर भी अपना मरना याद नहीं आता। मौत को दूर समझना बड़ी ग़लती है। मौत को याद रखना बहुत ज़रूरी है और इसको याद करने का तरीक़ा यह है कि—

जब सोने लगो तो यूँ सोचा करो कि मरने के बाद यह इज़्ज़त और बड़ाई और ऐशो आराम सब छूट जायेगा। जान किस तरह निकलेगी। क़ब्र में क्या गुजरेगी। मुनकिर-नकीर फ़रिश्तों को क्या जवाब दूँगा। जब रोज़ाना इस तरह सोचोगे और मरने को याद करोगे तो दुनिया के मज़ों की मुहब्बत घट जायेगी। बुरे काम छूट जायेंगे। देखो, दुनिया में जो लोग बड़ी शानोशौकत और बड़ाई रखते थे, सब मिट गये और क़ब्रों में गल-सड़ गये। खाक़ में मिलकर ख़ाक हो गये। माल, दौलत, रियासत, हकूमत, बादशाहत, खेल-तमाशे सब यहीं छोड़ गये और उनकी सब चीज़ों पर वारिसों ने क़ब्ज़ा किया और किसी वारिस ने या रिश्तेदार ने या साथियों ने उनका साथ न दिया।

ऐ अहलियान ख़ाक वह सूरत कहाँ गयी,
नख़रे कहाँ गये और वह इज़्ज़त कहाँ गयी।

फ़िरऔन को कहिये कि वह लश्कर कहाँ गया,
रुस्तम से पूछिये कि वह कुव्वत कहाँ गयी।

शद्दाद से कहो कि वह बाग़े हरम गया कहाँ,
क़ारून से पूछिये कि वह दौलत कहाँ गयी।

यह किस हसीं की क़ब्र पे काँटों की बाड़ है,
वह फूल-सा बदन वह नज़ाकत कहाँ गयी।

देखा न मुड़ के ख़ाक में ऐसा मिला चले,
ऐ दोस्तों वह चश्म-ए-मुहब्बत कहाँ गयी।

# मौत की हालत और सूरत

**हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रह०) ने लिखा है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—**

मौत को अल्लाहतआला ने एक हज़ार पर्दों में छुपा कर पैदा किया। और वह ज़मीन व आसमान से बहुत बड़ी है और उसको सत्तर हज़ार ज़ंजीरों से बाँधा गया। एक-एक ज़ंजीर इतनी लम्बी थी कि अगर कोई एक हज़ार साल चले तो उसके सर पर ही रहे। फ़रिश्ते उसके पास नहीं जाते थे। हाँ, उसकी आवाज़ सुनते थे। हज़रत आदम (अ० स०) के ज़माने तक उसको कोई नहीं जानता था कि मौत क्या चीज़ है। फिर अल्लाहतआला ने इज़राईल (अ० स०) मलकउलमौत को हुक्म दिया कि हमने तुमको मौत पर अख़्तियार दिया।

उन्होंने अर्ज़ की, या रब मौत क्या है?

अल्लाहतआला ने उसी वक़्त मौत के ऊपर से पर्दे उठा दिये और सब फ़रिश्तों ने उसको देखा।

अल्लाह तआला ने मौत को हुक्म दिया कि अपनी सब आँखे खोल और अपने बाज़ुओं से उड़। जब मौत ने आँखें खोलीं और उड़ी तो फ़रिश्ते डर गये और बेहोश होकर गिर पड़े। होश आने पर अर्ज़ की—

ऐ रब कोई और भी ऐसी बड़ी चीज़ आपने पैदा की है?

इरशाद हुआ कि बस सब चीज़ों से बढ़कर हमारी ही ज़ात-ए-पाक है। हम ही से सबको डरना चाहिए। और ख़ूब समझ लो, यह मौत एक ऐसी चीज़ है कि हर एक जानदार इसका मज़ा चखेगा।

फिर अल्लाह तआला ने हज़रत इज़राईल को हुक्म दिया कि मौत को पकड़ो और इसको अपने क़ब्ज़े मे करो।

अर्ज़ की, ऐ रब! यह तो बहुत ताक़तवर है।

हुक्म हुआ, हमने तुमको इससे ज़्यादा ताक़त दी है।

बस हज़रत इज़राईल मलकउलमौत ने पकड़ कर अपने क़ब्ज़े में कर लिया और मौत ने चीख़-चीख़ कर कहना शुरू किया कि कुल मख़लूक़ कान खोलकर सुन ले और ख़बरदार हो जाये कि मेरा नाम मौत है। मैं वह हूँ जो माँ-बाप और बेटों में, भाई और बहिनों में, शौहर और बीवी में जुदाई डाल दूँगी। मैं वह हूँ कि आदम की औलाद को ख़त्म कर दूँगी। किसी जानदार को ज़िन्दा न छोड़ूँगी। मैं वह हूँ कि लोगों की बड़ाई और शेखी ख़ाक में मिला दूँगी। शहरों को और बस्तियों को उजाड़ दूँगी। मैं ऐसी हूँ कि जब किसी को पकड़ूँगी तो कोई मुझसे बच नहीं सकता।

कैसे-कैसे घर उजाड़े मौत ने,
खेल कितनों के बिगाड़े मौत ने।

ज़ोरावर क्या-क्या पछाड़े मौत ने,
रूबरू क़ब्रों में गाड़े मौत ने।

## मलकउलमौत की ताक़त

**अज़ इमाम ग़ज़ाली (रह०)—**

मलक-उल-मौत का बदन इतना बड़ा और भारी है कि अगर कुल समन्दरों का पानी उनके ऊपर डाला जाये तो एक बूँद भी ज़मीन पर न गिरेगी। और

तमाम ज़मीन व आसमान की मख़लूक़ उनके सामने इस तरह है कि जैसे एक दस्तर- ख़ुवान तरह-तरह के खानों से भरा हुआ किसी के सामने रखा हुआ हो कि जो चीज़ चाहे उसमें से उठा ले।

अल्लाहतआला ने अर्श के नीचे एक दरख़्त पैदा किया हुआ है। मख़लूक़ में जितने जानदार हैं उतने ही उसमें पत्ते हैं। जब किसी की ज़िन्दगी के चालीस दिन बाक़ी रहते हैं तो एक पत्ता टूटकर मलक-उल-मौत के पास आ जाता है और वह वक़्त मुक़र्ररा पर उसकी जान निकाल लेते हैं। और जिस दिन पत्ता टूटकर आता है वह मरने वाला आसमान पर मुर्दा मशहूर हो जाता है अगरचे दुनिया में चालीस दिन ज़िन्दा रहे।

बेनिशां हो जायेगा गुलज़ारे दुनिया एक दिन,
ख़ार का इसमें पता होगा न गुल का एक दिन।

है कहाँ फ़िरऔन व नेमरूद शद्दाद व आद,
जिनको था अपने ख़ुदा होने का दावा एक दिन।

मौत कहती है न इतरा ज़ोर व ताक़त में तू,
ख़ाक कर डालूँगी तेरा ज़ोर सारा एक दिन।

जाओगे ऐ अहले तकब्बुर ख़ाक में अंजामकार,
सरकाशी करते हो क्या देखोगे नीचा एक दिन।

कर बुराई से हज़र जासूस तेरे साथ है,
होंगे दुश्मन सबके सब तेरे आज़ा एक दिन।

जिस तरह पहलों के क़िस्से रात दिन सुनता है तू,
यूँ ही रह जायेगा तेरा भी फ़साना एक दिन।

आख़िर इस दार-ए-फ़ना से सबको जाना है अज़ीज़,
यूँ ही ख़त्म हो जायेगा दुनिया का क़िस्सा एक दिन।

## मरने के वक़्त मलक उल मौत का आना

दक़ायक़-उल-अख़बार में हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रह०) ने लिखा है कि—

जब किसी आदमी की ज़िन्दगी ख़त्म हो जाती है तो मौत उसके मुँह के सामने आकर खड़ी हो जाती है। मरने वाला कहता है कि तू कौन है और क्या चाहती है ?

मैं मौत हूँ, तुझे लेने आयी हूँ। अब तुझे दुनिया से निकालूँगी और तेरी औलाद को तुझसे जुदा करूँगी और तेरी औरत को बेवा करूँगी और तेरा माल

ग़ैरों को दिलवाऊँगी, जिसको तूने जमा किया है और ख़ुदा की राह में न दिया।

मौत की यह बातें सुनकर वह मुँह फेर लेता है। फिर मुँह के सामने आकर कहती है कि—

तू मुझे नहीं जानता ? मैं वही मौत हूँ कि जिसने तेरे बाप-दादा को दुनिया से निकाला था। बता तूने दुनिया को कैसा पाया? वह कहता है कि दुनिया बड़ी दग़ाबाज़ है। फिर दुनिया एक सूरत में बनकर आती है और कहती है कि—

ऐ बेशर्म! तूने मेरे अन्दर रहकर ख़ुदा की नाफ़रमानी की, हलाल और हराम में फ़र्क़ न किया। और तू यह समझता था कि मैं हमेशा दुनिया में रहूँगा। मैं तुझसे तेरे बदकामों की वजह से नाराज़ हूँ। बदकाम तूने किये और दग़ाबाज़ मुझको बतलाता है। फिर माल आकर कहता है कि तूने मुझको बुरे तरीक़े से कमाया और अब मैं दूसरों के क़ब्ज़े में चला जाऊँगा और तू दुनिया से हाथ ख़ाली चला है। फिर मलक-उल-मौत उसकी जान निकालते हैं।

अगर ईमानदार और अल्लाह व रसूल का ताबेदार है तो ऐसी आसानी से निकालते हैं कि जैसे आटे में से बाल निकाला जाये और अगर बेईमान और नाफ़रमान है तो ऐसी सख़्ती से निकालते हैं कि जैसे काँटों पर चादर डाल कर खींची जाये।

दुनियाए फ़ानी फ़ना का दौर है,
जाये इबरत है मुक़ामे ग़ौर है।

तू है ग़ाफ़िल यह क्या तेरा तौर है,
बस कोई दिन ज़िन्दगी और है।

दफ़न सदहा कर दिये ज़ेरे ज़मा,
फिर भी मरने का नहीं आता यक़ीं।

तुझसे बढ़कर भी कोई ग़ाफ़िल नहीं,
कुछ तो इबरत चाहिए ऐ मर्दे मती।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## मरने के वक़्त शैतान का धोखा

अज़ हज़रत इमाम ग़ज़ाली (रह०) कि—

मरने के वक़्त मरने वाले को ऐसी प्यास लगती है कि मरने वाला बहुत

बेचैन हो जाता है। शैतान पानी का एक भरा हुआ प्याला उसको दिखाता है। वह उससे पानी माँगता है। शैतान कहता है कि पहले यह कह दे कि तू खुदा है, तेरे सिवा कोई खुदा नहीं है।

बस जिस आदमी ने अल्लाहतआला को नहीं पहचाना और उसके हुक्मों को नहीं माना वह कह देता है और जिसने अल्लाह को पहचाना और उसके हुक्मों को माना वह पहचान लेता है कि यह शैतान है और नहीं कहता और अपने ईमान पर साबित रहता है।

दफ़अतन सर पर जो आ पहुँची अज़ल,
फिर कहाँ तू और कहाँ दारुल अमल।

जायेगा वह बेबहा मौक़ा निकल,
फिर न हाथ आयेगी उम्र-ए- बे बदल।

तुझको ग़ाफ़िल फ़िकरे उक़बा कुछ नहीं,
खा न धोखा कि ऐशे दुनिया कुछ नहीं।

ज़िन्दगी चन्द रोज़ा से कुछ ज़्यादा नहीं,
कुछ नहीं इसका भरोसा कुछ नहीं।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## एक वली की हिकायत

हज़रत अबुज़करिया (रह०) की जब वफ़ात होने लगी तो उनके मुरीदों ने उनको कलिमा पढ़ने को कहा। उन्होंने मुँह फेर लिया। तीसरी बार कहने के जवाब में उन्होंने कहा, मैं नहीं कहता। मुरीदान हैरान हो गये। थोड़ी देर में उनको होश आया और मुरीदों से फ़रमाया कि—

तुम मुझसे कुछ कहते थे? मुरीदों ने कहा कि हम आपको कलिमा पढ़ने को कहते थे। आख़िर में आपने जवाब दिया कि मैं नहीं कहता। फिर हज़रत साहब ने मुरीदों से फ़रमाया।

ऐ अज़ीज़ो ! उस वक़्त मुझको बड़ी तेज़ प्यास लगी हुई थी और शैतान पानी का प्याला भरकर मेरे सामने लाया और कहता था कि यह कह दे कि तेरे सिवा कोई खुदा नहीं है। जब तुझको पानी दूँगा। मैंने दोबारा उसकी तरफ़ से मुँह फेरा। तीसरी बार मैंने उसको जवाब दिया कि मैं नहीं कहता।

बस वह बेईमान बेउम्मीद होकर भाग गया। अल्लाहतआला ने उस वक़्त के इम्तेहान में मेरी मदद फ़रमायी और दुश्मन से मुझको बचा लिया। अब तुम सब गवाह रहो। मैं कलिमा-ए-शहादत पढ़ता हूँ—

कलिमा पढ़ते ही अल्लाह को प्यारे हो गये।

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह! क्या मुबारक मौत है अल्लाहतआला के प्यारे बन्दों की। ऐ इन्सान! तू भी खुदा से डर और अल्लाह वालों से सबक हासिल कर।

# मरने के बाद आवाज़ों का आना

जब आदमी मर जाता है तो आसमान से यह आवाज़ें आती हैं जिनको मरने वाला ही सुनता है—

1. ऐ आदम के बेटे! तूने दुनिया को छोड़ा या दुनिया ने तुझको छोड़ा?
2. तूने दुनिया को खुश रखा या दुनिया ने तुझको खुश रखा?
3. तूने दुनिया को कमाया या दुनिया ने तुझको कमाया?

**और जब गुस्ल देते हैं तो यह आवाज़ें आती हैं—**

1. ऐ आदम के बेटे! तू कमज़ोर हो गया। अब तेरा ज़ोर कहाँ गया?
2. अब तू बोलता नहीं, तेरी बातें कहाँ हैं?
3. अब तू अकेला है, तेरे साथी कहाँ हैं?

**और जब कफ़न पहनाते हैं तो यह आवाज़ें आती हैं—**

1. ऐ आदम के बेटे! तू सफ़र में हाथ ख़ाली चला है।
2. अब तू दुनिया में कभी न आयेगा।
3. अब तू एक ख़ौफ़नाक घर में चला है।

और जब जनाज़े को लेकर चलते हैं तो यह आवाज़ें आती हैं—

ऐ आदम के बेटे! अगर तू तौबा करके और अपने गुनाहों को माफ़ कराकर मरा है तो तुझको खुशख़बरी है कि तेरा रब तुझसे खुश है और अगर तूने तौबा नहीं की और गुनाह माफ़ नहीं कराये तो बड़े ग़म की बात है कि तेरा रब तुझसे नाखुश है।

और जब नमाज़ पढ़ने के लिए जनाज़े को आगे रखते हैं तो यह आवाज़ें आती हैं—

ऐ आदम के बेटे! जो कुछ अच्छा या बुरा तूने किया है, वह तेरे ही लिए है। अगर तूने अच्छे काम किये हैं तो खुशी देखेगा और बुरे काम किये हैं तो दुःख पायेगा।

और जब दफ़न कर देते हैं तो ज़मीन कहती है—

ऐ आदम के बेटे ! तू मेरे ऊपर हँसता था, अब रोता है। तू मेरे ऊपर खुशियाँ करता था, अब ग़म में पड़ा हुआ है। तू मेरे ऊपर अकड़-अकड़ कर बातें करता था, अब ख़ामोश पड़ा हुआ है।

जब लोग दफ़न करके चले आते हैं तो अल्लाहतआला की तरफ़ से कहा जाता है—

ऐ बन्दे ! तू अकेला रह गया। तेरे दुनिया के साथी तुझको अँधेरे गड्ढे में डालकर चल दिये जिनके लिए तू हमारी नाफ़रमानी करता था। ऐ बन्दे ! हम आज तेरे ऊपर ऐसा रहम करेंगे कि तेरे माँ-बाप ने भी तुझपर ऐसा रहम न किया होगा। (अज़ दक़ायक़ उल अख़बार)

**फ़ायदा—** ऐ इन्सान ! तू अल्लाहतआला की मेहरबानी को देख और जान व दिल से उसकी ताबेदारी कर।

तू बराये बन्दगी है याद रख,
फ़र्ज़ तुझ पर बन्दगी है याद रख।

वर्ना फिर शर्मिन्दगी है याद रख,
चन्द रोज़ा ज़िन्दगी है याद रख।

यह तेरी ग़फ़लत और बेअक़ली बड़ी,
मस्कुराती है क़ज़ा सर पर खड़ी।

मौत को पेशे नज़र रख हर घड़ी,
पेश आने को है मुश्किल बड़ी।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## आलम-ए-बर्ज़ख़ और क़ब्र क्या चीज़ हैं?

मरने के बाद से लेकर क़यामत के होने तक का नाम आलम-ए-बर्ज़ख़ है और उसको क़ब्र या आलमे क़ब्र कहते हैं। चाहे आदमी ज़मीन में दफ़न किया जाये या पानी में डूब जाये या आग में जल जाये। वहाँ के जाने वाले अपने हाल को ख़ूब जानते हैं और क़यामत तक कोई अपने बदकामों की वजह से आलम-ए-बर्ज़ख़ यानी क़ब्र के अज़ाब में क़ैदियों की तरह तकलीफ़ में रहेगा। और कोई अपने अच्छे कामों की वजह से बे-ग़म और बेतकलीफ़ दूल्हा की तरह आराम में रहेगा।

हैफ़ दुनिया का तो हो परवाना तू,
और उक़्बा का हो, परवाना तू।

किस क़दर है अक़्ल से बेगाना तू,
दीन पर होता नहीं दीवाना तू।

यूँ न अपने आपको बेकार रख,
आख़िरत के वास्ते तैयार रख।

ग़ैर हक़ से क़ल्ब को बेज़ार रख,
मौत का हर वक़्त इस्तहज़ार रख।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

# झूठों का मौहल्ला

एक बुज़ुर्ग ने अपने मुरीदों से कहा कि—

मैं फ़लां शहर में जाता हूँ और झूठों के मौहल्ले में रहा करूँगा। अगर तुम मुझसे मिलने आओ तो झूठों के मौहल्ले में आ जाना। वह बुज़ुर्ग उस शहर में चले गये और झूठों के मौहल्ले में रहने लगे। कुछ दिनों के बाद उनके चन्द मुरीद उनसे मिलने गये और लोगों से पूछना शुरू किया कि झूठों का मौहल्ला कौन-सा है? लोग हैरान होकर जवाब देते कि तुम पागल हो क्या? तुम्हारा दिमाग़ ख़राब है? इस शहर में कोई झूठों का मौहल्ला नहीं है और यह भी नहीं हो सकता कि सारे झूठे जमा होकर एक ही मौहल्ले में रहते हों। आख़िर वह लोग हार-लाचार बेउम्मीद होकर शहर के एक किनारे पर क़ब्रिस्तान में जा निकले तो क्या देखते हैं कि पीर साहब वहाँ बैठे हैं। मुलाक़ात के बाद उनसे पूछा गया कि हज़रत! लोगों ने हमको ख़ूब पागल बनाया और शहर में किसी ने झूठों का मौहल्ला न बतलाया।

यह बात सुनकर उन बुज़ुर्ग ने फ़रमाया कि—

देखो! यह क़ब्रिस्तान झूठों का ही तो मौहल्ला है। यहाँ के रहने वाले सब झूठ ही तो कहते थे। कोई कहता था कि—

यह मेरा गाँव है। यह ज़मीन मेरी है। यह मकान और दुकान मेरी है यह बाग़ और जायदाद मेरी है। यह सामान और माल मेरा है। यह गाय, भैंस, ऊँट, बकरी मेरी है। यह ट्रँक और बर्तन, ज़ेवर, कपड़े मेरे हैं। बतलाओ, आज

इनके पास तुम कोई चीज़ देखते हो? तो इनके सब दावे झूटे थे। इसलिए क़ब्रिस्तान झूटों का मौहल्ला हुआ या नही? मुरीदों को बड़ी इबरत हासिल हुई और उन्होंने कहा—

हज़रत, बिल्कुल सच बात है। और सबके सब अल्लाह व रसूल के फ़रमांबरदार बन गये और माल-दौलत अल्लाह की राह में ख़र्च करने लगे। ऐ अज़ीज़ भाई! तू भी सबक़ हासिल कर और अल्लाह व रसूल का ताबेदार बन।

है यहाँ से तुझको जाना एक दिन,
क़ब्र में होगा टिकाना एक दिन।

मुँह ख़ुदा को है दिखाना एक दिन,
अब न उलफ़त में गँवाना एक दिन।

कर न मेरी जान गफ़लत अख़्तियार
ज़िन्दगी का कुछ नहीं है ऐतबार।

हल्क़ पर है मौत के ख़ंजर की धार,
कर बस अब अपने को मुर्दों में शुमार।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## क़ब्र का ऐलान

हर रोज़ तीन दफ़ा क़ब्र यह ऐलान करती है—

ऐ आदम के बेटो और बेटियों! मैं ख़ौफ़नाक घर हूँ। मेरे अन्दर अँधेरा है। साँप और बिच्छू हैं। बिलकुल अकेली जगह है। तुम अच्छे अमल करके मेरे अन्दर आओ। क़ुरआन बहुत पढ़ा करो और पाँचों वक़्त की नमाज़ हमेशा वक़्त पर पढ़ते रहो और तहज्जुद की नमाज़ भी पढ़ा करो। इन अच्छे अमलों की बरकत से मेरे अन्दर नूर की रोशनी देखोगे और मेरे अन्दर, नीचे, ऊपर और हर तरफ़ मिट्टी ही मिट्टी है। तुम अच्छे कामों के बिस्तरे और बिछौने अपने साथ लाओ और मेरे अन्दर दो फ़रिश्ते मुनकर-नकीर, यह दो टिकट बाबू आयेंगे और वह अल्लाह व रसूल के और दीन के बारे में तुमसे सवाल करेंगे और यह टिकट तुमसे माँगेंगे। इसलिए तुमको चाहिए कि कलिमा तैय्यब—

**"लाइलाहा इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह"**

बहुत ज़्यादा पढ़ा करो कि फ़रिश्तों के सवालों का यही जवाब है और

यही टिकट है। (दक़ायक़-उल-अख़बार)

अज़ीज़ो आलमे फ़ानी से जब अपना गुज़र होगा,
निकल इस मुल्क से ज़ेरे ज़मीं जंगल में घर होगा।

अँधेरा तंग वह घर है न तकिया है न बिस्तर है,
मकाने पुरख़तर है न आँगन और न दर होगा।

न हम जानें किसी को वाँ न हमको कोई जाने है,
न कुछ पहचान अल्लाह की कहो क्योंकर गुज़र होगा।

तौबा कर गुनाहों से और रख उम्मीदें बख़्शिश की,
तेरे सर पर शफ़ीहे आसियां ख़ैरुलबशर होगा।

# क़ब्र में मुनकिरनकीर फ़रिश्तों का आना

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जब मुर्दा क़ब्र में रखा जाता है (या आग में जलाया जाता है या जानवर खा जायें या पानी में डूब जाये) तो सियाह रंग और नीली आँखों वाले दो फ़रिश्ते मुनकिरनकीर बादल की तरह गरजते और ज़मीन को चीरते हुए उसके सर की तरफ़ से आते हैं और खुदा के हुक्म से उसको ज़िन्दा करके पूछते हैं, कि—

1. तेरा रब कौन है? 2. तेरा रसूल कौन है? 3. और तेरा दीन क्या है?

अगर वह ईमानदार है और ताबेदार होता है तो जवाब देता है कि—

मेरा रब अल्लाह है। मेरा दीन इस्लाम है और मौहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। उन्होंने अल्लाह के हुक्म बतलाये हैं। मैंने उनको और अल्लाह की किताब कुर्आन मजीद को सच्चा समझा और उसके हुक्मों को मालूम करके उन पर अमल किया।

फिर अल्लाहतआला की तरफ़ से कहा जाता है कि मेरे बन्दे ने ठीक जवाब दिया। इसके लिए जन्नत का फ़र्श बिछा दो और इसको जन्नत का लिबास पहना दो और जन्नत की तरफ़ से दरवाज़ा खोल दो।

बस दरवाज़ा खोल दिया जाता है। उससे ठण्डी और खुशबूदार हवाएँ आती रहती हैं और सत्तर-सत्तर हाथ तक उसकी क़ब्र कुशादा कर दी जाती है और उससे कहा जाता है कि दूल्हा या दुल्हन की तरह आराम से सो जा और उसकी क़ब्र को नूर की रोशनी से रोशन कर दिया जाता है। और अगर वह मर्द

या औरत बेईमान और नाफ़रमान होता है तो फ़रिश्तों के जवाब में कहता है—

हाय-हाय ! मैं कुछ नहीं जानता। फिर अल्लाहतआला की तरफ़ से हुक्म होता है कि यह नाफ़रमान है। इसके लिए आग का फ़र्श बिछा दो और इसको आग के कपड़े पहना दो और दोज़ख़ की तरफ़ से दरवाज़ा खोल दो कि गर्म और बदबूदार हवाएँ इसको सताती रहें और इसकी क़ब्र को तंग कर दो। बस क़ब्र ऐसी तंग कर दी जाती है कि उस नाफ़रमान की पसलियाँ इधर से उधर निकल जाती हैं। फिर एक अंधा फ़रिश्ता गुर्ज़ यानी हथौड़ा मारने वाला उस पर मुक़र्रर किया जाता है। वह फ़रिश्ता उसके ऐसा गुर्ज़ मारता है कि हड्डी और पसलियों का चूरा हो जाता है और गुर्ज़ मारने की आवाज़ सारी मख़लूक़ सुनती है। मगर आदमी और जिन्न नहीं सुनते। बस इसी तरह मार पड़ती रहती है। फिर अच्छा कर दिया जाता है। फिर मार से चूरा हो जाता है। या अल्लाह ! तेरी पनाह। (मिशकात शरीफ़)

बहरे ग़फ़लत यह तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

रहगुज़र दुनिया है यह बस्ती नहीं,
जाये ऐशो इशरतो मस्ती नहीं।

है यह लुत्फ़ो ऐश दुनिया चन्द रोज़,
देख लो इसका तमाशा चन्द रोज़।

इस दारे फ़ानी में है रहना चन्द रोज़,
अब तो कर लो कारे उक़बा चन्द रोज़।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

## क़ब्र का दबाना

हज़रत आयशा (रज़ी०) ने दरियाफ़्त किया कि—

या रसूल अल्लाह ! आपने जब से मुनकिरनकीर फ़रिश्तों का क़ब्र में आना और क़ब्र का दबाना फ़रमाया है, कोई चीज़ मुझको तसल्ली नहीं देती। आपने फ़रमाया—

ऐ आयशा ! मुनकिरनकीर फ़रिश्तों का ईमानदार और ताबेदार आदमी के लिए आना ऐसा है कि जैसे सुरमा आँखों में अच्छा मालूम होता है। और ताबेदार आदमी को उन फ़रिश्तों से डर ही नहीं लगेगा। और क़ब्र का दबाना ईमानदार

और ताबेदार आदमी को ऐसा मुफ़ीद होगा जैसा कि किसी की माँ सर के दर्द में बेटे के सर को आहिस्ता और नर्मी से दबाये कि उसको आराम मिले। लेकिन ऐ मेहरबान! मुसीबत तो उन लोगों के लिए है जो खुदा के हुक्मों को नहीं मानते और नाफ़रमानी करते हैं। ऐसे लोग क़ब्रों में इस तरह दबाये जायेंगे जैसा कि अण्डे पर पत्थर रखकर दबा दिया जाये और उसका चूरा हो जाये। और क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ है। ईमानदार और ताबेदार बन्दों के लिए और नाफ़रमान बन्दों के लिए दोज़ख़ के घड़ों में से एक घड़ा है।

**फ़ायदा—** ऐ इंसान! आँख खोल, अपने ईमान को मज़बूत कर और अल्लाह व रसूल की ताबेदारी कर कि मरने के बाद क़ब्र में आराम पावे।

## जनाज़े को जल्दी ले जाने का हुक्म

हज़रत अबूहुरैरा (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जनाज़े को जल्दी ले जाया करो इसलिए कि अगर मुर्दा नेक है तो तुम उसको बहुत जल्दी दफ़न कर दो कि वह क़ब्र में जा कर आराम और चैन पायेगा और अगर वह नेक नहीं है तो तुम्हारी गर्दन से बोझ और शर दूर होगा। (मुस्लिम व बुख़ारी)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जब कोई मर जाये तो बहुत जल्दी ग़ुस्ल और कफ़न का इन्तज़ाम करके नमाज़ जनाज़ा पढ़ें और जल्दी से दफ़न कर दें। आजकल बाज़ लोग सारा-सारा दिन और सारी-सारी रात मरने वाले को पड़ा रहने देते हैं कि यह मुँह देख ले, वह मुँह देख ले। फ़लां आ जाये और मुँह देख ले।

ग़रज़ बेजा देर करना हुज़ूर (स०) के हुक्म के ख़िलाफ़ है।

## जनाज़े के साथ जाने का हुक्म

हज़रत उन्स (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०)ने फ़रमाया कि जो शख़्स जनाज़े पर आया यहाँ तक कि उस पर नमाज़ पढ़ी तो एक क़ीरात भर सवाब मिलेगा और जो उसके दफ़न होने तक मौजूद रहा तो उसको दो क़ीरात के बराबर सवाब मिलेगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि जो शख़्स किसी जनाज़े पर

आया और नमाज़ पढ़ने तक शरीक रहा, फिर चला आया तो उसको दो पहाड़ों के वज़न के बराबर सवाब मिलेगा और अगर मैय्यत को दफ़न करके आया तो उसको चार पहाड़ों के बराबर सवाब मिलेगा।

हज़ूर (स०) से दरियाफ़्त किया गया कि—

या रसूल अल्लाह ! कीरात कितना होता है? आपने फ़रमाया, दो बड़े पहाड़ों के बराबर।

**फ़ायदा—** देखो भाइयो ! जनाज़े की शिरकत का कितना बड़ा सवाब है। मगर शरीक होकर हुक्क़ा ही सिर्फ़ न पियें बल्कि ज़रूरत हो तो मैय्यत के गुस्ल और कफ़न और दूसरे कामों का इन्तज़ाम करा देना चाहिए कि शिरकत करने से मैय्यत की और मैय्यत वालों की मदद और ख़िदमत भी हो जायेगी और सवाब-ए-अज़ीम भी पाओगे।

## मौत अल्लाहतआला से मिला देती है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जब मलक-उल-मौत हज़रत इब्राहीम (अ० स०) की रूह क़ब्ज़ करने आये तो आपने उनसे फ़रमाया कि—

क्या तुमने किसी दोस्त को देखा है कि अपने दोस्त की जान निकाले? मलक-उल-मौत ने बारगाहे इलाही में अर्ज़ की, इरशाद हुआ कि हमारे दोस्त से कहो क्या तुमने किसी को देखा है कि अपने दोस्त से मिलना पसन्द न करे?

मलकउल मौत ने यह इरशादे इलाही आपको सुना दिया। आपने खुश होकर फ़रमाया कि अब मैं खुश हूँ। बहुत जल्दी मेरी जान क़ब्ज़ कर लो।

**फ़ायदा—** इस हदीस से मालूम हुआ कि मौत के सिवा कोई और ऐसा ज़रिया नहीं है कि बन्दे को खुदा से मिला दे।

तू समझ हरगिज़ न क़ातिल मौत को,
ज़िन्दगी का जान हासिल मौत को।

रखते हैं महबूब आक़िल मौत को,
याद रख हर वक़्त ग़ाफ़िल मौत को।

एक दिन मरना है आखिर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

# हज़रत मूसा (अ० स०) ने मलक-उल-मौत की आँख फोड़ दी

बुख़ारी शरीफ़ में हज़रत अबूहुरैरा से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

मलक-उल-मौत हज़रत मूसा (अ० स०) के पास आये और आपसे कहा कि तुम अपने रब का हुक्म मानो यानी मौत को क़बूल करो। यह सुनकर आपने मलक-उल-मौत की आँख पर तमांचा मारा। उनकी आँख फूट गयी।

अल्लाहतआला ने हुक्म फ़रमाया कि फिर जाओ मेरे बन्दे के पास और कहना कि अगर आप ज़िन्दगी चाहते हैं तो अपना हाथ बैल के ऊपर रख दें। फिर जिस क़दर बाल आपके हाथ के नीचे आयेंगे, उनकी गिनती के बराबर उतने ही साल की ज़िन्दगी आपको दी जायेगी।

मलकउलमौत ने हज़रत मूसा (अ० स०) को यह पैग़ाम पहुँचा दिया।

आपने फ़रमाया फिर क्या होगा? मलकउलमौत ने कहा कि आख़िर फिर भी मौत ही आयेगी। आपने फ़रमाया, अगर यही हाल है तो मेरी रूह अभी निकाल लो और मेरे रब से मुझको क़रीब कर दो। इस पाक ज़मीन बैत-उल-मुक़द्दस से इतनी जल्दी क़रीब करो जैसे पत्थर फेंकने से वह झट अपनी जगह जा गिरता है।

हुज़ूर (स०) ने यह बयान ख़त्म करके फ़रमाया—

खुदा की क़सम! अगर इस वक़्त मैं उस मकान के पास होता तो तुमको बतला देता कि—

हज़रत मूसा की क़ब्र रास्ते में एक किनारे पर है। सुर्ख़ टीले के क़रीब टीला बैत-उल-मुक़द्दस से एक मन्ज़िल पर है।

**फ़ायदा—** बाज़ लोग कहा करते हैं कि इतने ज़बर्दस्त फ़रिश्ते की आँख पर तमांचा मारना और आँख फोड़ना आदमी से नहीं हो सकता। और मलक-उल-मौत तो खुदा के हुक्म से आये थे, फिर मूसा (अ० स०) ने क्यों मारा? उनका कहना क्यों न माना?

इससे मालूम होता है कि मूसा (अ० स०) को दुनिया की ज़िन्दगी बहुत प्यारी थी। इसका जवाब यह है कि—

फ़रिश्ता मलक-उल-मौत आदमी की सूरत में आया था तो आदमी ही की-सी ताक़त उस वक़्त उसमें थी। इसलिए चोट की वजह से आँख फूट जाना कोई अजीब बात नहीं और मलक-उल-मौत को मूसा (अ० स०) ने पहचाना नहीं

था। यह समझे थे कि कोई आदमी है जो रूह निकालने का दावा करता है। क्योंकि रूह निकालने का काम सिवाय फ़रिश्ते के और कोई नहीं कर सकता। और यह भी ग़लत है कि उनको ज़िन्दगी प्यारी थी। देख लो जब अल्लाह तआला ने दूसरी बार जब ज़िन्दगी बढ़ाने का पैग़ाम दिया तो उन्होंने इसको क़बूल नहीं किया और मौत को अख़्तियार फ़रमाया।

## आख़िर मौत है

याद रख हर आन आख़िर मौत है,
मत बने अन्जान आख़िर मौत है।

शानो शौकत के न होने का अज़ीज़,
है अबस अरमान आख़िर मौत है।

पेशतर मरने से करना चाहिए,
मौत का सामान आख़िर मौत है।

क्यों नहीं देते ज़कात अहले नसीब,
क्यों नहीं है ध्यान आख़िर मौत है।

हक़ किसी का मत तलफ़ कर है सितम,
सुन लगाकर कान आख़िर मौत है।

मर गया फ़िरऔन क़ारून मर गया,
मर गया हामान आख़िर मौत है।

मरते जाते हैं हज़ारो आदमी,
आक़िलो नादान आख़िर मौत है।

हो गया गर तू सिकन्दर वक़्त का,
फिर भी ऐ सुल्तान आख़िर मौत है।

हिक्मतो अक़्लो हुनरमन्दी में तू,
गरचे है लुक़मान आख़िर मौत है।

जोशे ताक़त में कोई तुझसा नहीं,
रुस्तमे दौरा आख़िर मौत है।

हुस्न पर नाज़ा जवानी पर न इतरा
ऐ दिलों की जान आख़िर मौत है

रहमते हक़ गर तुझे दरकार है,
सब पे कर अहसान आख़िर मौत है।

हुक्म हक़ के बजा ला तू तमाम,
देख ले क़ुर्आन आख़िर मौत है।

है बराबर तख़्त हो या ख़ाक हो,
दे ख़ुदा ईमान आख़िर मौत है।

इस सराये हस्ती-ए-फ़ानी में हम,
दम के हैं मेहमान आख़िर मौत है।

बारहा इल्मी तुझे समझा चुके,
मान या मत मान आख़िर मौत है।

## मौत के आने से नैमतें मिलती हैं

किसी के गुनाह माफ़ होते हैं। किसी ताबेदार बन्दे को मरने के वक़्त अल्लाहतआला का सलाम आता है। किसी आशिक़े रसूल को रसूल अल्लाह (स०) की ज़ियारत होती है, किसी को जन्नत की ख़ुशख़बरी दी जाती है। किसी को शहादत का दर्जा दिया जाता है, किसी को दुनिया-ए-फ़ानी के जेलख़ाने से निजात मिलती है।

हुज़ूर अक़दस (स०) का इरशाद है कि—

ताबेदार बन्दे के पास मरने के वक़्त अल्लाहतआला के हुक्म से फ़रिश्ते आते हैं-और उससे कहते हैं कि तुम जहाँ जाते हो वहाँ से डरो मत। यह बशारत सुनकर उसका डर जाता रहता है और कहता है कि दुनिया के रहने वालों की जुदाई का ग़म न करो। तुमको जन्नत की ख़ुशख़बरी है। बस वह ऐसी हालत में मरता है कि अल्लाहतआला उसकी आँखें ठण्डी कर देता है यानी उसको राहत अता फ़रमाता है। ऐ अल्लाह ! हमको भी ऐसी मौत अता फ़रमाइये।

## मरने के वक़्त मलक उल मौत का सलाम

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जब मलक-उल-मौत किसी ताबेदार आदमी की रूह निकालने आते हैं तो उसको यूँ सलाम करते हैं— अस्सलामु अलैकुम या वली अल्लाह यानी ऐ अल्लाह के प्यारे दोस्त ! तुझ पर सलामती हो।

चल इस दुनिया के घर से जिसको दिल की बुरी ख़्वाहिशों ने ख़ाली कर दिया है। चल आख़िरत के घर की तरफ़ जिसको अल्लाहतआला की याद और ताबेदारी से रोशन कर दिया है।

सुबहान अल्लाह ! क्या इज़्ज़त है अल्लाहतआला के ताबेदार बन्दों की।

# मरने के वक़्त अल्लाहतआला का सलाम

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जब अल्लाहतआला अपने किसी तावेदार बन्दे की रूह क़ब्ज़ करना चाहता है तो मलक-उल-मौत को हुक्म होता है कि मेरे बन्दे को मेरा सलाम कहना। मलक-उल-मौत जब उस बन्दे के पास आते हैं तो कहते हैं—

ऐ अल्लाह के ताबेदार बन्दे! अल्लाहतआला तुमको सलाम कहता है और बड़ी आसानी से बग़ैर किसी तकलीफ़ के उसकी रूह निकालते हैं।

सुबहान अल्लाह! कितनी बड़ी रहमत है, नैमत है। ऐसी मौत पर हज़ारों ज़िंदगियाँ कुर्बान।

**हिकायत है कि—** एक बड़ी-बी अल्लाह व रसूल की बहुत ही ताबेदार थीं। जब उनके मरने का वक़्त आया तो घरवालों ने उनके बेटे को सामने किया और कहा कि ज़रा इस बेटे को तो देख लो। जवाब दिया कि सरदार-ए-दो आलम हुज़ूर (स०) सामने तशरीफ फ़रमा हैं। मैं आप (स०) की ज़ियारत करूँ या बेटे को देखूँ। हटा दो इसको मेरी नज़रों के सामने से।

हज़ूर के सामने बेटा क्या चीज़ है। यह हुज़ूर (स०) का मौजज़ा था। बस इस मुबारक हाल से दुनिया से चल बसीं।

हज़रत आदम नबी नीचे ज़मी के चल बसे,<br>
नूह कश्तीबान आलिम भी यहाँ से चल बसे।

आसमाँ पर ईसा और दाऊद मूसा ख़ाक में,<br>
ले के तौरतो ज़बूर इंजील हक़ से चल बसे।

वास्ते जिनके ज़मीनो आसमां पैदा हुआ,<br>
जन्नतउल फ़िरदौस में वह हक़ के प्यारे चल बसे।

बूअली से भी हज़ारों आये दुनिया में तबीब,<br>
मौत की दारू कहीं से पर न लाये चल बसे।

बूहनीफ़ा शाफ़ेई और मालिको हंबल इमाम,<br>
इन्तज़ामे शरह करके दे के फ़तवा चल बसे।

थे जो लुक़मानो अरस्तू और अफ़लांतू हकीम,<br>
कुछ न हिकमत ज़िंदगी की अपनी सीखे चल बसे।

साथ जिनके था यहाँ पर लश्करो फ़ौजो सिपाह,<br>
बेकसाना क़ब्र के अन्दर अकेले चल बसे।

एक साअत भी न ठहरे जिसका वादा आ गया,
दिल के दिल में ही रहे अरमान सारे चल बसे।

देखते ही देखते अकसर अज़ीज़ो आशना,
तन्दरुस्तो ख़ूबसूरत चलते-फिरते चल बसे।

हाये कोई भी न पलटा और न कुछ भेजो ख़बर,
चुपके हुए शहरे ख़मोशां मे ऐसे चल बसे।

चल बसेंगे एक दिन हम भी इसी सूरत से आह,
जिस तरह ज़ेरे ज़मी में लोग अगले चल बसे।

चल बसना औरों का जैसे हम करते हैं आह,
दोस्त कल हमको कहेंगे आज वह भी चल बसे।

आलमे क़ब्र में जाने की ज़रा तो फ़िक्र कर,
खोल आँखें देख इल्मी यार कैसे चल बसे।

# क़यामत के दिन अल्लाहतआला की रहमत

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

क़यामत के दिन जब हिसाब देने का वक़्त होगा तो अल्लाहतआला मुसलमान बन्दे को अपनी रहमत के दामन में छुपायेगा और फ़रमाएगा ऐ बन्दे! तुझको अपना फ़लां-फ़लां गुनाह याद है ? वह कहेगा याद है। उस वक़्त वह बन्दा खयाल करेगा कि अब मैं पकड़ा गया। फिर अल्लाहतआला फ़रमायेगा, ऐ बन्दे! हमने तेरे गुनाह दुनिया में भी छिपाये थे, आज भी हम तेरे गुनाह छिपाते हैं और माफ़ करते हैं।

**फ़ायदा—** सुबहान अल्लाह! ऐ पाक ज़ात सत्तार व ग़फ़्फ़ार तेरी रहमत और मेहरबानी का क्या ठिकाना है। बेशक—

तू है अल्लाम-उल-ग़यूब सतर दां,
तू है ग़फ़्फ़ार-उल-ज़ुनूब-ए-तायेबां।

तू ग़नी व रज़्ज़ाक़ व हाजित रवा,
हम फ़क़ीरो ख़ुवारो मिस्कीनों गदा।

आहू वावैला दरेगा हुर्रता,
मुफ़्त खोई हमने उम्रे बेलक़ा।

बन न आया हमसे कोई नेक काम,
उम्र बातों में खोई नाहक़ तमाम।

# मरने वाले को सवाब पहुँचाना

**इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—**

मुर्दा अपनी क़ब्र में डूबने वाले की तरह होता है। जैसे दरिया में डूबने वाला चाहता है कि कोई मुझे डूबने से बचाये। इसी तरह मुर्दा क़ब्र में ख़ैरात वग़ैरा के सवाबों का इन्तज़ार करता रहता है कि किसी अज़ीज़ व अक़ारब की तरफ़ से पहुँच जावे। बस जब कोई ख़ैरात वग़ैरा का सवाब पहुँचाता है तो वह तोहफ़ा मरने वाले को तमाम दुनिया की चीज़ों से ज़्यादा प्यारा होता है और अल्लाहतआला लोगों की ख़ैरात और दुआ की बरकत से मरने वालों को पहाड़ों के बराबर सवाब देता है। और मरने वालों के लिए ज़िन्दों की यही ख़िदमत है, मदद है, तोहफ़ा है कि उनको सवाब पहुँचाया करें और उनकी बख़्शीश के लिए दुआ किया करें। सवाब पहुँचाने में उनको बहुत मदद मिलती है। अल्लाहतआला बाज़ बन्दों के जन्नत में दर्जे बढ़ायेगा, वह कहेंगे—

"ऐ रब! यह दर्जे हमको किस काम के बदले में अता फ़रमाये हैं?"

इरशाद होगा कि तुम्हारी औलाद की दुआओं से और ख़ैर-ख़ैरात का सवाब पहुँचाने से।

मरने वाले आह तेरी बेकसी,<br>
बेकसी तुझ पर बरसती है बड़ी।

हसरतें रोती हैं तेरे ढेर पर,<br>
ख़ाक ने तुझको किया ज़ेरो ज़बर।

रेज़ा-रेज़ा हो गया तुर्बत में तू,<br>
हो गयी सब ख़ाक तेरी आरज़ू।

तुझपे क्या गुज़री ख़ुदा जाने वहाँ<br>
क्योंकर पेश आया ख़ुदाये दो जहाँ।

कैसी देखी उसकी पेशी ऐ ग़रीब,<br>
कैसे वाँ जा कर खुले तेरे नसीब।

कुछ तो कह क्या-क्या हुए तुझसे सवाल,<br>
कैसी गुज़री और हुआ क्या तेरा हाल।

# एक वली का ख़्वाब

**एक वली ने ख़्वाब में देखा कि—**

क़ब्रिस्तान की सब क़ब्रें फट गयीं और मुर्दे बाहर निकले बैठे हैं। उन सबके

सामने रोशनी है और मेरे एक पड़ौसी के सामने अंधेरा है। मैंने उससे पूछा कि तेरे सामने रोशनी क्यों नहीं ?

उसने कहा कि इन लोगों की औलाद और अज़ीज़ो अक़ारब इनको ख़ैरात वग़ैरा का सवाब पहुँचाते रहते हैं और खुदा से इनकी बख़्शीश की दुआ करते रहते हैं, इसलिए इनके सामने रोशनी है। और मेरा एक बेटा है, वह मुझको कोई सवाब नहीं पहुँचाता, इसलिए मैं अँधेरे में रहता हूँ। बस मेरी आँख खुल गयी। सुबह को मैंने उसके बेटे से खुवाब बयान कर दिया। उसने बुरे कामों से तौबा की और अपने बाप को सवाब पहुँचाने का वादा किया। कुछ दिनों के बाद फिर मैंने उसी तरह ख़्वाब देखा और उस पड़ौसी के सामने भी रोशनी देखी तो उस पड़ौसी ने कहा कि खुदा आपको जज़ा-ए-ख़ैर दे कि आपकी बरकत से मुझे राहत मिली और क़ब्र के अज़ाब से भी बच गया। अब मेरा बेटा मेरे लिए दुआ भी करता है और ख़ैर-ख़ैरात का सवाब भी पहुँचाता है।

# सवाब पहुँचाने का सवाब

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स क़ब्रों पर गुज़रे और सूरा-ए-फ़ातेहा एक बार और सूर-ए-अखलास ग्यारह बार पढ़कर मुर्दों को बख़्शे तो उनकी गिनती के बराबर बख़्शने वाले को भी सवाब मिलेगा और जो शख़्स सूरा-ए-यासीन पढ़े और मुर्दों को सवाब पहुँचाये तो अल्लाहतआला सूरा-ए-यासीन की बरकत से मुर्दों के अज़ाब में कमी कर देता है और पढ़ने वाले को उन मुर्दों की गिनती के बराबर सवाब देता है। (अज़ बहिश्ती गौहर)

# सवाब पहुँचाने का तरीक़ा

सवाब पहुँचाने का आसान और सही तरीक़ा यह है कि किसी मर्द या औरत ने कोई न कोई नेक काम किया जैसा कि अल्लाह के वास्ते खाना खिलाये या दे दे या अनाज, आटा, रोटी, गोश्त, दाल, नमक, मिर्च या रुपया-पैसा या कपड़ा, मिठाई वग़ैरा दे या नफ़ली इबादत जैसे नमाज़-रोज़ा, हज, कुर्बानी या क़ुर्आन शरीफ़ पढ़ाया, सूरतें पढ़ी या मस्जिद, मदरसा, नहर, कुँआ बनवाया या किसी ग़रीब का क़र्ज़ा उतार दिया या उसके रहने के लिए मकान बनवा दिया या जगह दे दी या ऐसे कामों में चन्दा दिया और अल्लाहतआला से दुआ की कि या अल्लाह ! इस इबादत का या इस नेक काम का और ख़ैरात का सवाब फ़लां बुज़ुर्ग या मेरे वालिदैन को या फ़लां रिश्तेदार भाई-बहिन वग़ैरा को या कुल मुसलमान मर्द और औरतों को पहुँचा दे। बस इतना कहने से सवाब पहुँच जाता है और जो तरीक़े लोगों ने निकाल रखे हैं सब हेला बहाने हैं। बाक़ी सवाब हर तरह से पहुँच जाता

है। जिस तरह भी कोई पहुँचाये और सवाब पहुँचाने के लिए कोई वक़्त या जगह मुक़र्रर नहीं है। जब मौक़ा मिले, क़ब्रिस्तान हो या घर हो या सफ़र हो। चलते-फ़िरते, लेटते-बैठते कुर्‌आन शरीफ़ या सूरतें पढ़कर या सुबहान अल्लाह या कलिमा पढ़कर या कपड़ा, रुपया वग़ैरा देकर सवाब पहुँचा सकते हैं।

**नोट—** हकीम-उल-उम्मत हज़रत थानवी (रह०) से दरियाफ़्त किया गया कि हज़रत अगर एक सूरत पढ़कर दस-दस मुर्दों को बख़्शे तो क्या हर मुर्दे को पूरी-पूरी सूरत का सवाब मिलेगा? आपने फ़रमाया कि मेरी तहक़ीक़ यही है कि हर मुर्दे को पूरी-पूरी सूरत का सवाब मिलेगा।

## क़ब्रों पर जाना सुन्नत है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जो शख़्स अपने भाई मुसलमान की क़ब्र पर जाता है, जिसको दुनिया में जानता था और उसको सलाम करता है तो वह क़ब्र वाला उसको पहचान लेता है और उसके सलाम का जवाब देता है। और फ़रमाया है कि तुम अपने मुर्दों को नेक लोगों में दफ़न किया करो। क्योंकि बुरे पड़ौसी से मुर्दों को तकलीफ़ पहुँचती है। काफ़िरों और फ़ासिक़ों पर जो क़ब्र का अज़ाब होता है तो उनके रोने-चिल्लाने से नेक लोगों को भी तकलीफ़ होती है जैसे कि दुनिया में बुरे पड़ौसी से तकलीफ़ होती है। क़ब्रों पर जाकर पहले इस तरह सलाम करें—

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ ط
يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ ط

और काबे की तरफ़ पुश्त करके मैय्यत के मुँह या सीने के सामने खड़ा होकर या बैठकर कुर्‌आन मजीद से जो कुछ हो सके, पढ़कर बख़्शे।

हदीस शरीफ़ में है कि—

जो शख़्स हर जुमे को बाप की या माँ की क़ब्र पर जाया करे तो उसकी बख़्शीश हो जायेगी और वह अपने वालिदैन के आमालनामे में ताबेदार और ख़िदमतगुज़ार लिखा जायेगा। (रिवातुलबहक़ी)

मगर क़ब्र का तवाफ़ करना या उसको चूमना दरुस्त नहीं, चाहे नबी की क़ब्र हो या वली की। आजकल नावाक़िफ़ लोग वलियों की क़ब्रों को सजदा करने लगे हैं। अल्लाह व रसूल और वली ऐसे लोगों से सख़्त नाराज़ होते हैं। इस बुरे तरीक़े की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।

काम का अपने अब तू मुख़तार है,
बात हक़ कहनी हमारा कार है।

# मैय्यत को गुस्ल और क़फन देने का सवाब

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जो शख़्स किसी मैय्यत को बेउजरत अल्लाह के वास्ते गुस्ल दे तो गुनाहों से ऐसा पाक-साफ़ हो जाता है जैसा कि अपनी माँ के पेट से बेगुनाह पैदा हुआ था और जो मर्द या औरत अल्लाह के वास्ते किसी मैय्यत के कफ़न पहनाये तो अल्लाहतआला उसको जन्नत के रेशमी कपड़े पहनायेगा।

**मसला—** मैय्यत को उजरत लेकर गुस्ल देना दरुस्त है मगर वैसा सवाब नहीं मिलेगा और जो कोई अल्लाह के वास्ते क़ब्र बनवादे या बेउजरत क़ब्र खोदे और मैय्यत को उसमें दफ़न कर दे तो उसको क़यामत तक ऐसा सवाब मिलता रहेगा जैसा कि अल्लाह के वास्ते किसी ग़रीब आदमी को रहने का मकान बनवा दिया या सराय वग़ैरा बनवा दी तो सदक़ा जारिया का सवाब मिला करेगा।

**मसला—** उजरत लेकर क़ब्र तैयार करना जायज़ है, कोई गुनाह नहीं। आख़िर पेट भी तो भरना ज़रूरी है। मगर सवाब वैसा नहीं मिलता। आजकल बाज़ लोग मैय्यत के काम से डरते हैं। ऐसा न होना चाहिए बल्कि मैय्यत की कोई ख़िदमत करके सवाब हासिल किया करें।

# मैय्यत की पेशानी को चूमना

गुस्ल और कफ़न के बाद मैय्यत की सूरत देखना और उसकी पेशानी को चूमना दरुस्त है।

हज़रत आइशा (रज़ी०) से रिवायत है कि—

जब उस्मान बिन मज़ऊन सहाबी का इन्तक़ाल हुआ तो रसूल अल्लाह (स०) ने उनकी पेशानी पर बोसा दिया था। (तिरमिज़ीशरीफ़)

# क़ब्र के अज़ाब से बचाने वाला वज़ीफ़ा

शहनशाहे दो आलम हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

जो मर्द या औरत रात को सूरा-ए-मुल्क हमेशा पढ़ा करेगा, अल्लाहतआला उसको बरकत से उसको क़ब्र के अज़ाब से बचायेगा। और हुज़ूर ने अपने दोस्तों को इरशाद फ़रमाया कि सूरा-ए-मुल्क को तुम खुद भी याद करो और पढ़ो और अपने घरवालों को और पड़ौसियों को भी याद करा दो कि वह भी पढ़ा करें क्योंकि क़यामत के रोज़ अपने पढ़ने वाले की शिफ़ाअत करेगी। (तिरमिज़ी)

इशा की नमाज़ के बाद या पहले इस सूरत का पढ़ना अच्छा है। पेशाब

की नापाकी और छींटों से न बचना भी क़ब्र के अज़ाबों में फँसाता है। इससे भी बचना लाज़िम है।

## जन्नत में महल तैयार कराने का वज़ीफ़ा

रहमते आलम हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

जो मर्द या औरत दस बार सूरा-ए-अख़लास पढ़े उसके लिए जन्नत में एक महल तैयार हो जाता है और चौबीस दफ़ा पढ़े तो दो महल और जो तीस दफ़ा पढ़े तो तीन महल उसके लिए तैयार हो जाते हैं। इसी तरह हर दस पर एक महल तैयार हो जाता है। हज़रत उमर (रज़ी०) ने अर्ज़ की—

या रसूल अल्लाह ! खुदा की क़सम फिर तो हम जन्नत में बहुत से महल बनवा लेंगे। यानी सूरा-ए-अख़लास बहुत पढ़ा करेंगे। हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

अल्लाहतआला बहुत बड़ा देने वाला है। उसके यहाँ क्या कमी है ! चाहे जितनी पढ़ो और जितने चाहे महल बनवालो। (दारमी)

## दरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब

इरशाद फ़रमाया अल्लाहतआला ने कि—

बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते दरूद भेजते हैं ऊपर नबी के। ऐ ईमान वालो ! तुम भी दरूद और सलाम भेजते रहो ऊपर नबी के।

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो और बहिनों ! सबसे बड़ा सवाब यानी बदला दरूद शरीफ़ पढ़ने का यह है कि—

जब कोई मर्द या औरत दरूद पढ़ता है तो फ़रिश्ते खुदा के हुक्म से उसी वक़्त हुज़ूर (स०) की ख़िदमत में पहुँचा देते हैं। आप उस दरूद पढ़ने वाले से बहुत खुश होते हैं। फिर आपका और अल्लाहतआला का खुश होना दोनों जहां की नैमतों से बढ़कर है।

सुबहान अल्लाह ! क्या शाने अज़ीम है आपकी कि अल्लाहतआला और उसके फ़रिश्ते और हर जड़ी-बूटी, फल-फूल और बर्ग व शजर आप पर दरूद पढ़ते रहते हैं और अल्लाहतआला के इरशाद के मुवाफ़िक़े का नक्श नज़र आता है कि ऐ हमारे महबूब ! हमने आपका ज़िक्र बुलन्द किया है। सुबहान अल्लाह !

नाम लेवा है तुम्हारा शाहे वाला फूल-फूल,<br>
तुम पे मायल हर कली, गुंचा-गुंचा, फूल-फूल।

आदमी क्या हुरो गिल्मां कुल ज़माना हो गया,<br>
बन्दा-ए-हक़ ख़ादिमे सरकार वाला फूल-फूल।

रहता है ज़िक्र मुक़द्दस में आपके लैलो नहार,
पत्ता-पत्ता, बूटा-बूटा, गुंचा-गुंजा, फूल-फूल।

या मौहम्मद आपका गुलशन में जब होता गुज़र,
शौक़ से बर्गों शजर करता है सजदा फूल-फूल।

बुलबुलें जिस वक़्त तेरा ज़िक्र करती हैं हुज़ूर,
बाग़ में सल्लेअला का है ग़ुल मचाता फूल-फूल।

आदमी पर हसर क्या है कहता है गुलज़ार में,
पत्ता-पत्ता नामे अहमद मौला-मौला फूल-फूल।

हुज़ूर पुरनूर (स०) का इरशाद है कि—

जो शख़्स मर्द हो या औरत, मुझ पर एक बार दरूद पढ़ता है तो अल्लाहतआला उस पर दस रहमतें नाज़िल करता है और दस गुनाह उसके माफ़ करता है, और उसके दर्जे बुलन्द करता है। और उसके आमालनामे में दस नेकियाँ लिखी जाती हैं, और क़यामत के दिन सबसे ज़्यादा मेरे क़रीब वह होगा जो मुझ पर दरूद ज़्यादा भेजेगा। और जिब्राईल (अ० स०) ने मुझको खुदा का यह पैगाम पहुँचाया है कि जो मर्द या औरत आप पर दरूद भेजेगा, मैं उस पर दस रहमतें भेजूँगा और जो कोई आप पर सलाम भेजेगा मैं उस पर दस दफ़ा सलाम भेजूँगा।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जिस दरूद में सलाम भी हो तो उसके एक बार पढ़ने से बीस रहमतें नाज़िल होंगी। इसलिए यह दरूद शरीफ़ खूब है। इसमें सलाम है और बरकत का सीग़ा भी है और मुख़तसिर भी है।

**अल्लाह हुमम सल्लि अला सैय्यदना मौहम्मदिंव व अला आलि सैय्यदना मौहम्मदिवं व बारिका व सल्लम**

**मसला—** बेवज़ू दरूद शरीफ़ पढ़ना दरुस्त है और वज़ू हो तो नूर अला नूर है। बल्कि मुसलमान को चाहिए कि हर वक़्त वज़ू से रहे।

हज़रत शाह निज़ामुद्दीन (रह०) देहलवी को शहर के किनारे पर मग़रिब का वक़्त हो गया। आप एक वीरान-सी मस्जिद में तशरीफ़ ले गये और इसी इन्तज़ार में थे कि कोई ग़ाज़ी आये तो जमाअत से नमाज़ पढ़ूँ कि एक गवार-सा बूढ़ा आया। आपने फ़रमाया कि बड़े मिया वज़ू जल्दी कर लो। उन्होंने फ़रमाया कि मियाँ निज़ामुद्दीन ! मुसलमान कभी बेवज़ू भी रहता है? मुझे वज़ू है।

यह जवाब सुनकर हज़रत सुल्तान जी ने उनको ग़ौर से देखा तो वह बूढ़े वली निकले। फिर दोनों हज़रात ने जमाअत से नमाज़ पढ़ी। क्योंकि दो की जमाअत हो जाती है।

ऐ अल्लाह ! उन हज़रात की बरकत से हमें भी हर वक़्त वज़ू से रहने की

तौफ़ीक़ अता फ़रमा।

हज़रत उमर (रज़ी०) ने फ़रमाया कि—

दुआ ज़मीन व आसमान के दर्मियान रुकी रहती है। जब तक दरूद न पढ़ी जाये क़बूल नहीं होती।

हुज़ूर-ए-अक़दस (स०) की ख़िदमत में किसी ने अर्ज़ की कि या रसूल अल्लाह ! मैं आप पर दरूद ज़्यादा पढ़ना चाहता हूँ। फ़रमाइए कितना पढ़ा करूं। फ़रमाया जितना चाहो पढ़ो। फिर अर्ज़ की रसूल अल्लाह ! तीन हिस्से वज़ीफ़ा और एक हिस्सा दरूद पढ़ा करो ? फ़रमाया जिस क़दर चाहो, पढ़ो। उन्होंने फिर अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! निस्फ़ दूसरे वज़ीफ़ा और निस्फ़ दरूद पढ़ा करूँ ? आपने फ़रमाया, जितना दिल चाहे पढ़ो। फिर उन्होंने कहा, या रसूल अल्लाह ! मैं तो सारा वज़ीफ़ा दरूद ही का पढ़ा करूँगा। हुज़ूर ने फ़रमाया, अगर तुम ऐसा करोगे तो इसकी बरकत से तुम्हारे दुनिया और आख़िरत के सब रंजो ग़म दूर हो जायेंगे। (तिरमिज़ी शरीफ़)—

आसान हर एक होती है मुश्किल दरूद से,
मक़सद दिलों के होते हैं हासिल दरूद से।

नाक़िस अगर पढ़े तो हो कामिल दरूद से,
दिल सूए मौहम्मद होता है मायल दरूद से।

हर रंज का ईलाज है हर दर्द की दवा,
हर तरह की शिफ़ा होती है हासिल दरूद से।

लिखा है कि क़यामत के रोज़ जब किसी मुसलमान की नेकिया वज़न में कम होंगी तो शफ़ीह-ए-महशर सैय्यदुलबशर शहनशाहे दो आलम (स०) एक पर्चा निकाल कर मीज़ान यानी तराज़ू के पलड़े में रख देंगे। उसकी बरकत से नेकियों का पलड़ा भारी हो जायेगा। वह मुसलमान अर्ज़ करेगा कि आप पर मेरे माँ-बाप क़ुर्बान हों। आप कौन हैं ? आपकी सूरत और आदत कैसी अच्छी और प्यारी है। आप फ़रमायेंगे "मैं तेरा नबी हूँ और इस पर्चे में वह दरूद है जो तूने दुनिया में मुझ पर भेजा था। अब मैंने तेरी ज़रूरत के वक़्त उसको अदा कर दिया। (ज़ादअलसईद अज़ हज़रत मौलाना थानवी (रह०)

सुबहान अल्लाह ! दरूद शरीफ़ भी क्या अज़ीमउश्शान रुतबा रखती है। कोई है, आशिक-ए-रसूल जो इसको अपना वज़ीफ़ा बनाये ?

नक़ल है एक रोज़ अबूजहल लाईन,
दोस्तों में अपने बैठा था कहीं।

एक सायल भी कहीं से आ गया,
देखकर अबूजहल को कहने लगा।

दीनो दुनिया में भला हो आपका,
कीजिये ख़ैरात कुछ बहरे खुदा।

हँसके यूँ कहने लगा वह बेहया,
साईं जी है हमारे पास क्या।

यां तो हर एक आप ही मौहताज है,
कल नहीं खाने को है गर आज है।

जाइए दर पर अली के साईं जी,
आरज़ू बर आयेगी वाँ आपकी।

अल ग़रज़ पहुचा वहाँ वह बेनवा,
दी दरे दौलत पे हज़रत के सदा।

बाहर आये सुनते ही शेरे खुदा,
देख के सायल उन्हें कहने लगा।

नाम सुनकर दर पे आया है फ़क़ीर,
हम गरीबों की ख़बर लो या अमीर।

माले दुनिया रखते थे कब शाहे दीन,
फ़िक्रे सायल में हुए अन्दोहगीं।

उसकी महरूमी का था रंजेमलाल,
दफ़अतन आया वहीं दिल में ख़याल।

कीमया है ख़ाकसारों की दरूद,
ज़रकी कुछ हाजित नहीं गर होवे दरूद।

बादे अज़ां कुछ पत्थरियों को उठा,
दम किया उन पर दरूदे मुस्तफ़ा।

पत्थरियां सारी गौहर बन गये,
शाह ने वह सब गदा को दे दिये।

मोतियों से उसका दामन भर गया,
आया था मुफ़लिस तवंगर कर दिया।

ले गया बाज़ार में उनको गदा,
जौहरी ने देख के उससे कहा।

चोर भी थोड़े से हो साईं जी,
बोलो किसके ये हुरे हैं क़ीमती।

सुन के सायल ने कहा ऐ बेख़बर,
बख़्शे हैं हज़रत अली ने यह गौहर।

कह सुनाया बाद यह सब माजरा,
जौहरी सुनकर के शशदर रह गया।

फिर तो सारे शहर में हर चार सू,
रह गई थी बस यही एक गुफ़्तगू।

यह सुनी जिसने करामत मोमिनों,
हो गया काफिर मुसलमां बिल्यक़ीं।

दौलते दीं चाहते हो गर फ़ज़ूद,
क्यों नही पढ़ते हो कसरत से दरूद।

## भीख माँगने की सज़ा

हज़रत अब्दुल्ला इब्ने उमर (रज़ी०) से रिवायत है कि—

रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि जो शख़्स मर्द हो या औरत, हमेशा लोगों से भीख माँगता रहेगा तो वह क़यामत के रोज़ इस हाल में होगा कि उसके मुँह पर गोश्त की बोटी न होगी, उसका चेहरा उघड़ा हुआ होगा। और जो शख़्स सवाल करने से बचता रहे तो अल्लाहतआला उसको माँगने से बचाता है। और जो शख़्स सवाब न करे और अपने बेपरवाही ज़ाहिर करे तो अल्लाहतआला उसको लोगों से बेपरवाह कर देता है। (बुखारी व मुस्लिम)

और जो शख़्स भूखा हो और तंगदस्त हो, लोगों से अपनी हालत छुपाये वह अल्लाहतआला का प्यारा दोस्त हो जाता है और अल्लाहतआला के ज़िम्मे उसका यह हक़ हो जाता है कि उसको हलाल तरीक़े से एक साल तक की रोज़ी का इन्तज़ाम कर दे। और अल्लाहतआला उस बन्दे को बहुत पसन्द करता है जो ग़रीब हो, ताबेदार हो, अयालदार हो। (इब्नेमाजा)

**फ़ायदा—** माँगने का पेशा अख़्तियार करना बेशर्मी का तरीक़ा है, इससे बचना चाहिए।

## खाना खाने के आदाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जब कोई खाना खा चुके तो अपना हाथ किसी चीज़ से न पौछे, न धोये जब तक हाथ को चाट न ले। (बुख़ारी)

**फ़ायदा—** खाना खा लेने के बाद उँगलियाँ न चाटना मग़रूर लोगों की आदत

है और बेबरकती का सबब है और चाट लेने से रिज़्क़ में बरकत होती है।

**खाना खाने के बारे में चार बातें फ़र्ज़ हैं—**

1. रिज़्क़ हलाल खाना 2. उसको ख़ुदा का अतिया समझना
3. उस पर ख़ुश होना 4. उसको खाकर गुनाह न करना।

**और पाँच बातें सुन्नत हैं —**

1. बिस्मिल्लाह पढ़ना, 2. हाथों का धोना (खाना खाने से पहले और बाद में भी), 3. खाना खाने के बाद अलहम्दो कहना, 4. दाहिने हाथ से खाना, 5. उकड़ू बैठना या दाहिनी रान उठाकर बायीं पर बैठना।

**और चार बातें मुस्तहब हैं—**

1. अपने आगे से खाना, 2. लुक़्मा छोटा बनाना, 3. ख़ूब चबा कर निगलना, 4. लोग खाते हों तो उनको न देखना।

**और दो बातें मकरूह हैं—**

1. खाने को सूँघना, 2. फूँक मारना।

# आख़िरी ज़माने के मुसलमानों की तारीफ़

मुस्लिम शरीफ़ में है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि मेरी उम्मत में यानी मुसलमानों में मुझसे ज़्यादा मुहब्बत रखने वाले वह लोग होंगे जो मेरी वफ़ात के बाद पैदा होंगे और उनकी यह ख़ुवाहिश होगी कि अगर वह मुझको देख लें तो अपने बाल-बच्चों को भी मुझ पर क़ुर्बान कर दें।

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि हुज़ूर (स०) ने अपने असहाबों से दरियाफ़्त फ़रमाया कि तुम लोग ईमान की वजह से मख़लूक़ में किसको पसन्द करते हो। असहाबों ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! फ़रिश्तों के ईमान को अच्छा जानते हैं।

आपने फ़रमाया कि फ़रिश्तों का ईमान तो अच्छा है ही, इसलिए कि वे अपने रब के क़रीब हैं।

फिर असहाबों ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! फ़रिश्तों के बाद हम अम्बियां (अ० -स०) का ईमान कामिल समझते हैं। आपने फ़रमाया कि अम्बिया का ईमान लाना तो ज़ाहिर है कि उन पर वही आती है।

फिर असहाबों ने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! नबियों के बाद हम आपके असहाबों का ईमान अच्छा समझते हैं। आपने फ़रमाया कि असाहबों का ईमान लाना भी ज़ाहिर है। इसलिए कि मैं असहाबों में मौजूद हूँ और उन्होंने मेरे क़ौल व फ़ेल को देखा। मेरे मौजज़े देखे जब ईमान लाये।

मेरे नज़दीक ईमान की मज़बूती और कमाल के लिहाज़ से वह लोग सबसे

अच्छे हैं जो मेरे बाद होंगे। वह खुदा की किताब कुर्आन-ए-करीम को पायेंगे और इसमें जो अहकाम हैं उन पर ईमान लायेंगे। बस खुशख़बरी है उस शख़्स को कि जो मुझे देखकर ईमान लाया और साथ खुशख़बरी है उस शख़्स को जिसने मुझको नहीं देखा और मुझ पर ईमान लाया।

सुबहान अल्लाह ! रसूल-ए-खुदा हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) ने आख़री ज़माने के मुसलमानों की कितनी बड़ी तारीफ़ फ़रमायी है। ऐ आजकल के मुसलमानों ! तुम अपने रुतबे को पहचानों और सच्चे दिल से अपने रसूल-ए-पाक की ताबेदरी करो।

# अल्लाहतआला से डरने की बुज़ुर्गी

## रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

एक आदमी ने कभी कोई नेक काम नहीं किया था। उसने अपने घरवालों से कहा कि जब मैं मर जाऊँ तो मुझको जलाकर मेरी आधी राख जंगल में बिखेर देना और आधी दरिया में बहा देना। खुदा की क़सम अगर खुदा ने मुझको पकड़ लिया तो मुझको ऐसी सज़ा देगा कि तमाम जहान में ऐसी सज़ा किसी को न मिली होगी। फिर जब वह आदमी मर गया तो उसके घरवालों ने उसके कहने के मुवाफ़िक़ किया। अल्लाहतआला ने जंगल को और दरिया को हुक्म दिया कि उस आदमी की सब राख जमा कर दो। दोनों ने जमा कर दी। फिर अल्लाह- तआला ने उसको ज़िन्दा करके पूछा कि तूने ऐसा काम क्यों किया था? उसने कहा ऐ मेरे रब ! तू ख़ूब जानता है कि मैंने तेरे डर से ऐसा किया था। अल्लाह- तआला ने उसे बख़्श दिया। (बुख़ारी)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि अल्लाहतआला से डरना और अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा होना बड़ी नैमत है, मगर अल्लाहतआला के डर से आग में जलना या जलाना दरुस्त नहीं क्योंकि अल्लाहतआला को हर तरह की कुदरत है। कोई चीज़ उसके क़ब्ज़े से बाहर नहीं। हाँ अल्लाहतआला के सामने शर्मिंदा होना, गुनाहों की माफ़ी माँगना, तौबा करना बड़े काम की बात है। अल्लाहतआला माफ़ कर देता है। बरी कर देता है।

# दुनिया की ग़रज़ से किसी की तारीफ़ करना

## रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

तारीफ़ करने वालों के मुँहों पर ख़ाक डालो। (मुस्लिम शरीफ़)

**फ़ायदा—** बाज़ तारीफ़ों में झूठ होता है तो इसमें अपना भी नुकसान है और जिसकी तारीफ़ की है उसका भी नुक़सान है कि वह अपनी तारीफ़ सुनकर

इतरायेगा। अपने को अच्छा और बड़ा समझेगा। इस हदीस शरीफ़ में उस तारीफ़ की बुराई है जो दुनिया की ग़रज़ और किसी लालच की वजह से की जावे और किसी दीनदार, परहेज़गार की सच्ची तारीफ़ किसी दुनिया के लालच और ग़रज़ से की जावे तो यह दरुस्त है बल्कि सवाब मिलता है कि लोग उसकी अच्छी आदतें मालूम करके अच्छी आदतें अख़्तियार करेंगे।

## ज़ालिम की ताज़ीम करना दरुस्त है या नहीं

एक शख़्स ने हुज़ूर (स०) के पास आने की इजाज़त माँगी। आपने फ़रमाया कि उसको आने दो कि यह अपने लोगों में बुरा आदमी है। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि हज़रत आइशा (रज़ी०) फ़रमाती है कि वह आदमी जब आपके पास आकर बैठा तो आपने उससे नर्मी और ख़ुशी के साथ बात की। मैंने अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! आपने तो इसको बुरा कहा था। मगर जब वह आ गया तो आपने उससे नर्मी और ख़ुशी के साथ कलाम किया। आपने फ़रमाया, ऐ आइशा ! तुमने मुझको बदअख़लाक़ कब देखा। देखा ख़ुदा की मख़लूक़ में सबसे बुरा ख़ुदा के नज़दीक कयामत में वह आदमी होगा कि जिसकी बुरी आदत और ज़ुल्म की वजह से डर कर लोग उसकी ताज़ीम करेंगे।

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि ज़ालिम और बुरी आदत के आदमी की ताज़ीम और इज़्ज़त इसलिए करना कि उसकी शरारत और अदावत से बचूँ, तो यह दरुस्त है। इसी तरह ज़ालिम और फ़ासिक़ की ग़ीबत करना भी दरुस्त है ताकि ऐसी बुरी आदत के आदमी का हाल सुनकर लोग नसीहत पकड़ें और उसकी बदी से अपना बचाव करें।

## शरह के ख़िलाफ़ कामों में किसी का कहना न मानो

इरशाद फ़रमाया रसूलअल्लाह (स०) ने कि—

अगर तुम उसमें पड़ जाते तो क़यामत तक उसमें पड़े रहते। यानी उस आग में जिसको अब्दुल्ला बिन हुज़ाफ़ा सहमी ने जलाया था जो कि तुम पर एक अफ़सर अल्लाह व रसूल ने मुक़र्रर किया था। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का यह मतलब है कि अब्दुल्ला बिन हुज़ाफ़ा को रसूल अल्लाह (स०) ने एक फ़ौज का अफ़सर बनाकर किसी लड़ाई में भेजा और फ़ौजियों को हुक्म दिया कि जो तुम्हारा अफ़सर कहे वही काम करना।

अब्दुल्ला को एक दफ़ा किसी बात पर गुस्सा आया तो उन्होंने बहुत-सी आग जलाकर फ़ौजियों को हुक्म दिया कि इस आग में बढ़ जाओ, और मेरा कहना मानो, क्योंकि अल्लाह के रसूल ने तुमको हुक्म दिया है कि मेरी ताबेदारी करो। फ़ौजियों ने कहा कि हम रसूल-ए-पाक (स०) पर इसीलिए ईमान लाये हैं कि दोज़ख़ की आग से बचें। हम इस आग में हरगिज़ न पड़ेंगे। इस काम में हम तुम्हारा कहना नहीं मानते।

जब हज़ूर (स०) को यह क़िस्सा मालूम हुआ, तब यह फ़रमाया कि तुम लोगों ने ख़ूब किया कि ऐसी शरह के ख़िलाफ़ बात में अपने अफ़सर का कहना न माना। इस हदीस शरीफ़ से हमेशा के लिए यह मस्अला साबित हो गया कि हाकिम या माँ-बाप या पीर या उस्ताद कोई हो शरह के ख़िलाफ़ कामों में उनका कहना मानना दरुस्त नहीं, फिर बिरादरी वग़ैरा और यार दोस्त किस शुमार में हुए।

# गिरगिट को मारने का सबाब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जो शख़्स गिरगिट को एक ही वार में मार डाले उसको सौ नेकियाँ मिलती हैं और यह भी इरशाद फ़रमाया कि जब हज़रत इब्राहीम (अ० ग०) को आग में डाला गया तो गिरगिट उस आग में फूँक मार कर तेज़ कर रहा था। (मुस्लिम व बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** इसी तरह छपकली वग़ैरा मूज़ी जानवरों को मार देना चाहिए।

# तकलीफ़ ख़ुदा की रहमत है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जिसके साथ अल्लाहतआला बेहतराई करना चाहता है तो उसको किसी तकलीफ़ में डाल देता है। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि मुसलमानों को चाहिए कि तकलीफ़ में ज़्यादा परेशान न हों। तकलीफ़ को ख़ुदा का ग़ज़ब न समझें बल्कि उसको ख़ुदा की रहमत समझें क्योंकि तकलीफ़ मे गुनाह माफ़ होते हैं, दर्जे बुलन्द होते हैं, ख़ुदा की मारफ़त बढ़ती है। ख़ुदा याद आता है, आजिज़ी पैदा होती है और बड़ाई दिल से निकल जाती है। ऐशो-आराम, माल व दौलत में इन्सान ख़ुदा को भूल जाता है। अपने आपको बड़ा समझने लगता है। अगर तकलीफ़ ख़ुदा की रहमत न होती ते वह नबियों को और वलियों को तकलीफ में न डालता।

ख़ूब याद रखो कि सबसे बड़ी तकलीफ़ की बात यह है कि इन्सान ख़ुदा को भूल जाये और उसके हुक्मों से बेपरवाह हो जाये कि इसका अंजाम बहुत बुरा

है। बड़ी तकलीफ़ उठानी पड़ेगी।

## लोगों को आराम पहुँचाने का सवाब

इरशाद फ़रमाया रसूलअल्लाह (स०) ने कि—

एक शख़्स चला जा रहा था। रास्ते में उसने काँटो की टहनी देखी। उसने उसको रास्ते से अलग कर दिया। अल्लाहतआला को यह नेक काम बहुत पसन्द आया और उस शख़्स को बख़्श दिया। (बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि—

लोगों को आराम और नफ़ा पहुँचाना अल्लाहतआला को बहुत पसन्द है और यह भी मालूम हुआ कि थोड़ा-सा नेक काम भी जो खुदा की रज़ा के लिए हो बख़्शीश का ज़रिया बन जाता है। अफ़सोस! आजकल यह मर्ज़ बहुत फैल रहा है कि अपने नफ़े के लिए लोगों के रास्ते रोके जाते हैं। कहीं रास्ते में रहड़ी और गाड़ी खड़ी कर दी, कहीं कोई जानवर बाँध दिया, कहीं कुत्ता खुला छोड़ दिया वग़ैरा। इससे लोगों को तकलीफ़ पहुँचती है।

## किसी के घर में झाँकना हराम है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

आने की इजाज़त माँगना तो नज़र ही की वजह से मुकर्रर हुआ है। (बुख़ारी)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि एक शख़्स हज़ूर-ए-अकरम (स०) के घर में झाँकना चाहता था। आपने उसको डाँटा और फ़रमाया कि अगर मैं तुझको झांकते हुए देखता तो तेरी आँखे फोड़ डालता क्योंकि किसी के घर में झाँकना-ताकना मना है। घर में आने की इजाज़त माँगना इसलिए मुक़र्रर हुआ है कि आदमी की नज़र ग़ैर जगह न पड़े और जब तूने झाँका तो इजाज़त माँगने का क्या फ़ायदा हुआ?

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि किसी के घर में झाँकना-ताकना हराम है। आजकल यह मसला न जानने की वजह से लोग ऐसा करते हैं। इससे बचना चाहिए।

## सब्र करने का बदला जन्नत है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

अल्लाहतआला फ़रमाता है कि मेरे ईमानदार बन्दे के लिए जन्नत के सिवा और कोई बदला नहीं कि मैंने उसके दुनिया के अज़ीज़ो में से कोई उसका अज़ीज़

ले लिया और उसने सवाब समझकर उस पर सब्र किया। (बुख़ारी)

**फ़ायदा—** यानी ईमान वाले बन्दे का कोई प्यारा जैसे माँ-बाप, बेटा-बेटी, बहन-भाई वग़ैरा मर गया और उसने अल्लाहतआला का हुक्म समझकर सब्र किया तो अल्लाहतआला उसके बदले में उसको जन्नत देगा।

## जन्नत ताबेदारी से मिलती है

हज़रत अबूहरैरा (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

जन्नत रद्द की गयी और भर दी गयी मेहनत और तकलीफ़ों से और दोज़ख़ भर दी गयी दिल की ख़्वाहिशों और मज़ों से। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** यानी जन्नत बग़ैर इबादत और ताबेदारी के नहीं मिलती। इबादत और ताबेदरी बग़ैर मेहनत और तकलीफ़ उठाये हासिल नहीं होती और दुनिया के मज़ों और बुरे कामो का अंजाम दोज़ख़ है।

बहरे ग़फलत यह तेरी हस्ती नहीं,
देख जन्नत इस क़दर सस्ती नहीं।

## जिस हाल में मरेगा उसी हाल में उठेगा

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

क़यामत में हर एक आदमी उसी हाल में उठाया जायेगा कि जिस हाल में वह मरा होगा। (मुस्लिम)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि जो आदमी ईमान के साथ मरा है तो ईमान ही के साथ क़यामत में उठेगा। अगर बेईमान मरा है तो बेईमान ही उठेगा। इसलिए हर शख़्स को चाहिए कि हुज़ूर (स०) के तरीक़े को पसन्द करे और उसी पर चले। यानी अपना चाल-चलन, रंग-ढंग, सूरत व सीरत हुज़ूर (स०) के फ़रमान-ए-वाला के मुवाफ़िक़ बनाये और उसी हाल में दुनिया से जाये। काफ़िरों और फ़ासिक़ों की-सी सूरत और आदतें अख़्तियार न करे।

## जन्नत और दोज़ख़ में जाने का सबब

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जो अल्लाहतआला से मिला यानी मरते दम तक उसका किसी चीज़ को शरीक न जाना वह जन्नत में जावेगा और जो मरते वक़्त तक किसी चीज़ को

अल्लाहतआला का शरीक जानता रहा, वह दोज़ख़ में जायेगा। (मुस्लिम)

**फ़ायदा—** मतलब यह है कि जो शख़्स मर्द हो या औरत, अल्लाहतआला को मालिक और हाजित रवा समझता रहा और किसी हाल में भी किसी मख़लूक को उसका शरीक न बनाया, यानी अल्लाह की-सी सिफ़त या कुदरत या अख़्तियार किसी में न समझा, बस वह जन्नती होगा और जो अल्लाहतआला के सिवा किसी और को भी नफ़ा और नुक़सान का मालिक मानता रहा वह मुशरिक है, दोज़ख़ी है।

रहमत-ए-आलम (स०) से सवाल किया गया कि या रसूल अल्लाह! जन्नत और दोज़ख़ में जाने का क्या सबब है? तब आपने यह हदीस फ़रमायी।

## जिस शख़्स में शर्म नहीं वह जानवर है

इरशाद फ़रमाया रसूल-ए-ख़ुदा (स०) ने कि—

पहले नबियों के कलाम से लोगों को जो बातें मालूम हुई हैं उनमें एक बात यह भी है कि जब तुझको शर्म न रहे, न ख़ुदा से, न लोगों से, फिर तू जानवर है, जो तेरे दिल में आवे वह कर। (बुख़ारी शरीफ़)

इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि—

शर्म व हया अम्बिया (अ० स०) के दीन में पसन्द है। क्योंकि आदमी की तबियत बुरे कामों के करने को चाहती है मगर शर्म की वजह से रुक जाता है। जब शर्म उड़ गयी तो आदमी, आदमी न रहा, जानवर हो गया। फिर जो चाहे करे। इज़्ज़त और शराफ़त उसकी लुट गयी। ईमान में उसके फ़र्क़ आ गया।

## मरे हुए जानवर की ख़ाल निकाल लो

इरशाद फ़रमाया रसूल-ए-ख़ुदा (स०) ने कि—

मुर्दे का तो बस खाना ही हराम है। (बुख़ारी शरीफ़)

**फ़ायदा—** मतलब यह है कि हुज़ूर (स०) ने एक मरी हुई बकरी देखी। मरने के बाद उसको फेंक दिया गया था। उस वक़्त आपने फ़रमाया, इसकी ख़ाल क्यों नहीं निकाली और मसालह से क्यों पाक न कर ली कि तुम्हारे काम आती? लोगों ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह! यह तो मरी हुई है। आपने फ़रमाया कि—

"बेशक मरी हुई का खाना हराम है। ख़ाल निकाल लेना दरुस्त है।"

इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि मरे हुए जानवर की हड्डी, दाँत, बाल, पट्ठा और सींग वग़ैरा निकाल लेना और इस्तेमाल करना दरुस्त है।

## नबी मीरास का माल नहीं छोड़ा करते

हज़रत अबूबक्र सिद्दीक़, हज़रत उमर फ़ारूक़, हज़रत अली मुर्तज़ा और हज़रत आइशा (रज़ी०) फ़रमाते हैं कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

हम पैग़म्बर लोग मीरास नहीं छोड़ा करते। हमारे माल का कोई वारिस नहीं। जो हमने छोड़ा ख़ुदा की राह में ख़ैरात है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा—** हज़रत फ़ातमा (रज़ी०) ने हुज़ूर (स०) की वफ़ात के बाद किसी को हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ के पास भेजा कि मेरे बाप के छोड़े हुए माल में से मुझे हिस्सा दें, तब सिद्दीक़ अकबर ने यह हदीस शरीफ़ बयान फ़रमायी कि नबी के माल में किसी की मीरास नहीं होती, बल्कि ख़ुदा की राह में ख़ैरात होती है। इसलिए मैं वही करूँगा जो रसूल अल्लाह (स०) ने इरशाद फ़रमाया है। अपनी तरफ़ से कोई कमी या ज़्यादती न करूँगा। और सच्ची बात तो यह है कि हज़रत फ़ातमा (अ० स०) को यह मसला मालूम नहीं था कि नबी के माल में मीरास नहीं होती। इसलिए हिस्सा तलब किया और जब आपको असहाबों से हुज़ूर (स०) का इरशाद मालूम हुआ तो फिर चुप हो गयीं और हदीस शरीफ़ के बयान करने में हज़रत अली (अ० स०) भी शामिल हैं। अब भी कोई असहाबों पर बदगुमानी करे तो अल्लाह जाने या वह जाने और कोई ईलाज नहीं हो सकता।

## दीन में नई बात निकालने वाला मरदूद है

इरशाद फ़रमाया रसूल अल्लाह (स०) ने कि—

जो आदमी कोई ऐसी बात निकाले जो हमारे दीन और शरीयत में न हो तो वह नई बात निकालने वाला मरदूद है। (बुख़ारी शरीफ़ व मुस्लिम शरीफ़)

**फायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि जिस बात या जिस मसले का हुज़ूर (स०) के कौल व फ़ेल से सबूत न हो और उसको कोई निकाले तो वह अमल करने के क़ाबिल नहीं। इसको बिदअत कहते हैं और बिदअत कुफ़्र व शिर्क के बाद सबसे बड़ा गुनाह है। हुज़ूर (स०) की शरीयत में चार उसूल ऐसे हैं कि चारों में से अगर किसी बात का या किसी मसले का सबूत हो तो अमल करने के काबिल है। एक कुरआन मजीद, दूसरे हदीस शरीफ, तीसरे मुज्तहदीन यानी इमामों की राय, चौथे इज्माह-ए-उम्मत यानी सब मुसलमानों का उस पर इत्तफ़ाक़ हो।

बस सच्चे ईमान की बात यह है कि जब तक पूरा इल्म और समझ न हो तो दीन की बातों में दख़ल न दें और लोगों को ग़लत रास्ते पर डाला और ग़लत मसला बतलाया तो ख़ुदा तआला की कचहरी में वह पिटाई होगी कि दुनिया की

# एक फ़ितने का बयान

फ़ितना इम्तहान और अज़माइश को कहते हैं कि कौन दीन के सही और सच्चे रास्ते को अख़्तियार करता है और कौन बेराह होता है। हज़रत उन्स (रज़ी०) से रिवायत है कि एक शख़्स रसूल अल्लाह (स०) के साथ जिहाद में शरीक हुआ करता था और जब वह वापस आता तो ऊँट से सामान उतार कर आपकी मजलिस छोड़कर उसी वक़्त मस्जिद में जाकर नमाज़ पढ़ने लगता और इतनी लम्बी नमाज़ पढ़ता कि सहाबा को खयाल हुआ कि यह हम सबसे बढ़ गया और हुज़ूर (स०) की खिदमत में यह खयाल ज़ाहिर किया। हुज़ूर (स०) ने उस शख़्स को बुलवाया और उससे पूछा कि तूने अपने दिल में यह ख़याल किया है कि मेरा रुतबा सब लोगों से बड़ा है और मैं सबसे अच्छा हूँ।

उसने कहा हाँ, मेरा खयाल ऐसा ही है। यह कहकर वह शख़्स फिर जल्दी से मस्जिद में चला गया और अपनी मनघड़न्त से उसने अपने पाँव से एक लकीर निकाली और फिर अपने दोनों पाँव उस लकीर पर रखकर नमाज़ पढ़ने लगा।

रसूल-ए-पाक (स०) ने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात पाक की जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। उस शख़्स की आँखों में शैतान का असर है। कोई तुममें ऐसा है जो उस मरदूद को क़त्ल कर आवे।

यह हुक्म सुनकर हज़रत अबूबक्र (रज़ी०) उठे और उसे क़त्ल करने के लिए गये और लौट आये और अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह (स०) ! वह नमाज़ पढ़ता है इसलिए क़त्ल न कर सका।

फिर हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया तुममें से कौन ऐसा है जो उस शैतान को क़त्ल कर आवे।

फिर हज़रत उमर (रज़ी०) उठे और नंगी तलवार लेकर गये। आपने देखा कि वह नमाज़ पढ़ रहा है। आप लौट आये। हुज़ूर (स०) ! ने पूछा कि उसको क़त्ल कर आए। अर्ज़ की या रसूल अल्लाह (स०) वह नमाज़ पढ़ रहा है। ख़ुदा के डर से क़त्ल न कर सका। फिर तीसरी दफ़ा हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कोई तुममें ऐसा है कि उस आदमी को क़त्ल कर आये।

हज़रत अली उठे और अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! मैं उसको कत्ल करूँगा। हुज़ूर ने फ़रमाया, हाँ, तुम इस काम के हो। मगर यह जब है कि वह तुमको मिले।

हज़रत अली (अ० स०) मस्जिद में गये उसको न पाया और लौट आये। हुज़ूर ने दरियाफ़्त किया कि क़त्ल कर आये। अर्ज़ की, या रसूल अल्लाह ! वह भाग गया, मिला नहीं। हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया कि—

यह पहला फ़ितना है जो मेरी उम्मत में निकला।

कि सूरत बुज़ुर्गों की-सी और काम शैतानी। अगर तुम उसको क़त्ल कर देते तो कभी कोई फ़ितना ज़ाहिर न होता और दो आदमी भी मेरी उम्मत में यानी मुसलमानों में ऐसे न होते कि जो अहले हक़ से इख़्तलाफ़ करते। (मुस्नद अबुलऐली मूसली)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ से मालूम हुआ कि दीन में ऐसे दज्जाल और फ़िसादी होते रहेंगे कि ज़ाहिर में नाम के मौलवी, सूफ़ी, हाजी, नमाज़ी, पीरजी, बड़े दीनदार, इबादत गुज़ार और आशिक़े रसूल कहलायेंगे और अपनी बड़ाई और सरदारी के लिए नये-नये तरीक़े और मसले निकालेंगे और सच्चे बुज़ुर्ग उल्मा से नफ़रत और अदावत रखेंगे और उनके क़ौल व फ़ेल में ऐब निकालेंगे और बेइल्म लोगों को अपनी तक़रीरों और तहरीरों से अपने रंग व ढंग में फँसा लेंगे और मुसलमानों में झगड़े फ़िसाद फैलायेंगे। इस हदीस शरीफ़ से मुसलमानों को सबक़ लेना चाहिए। जल्दी से हर किसी के पीछे न लगा करें। और ऐ फ़िसादी फ़िसाद और झगड़ा फैलाने वाले तू भी ख़ुदा से डर। नये तरीके और मसले निकाल कर मुसलमानों को मत लड़ा। बाज़ आ जा।

क्या है दुनिया जान तू ऐ ख़ुद पसन्द,
मुक्र व हेले का है तेरा वाज़ोपन्द।

दर्स तेरा इसलिए है सुबहो शाम,
ताकि मशहूर इल्म में हो तेरा नाम।

तू अब जो यह करता वाज़ो पन्द है,
खल्क़ में मशहूर होने के लिए।

हर तरह अपना जता फ़ज़्लो कमाल,
मर्द व ज़न के वास्ते डाले हैं जाल।

ताकि हो ताबे तेरे कुछ आम में,
सौ फ़रेबों से तू लाया दाम में।

जाहिलों नादान बे अक़लो शऊर,
जाल में तेरे आयेंगे ऐ पुरग़रूर।

जाहिलों में बैठकर बन-बन सदा,
इल्में फ़ज़्ल अपना जताया ख़ूब-सा।

है यह सब इस वास्ते ऐ पुरख़लल,
लोग जानें ता तेरा इल्मो अमल।

कुछ हया भी तुझको आती है बता,
हक़ तआला और पैग़म्बर से भला।

कब तलक इस फ़िक्र बातिल में भला,
तू रहेगा मुब्तला ऐ बेहया।

फ़िक्र कर उसकी जो तेरा यार हो,
दर्द व ग़म में तेरे हामीकार हो।

छोड़ कर तूने रस्ता यार का,
ले लिया है आह रस्ता नार का।

## एक और फ़ित्ने का बयान

हज़रत मआज़ (रज़ी०) से रिवायत है कि रसूल अल्लाह (स०) ने फ़रमाया कि—

ऐ लोगो! तुम्हारे आगे ऐसे फ़ितने आयेंगे कि लोगों के पास माल बहुत होगा और उन फ़ितनों के ज़माने में कुर्आन हाथों में होगा। यहाँ तक कि हर एक मर्द और औरत ग़ुलाम और आज़ाद, छोटा, बड़ा, बूढ़ा और जवान उसको ले लेगा और लफ़्ज़ों का तर्जुमा करेगा। मगर इल्म और समझ से बिल्कुल कोरा होगा। थोड़ा-सा इल्म पढ़कर जतायेगा कि मैं भी आलिम हूँ और लोगों से कहेगा कि तुम लोगों को क्या हो गया कि मेरा कहना नहीं मानते। हालांकि मैं तुमको कुर्आन पढ़कर इसका तर्जुमा सुनाता हूँ और लोगों को अपने पीछे लगाने के लिए दीन में नयी-नयी बातें और तरीक़े निकालेगा। क्योंकि वह ज़माने का रंग-ढंग देख रहा है कि लोग नयी बात और नये तरीक़े को पसन्द करते हैं।

बस ऐ मुसलमानो! उसके नये तरीक़े और नयी निकाली हुई बातों से अपने आपको बचाइयो और यह समझना कि जो नया तरीक़ा उसने निकाला है दीन नहीं है, बेदीनी है और इस क़िस्म के लोगों के जाल में न फँसियो। और याद रखो कि जब कुछ पढ़ा-लिखा आदमी बे राह हो जाता है तो बड़ा ग़ज़ब ढाता है। और याद रखो कि शैतान इतना होशियार है कि कुछ पढ़े-लिखे नाम के दीनदारों की ज़ुबानों से ऐसी बातें असर वाली निकलवा देता है कि लोग सच्चे और बुज़ुर्ग उल्मा की तरफ़ से बदगुमान हो जाते हैं। बस जब ऐसा ज़माना आये तो मेरे और मेरे सहाबा का तरीका देखो कि यह तरीक़ा या मसला मेरे और मेरे असहाब के तरीक़ों से मिलता है या नहीं।

फिर हज़रत मआज़ (रज़ी०) ने फ़रमाया कि लोगों ने दरयाफ़्त की कि या रसूल अल्लाह (स०)! हमको कैसे मालूम होगा कि हक़ पर कौन है और नाहक़ पर कौन है?

आपने फ़रमाया कि इसकी पहचान यह है कि सच्चे और बुज़ुर्ग आलिम के कलाम में शौहरत वाली बातें नहीं होती और बनावट नहीं होती और लोग भी कहने लगते हैं कि इनकी बातों में कुछ मज़ा नहीं आता। और अब जो तरीक़ा निकला है यह ख़ूब है। इसमें मज़ा भी अजीब ही आता है और हर जगह मशहूर होता जा रहा है।

याद रखो ! बुज़ुर्ग आलिमों के कलाम में नूर होता है और उनका कलाम मज़बूत होता है और एहले शौहरत की बातें कमज़ोर और बेजान होती हैं। अगर सच्ची बात की तलाश हो तो हर मुसलमान खुदा की दी हुई अक़्ल से समझ सकता है कि सच्ची और मज़बूत राह कौन-सी है, कच्ची और कमज़ोर कौन-सी है। मगर शौहरत और रस्मो रिवाज को दिल से निकालकर खुदा से डर कर देखें और समझें। (अबूदाऊद शरीफ़)

**फ़ायदा—** मुसलमान भाइयो! यह बात याद रक्खो कि नयी-नयी बातें हमेशा से दीन की सूरत में बेसमझ फ़िसादी लोग निकाला करते हैं और इसको फ़ितना कहते हैं और यह खुदा की तरफ़ से एक इम्तिहान होता है। कौन-सा बन्दा अपने जी की ख़्वाहिश को छोड़कर खुदा से डरकर दीन के मज़बूत तरीक़े पर चलता है और कौन-सा बन्दा अपने जी की ख़्वाहिश को पूरा करने के लिए खुदा से निडर होकर बेराह चलता है। ऐसे ज़माने में ख़ूब मज़बूती से दीन के सच्चे तरीक़े पर जमा रहें। क्योंकि जब फ़ितने-फ़िसाद का ज़ोर हो और हर शख़्स दीन में अपनी राय देता हो तो उस वक़्त सच्चे मुसलमान वही हैं कि ख़ूब देखभाल कर क़दन रखें और मज़बूती से रखकर, हो सके तो और मुसलमानों को भी इस ज़हरीले असर से बचावें। और यह तो बिल्कुल ज़ाहिर बात है कि जब कोई नाम का मौलवी बिगड़ता है तो शैतान उसकी ज़ुबान में बोलता है। इसी वजह से उसके बयान में मज़ा आता है और वह हज़ारों को बिगाड़ देता है और बेइल्म जाहिल लोगों को अपने पीछे लगा लेता है। और आजकल क़ुर्आन व हदीस का तर्जुमा आम हो गया है। बस तर्जुमा देखकर हर शख़्स दावा करने लगा है कि मैं भी क़ुर्आन व हदीस को समझता हूँ, जो मैं समझा हूँ, कोई नहीं समझा और लोग भी कहने लगते हैं कि देखो जी, यह भी मौलवी और वह भी मौलवी। हमको क्या मालूम कौन-सा अच्छा मौलवी है?

हालांकि यही जवाब उन सच्चे बुज़ुर्ग मौलवियों की तरफ़ से भी हो सकता है कि जब तुम्हारे नज़दीक दोनों बराबर हैं तो तुमने इस नये तरीक़े को पसन्द कैसे कर लिया और पहले तरीक़े को क्यों छोड़ दिया? असल वजह यह है कि नया तरीक़ा या मसला या रिस्मो रिवाज के मुवाफ़िक़ है। इसलिए इससे ख़ुश होते हैं। वर्ना मौलवी का तो नाम ही नाम है।

मुसलमान भाइयो! हक़ और नाहक़ की पहचान यह है कि अल्लाह से डरकर और मर्ज़ी को छोड़कर यह देखो कि वह नया तरीक़ा या मसला या रस्मो रिवाज ऐसा है कि पहले सच्चे और पूरे आलिम और दीनदार लोग उसको पसन्द करते हैं या नहीं और पहले से उस तरीक़े या मसले पर लोग बेरोक-टोक अमल करते चले आये हैं या नहो। अगर ऐसा है तो बेशक वह तरीक़ा दरुस्त है और अगर बेइल्म नावाक़िफ़ लोग उस नये तरीक़े को पसन्द करें तो वह दरुस्त नही चाहे वह तरीक़ा देखने में कैसा ही अच्छा मालूम होता हो या उसमें कितना ही मज़ा आता हो। इसकी मिसाल ऐसी है कि जैसे एक गुलदस्ता दरख़्तों के फलो और पत्तियों से बना हुआ हो और दूसरा ख़ूबसूरत काग़ज़ों का बना हुआ हो तो देखने में काग़ज़ों का गुलदस्ता अच्छा मालूम होगा। फिर दोनो पर पानी छिड़का जाये तो दरख़्तों के फूल-पत्तियों के गुलदस्ते पर बहार आ जायेगी और काग़ज़ का फूल मुर्झा जायेगा, गल जायेगा।

इसी तरह जब अल्लाहतआला के यहाँ पूछ-गछ होगी तो जो दीन की सच्ची और मज़बूत बातें होंगी उन पर बहार आ जायेगी और बख़्शीश का ज़रिया बन जायेगी और जो तरीक़े कच्चे और कमज़ोर होंगे वह सर पिटायेंगे और अज़ाब का ज़रिया बन जावेंगे। और आजकल किसी से बहस-मुबाहिसा और लड़ाई-झगड़ा करने का वक़्त नहीं। जो जैसा करेगा वैसा भरेगा। अल्लाहतआला हम सबको झगड़े फ़िसाद करने वाले नाम के मौलवियों और दीनदारों से बचाये कि जो दो-चार किताबें अरबी की पढ़कर अपने आपको आलिमों में शुमार करते हैं और नावाक़िफ़ मुसलमानों में सरदार और बुज़ुर्ग बनते हैं और बड़े-बड़े दर्जे के बुज़ुर्ग आलिमों के क़ौल व फ़ेल में ऐब निकालते हैं और ऐसे दज्जाल फ़िसादी लोग हर ज़माने मे होते चले आये हैं और क़यामत तक होते रहेंगे। बाज़ लोग उनमें ऐसे भी हैं कि हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) के असहाबों को बुरा कहते हैं जो कि मैय्यदउल उलमा है और बाज़ ऐसे भी हैं कि जो असहाबों के बाद उल्मा यानी इमाम हुए उनको बुरा कहते हैं। आजकल भी इसी तरह बड़ाई जमाने के लिए सच्चे और बज़ुर्ग उल्मा को बुरा कहते हैं और सीधे-सादे नावाक़िफ़ मुसलमानों को बदगुमान करके लड़ाई-झगड़े कराते हैं। ऐसे गुमराह लोगों से अल्लाहतआला सब मुसलमानों को बचाये और अपने रसूल (स०) के सही और सच्चे रास्ते पर चलाये कि जिस रास्ते को एहले सुन्नतवल जमाअत के बड़े-बड़े दर्जे के मज़बूत मुत्तक़ी उल्मा ने अख़्तियार किया। और ऐ शरीयते मौहम्मदी में कतर बौत करने वालों, ख़ूब याद रखो—

न मिटा नक़्शे शरीयत न मिटा,
मिट गये वही जो कि थे मिटाने वाले।

# कुर्आन व हदीस का मतलब समझना हर किसी का काम नहीं

हज़रत अब्दुल्ला बिन उमर (रज़ी०) से दो आदमियो ने अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर (रज़ी०) के क़त्ल के बारे में कहा कि जो कुछ इनके साथ हुआ आप देख रहे है कि कैसी बेदर्दी से बाग़ियो ने इनको क़त्ल किया और आप हज़रत उमर (रज़ी०) जैसे बहादुर के बेटे और हज़रत मौहम्मद मुस्तफ़ा (स०) की सोहबत में रहने वाले, फिर आपने उसकी क्यों मदद न की और क्यों दुश्मनों का मुक़ाबला न किया।

आपने फ़रमाया कि अल्लाहतआला ने मुसलमान भाई का ख़ून मुझ पर हराम किया है। उन आदमियो ने कहा कि अल्लाह तआला ने तो यह फ़रमाया है कि—

وَقَاتِلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ ط

यानी कि उनसे लड़ो, यहाँ तक कि फ़ितना बाकी न रहे।

हज़रत अब्दुल्ला ने फ़रमाया, हाँ, यह सच है मगर हम इतना लड़े कि फ़ितना बाक़ी न रहा और दीन अल्लाह का हो गया। और तुम यह चाहते हो कि मुसलमानों से लड़ूँ ताकि फ़ितना-फ़िसाद ज़्यादा हो और दीन ग़ैर अल्लाह का बन जाये। (बुख़ारी)

**फ़ायदा—** हज़रत अब्दुल्ला का मतलब यह है कि आयत शरीफ़ में काफ़िरों के साथ लड़ने का हुक्म है तो हमने इस हुक्म पर ऐसा अमल किया और काफ़िरों से ऐसे लड़े कि सारा अरब कुफ़्र से पाक-साफ़ हो गया और हर तरफ़ अल्लाह की इबादत करने वाले नज़र आने लगे। और तुम आयत शरीफ़ा से यह समझते हो कि अपने मुसलमान भाइयों से लड़ा जावे, जिसका अंजाम यह होगा कि फ़ितना बढ़ेगा और मुसलमान लड़ते-मरते कमज़ोर हो जायेंगे और काफ़िर मुसलमानों की कमज़ोरी से नफ़ा उठायेंगे और फिर अल्लाह की इबादत के बदले शैतान की इबादत होने लगेगी। फ़ितना तो इसी मतलब के वास्ते हुआ करता है कि अल्लाह व रसूल के हुक्मों का मतलब बेसमझी या हठधर्मी से कुछ का कुछ घड़ लेते हैं और यह हाल हो जाता है कि—

इस घर को आग लग गई घर के चिराग़ से।

मुसलमान भाइयो! हर एक आदमी का काम नहीं कि कुर्आन व हदीस का मतलब समझे। हर किसी के पीछे लगना छोड़ दो। सच्चे मुत्तक़ी आलिमो का दामन पकड़ो। पूरा आलिम और बुज़ुर्ग वही है जिसको आलिम और बुज़ुर्ग लोग

वह हैं जिनको तुम नहीं चाहते और वह तुमको नहीं चाहते। तुम उनके लिए बददुआ करो और वह तुम्हारे लिए बददुआ करें। (बुख़ारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि जब हाकिम और रैयत में मुहब्बत होगी तो मुल्की इन्तज़ाम अच्छी तरह होगा और जब रैयत और हाकिम में नफ़रत होगी तो मुल्की इन्तज़ाम बिगड़ जायेगा। और यह भी मालूम हुआ कि हाकिमों को चाहिए कि वह इन्साफ़ करें और ज़ुल्म करने से बचें। क्योंकि रसूल-ए-ख़ुदा (स०) ने यह भी फ़रमाया है कि इन्साफ़ करने वाले हाकिम क़यामत के रोज़ अल्लाह के पास नूर की कुर्सियों पर बैठाये जायेंगे और बेइन्साफ़ी और ज़ुल्म करने वाले हाकिम दोज़ख़ में जायेंगे और उन पर अल्लाह ने जन्नत को हराम कर दिया है। (बुख़ारी शरीफ़)

## कोशिश करने से आदमी सँवर जाता है

**इरशाद फ़रमाया रसूल-ए-पाक (स०) ने कि—**

मेरे पास जो माल होगा उसको तुमसे छिपाकर जमा करके नहीं रखूँगा और जो आदमी अपने को सवाल करने और बुरे कामों से बचायेगा और दीनदार बनने का इरादा करेगा तो अल्लाहतआला उसको पक्का दीनदार और परहेज़गार बना देगा। और जो दुनिया से बेपरवाही का इरादा कर देगा तो अल्लाहतआला उसके दिल को दुनिया के माल से बेपरवाह कर देगा। जो शख़्स मुसीबत और बला में हिम्मत करके सब्र अख़्तियार करेगा तो अल्लाहतआला उसको सच्चा बे बनावट का साबिर बना देगा। क्योंकि सब्र बहुत बड़ी नैमत है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

**फ़ायदा—** इस हदीस शरीफ़ का मतलब यह है कि कुछ अन्सारी सहाबा ने हुज़ूर (स०) से माल माँगा। आपने दे दिया। फिर माँगा, फिर दे दिया। फिर आपके पास माल न रहा। जब आपने यह फ़रमाया कि मेरे पास माल होगा तो मैं तुमसे छिपाकर जमा करके नहीं रखूँगा। इस हदीस शरीफ़ में नफ़्स के सँवारने की और ख़ुदा का प्यारा बन्दा बनने की ताकीद है और यह भी मालूम हुआ कि आदमी की बुरी आदत बदल सकती है। मगर बुरी आदत के सँवारने और बदलने में बड़े सब्र व इस्तक़लाल और मेहनत व मुशक़्क़त की ज़रूरत है और नफ़्स के ख़िलाफ़ काम करने पड़ते हैं। दुनिया के मज़े छोड़ने पड़ते हैं। फिर अल्लाह-तआला की मदद से अच्छी आदत हो जाती है। बाज़ लोग कहा करते हैं कि आदमी की बुरी आदत बदला नहीं करती।

इस हदीस शरीफ से मालूम हुआ कि यह बात ग़लत है।

देखो, समझने की बात है। अगर बुरी आदत का बदलना अख़्तियार में न होता तो अम्बियाँ (अ० स०) का होना और उनकी तालीम बेकार साबित होती।

मगर तजुर्बा गवाह है कि जिन लोगों ने नबियों की तालीम पर अमल किया और उनका कहना माना तो उनकी आदतें ऐसी बदलीं की वह दुनिया और आखिरत के बादशाह और अल्लाहतआला के मक़बूल और प्यारे बन्दे हो गये। समझने की बात है कि अल्लाहतआला ने आदमी को तो अक़ल और समझ दी है, यह खुद अपनी आदत और हालत को बदलना नहीं चाहता क्योंकि उसमें तकलीफ़ उठानी पड़ती है। नफ़्स की ख़्वाहिशों और मज़ों को छोड़ना पड़ता है। अल्लाह व रसूल का ताबेदार बनना पड़ता है और आदमी इसको पसन्द नहीं करता। बस अपने दिल की ख़्वाहिशों को अपना ख़ुदा बना रक्खा है, जो दिल चाहता है करता है। फिर ऐसी हालत में आदत कैसे बदले? हालांकि यह बात देखने में आती है कि इंसान तो अक़ल और समझ भी रखता है और हैवान जो इंसान जैसी अक़ल नहीं रखते, उनकी आदतें बदल जाती है और सधाने से सँवर जाते हैं, जैसे गाय, बैल, ऊँट, बकरी, घोड़ा, घोड़ी, बन्दर शेर, कुत्ता, बाज़, तोता वग़ैरा सब सँवर जाते हैं। मगर कोई सधाने और सँवारने वाला हो तो ज़रूर सँवर जाते हैं!

तो ऐ मुसलमान भाइयो! तुम किसी सधाने और सँवारने वाले उस्ताद यानी कामिल पीर से ताअल्लुक़ पैदा करो और उसके कहने पर चलो। इन्शाअल्लाह-तआला तुम्हारी हालत बदल जायेगी। आदतें सँवर जायेंगी और अल्लाह व रसूल के प्यारे बन जाओगे। और अगर इसी ग़फ़लत में रहे और अपनी हालत न बदली तो बहुत पछताओगे। याद रखो, बेमेहनत और कोशिश किये तो पेट भी नहीं भरता। अब तुम जानो तुम्हारा काम जाने।

उम्र यह एक दिन गुज़रनी है ज़रूर,
आख़िरत की फ़िक्र करनी है ज़रूर।

क़ब्र में मैय्यत उतरनी है ज़रूर,
जैसी करनी वैसी भरनी है ज़रूर।

एक दिन मरना है आख़िर मौत है,
कर ले जो करना है आख़िर मौत है।

ढूँढ ले कोई अच्छा-सा रहबर ऐ फ़ज़ूल,
ज़िक्र हक़ कर उसके सीने से हसूल।

काम का अब अपने तू मुख़्तार है,
बात हक़ कहनी हमारा कार है।

# आख़िरी वसीयत

क्योंकि इस नाकारा, आवारा की उम्र सौ बरस के क़रीब है, इसलिए अपने मोहब्बी और मुताल्लेक़ीन और सब मुसलमान भाइयों और बहिनों की ख़िदमत में अर्ज़ है। इस किताब में दीन-ए-इस्लाम के सही और सच्चे मज़हब की बुज़ुर्गियाँ और ख़ूबियाँ अल्लाह व रसूल की और बज़ुर्गाने दीन और नेक लोगों की बतलायी हुई नसीहतें ऐसे तरीक़े से लिखी गयी हैं कि आम मर्दों और औरतों की समझ में आ सकें कि नफ़ा आम हो और अमल करने वालों का खुदाई बाग़ यानी जन्नत में मुक़ाम हो। इस किताब को मेरी आख़िरी नसीहत और वसीयत समझें और अल्लाहतआला की रज़ा हासिल करें।

फ़क़त ख़ादिम व हक़ीर